વિદ્યાપીઠ ગ્રંથાલય
...પીરાઈટ-સંગ્રહ

गूजरात विद्यापीठ ग्रंथालय
(गुजरात कोपीराईट विभाग)

अनुक्रमांक ११३५ किमत

ग्रंथनाम પ્રતિક્રમણ ૨૭

क्रमांक

प्रतिक्रमण सूत्र.

अर्थ सहित

तथा

बीजा केटलाएक ग्रंथोना संग्रह, साथे

शोधन करी

श्रीमुंबैमध्ये

"निर्णयसागर" प्रेसमां छपावी प्रसिद्धकरयुंछे.

संवत १९३४ ना आषाढ वद ११ ने वार गरेउ.

ता० २९ मी जुलाई सने १८७८.

प्रस्तावना.

आ "प्रतिक्रमण सूत्र" नामक ग्रंथ प्रसिद्धता
मां मुकतां सर्व जैनधर्मावलंबी सज्जनोने मारी
विनयपूर्वक प्रार्थना ठे के.–एमां ठ आवश्यकनुं
सामान्य विशेष, निश्चय व्यवहार, द्रव्य सुद्धि,
क्षेत्रसुद्धि, कालसुद्धि अने जाव सुद्धि; तथा द्र
व्य, क्षेत्र, काल अने जाव आदीक तथा स्तवनो,
सझाउ,चैत्यवंदनो अने थोयो जेवी बीजी केट
लीक बाबत पृथक् पृथक् ठपावी प्रगट करवानो
विचार हतो.–परंतु तेम न बनीशकवानुं कारण
मात्र एटलुंज ठेके.–आ ग्रंथ ठपाववाना आरं
जथीज तेनुं कद न्हानुं (रायल सोलपेची) क
र्युं. तेथी जो ग्रंथोना संग्रहथी विशेषता करीये
तो तेनुं कद न्हानुं तेथी बराबर पुस्तक आकार
मां आवी न शके तोपण योग्य यत्नथी, थता सा
रोद्धारनी साथे गुणज्ञ ग्रंथोना समावेशथी आ
ग्रंथनी योजना करीठे.

काउसग्गना उगणीश दोष, वांदणाना बत्रीशदोष, आहारना सडतालीश दोष तथा गुरु संबंधी तेत्रीश आशातना. ए विषयो आ ग्रंथमां दाखल करवा योग्य तथा तेने लगताछे खरा. पण ते सघला "प्रकरणरत्नाकर" ना त्रीजा नागनेविषे 'प्रवचनसारोद्धार' ग्रंथमां दाखलछे. जेथी तेनुं वर्णन आ ग्रंथमां कर्युंनथी पोसहना अढार दोष बार व्रतनी टीपमां छपाइ गयेलाछे.

सात स्मरणमांना केटलाक स्मरणना अर्थ आ ग्रंथमां नाख्या नथी तेनो वास्तविक हेतु एज छेके.—नक्तामर, कल्याणमंदिर, अजितशान्तिस्तवन आदिक स्मरणो आगल अर्थ सुद्धां छपाइ गयेलाछे. अने उपसर्गहरस्तव विगेरे स्मरणोना अर्थ आ ग्रंथमां स्थापितछे. छेवट विद्वजनोने मारी अति नम्रतापूर्वक विनंती छे के.— आ ग्रंथनुं सोधनकरवामां बुद्धिदोषथी, दृष्टीदोषथी किंवा अन्य कारणथी जे कांइ अशुद्धतानो दोष दृष्टी आवे ते सर्व क्षमा करी सुधारीवांचशो. एवी आशाछे.

अनुक्रमणिका.



अंक. ग्रंथोनानाम. पृष्ठ.

अंक. ग्रंथोनानाम. पृष्ठ.

अंक.	ग्रंथोनानाम.	पृष्ठ.
१०४	बेआसणा एकासणानुं पच्चरकाण अर्थ सहित ए पच्चरकाणमां पाणस्सना छ आगारनो अर्थ आवी गयोछे ..	३९७
१०५	एकलगणानुं पच्चरकाण	४०२
१०६	आयंबिलनुं पच्चरकाण अर्थसहित ..	४०२
१०७	चउविहारउपवासनुं पच्चरकाण अर्थ०	४०४
१०८	तिविहारउपवासनुं पच्चरकाणअर्थ सहित, एमां पण पाणीना छ आगारनो अर्थ आव्यो छे.	४०६
१०९	चउछभत्तनुं पच्चरकाण अर्थसहित ..	४०८
११०	छ भक्ष विगयना त्रीश निवीता ..	४०९
१११	पाणहारनुं पच्चरकाण..	४१२
११२	देसावगासिकनुं पच्चरकाण अर्थसहित	४१२
११३	चौदनियम धारवानी गाथा विस्तारित अर्थसहित	४१३
११४	पाणहारदिवशचरिमनुं पच्चरकाण....	४१६
११५	रात्रेचौविहारकरवानुं पच्चरकाणअर्थ०	४१६

अंक. ग्रंथोनानाम. पृष्ठ.

॥ श्री गोडीपार्श्वनाथाय नमः ॥

अथ
श्रीप्रतिक्रमणसूत्र बालावबोध सहित प्रारभ्यते.



प्रथम नवकार मंगलिक रूप

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमोआयरिआणं, नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्वसाहूणं, एसो पंच नमुक्कारो, सव्वपावप्पणासणो, मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं॥१॥

नमो अरहंताणं के० बार गुणे सहित विहरमान तीर्थंकर जे श्री अरहंत तेने नमस्कार होजो तेमां नमः ए पदवडे द्रव्य अने भावथी अति नम्रता सहित नमवुं एटले कर, चरण, तथा मस्तके करी प्रणिधान रूप नमस्कार करवो एम कह्युं.

एवो नमस्कार कोने करवो? अरहंत जगवानने नमस्कार करवो. अरहंत कोने कहिये? उत्तम देवताउए करी रचेलां अशोकवृक्ष प्रमुख आठ महा प्रातिहार्य, तद्रूप पूजाने जे योग्य छे तेने अरहंत कहिये. ए विषे आवुं वचन छे.- अरहंति वंदण नमंसणाणि अरहंति पूअ सक्कारं; सिद्धि गमणं च अरहा, अरहंता तेण वुच्चंति ॥ १ ॥ ए गाथानो जावार्थः-जे वंदन तथा नमस्कारने अर्ह एटले योग्य, जे पूजा तथा सत्कार करवाने योग्य अने जे सिद्धि गमन करवाने योग्य होय तेज अरहंत कहेवाय छे. क्यांक नमो अरिहंताणं एवो पाठ छे तेनो अर्थ आम थाय छे:- कर्मरूप अरि एटले वेरीउने जेणे हण्या छे. ए विषे आवुं वाक्य छे:- 'अठविहं पियकम्मं, अरिजूयं होइ सव्व जीवाणं; तं कम्ममरी हंता, अरिहंता तेण वुच्चंति' ए गाथानो जावार्थः- आठ प्रकारनां जे कर्म छे ते सर्व जीवोना अरिजूत एटले वेरीरूप छे, एवा कर्मरूप वेरीने हणनार छे ते माटे अरि

हंत कहेवायछे. क्यांक नमो अरुहंताणं एवो पा
ठ छे. एनो अर्थ आम थाय छेः– कर्मरूप बीज
क्षीण थई जावाथी जेनी फरी जगत्मां उत्पत्ति थ
वानी नथी. ए विषे आम कह्युं छे;ः– 'दग्धे बी
जे यथाऽत्यंतं, प्रादुर्भवति नांऽकुरः कर्म बीजे त
था दग्धे, नारोहति भवांकुरः' ए श्लोकनो भा
वार्थः– जे बीज अत्यंत बळी गयुं होय तेमांथी
अंकुर फूटे नही; तेम कर्मरूप बीज दग्ध थईग
याथी भवरूप अंकुरनी उत्पत्ति थती नथी, क्यांक
नमो अरहोंताणं एवो पदांतर छे. एनो अर्थ आम
छेः– अरह एटले जे पदार्थो पोतानी सन्मुख न हो
य तेने पण जे सम्यक् प्रकारे जाणी शके तेने अर
होंतर कहेछे. वळी क्यांक अरथांत एवो पण शब्दां
तर थाय छे, एनो अर्थ आम थाय छेः–जेनेविषे
समस्त परिग्रहना उपलक्षणवाळा अति भ्रतावळा
चालनारा जे रथ तेनो अंत थयोछे तथा जरा
प्रमुख उपलक्षणवाळा विनाशनो अंत थयो छे
तेने अरथांत कहेछे. एवा लक्षणो वाळा भगवा

नने नमस्कारकरवानो हेतु शुं? महा नयंकर जे आ नवरूप वन, तेनेविषे नमवाने बीहीनारा जनोने अनुपम आनंदरूप जे परमपद तद्रूप जे नगर तेना मार्गने देखाडनारा छे तेथी परम उपकारीछे माटे नमस्कार करवा योग्य छे.

नमो सिद्धाणं के० सर्व सिद्धो आठ गुणोए करी सहित तेओने नमस्कार होजो. जेणे आठ प्रकारना कर्मोरूप इंधनने शुक्लध्यानरूप अति तेजवंत अग्निवडे बाळी नाख्या छे तेने निरुक्तिनी विधि प्रमाणे सिद्ध कहिये. अथवा जे अपुनरावृत्तिये एटले पाछा न आवाय एवीरीते मोक्ष नगरी प्रत्ये गमन करेछे तेने सिद्ध कहेछे; अथवा जे मोक्षनेविषे अचल थायछे तेने सिद्ध जाणवा. अथवा जे शासनने प्रवृत्तावनार थईने मंगल्यरूप सिद्धताने अनुनवे तेने सिद्ध कहेछे. अथवा जेनो कोई अंत नथी एवी अनंतता स्थिति वाळा होय अथवा जेना गुणोना समूह नव्य जीवोने मले छे तेने सिद्ध कहिये. एविषे आ

वचन प्रमाण छे:– 'ध्मातं सितं येन पुराणकर्म, योवा गतो निर्वृतिसौधमूर्ध्नि, ख्यातोऽनुशास्ता परिनिष्ठितार्थोयः सोस्तु सिद्धः कृतमंगलो मे.' ' ए श्लोकनो भावार्थ ते ऊपर जेटलां सिद्धनां लक्षणो कही आव्यां तेटलांनो समुच्चय वर्णनरूपे जाणवो. सिद्ध परमात्माने नमस्कार करवानो हेतु शुं? ए विनाशरहित ज्ञान दर्शन चारित्र तथा वीर्यादिक गुणोए करी सहित छे तेथी पोताना विषयनेविषे प्रकर्षे करी आनंद उत्पादन करवाने लीधे भव्यजीवोने अति उपकारी छे माटे नमस्कार करवा योग्य छे.

नमो आयरिआणं के० जे पांच प्रकारना आचारने पालनार होय अने छत्रीश गुणोएकरी सहित होय एवा आचार्यने नमस्कार होजो. आ एटले मर्यादा ते मर्यादाने विनयरूपेकरी जिनशासनना अर्थना उपदेशकतायें करीने तेनी आकांक्षा करनाराउ सेवे छे तेने आचार्य कहिये.' आचार्यनां लक्षणविषे आ वचनछे:–

सुत्तत्थविऊ लक्खणजुत्तो गच्छस्स मेढिभूओ य, गणतत्ति विप्पमुक्को, अत्थंवाएइ आयरिओ त्ति' । ज्ञानाचारादिक पांच प्रकारना आचार छेः— आ एटले मर्यादा अने चार एटले विहार ते आचार कहेवाय छे. तेविषे साधुवो पोते आचार पाळे बीजाने आचार पाळवानुं मुखथी भाषण करे तथा प्रदर्शावे तेथी आचार्य कहेवाय छे. ए विषे आवुं वाक्य छेः— 'पंचविहं आयारं, आयरमाणा तहा पयासंता; आयारं दंसंता, आयरिया तेण वुच्चंति' एनो भावार्थ उपर कह्या प्रमाणे छे. अथवा आ एटले ईषत् ते अपूर्ण अथवा अधुरुं, चार एटले जे दूत ते चार कल्प कहेवाय छे एवा युक्तायुक्त विभाग निरूपण करवाने निपुण अने विनय वाळा जनोने साधवोके० यथावत् शास्त्रोपदेश करनारा होवाथी तेने आचार्य कहिये. आचार्य ने नमस्कार करवानो हेतु शुं? आचारनोउपदेश करनारा होवाथी परोपकारी पणाने लीधे नमस्कार करवा योग्य छे.

नमो उवज्झायाणं के० पचीश गुणोने धारण करनारा उपाध्यायोने नमस्कार होजो. जेनी समीपे आवीने नणे छे तेथीअधिकपणे आववुं थाय छे, अने सूत्रवडेजिनप्रवचन; जेनी समीपे जईने स्मरण कराय छे ते उपाध्याय कहेवाय छे' ए विषे आवुं प्रमाण छेः– वारसंगोजिणरकाउ सन्नाउ कहिउंबुहे; हितं वसंति जम्माउ, वज्ञाया तेण वुच्चंति' अथवा उपाधान एटले उपाधि अथवा सन्निधि ते पासे वसवुं; ते उपाधिए करी अथवा उपाधिनेविषे आय एटले लाज छे श्रुतनो जेउने ते उपाध्याय जाणवा. वा उपाधी एटले विशेषणादिक प्रक्रमेकरी शोजाने पमाडे एवा पदार्थो नो आय एटले लाज छे जेउथी तेउने उपाध्याय कहिये. अथवा उपाधि तेज सन्निधि, अने आय एटले इष्टफल. एटले जेनेविषे दैवजनित पणे जे आय एटले इष्टफलो तेउना समूहनुं एक हेतुपणुं छे. तेने उपाध्याय कहिये; अथवा आधी एटले मननी पीडा तेनो आय एटले ला

न तेने कहिये आध्याय, वा अधिय एटले टूकी बुद्धि अर्थात् कुबुद्धि, तेनो आय एटले लाज तें ने कहिये अध्याय अथवा ध्यै धातु चिंताने अर्थे छे, ए धातुनो प्रयोग तथा नञंनो अर्थ कुत्सित एटले खराब एवो थाय छे; ए बे मली दुर्ध्यान एवो अर्थ सिद्ध थाय छे; एनेज अध्याय पण कहे छे. ए अध्यायवा आध्यायतथा बन्ने जेउए करी उपहत एटले हणायला छें तेने उपाध्याय कहिये. उपाध्यायने नमस्कार करवानो हेतु शुं? संप्रदाये करी आवेलुं, जे जिनवचननुं अध्यापन तेना योगे विनये करी नव्य जीवोनी ऊपर उपकारी होवाथी नमस्कार करवा योग्य छे.

नमो लोए सव्वसाहूणं के० अडी द्वीपप्रमाण लोकमांना सर्व साधुउ जे सत्यावीश गुणोए करी सहित होय तेमने नमस्कार होजो. तत्रजे ज्ञानादिक शक्तिए करी मोक्षने साधे छे तेने साधु कहिये; अने निरुक्ति न्यायेकरी सर्व प्राणीमात्रनेविषे समताने ध्याए तेने साधु कहे छे; एवि

षे आ वचन छेः– निव्वाण साहए जो जम्हासा हुंति साहुणो; समाये सव्व नूएसुं, तम्हा ते ना व साहुणो.' एनो नावार्थ उपर प्रमाणे छे. अ थवा संयमकारिओने सहायता करवाने जे धारण करे तेउने साधु कहिये; निरुक्तिनेविषे स र्व ते सामायकादिक विशेषणोवाला प्रमत्तादिक पुलाकादिक जिनकल्पिक प्रतिमाकल्पिक यथा लंदककल्पिक परिहारविशुद्धिकल्पिक, स्थविरक ल्पिक स्थितास्थितकल्पिक तथा कल्पातीत ने दोवाला प्रत्येकबुद्ध स्वयंबुद्ध तथा बुद्ध बोधित ने दोवाला अने नारतादि नेदोवाला सुषमअसुषमा दिक विशेषताए करी युक्त ते सर्व साधुउ जाणवा. सर्व गुणवालाउने अविशेष पणाथी नमन करवा मां प्रतिपादनने अर्थे सर्व पदनुं ग्रहण कर्युं छे एवी रीते अर्हत प्रमुख पदोनेविषे पण जाणी लेवुं. केमके, न्यायनुं समानपणुं छे. अथवा जे सर्व जीवोने हितना करनारा साधुउ छे ते साधु जा णवा. ए सर्व शब्दे अरहंत धर्म अंगीकार करनार

साधुउ जाणवा, पण सर्व शब्दे बुद्धादिक साधुउनुं ग्रहण न करवुं. अथवा जे सर्व शुभ योगोने साधे, सर्वअर्हंतोने साधे; एटले तेउनी आज्ञा करणे करी आराधे प्रतिष्टापना करे अथवा दुर्नयनुं निराकरण प्रमुख करे तेउने सर्व साधुउ अथवा सार्व साधुउ कहिये. अथवा श्रव्य एटले श्रवण करवा योग्य जे वाक्यो तेउनेविषे अथवा सव्य एटले दक्षिण अर्थात् जे पोताने अनुकूल कार्यो छे तेनेविषे सा धुउ निपुण होय छे माटे श्रव्यसाधुउ अथवा सव्यसाधुउ पण सव्व शब्दवडे जाणी लेवा. अ ने सर्व शब्दनी देशथी पण सर्वता दीगमां आवे छे माटे अपरिशेष सर्वता दर्शाववाने अर्थे लोक एवो शब्द नाखवामां आव्यो छे. लोक शब्द वडे मनुष्यलोकमां जाणवुं; पण गच्छादिकनेविषे सर्व साधुउने नमस्कार कर्यो छे एम न समजवुं. साधु उने नमस्कार करवानो हेतु शुं? मोक्ष मार्गनेवि षे सहायता करनार होवाथी ते उपकारी पणा ने लीधे नमस्कार करवायोग्य छे. एविषे आवुं व

चन छेः—असहाय सहायत्तं, करेति मे संजमंकरं तस्स ; एएण कारणेणं, णमामहं सव्व साहूणंति

आशंकाः-- पंचपरमेष्टीने नमस्कार करवो ते संक्षेपे के विस्तारे? तेमां जो संक्षेपे कहेशो तो सिद्ध थएला जे साधुओ तेओनेज नमस्कार करवो योग्य कहेवाशे; केम के, तेओनुं ग्रहण कर्याथी बीजा बधा अर्हत प्रमुखोनुं ग्रहण थाय छे. केम के, अर्हंतो साधुपणेज रहे छे. अने जो कहेशो के विस्तारे नमस्कार कराय छे तो ऋषभादिक जुदुं जुदुं नाम लईने नमस्कार करवो जोये.

समाधानः— साधु मात्रने नमस्कार कर्याथी अर्हंतादिकने नमस्कार कर्यानुं फल प्राप्त थतुं नथी. जेम मनुष्यमात्रने नमस्कार कर्याथी राजादिकने नमस्कार कर्यानुं फल मलतुं नथी तेनी पठे जाणवुं. माटे ए विशेषता कर्तव्य छे अने जुदां जुदां नाम लईने नमस्कार करिये तो केटलानां नाम लईये माटे एम करवुं अशक्य छे

आशंकाः— जे सर्वथी मुख्य होय तेनुं प्रथम

गृह्हण करवुं ए योग्य छे. माटे अहीं पंच परमेष्टीमां सिद्ध मुख्य छे. केम के, ते सर्वथा कृतकृत्य छे तेथी प्रथम सिद्धने नमस्कार करवो जोईये.

समाधानः– सिद्ध पण अर्हतना उपदेशवडे जाण्यामां आवेछे, अने तीर्थ प्रवचनोएकरी अत्यंत उपकारी छे; माटे अर्हतनेज प्रथम नमस्कार करवो योग्य छे.

आशंकाः–त्यारे आचार्यादिकने पण प्रथम नमस्कार करवो योग्य थशे केम के, कोईक समये एनाथी पण अर्हत प्रमुख सर्व पदार्थो जाण्यामां आवेछे. माटे आचार्य पण मोटा उपकारी छे.

समाधानः– आचार्योने उपदेश देवानुं सामर्थ्य अर्हत परमात्माना उपदेश थकीज होयछे पण स्वतंत्र आचार्यादिक उपदेशे करी अर्थने जणाववा वाळा कहेवाता नथी. माटे अर्हतो ज परमार्थे करी सर्व अर्थने जणाववा वाळा छे तेथी प्रथम नमस्कार करवा योग्य छे. वळी आचार्यादिक तो अर्हतनी पर्षदामां बेशनारा छे ते

थी तेओने प्रथम नमस्कार करीने पछी अर्हंत ने नमस्कार करवो ए योग्य न कहेवाय. एविषे आम कह्युं छेः– णय कोइ वि परिसाए, पण मित्ता पणमए रणोत्ति. माटे पंच परमेष्ठीने नम स्कार करवानो ए योग्य अनुक्रम छे.

एसो पंच नमुक्कारो के० ए जे पंच परमेष्ठी ने नमस्कार छे ते केहेवो छे? सव्व पावप्पणास णो के० सर्व पापनो विनाश एटले निवारण क रनारो छे. वली कहेवो छेः– मंगलाणं च सव्वे सिं पढमं हवइ मंगलं के० सर्व मंगलोमां ए प्र थम मंगल छे. एटले मंगल बे प्रकारनुं छेः– एक लौकिक अने बीजुं लोकोत्तर तेमां दधि, अ क्षत तथा चंदन लौकिक मंगल छे अने जप त प तथा नियम प्रमुख लोकोत्तर मंगल छे. ए ब न्नेथकी अति उत्कृष्ट मंगल ए पंच परमेष्ठी नम स्काररूप छे. केम के, ए थकी मोक्षरूप सुख नी प्राप्ति थाय छे अहीं सुधी बधा मली पद न व छे; संपदा आठ छे, केम के आठमा अने न

वमा पदनी एक संपदा गणेली छे. सर्व लघु अक्षरो एकसठ छे, गुरु अक्षरो सात छे; सर्व अक्षरो अडसठ छे. ए प्रथम मंगलीक जाणवुं.

हवे ए पंच परमेष्टीने नमस्कार करीने एओना एकशोने आठ गुणरूप मंत्रनो जाप करिये ते गुणो आ प्रमाणे छेः— बारस गुण अरिहंता सिद्धा अठेवसूरि छत्तीसं; उवज्झाया पणवीसं, साहू सगवीस अठसयं. ए गाथानो अर्थ आ प्रमाणे छेः— बारस गुण अरहंता के० अरिहंतना बार गुण; सिद्धा अठेव के० सिद्धोना आठ गुण; सूरि छत्तीसं के० आचार्यना छत्रीश गुणो उवजाया पण पणवीसं के० उपाध्यायना पचीछ गुणो; अने साहु सगवीस के० साधुना सत्यावीस गुणो, ए सर्व मलीने अठसयं के० एकशो ने आठ गुणो थाय.

श्री अरिहंतना बार गुणोनुं विवरण करेछेः- आठ प्रातिहार्य तथा चार मूलातिशय मली अरिहंतना बार गुण जाणवा. तेमां प्रथम आठ प्रा

तिहार्य आ प्रमाणेः— उपजाति वृत्तम्ः—अशोक वृक्षः सुरपुष्पवृष्टिः दिव्यध्वनिश्चामरमासनंच ॥ भामंमलं दुंदुभिरातपत्रं, सत्प्रातिहार्याणि जिनेश्वराणां ॥ १ ॥ एनो अर्थः— पहेलुं अशोकवृक्ष ते ज्यां श्री भगवान विराजमान थाय छे त्यां अशोक वृक्षनी नीचे बेशीने बार पर्षदाओने धर्म देशना दियेछे. बीजुं सुरपुष्पवृष्टि एटले जल तथा स्थलनेविषे उत्पन्न थएला जेवा श्वेत, रक्त, पीत, नील, तथा श्याम ए पांचे वर्णोना सरस सुगंधी फूलोनी देवताओए करेली वृष्टि चोफेर एक योजन सुधी पृथ्वीना ऊपर गूढणप्रमाण होयछे, त्रीजुं दिव्यध्वनि एटले भगवान ज्यारे दुध साकरथी मीठासवाला अत्यंत मधुर स्वरवडे धर्मदेशना दियेछे त्यारे देवताओ ते भगवंतना स्वरने पोतानी ध्वनिवझे अखंझ पूरेछे. चोथुं चामर एटले रत्नेकरी जडित सुवर्णनी दांझी सहित श्वेत चामरो भगवंतने विंजाय छे. पाचमुं आसन एटले अमूल्य मणिजडित सुवर्णमय सिंहासन, तेनी ऊपर बे

सीने भगवान देशना दियेछे ते सदा काल सह चारी होय छे. छठुं भामंडल एटले सूर्यना तेज थी पण अधिक प्रकाश वालुं देवकृत भामंडल भगवाननी पूठे सहचारी होयछे; सातमुं दुंदुभि एटले आकाशनेविषे कोडीगमे देवताना वाजिंत्रो दिव्यानुभावे वाजे. अने आठमुं आतपत्र एटले भगवंतना मस्तकनी ऊपर मुक्ताफलेकरी विराज मान रत्नजडित त्रण छत्रो धराय छे समवसरण नी अपेक्षाए चार जोडी चामर अने बार छत्रो होय छे ए सत् एटले प्रधान प्रातिहार्याणि एटले आ ठ महाप्रातिहार्य जिनेश्वराणं एटले श्री वीतरागने चिन्हरूपे होय छे. ए अर्हतना आठ गुणो पण कहेवाय छे तेमज चार मूलअतिशय छे ते आप्र माणेः—पहेलो अपायागमातिशय, बीजो ज्ञानाति शय, त्रीजो पूजातिशय तथा चोथो वचनातिशय.

तत्र प्रथम अपायागमातिशयनुं विवरण क रेछेः— ते बे प्रकारे छेः— एक स्वाश्रयी ने बी जो परआश्रयी तेमां स्वाश्रयी बे प्रकारे छेः—

अपाय कहेतां उपद्रव ते द्रव्य अने भाव ए बे प्रकारे छेः— तेमां द्रव्यथी जेमने सर्व रोगो क्षय थई गयाछे अने भावथी अंतरायादि अढार दोषथकी रहित थयाछे ते आ प्रमाणेः— १ दानांतराय, २ लाभांतराय; ३ वीर्यांतराय; ४ भोगतराय; ५ उपभोगांतराय, ६ हास्य, ७ रति, ८ अरति, ए भय, १० शोक, ११ जुगुप्सा एटले निंदा, १२ काम, १३ मिथ्यात्व, १४ अज्ञान, १५ निद्रा, १६ अविरति. १७ राग, १८ द्वेष, ए अढार दोषो वीतरागना क्षय थई गया छे. ए स्वाश्रयी अपायागमातिशय कह्यो; हवे पर आश्रयी आ प्रमाणेः— ज्यां भगवंत विहारकरे त्यां आसमंतातभागे सवा शो योजन सुधी प्रायेकरी १ रोग, २ वैर, ३ ऊंदर, प्रमुख, सातइति ४ मारी मरगी, ५ अतिवृष्टि, अनावृष्टि, ६ (दुर्भिक्ष), ७ पोताना सैन्यनो भय तथा परना सैन्यनो भय. एटला वाना थाय नही, ए पर आश्री अपायागमातिशय जाणवो.

बीजो ज्ञानातिशय ते आवी रीते जाणवो. नगवान केवल ज्ञाने करी लोकालोकनुं स्वरूप सर्व प्रकारे जाणे छे. सर्व प्रकारे देखे छे; कोई प्रकारे कांई नगवानथी अज्ञात रहेतुं नथी तेथी नगवान ज्ञानातिशयवंत जाणवा.

त्रीजो पूजातिशय आ प्रमाणेः– नगवंतने राजा, बलदेव, वासुदेव, चक्रवर्त्ति, नवनपति देव, व्यंतरदेव, ज्योतिष्कदेव, तथा वैमानिक देवता प्रमुख जगत्रयवासी नव्य जीवो पूजा करवानी अनिलाषा करे छे. अर्थात् श्रीतीर्थंकर सर्व पूज्य छे माटे ए त्रीजो पूजातिशय जाणवो.

चोथो वचनातिशय आम जाणवोः– नगवंतनी वाणी संस्कारादिक गुणे करी सहित होय छे. माटे मनुष्य, तिर्यंच तथा देवताउने अनुयाये एवी रीते संस्कारने पामे छे के, सर्व नव्य जीवो पोतपोतानी नाषाना अनुसारे तेनो अर्थ समजी जाय छे. जेम एक निद्दन पोतानी त्रण स्त्री सहित एकदा प्रस्तावे वनमां जतो हतो, मार्गमां एक स्त्री

ये कह्युं मुजने हरण हणीने आणी आपो. बीजी ये कह्युं मने अत्यंत तृषा लागी ठे माटे पाणी लावीआपो. त्रीजीये कह्युं के गीत गायन कही संजलावो. ए त्रणेने जिन्ने कह्युं के सरो नथी ए म एक उत्तर कह्यो. त्यारे पहेली समजी के सरो एटले बाण नथी. बीजी समजी के सरो एटले स रोवर नथी. त्रीजी समजी के सरो एटले मधुरस्व र नथी. एम एक उत्तरथी त्रणे स्त्री समजी गई. ए दृष्टांते प्रज्जुनो वचनातिशयपण जाणवो. ए जिनेंड् नी वाणीना पांत्रीश गुणो ठे ते विस्तारना जयथी लख्या नथी ए तीर्थंकरना बार गुणो थया.

हवे सिद्धना आठ गुणो विवरीने कहे ठेः–

गाथाः– 'नाणं च दंसणं चिअ, अव्वाबाहं तहे व सम्मत्तं; अक्खयठिइ अरूवी, अगुरु लहु वी रियं हवहि. ए गाथानो अर्थः– प्रथम नाणंच के० ज्ञानावरणीय कर्म क्षय थई जवाने लीधे ज्ञाननी उत्पत्ति थयाथी तेना प्रजावे लोकालोक नुं स्वरूप जे विशेष प्रकारे जाणे ठेः बीजो दंस

एांचिय के० दर्शनावरणीय कर्मनो क्षय थई ज वाथी केवल दर्शननी उत्पत्ति थवाने लीधे तेना योगे लोकालोकनुं स्वरूप नली प्रकारे देखेछे, त्री जो अव्वाबाहं के० सर्व प्रकारनी बाधा पीडा थकी रहित, एटले वेदनीय कर्म क्षय थई जवाथी नि रुपाधिक अनंत सुखनी उत्पत्ति थायछे. ते सुख आवुं छे. व्यवहारीआना सुख, राजाना सुख, ब लदेवना सुख, वासुदेवना सुख, चक्रवर्त्तिना सुख, असंख्याता नवनपति, व्यंतर, तथा ज्योतिष्क दे वोना सुख, बार देवलोकना देवताना सुख, नव ग्रैवेयकना देवताना सुख, पांच अनुत्तर विमानवा सी देव ए सर्वना सुख थकी अनंतगुण अधिक सुख सिद्धना जीवोने छे. ते सुखनो अनुनव सि द्धविना बीजा कोईने पण थई शके नही. जेम मुगो साकर खाय तेनो स्वाद पोते जाणे पण बीजाने कही शके नही. तेम सिद्धना सुखने के वल ज्ञानी जाणे छे पण ते सुख वचनातीत छे माटे मुखथी कही शके नही. चोथो तहेव सम्म

त्तं के० तेमज मोहनीय कर्मनो क्षय थईजवाने लीधे क्षायक सम्यक्त्वनी उत्पत्ति थायछे ते सिद्धनेविषे यथावस्थित होय छे. पांचमो अरकयछिइ के० आयु कर्मनो क्षय थयाथी अक्षयस्थिति थाय छे सिद्धना जीवने पर्यायवडे सादि अनंत स्थिति छे माटे अक्षय स्थिति कहेवाय छे. छगो अरूवी के० रूप थकी रहित छे उपलक्षणथी वर्ण, गंध, रस, तथा फरस थकी पण रहित जाणिये. एटले सिद्ध पांच वर्णमाना एके वर्णे कहेवाय नही; बे गंधमां कोई गंधनो सिद्धमां संजव नथी; पांच रसमां एके रस सिद्धनेविषे न होय; अने आठ स्पर्शमांनो एके स्पर्श सिद्धने न होय. एटले एउनो तादात्म्य संबंध सिद्धनेविषे नही होवाने लीधे ए अरूपी गुण कह्यो छे. सातमो अगुरु लघु के० सिद्ध कार्मिक सन्मान तथा सत्कार रहित होय छे, एटले विषयता संबंधे करी स्वाजाविक पूजा सत्कारे करी सहित छे पण कृतकृत्य थया छे माटे तादृश वीर्यने फोरवे नही. अने

आठमो वीरियं के० सिद्धने स्वाभाविक अनंत ब
ल होय छे ते बल एवुं के लोकने अलोकमां त
था अलोकने लोकमां करी नाखे पण सिद्ध ते
बलने फोरवे नही. ए आठ सिद्धना गुण थया.

आचार्यना छत्रीश गुणो आवी रीतेः— पंचें
दिय संवरणो, 'तह नव विह बंभचेर गुत्तिधरो;
चउ विह कसाय मुक्को, इअ अठारस गुणेहि सं
जुत्तो ॥१॥पंच महव्वय जुत्तो, पंचविहायार पाल
ण समत्थो; पंच समिउ तिगुत्तो, छत्तीस गुणे
हि गुरु मज्झ. ॥ २ ॥ अर्थः— पंचेंदिय संवरणो
के० स्पर्शनेंद्रिय प्रमुख पांच इंद्रियो, तेउना स्प
र्शादिक मुख्य पांच विषयो तथा ते विषयोना
अवांतर त्रेवीश भेदो थाय तेमां जे पोताने अ
नुकूल होय तेउनी ऊपर राग न धरे अने जे प्र
तिकूल होय तेउनी ऊपर द्वेष न करे ते माटे
पंचेंद्रियना संवरयुक्त एम कह्युं. एम प्रत्येक इंद्रिय
ना विषयनेविषे राग तथा द्वेषना अभावे ए प्र
माणे पांचे इंद्रियना विषयोविषे करतां पांच गु

णो थया. तह के० तथा नवविह बंभचेर के० नव प्रकारनी ब्रह्मचर्यनी गुत्तिधरो के० गुप्तिनेधारण करनार. तेमां प्रथम पशु नपुंसक तथा स्त्री थकी रहित स्थानकनेविषे रहे; बीजुं स्त्रीनी कथा वार्त्ता प्रीतियुक्त करे नही; त्रीजुं जे आसने स्त्री बेठी होय ते ठेकाणे बे घमी बेशे नही; चोथुं स्त्रीना अंगोपांग रागसहित निरखवा नही. पांचमुं जीत प्रमुखने आंतरे स्त्री पुरुष बन्ने सूतां होय अथवा कामविषे वातो करतां होय त्यां बेशी न रहेवुं. ठठुं पूर्वावस्थामां स्त्रीनी साथे कामक्रीमा कीधी होय तेनुं स्मरण न करवुं. सातमुं सरसस्निग्ध आहार न लेवुं; आठमुं निरस आहार पण अति मात्राए वजन उपरांत न लेवुं; नवमुं शरीरनी शोजा विजूषा न करवी. ए नव प्रकारे ब्रह्मचर्य मन वचन कायारूप त्रिकरण शुद्धपणे पाले. ए नव गुणो अने प्रथम कहेला पांच मली चौद गुणो थया. तथा चार कषायो ते चारित्रना घातिक परिणाम विशेष जाणवा. चार कषा

य ते क्रोध, मान, माया, ने लोभ ए जाणवा. एओना भेदोनुं विस्तारे करी विवरण कर्युं न थी. ए चार मली अढार थया. इय अढार स गुणेहि संजुत्तो के० ए अढार गुणोए करी संयुक्त जाणवा. हवे बीजा अढार कहे छेः—पंच महव्वय जुत्तो के० पांच महाव्रते करी युक्त. ते मां १ छ निकायना जीवोने पोते हणे नही, बीजा नीपाशे हणावे नही तथा हणनाराने अनुमोदना दिये नही ते प्रथम महाव्रत. २ क्रोध, लोभ, भ य, तथा हास्यादिकथी द्रव्य क्षेत्र काल तथा भा व संबंधे मन वचन तथा कायाए करी पोते जु ठुं बोले नही, बीजाने जुठुं बोलावे नही तथा जुठुं बोलनारने अनुमोदे नही ए बीजुं महाव्र त. ३ पारकुं अदत्त पोते तृण मात्र लिये नही, परने लेवरावे नही; तथा लेताने अनुमोदे नही. ते तीर्थंकर अदत्त, गुरुअदत्त, स्वामी अदत्त तथा जीव अदत्त ए चार प्रकारनो अदत्त छे ते लिये नही लेवरावे नही तथा लेताने अनुमोदे नही ते

त्रीजुं महाव्रत ४ अढार भेदे ब्रह्मचर्य पाले. ते आ प्रमाणेः—औदारिक काम ते मनुष्य तथा तिर्यंचनी स्त्री संबंधी मन वचन तथा कायाए करी सेवना करे नही, परने करावे नही तथा करताने अनुमोदना न दिये. एमज नव भेद वैक्रियना ते देवताउनी स्त्री विषे जाणी लेवा. ए अढार भेदे ब्रह्मचर्य पाले अने कोई प्रकारनी स्त्री जातनी साथे आलाप, संलाप, तथा अति परिचय न करे केमके एम कर्याथी व्रतनो भंग थायछे अने बी जो कोई देखे तो जिनशासननी हीलना थाय. अने घणो द्वेषी होयतो गाममां बकवाद करे माटे ए सर्वनो त्याग करवो ते चोथुं महा व्रत जांणवुं ५ नव विध परिग्रह तथा धातुमात्र मूर्छारूपे राखे नही. धर्म सहायक उपकरणोथी अधिक उपकरणो राखे नही. बीजाने रखावे नही. ने राखताने अनुमोदन दिये नही; ए पांचमुं महाव्रत जाणवुं. ए पांच अने पेला अढार मली त्रेवीश गुणो थया. हवे पंचविहायार पालण सम

हो. के० पांच प्रकारनो आचार पालवाने समर्थ होय. तेमां प्रथम ज्ञानाचार एटले ज्ञान पोते जाणे, परने जणावे; पोते लखे, बीजानी पाशेथी लखावे. पोते ज्ञानना भंमारा करे, परनी पाशेथी करावे, अने जे ज्ञाननुं पठन प्रमुख सारो उपयोग करतो होय. तेनी ऊपर राग धरे एम काले विणए इत्यादि गाथावडे कह्युं छे ते जाणी लेवुं. बीजुं दर्शनाचार ते पोते सम्यक्त्व पाले बीजाने सम्यक्त्व पमाडे अने सम्यक्त्वथी पडतो होय तेने स्थिर करे ए निस्संकिय निक्कंखिय इत्यादिक बे गाथायें करी जाणवुं. त्रीजुं चारित्राचार ते पोते चारित्र पाले बीजाने चारित्र पलावे अ ने चारित्रने अनुमोदे ते पणिहाण जोग जुत्तो इत्यादिक बे गाथाए करी समजवो. चोथुं तपाचार ते पोते बार भेदे तप करे बीजाने तप करावे बारभेदना तपने अनुमोदे ते अणसण मूणो अरियाए गाथावडे जाणवो. अने पांचमुं वीर्याचार ते पंचाचारनेविषे शक्ति फोरवे पडिकमणुं पडिलेह

ण धर्मानुष्ठाननेविषे बलवीर्य गोपवे नही ए अ
णिगूहिअ बल वीरिउ ए गाथार्थकी समजी ले
वुं. ए पांच आचाररूप पांच गुणो अने ऊपर
कहेला त्रेवीश मली अठ्यावीश थया. पंच स
मिउ के० पांच समितिउ एटले ईर्यासमिति,
नाषासमिति, एषणा समिति, आदाननिक्षेपण
समिति, तथा पारिष्ठापनिका समिति ए पांच म
ली तेत्रीश थया. ति गुत्तो के० त्रण गुप्तिउ एटले
देशथी अथवा सर्वथी जे योगनी निवृत्ति तेने गु
प्ति कहिये. ते त्रण प्रकारे ठेः— मनोगुप्ति, वचन
गुप्ति तथा कायगुप्ति. तेमां वली मनोगुप्ति त्रण
प्रकारे ठेः—असत्कल्पना वियोजिनी, समता ना
विनी, तथा आत्मारामता. तेमां आर्त्त तथा रौ
द्र ध्यानने अनुयायी शत्रु तथा रोगादिक माठी
वस्तुनी अपेक्षाए हिंसादिक आरंन संबंधी जे मनो
योगनी निवृत्ति ते असत्कल्पना वियोजनी मनो
गुप्ति कहिये. ए गुप्ति प्रसन्नचंद्रादिक साधु
नी पठे अशुन ध्यान तथा अशुन नावना

थी मनने निवर्त्तविवाने प्रस्तावे थाय छे बीजी सिद्धांतने अनुसारे धर्म ध्यानना अनुयाये ना वनाए करी सहित परलोक साधक एवो समता परिणामरूप जे मनोयोगनी निवृत्ति ते समता नाविनी मनोगुप्ति कहिये ए गुप्तिनो अवकाश शु न नावना तथा शुन ध्यानना अनिमुख काले हो य. त्रीजी शैलेशीकरण काले सकल मनोयोगनी निवृत्ति ते आत्मारामता मनोगुप्ति जाणवी. हवे बीजी वचन गुप्ति बे नेदे छे:— एक मौनाव लंबिनी ने बीजी वाग्नियमिनी. तेमां पहेली सं ज्ञा होकारो, खुंकारो, पाषाण तथा काष्टनुं फेक वुं, नेत्र पल्लवी तथा करपल्लवी प्रमुखने छांमवे करी मौन करवुं, अथवा सकल नाषायोगनुं रूंध वुं ते मौनावलंबिनी नाषागुप्ति कहिये ए गुप्ति ध्यान तथा पूजाना काले होय छे. बीजी नणवुं नणाववुं, पूछवुं, प्रश्ननो उत्तर देवो, धर्मोपदेश देवो, परावर्त्तना प्रमुखने काले यतना पूर्वक लो कने तथा शास्त्रने अनुसारे मुखे वस्त्रादिक देईने

बोलतां सावद्य योगनी निवृत्ति ते वाग्नियमिनी भाषागुप्ति कहिये. त्रीजी कायगुप्ति ते बे भेदे छे:— चेष्टा निवृत्तिरूप तथा यथासूत्रचेष्टा नियमिनी. तेमां प्रथम कायोत्सर्गावस्थाए काययोगनी स्थिरता अथवा सकल काय योगनुं रूंधवुं ते चेष्टा निवृत्ति रूप कायगुप्ति कहिये; बीजी शास्त्रना अनुसारे सूवुं, बेशवुं, मूकवुं, लेवुं, जवुं आववुं, ऊलुं रहेवुं. इत्यादिक गमे कायाए करी पोताने छंदे प्रवर्त्ततां चेष्टाथी निवर्त्तै तेने यथासूत्र चेष्टा नियमिनी कायगुप्ति कहिये. इहां गुप्तिने काले जे शुद्धोपयोग ते भावगुप्ति कहिये, ए त्रण गुप्तिउ अने प्रथमना तेत्रीश मली छत्तीस गुणेहि गुरुमज्झ के० ए छत्रीश गुणे करीसहित गुरु मऊप्रते थाओ.

उपाध्यायना पचीस गुणो कहे छे:— अग्यार अंग तथा बार उपांग ए मली त्रेवीसने भणे तथा भणावे; अने चरण सित्तरी, तथा करण सित्तरी शुद्ध पाले ए सर्व मली पचीस गुणो जाणवा

साधुना सत्यावीश गुणो कहे छे:— छव्रय छका

य रक्का, पंचिंदियलोहनिग्गहो खंती; नावविसोहि पडिले,हणाइ करणे विसुद्धीय. ॥१॥ संयम जोए जुत्तो, अकुसल मण वयण काय संरोहो; सीयाइ पीड सहणं, मरणं उवसग्ग सहणं च. ॥ २ ॥ एनो अर्थः— छव्वय के० पांच महाव्रत तथा छठुं रात्रिनोजनविरमण ए छ व्रत पाले; ६ छकायरक्का के० पोताना आत्मानी पठे छकायनी रक्षा करे; १२ पंचिंदियलोहनिग्गह के० पांच इंड्रियो तथा छठा लोननो निग्रह करे; १७ खंती के० क्षमा करे; १८ नावविसोहि के० शुन परिणामनी वृद्धि करे, २० पडिलेहणाइ करणे विसुद्धी य के० बाह्य उपकरणादिकनी पडिलेहण उपयोग सहित करे; २१ संयम जोएजुत्तो के० संयमनायोग तेणेकरी सहित, एटले संयमने अनुकूल समिति गुप्त्यादिरूप योगने आदरे; २२ अकुसल मण वयण काय संरोहो के० अविवेक विकथा निड्रादिक प्रमाद योगने छांमे; एटले माठे ठामे मन वचन तथा का

या प्रवर्त्तता होय तेउने रोकी राखे. २५ सीआ ड़ पीड सहणं के० शीतादिक बावीस पीडा एट ले परिसहने सहे, २६ मरणं उवस्सग्ग सहणं च के० मरणांत उपसर्ग सहे पण धैर्य मूके नही. २७ ए साधुना सत्यावीश गुणो जाणवा. ए सर्व पां च परमेष्टीना मलीने एकशो ने आठ गुणो थया.

हवे श्री नवकारनो महिमा कहे बे:- गाथा

नवकार इक्क अरकर, पावं फेडेइ सत्त अयराइं; प
न्नासं च पएणं, सागर पणसय मग्गेणं ॥ १ ॥
जो गुणइ लरक मेगं, पूएइ विहीइं जिण नमुक्कारं;
तिछयर नाम गोअं, सो बंधइ नछि संदेहो ॥ २॥
अठेव य अठसया, अठसहस्सं च अठकोडीओ;
जो गुणइ नत्तिजुत्तो, सो पावइ सासयं ठाणं ॥ ३॥

॥ अथ पंचिंदिय. ॥

पंचिंदियसंवरणो, तह नव विह बं
नचेर गुत्ति धरो । चउ विह कसा
य मुक्को, इय अगारस गुणेहि सं

युत्तो॥१॥पंच महव्वय जुत्तो, पंच वि
हायार पालण समछो। पंच समिउ
तिगुत्तो, छत्तीस गुणेहि गुरु मज्झ॥२॥

एनो अर्थ उपर पंचपरमेष्ठीना अर्थना विवरण प्रसंगे यथानुक्रमे एज गाथाओना वर्णनरूपे कह्यो छे, माटे अहीं फरी अर्थ करता नथी. एमां पद आठ छे गाथा बे छे नारी अक्षरो दश छे; हलवा अक्षर सित्तेर छे सर्वमली एशी अक्षरो छे एम जाणवुं.

॥ अथ खमासमण. ॥

इछामि खमासमणो वंदिउं जावणि
ज्जाए निसिहिआए मछएण वंदामि॥३

अर्थः– इछामि के० इछुं (वांछुं) खमासमणो के० हे क्षमाश्रमण, एटले क्षमासहित साधुजी तुमनेवंदिउं के० वांदवाने हुं जावणिज्जाए के० शरीरनी शक्तिसहित निसिहिआय के० पाप व्यापारनो निषेध करीने एटलुं उना छतां कहीने पछी उना छतां निचो वली बे जानु बे हाथ अने ल

लाट ए पंचांगेकरी तमने मह्णएण वंदामि के० मस्तके करी वांडुबुं. इहां जावणिज्ञायनो अर्थ यावत् निर्ज्जरा एटले यावत् अशुज कर्मोनी निर्ज्जरा थवाने अर्थे एवो अर्थ बतां टबानी त्रण प्रतोमां शक्तियेकरी सहित लख्युं बे माटे वांचनारे विचारी अर्थ कहेवो. एमां त्रण गुरु तथा पचीश लघु ए सर्व मली अठ्यावीश अक्षरो बे. पबी फरी उनो थई बे हाथ जोडी कहे.

॥ अथ सुगुरुने साता सुख पृछा. ॥

इच्छाकार, सुहराइ, सुहदेवसि, सुखतप, शरीर निराबाध, सुख संयम जात्रा, निरवहोगे जी, स्वामी साता बे जी, जात पाणीनो लाज देजोजी॥४॥

अर्थः— इच्छाकारके० इच्छा करुंबुं सुहराइके० सुखेरात्री सुहदेवसिके० सुखेदिवस सुखतपके० सुखेतपस्या शरीरनिराबाधके० शरीरसंबंधी रोग रहित पणे सुखसंयमयात्राके० सुखे संयमयात्रा

ने निरवद्योछोजी एटले संयमयात्रामां प्रवर्त्तोछो जी स्वामिजीसाताछेजी एवी सुखसाता पूछीने पछी

॥ अथ इरिया विहिया. ॥

इछाकारेण संदिसह भगवन् इरिया विहियं,पडिक्कमामि, इछं,इछामि,प डिक्कमिउं ॥ १ ॥ इरिया वहियाए, विराहणाए, गमणागमणे, पाणक्क मणे, बीअक्कमणे, हरियक्कमणे, उसाउतिंग पणग दग, मट्टी मक्कडा संताणा, संकमणे, जे मे जीवा वि राहिया, एगिंदिआ, बेइंदिया, तेइं दिआ, चउरिंदिआ, पंचिंदिआ, अभिहआ, वत्तिआ, लेसिआ, संघाइआ, संघट्टिआ, परिआवि आ,किलामिआ, उद्दविआ,ठाणाउ

ठाणं, संकामिआ, जीविआउ, वव
रोविआ, तस्स मिछामि दुक्कडं. ॥५॥

अर्थः– इछा कारेण के० तमारी इछा पूर्वक एटले मारा बलात्कारे करी नही, तथा दाक्षिण पणाथी नही पण जो तमारी इछा होय तो न गवन् के० हे ज्ञानवंत संदिसह के० आदेश द्यो

इरिया पथिक एटले चालवानो मार्ग तेहनें विषे थता पापथी पडिक्कमामि एटले निवृत्तवानो जे साधु तथा श्रावकनो आचार छे तेथी हुं निवृ त्तुं त्यारे गुरु कहे के, पडिक्कमेह के० निवर्त्तो पाप टालो त्यारे शिष्य कहे के, इछं एटले जेम तमे आ ज्ञा दीधी छे तेमज हुं इछामि के० वाछुंछुं पडिक्क मिउ के० पापथकी पडिक्कमवा एटले निवर्त्तवा वा छुंछुं ए अभ्युपगम संपदा पडिकमवाने अति उज मालथयो तेमाटे ए पदनी पहेली संपदा थई.

इरिया वहियाए एटले चालवाना मार्गमां तथा साधु अने श्रावकना आचारनेविषे जे कांई जीवो

नी विराहणाएके० विराधना थई तेहथी पडिक
मवाने वांछयो ए बे पदनी बीजी संपदा जाणवी.
गमण एटले अन्य स्थानके जातां अने आग
मणे एटले पाछा आवतां जे विराधना लागी होय
एम विशेष न कह्युं ते माटे ए एक पदनी संप
दा त्रीजी ते सामान्य हेतु संपदा जाणवी.
पाण एटले बेंद्रिय, तेंद्रिय, अने चउरिंद्रिय जी
वोने क्कमणे के० आक्रमण एटले पगेकरी चांप
वाथी; तथा बीय के० बीज एटले जे धान्य वा
व्युं छतां ऊगी आवे तेने क्कमणे के० पगे करी चां
पवाथी; हरियक्कमणे के० हरित एटले नीलव
र्णवाली जे वनस्पति तेने पगे करी चांपवाथी; ए
बे पदे करी सर्व वनस्पतिने जीवपणुं कह्युं. ते
जीवनां लक्षण सर्व एउमां दीठामां आवेछे ते
आ प्रमाणेः—मनुष्यना शरीरनीपेठे वनस्पतिनुं श
रीर कोमल, तरुण, तथा वृद्धता प्रमुख सहित
दीठामां आवे छे. तथा जेम हाथ तथा पगादिक
अवयवोए करी मनुष्यनो देह वृद्धिने पामे छे ते

म शाखादिक अवयवोएकरी वृक्षनी वृद्धि थाय छे. तथा जेम मनुष्यादिक प्राणीउंमां जाग्रत तथा निद्रा अवस्था दीगामां आवे छे तेम पुंनाग तथा आमली प्रमुख वृक्ष, चंद्रविकासिक तथा सूर्यविकासिकादिक कमल, अने अंबाडी पुष्पादिकमां निद्रा तथा जाग्रत् अवस्था दीगामां आवेछे तथा लोभ, हर्ष, लज्जा, भय, मैथुन, क्रोध मान, माया, आहार, ओघसंज्ञा, इत्यादिक सर्वे विकार वृक्षोने पण मनुष्यनी पेठे थता दीगामां आवे छे. जेम के, श्वेत आकडानुं वृक्ष पलाशादिक, वृक्ष भूमिगत निधानने पोताना मूलने जडेकरी वींटी लिये छे ते लोभनो भाव जाणवो; वर्षाकालनेविषे मेघनी गर्जना सांभलीने शीतल वायुना फरसेकरी अंकुर उत्पन्न थाय छे ते हर्षनो भाव जाणवो. लज्जालू वेल मनुष्यना हाथ विगेरे अंगनास्पर्शथी संकोचाई जायछे; ए लज्जा तथा भयनो भाव कहेवाय; अशोकवृक्ष बकुलवृक्ष तथा तिलकवृक्षादिक नवयौवनस्वरूप

सालंकार कामिनीना पगनी पान्हिना प्रहारेकरी; मुखनुं तांबूल गंधवाथी; सस्नेहालिंगन वडे तथा हावभाव कटाक्षेकरी तत्काल फलता दीसे छे; ए मैथुन संज्ञा जाणवी. कोकनदवृक्षनो कंद मनुष्यनो पग लाग्याथी हुंकारा मूकेछे; ए क्रोधनो भाव जाणवो. रुदंती वेल, अहो हुं छतां आ लोको दुःखी कां थायछे? एवा अहंकारेकरी निरंतर अश्रुपात करे छे केम के, तेनाथी सुवर्णनी सिद्धि थाय छे; माटे ए माननो भाव जाणवो. घणु करीने बधी वेलीउ पोतपोतानां फलोने पांदडांएकरी ढांकी लियेछे ए मायानो भाव जाणवो. तथा भूमिका जलादिक आहारना योगे वृक्षोनी वृद्धि थायछे; अने ते विना कुमलाई जायछे. मनुष्यनी पठे नागरवेलि प्रमुखने निलवट गोमय तथा दुग्धादिकना दोहलाउपजेछे ते परिपूर्ण थया पछी पत्र, फल, फूल, तथा रसनी वृद्धि थाय छे; ए पण आहारसंज्ञा जाणवी. वृक्षने पांडु, गांव, सोजो तथा दुर्बलपणु प्रमुख रोगेकरी

फूल, फल, पान, त्वचानेविकार दीसे ठे. सर्व वनस्पतिना आउखा पोत पोताना नियतज होय ठे; इष्ट तथा अनिष्टआहारनी प्राप्तिएकरी वृक्षो अपुष्ट तथा पुष्ट थायठे;वेलीउ मार्गने मूकीने वृक्षनी ऊपरज चडेठे; ए उघसंज्ञानो नाव जाणवो इत्यादिक युक्तिएकरी श्री आचारांगना पहेलाश्रुतस्कंधे पहेला अध्ययनमां सविस्तर जीवपणुं थाप्युं ठे. अहीं कोई पूठे के, जो वनस्पति जीवरूप होय तो ठेदन तथा नेदनप्रमुख करतां कां रोदन करता नथी अथवा नाशी जता नथी? एनो उत्तर ए ठे के, मनुष्यनी पेठे वनस्पतिने मुख, पग, तथा हाथ प्रमुख अवयवोनो अनाव ठे. अने स्थावर कर्मना उदयथी नासवाने बनतुं नथी. तो पण तेउने अव्यक्त वेदना होयज ठे. जेम कोई एक आंधलो, बहेरो, बोबमो, टुंटो,पांगलो, तथा सर्व अंगोपांग रहित पुरुष होय तेने कोई ताडना प्रमुख करें तो तेथी ते सहन थाय नही पण मुखादिकना अनावे रोई शके नही तथापि तेने वे

दना तो थायज छे. ते माटे कोई मोटा अवश्य प्रयोजन विना वनस्पतिनी विराधना करवी नही

तथा उसा एटले सर्व त्रेह ते गार एथी सूक्ष्म अप्पकायनु पण ग्रहण करवुं तेने चांपवे करी तथा उत्तिंग एटले जे गईनाकारजीवो भूमिनेविषे वृताकार घर करी रहे जेनुं गुईया एवुं नाम होय छे ते जाणवा, तथा उत्तिंग शब्दकरी कीमीउनां नागरां पण जाणवां. पणग एटले पांच वर्णना नीलफूलने तथा दग एटले पाणीने अने मट्टी के० माटीने, मक्कडा एटले कोलीयावडानी जाल ए सर्व जातीना जीवोने संताणा संकमणे एटले संत्राणा संक्रमण ते पगेकरी पील्याथी अथवा चांप्याथी विराधना थायछे. ए इत्वर हेतु संपदा चोथी जाणवी; पाणक्कमणे बीयक्कमणे एम विशेषेकह्युं; ते माटे ए चार पदनी विशेषसंपदा जाणवी.

जे मे जीवाविराहिआ के० घणुं शुं कहेवुं! एकज पदेकरी सर्व जीवोनी विराधना कहिये छैए: एटले जे कोए जीव विराध्या होय ए संग्रहसंपदा

पांचमी, एक पदनी जाणवी इहां जीव विराध्या ए म कह्युं पण एगिंदि बेंदि एम विस्तार न कह्यो माटे ए संग्रह संपदा जाणवी.

हवे जे जीव विराध्या ते कहे छे. एगिंदिआ के० जेने शरीर रूप एकज इंद्रिय होय ते पृथ्वी, पाणी, तेउ, वाउ तथा वनस्पतिकाय जाणीये; बेइंदिआ के० शरीर अने मुख ए बेइंद्रिउ जेने होय, एवा शंख तथा जलो प्रमुख जीवो जाणवा; तेइंदिआ एटले जेने शरीर, मुख तथा नाशिका ए त्रण इंद्रियो होय ते कीडी तथा माकण प्रमुख जीवो जाणवा. चउरिंदिआ एटले शरीर, मुख, नासिका तथा आंख ए चार इंद्रियो जेने होय ते एवा नमरा प्रमुखजीव जाणवा. पंचिंदिआ एटले शरीर, मुख, नाशिका, आंख, अने कान ए पांच इंद्रिउ जे जीवोने होय ते एवा देवता मनुष्य नारकी तथा तिर्यंच जाणवा. अहीं एगेंदिअ बेइंदिअ, तेइंदिअ एम जीवनां नाम कह्यां तेथी पांच पदनी नाम संपदा छठी जाणवी;

हवे ए जीव केम विराध्या ते कहेछेः—अभिह या एटले सामा आवता हण्या; तथा ऊपाडी नाख्या; वत्तिआ एटले पुंजीने एकठा कीधा; ले सिआ एटले भूमि तथा भीत साथे घस्या; संघा इआ एटले मांहोमांहे शरीरने मेळवेकरी पिंड कीधा; एकठा मेळव्या. संघट्टिआ एटले थोडे फ रसवेकरी दूहव्या शरीर फरस्या, हाथे करी घस्या. परिआविआ एटले सर्व प्रकारे पीड्या परिताप उपजाव्या; चांपीमाल्या. किलामिआ एटले गाढी किलामणा उपजावी निस्तेज कीधा; मृतप्राय कीधा; उद्दविआ एटले उपद्रव पमाड्या अथ वा त्रास प्रमाड्या; ठाणाउठाणं एटले एक स्था नकथी उपाडीने बीजे स्थानके संकामिआ के० संक्रमाव्या अथवा मूक्या; जीविआओ ववरोवि आ एटले जीवितव्यथकी विपरीत किधा; चूका व्या अथवा माख्या इत्यादिके करी जे विराधना थइ होय. तस्स मिछामि दुःक्कडं एटले तेनुं दु ष्कृत जे पाप ते मारुं मन वचन कायाए करी

मिथ्या एटले निष्फल होजो. एमां अनिह्या इ त्यादिक विराधनानां नाम दीधां तेमाटे ए अग्यार पदनी विराधना संपदा सातमी थई.

हवे एनी विशेष शुद्धिने अर्थे काउसग्ग करवा वांछतो थको तस्स उत्तरि कहे छे ॥

॥ अथ तस्सउत्तरी ॥

तस्स उत्तरी करणेणं, पायछित्त करणेणं, विसोही करणेणं, विसल्ली करणेणं, पावाणं कम्माणं, निग्घायणछाए, ठामि काउसग्गं ॥ ६ ॥

अर्थः—तस्स उत्तरी करणेणं एटले जे पाप पाछल आलोव्यो पडिक्कम्यो तेने उत्तरीकरणेणं के० तेनी विशेष शुद्धि करवा सारु काउसग्ग करुं छुं ते शुद्धि शाथी थाय ते कहे छे. पायछित्त करणेणं एटले गुरुपासे प्रायश्चित्त कर्याथी गुरुये दीधो जे आलोयणानो तप ते करिये तेने प्रायश्चित कहियें अने काउस्सग ते पण अंतरंग तप छे ते मा

टे काउस्सगने करवे करीने आत्मा पापरहित थाय, तथा विसोही करणेणं एटले विशोधी कर वाथी एटले पापरूप मलने टालवाथी; विसल्ली करणेणं एटले माया शल्य, नियाण शल्य, अने मिथ्यात्व शल्य ए अंतरंग त्रण शल्यने टालवा थकी अथवा एथी रहित थवा माटे; काउसग्ग करुं बुं; पावाणं कम्माणं एटले संसार हेतु ज्ञा नावरणी आदिक जे पाप कर्मो बे, तेउने निघा यणठाए एटले निर्घातन अथवा फेम्नवाने अर्थे ठामिकाउसग्गं एटले एक ठामे रही काउसग्ग करुं. ए पमिकमण संपदा आठमी थई तस्स उत्त रीकरणेणं इत्यादिकमां पमिकमवाना शब्दो कह्या तेमाटे ए ब पदनी संपदा आठमी बे ए सूत्रोनो गद्य पाठ बे, गाथा बंध नथी. एमां संपदा आठ, पद बत्रीश, गुरु चोवीश लघु एकशो ने पचोतेर, सर्व मली एक शो नवाणु अक्षरो बे.

ए इरियावही मन सुद्धे पमिकमतां अढार ला ख चोवीश हजार एक शो ने वीश मिछामिडुक्क

डं देवाय ढे; त्यां प्रथम पांच शो ने त्रेशठ स्था नके जीव उपजे ढे ते नेदोनुं विवरण करे ढेः— पृथ्वीकाय, अपकाय, तेउकाय तथा वाउकाय. ए चारने सूक्ष्म तथा बादर करतां आठ नेद थाय अने वनस्पतिकायना त्रण नेद ढेः—एक सूक्ष्म निगोद रूप तथा बे प्रकारनी बादर एक प्रत्येक ने बीजी साधारण. ए पांच स्थावरना मळीने अग्यार नेद थया; तथा बेइंड्रिय तेइंड्रिय ने चउरिंड्रिय ए विकलेंड्रिय कहेवाय ढे. ए समुर्ढमज होय ढे. ए त्रण पेला अग्यारनी साथे मेळवीए एटले चौद नेद थाय; ते चउदपर्याप्ता तथा चउद अपर्याप्ता मळी अठावीश नेद थाय. हवे पंचेंड्रिय तिर्यच ना दश नेद कहेढेः— तेमां सर्व प्रकारना मत्स्यादि जळचरनो एक नेद, थळचरना त्रण नेद तेमां एक घोडा प्रमुख चतुपाद; आशीविष प्रमुख उर परि सर्प, अने गोह प्रमुख नुजपरिसर्प ए थळ चरना त्रण नेद अने चार प्रकारना खेचरनो एक नेद ए मळीने ए पांच गर्नज अने पांच स

मुर्छम मली दश जेद थाय. ए दशने पर्याप्ता तथा अपर्याप्ता गणीए त्यारे वीश जेद थाय. ए वीशमां पेला अग्यावीश मेलवीए त्यारे अडताली श थाय. ए तिर्यंचना जेद जाणवा. हवे नारकीना जेद, रत्नप्रजा, शर्कराप्रजा, वालुकप्रजा, पंकप्रजा, धूमप्रजा, तमप्रजा, तथा तमतमप्रजा, ए सात नरकना नारकी पर्याप्ता तथा अपर्याप्ता मली चौद जेद थाय; तेमां पाळला अडतालीश मेलीए त्यारे बासठ थाय. हवे मनुष्यना जेदआ प्रमाणेः— पांच जरत, पांच ऐरवत, तथा पांच महाविदेह ए कर्मजूमिना पंदर जेद; पांच हैमवंत, पांच हिरण्यवत्, पांच हरिवर्ष, पांच रम्यक, पांच देवकुरु तथा पांच उत्तर कुरु ए अकर्मजूमिना त्रीशजेद; अने ठपन्न अंतरद्वीपो कहेवाय ठे. ए ठपन्ननी साथे पेला कर्मजूमिनां पंदर तथा अकर्मजूमिना त्रीश मेलवीए त्यारे एकशो ने एक जेद मनुष्य जातिना थाय. एमां गर्जज मनुष्यना पर्याप्ता तथा अपर्याप्ता मली बशो ने बे जेद

थाय अने तेनी साथे एकशोने एक समुर्छम म
नुष्यना नेद मेळवीए त्यारे त्रण शेने त्रण नेद
थाय. अने बासठ प्रथम तिर्यंचना कह्या ते सर्व
एकठा कर्याथी त्रण शेने पांसठ नेद थाय.

ह्वे देवताना एक शो ने अठाणु नेद कहि
ये वैए:— प्रथम परमाधामीना पंदर, दश नुवन
पति; आठ व्यंतर, आठ वाण व्यंतर; दश ज्यो
तिषी तेमां पांच चर ने पांच स्थिर जाणवा. त्र
ण किल्विषिया, दश तिर्यक्जृंनक, नव लोकांतिक,
बार देव लोकना, नव ग्रैवेयकना, पांच अनुत्तर
वेमानना ए सर्वमळीने नवाणु थया; ते पर्याप्ता
तथा अपर्याप्ता ए बे मळी एक शो ने अठाणु
नेद थाय. ते पाछला त्रण शो ने पांसठमां नेळीए
त्यारे पांच शो ने त्रेसठ सर्व जीवोना उत्पत्ति
स्थान थाय. तेने अनिह्या इत्यादिक दश पद
वडे दशगुणाकार करिये त्यारे पांचह्जार छ शे
ने त्रीश थाय; ते वळी रागने द्वेषथी बमणा क
रिये त्यारे अग्यार ह्जार ब शे ने साठ थाय;

ते मन वचन ने कायाए करी त्रण गुणा करिये त्यारे तेत्रीश हजार सात शे ने ऐसी थाय; ते करवा करावबा तथा अनुमोदनथी त्रण गुणा करिये त्यारे एक लाख एक हजार त्रण शे ने चालीश थाय. ते अतीत अनागत तथा वर्त्तमान काले करी त्रण गुणा करिये त्यारे त्रण लाख चार हजार ने वीश थाय. ते अरिहंतनी साखे सिद्धनी साखे, साधुनी साखे, देवनी साखे गुरुनी साखे तथा आत्मानी साखे ए छनी साथे छ गुणा करिये त्यारे अढार लाख चोवीश हजार एक शो ने वीश मिछामि डुक्कड थाय. एवी रीते जीवने खमत खामणां कीजे इरियावही पडिकमतां शुभ ध्याने करी अनेक घोर पाप विलय जाय.

हवे पाछल कह्युं जे एकठामे काउसग्ग करुं ए पदेकरी बीजो शरीरनो कोईपण व्यापार करवाथी प्रतिज्ञानो भंग थाय; ते माटे काउसग्गमां नीचें कहेला आगार मोकला राख्याछे ए आगारे करी काउसग्गनो भंग थाय नही ते कहे छे.

॥ अथ अन्नब उससिएणं. ॥

अन्नब उससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंनाइएणं, उड्डुएणं, वायनीसग्गेणं, नमलिएपित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेल संचालेहिं, सुहुमेहिंदिठि संचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं, अन्नगोअविराहिउ, हुज्जिमे काउस्सग्गो, जावअरिहंताणं, नगवंताणं, नमुक्कारेणं, नपारेमि, तावकायं, ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि,॥१॥

अर्थः—अन्नब उससिएणं के० मुखे नासिकाए उंचो श्वासलेतां महारो काउस्सग्ग अन्यथा नथाय एटले नांगे नही. नीससिएणं के० नीचोस्वास मूकतां, खासिएणं के० उदरसआवे, छीएणं के० छीक आवे, जंनाइएणं के० बगासुंआवे, उड्डुएणं के०

उम्हकार आवे, वायनिसग्गेणंके० अधो द्वारे वायुने निसरवे, नमलिए के० भ्रमरीआवे, फेरआवे, पित्त मुछाएके० पित्तने प्रकोपे मूर्छाआवे, एटलां वानां थयेथी काउस्सग्ग न नांगे; इहां अन्नछउससिएणं थी आंहीसुधीमां एकेका आगारनां नाम दीधां ते माटे ए नवपदनी प्रथम आगारसंपदा थई.

सुहुमेहिंअंगसंचालेहिं के० सुक्ष्मशरीरने हलाव वेकरी सीतादिक वेदनाए कांटाप्रमुखे काउस्सग्ग न नांगे, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिंके० सुक्ष्मश्लेष्म चलाववे कफगलवादिके करी काउस्सग्ग न नांगे सुहुमेहिंदिठ्ठिसंचालेहिंके० सूक्ष्मदृष्टीचलाववे करी मेषोन्मेषादिके करी काउसग्ग न नांगे एमां सुहु मेहिं अंग संचालेहिं प्रमुख मांहे बहुआगारनांना मदीधां तेमाटे एबहुआगार संपदा बीजी जाणवी.

एवमाइएहिं आगारेहिं एनो अर्थ एवमाइके० ए पूर्वोक्त बार आगार आदे देइने आदि शब्दवडे बीजापण आगारेहिंके० आगार लेवा ते कहे छेः— वीजलीनुं अथवा दीपकनुं अजवालुं थाते तथा

उढवाने वस्त्र लेतां अने उंदर बिल्लाडी आडीथ वाघी आगल पाछल थवुंपडे तथा चोर अथवा राजाना जयथी आघापाछाथतां अग्निलागे अथ वा जींतपडते तथा सर्पफंषमारे तेथी आघोपाछो थतां काउसग्ग पालतां थोडी विराधनाथतां अन्न ग्गो अविराहिउ के० काउसग्गजागे नही, अण वि राध्यो रहे, एरीते हुज्ञमेकाउसग्गोके० एवो मुजप्र ते काउसग्ग होजो; इहां एवमाइ इत्यादिकमां आ गार कह्या माटे ए त्रीजी आगार संपदा जाणवी.

हवे काउसग्गनो वखत आंके छे एटले एवो काउसग्ग केटलीवारसुधी होय तेकहेछे जाव अरि हंताणंके० ज्यांलगे अरिहंत जगवंताणं के० ज गवंतने नमुक्कारेणं के० नमस्कारे सहित एटले नमोअरिहंताणं नो उच्चार करी काउसग्गने नपा रेमिके०नपालुं समाप्त नकरुं त्यांसुधी जाणवुं इ हां जावअरिहंताणं इत्यादिकमां काउसग्गनो मा न कह्यो ए कायोत्सर्गविधि नामे चोथीसंपदा थई.

ताव कायं के० त्यांलगे शरीरने गणेणंके० ए

कगामे उज्जु राखवुं, मोणेणंके० मौनपणे रहेवेकरी, जाणे णंके० धर्मध्यान सहित रहेवे करी,मनने स्थिर पणे राखी अप्पाणं वोसिरामिके० काउसग्गरहित पणाथकी अने सावद्य व्यापारपणा थकी आत्माने वोसिरावुंबुं ए स्वरूप संपदा पांचमी जाणवी ताव कार्य इत्यादिकमां शरीर स्थिर राखवुं कह्युं माटे.

॥ अथ लोगस्स ॥

लोगस्स उज्जोअगरे ॥ धम्म तित्थ
यरे जिणे ॥ अरिहंते कित्तइस्सं ॥
चउवीसंपि केवली ॥ १ ॥ उसज्ज म
जिअंच वंदे ॥ संजव मजिणंदणंच
सुमइंच ॥ पउमप्पहं सुपासं ॥ जिणं
च चंदप्पहंवंदे ॥ २ ॥ सुविहिंच पु
प्फदंतं ॥ सीअल सिज्जंस वासुपुज्जं
च ॥ विमल मणंतं च जिणं ॥ धम्मं
संतिंच वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरंच

मल्लिं ॥ वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणंच॥ वंदामिरिठ्ठनेमिं ॥ पासं तह वद्धमाणंच ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ ॥ विहुय रय मला पहीण जर मरणा॥ चउवीसंपि जिणवरा ॥ तिञ्थयरामे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय वंदिय महिया ॥ जेए लोगस्स उत्तमासिद्धा ॥ आरुग्ग बोहिलाभं ॥ समाहिवर मुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा ॥ आइच्चेसु अहियं पयासयरा ॥ सागरवर गंभीरा ॥ सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ सव्वलोए ॥ ॥ इति ॥ ८ ॥

अर्थः- लोगस्स के० पंचास्तिकायात्मक लोकमांहे केवलज्ञानेकरी उज्जोयगरे के० उद्योतना

करनार, धम्मतिब्बयरे के० धर्मतीर्थना करनार, चतुर्विधसंघना प्रवर्त्तावणहार, जिणेके० रागद्वेषनाजीपनार एहवा अरिहंतेके० श्री अरिहंतभगवंत प्रते नामलेइने कित्तइस्संके० कीर्त्तना स्तवना करीसुं. चउवीसंपि केवलीके० चउवीसे जिनवर जे केवलीछे ते इहां अपिशब्दे ऐरवतक्षेत्र तथा महाविदेहक्षेत्रे जे केवलीछे तेउनेपण स्तवुंछुं.॥१॥

हवेचोवीश तीर्थंकरनां नाम अनुक्रमेकरीकहेछे प्रथम उसभके० श्रीऋषभदेव. विनतानगरी, नाभीराजा पिता, मरुदेवीमाता, बधा तीर्थंकरोनी, माताओ प्रथम स्वप्ने हस्तिदेखे अने श्रीमरुदेवीजीये प्रथम स्वप्ने वृषभदीठो एवो गर्भनो महिमाजाणी श्रीऋषभनामदीधुं तथा धर्मनी आदिना प्रवर्त्तावनार तेथी बीजो आदिनाथ नामकहिये पांचसेंधनुष्य प्रमाणशरीर, चोरासीलक्षपूर्वनु आयु, सुवर्णवर्ण, वृषभलांछन.

बीजा मजियंचके० श्रीअजितनाथ, अयोध्यानगरी, जितशत्रुराजापिता, विजयाराणीमाता, प्र

थम राजा राणी सारिपासे रमतां त्यारे राणी हारीजती अने राजानी जीतथतीहती अने नग वंतगर्न्ने आव्यापछी राणीजीते अने राजाहारे एवो गर्न्ननो महिमा जाणीने अजितनाथ नाम दीधुं शाढाचारसें धनुष्यप्रमाण शरीर, बहोत्तेरलक्ष पूर्व आयु, सुवर्णवर्ण हस्तिलांछन तेनेवंदेके० वांडुबुं.

त्रीजा संनवके० श्रीसंनवनाथ. श्रावस्तिनग री जीतारीराजापिता, शेनाराणीमाता, देशमांडु र्निक्ष हतो ते नगवंत गर्ने आव्याथी अणचिंत व्यो पृथ्वीमां धाननो संनवथयो तेथी संनवना थ नामदीधुं चारसेधनुष्य प्रमाण शरीर, साठला खपूर्वायु, सुवर्णवर्ण, अश्वलांछन.

चोथा मन्निनंदणंचके० श्रीअभिनंदनस्वामि. अयोध्यानगरी, संवरराजापिता, सिद्धार्थाराणीमा ता, नगवंत गर्नेआव्यापछी इंद्रमहाराजआवीने नगवंतनीमाताने घणीवारस्तविने जताहता; तेवा रे राजाप्रमुखे जाण्युंजे ए गर्न्ननोज महिमाछे माटे अन्निनंदन नामदीधुं साढात्रणसें धनुष्यप्रमाण

शरीर, पचासलाखपूर्वायु, सुवर्णवर्ण, वानरलांछन.

पांचमा सुमइंचके० श्रीसुमतिनाथ. अयोध्या नगरी, मेघरथराजापिता, सुमंगलामाता, प्रभु गर्भे मां रह्यापछी ते गाममां एक वणिकनी बेस्त्रीउहती उ तेमां न्हानीने पुत्रहतो अने महोटी वंध्याहती पण ते छोकरानुं प्रतिपालन बन्ने माताओ कर तीहतीउ एमकरतां ते वणीके काल कर्यो त्यारे महोटीस्त्री धननीलालचे कहेवालागीजे पुत्रमहा रोछे, माटे जेनो पुत्र तेनुं धनथायछे एवोचाल छे तेमज न्हानीनो तोदीकरोहतो तेथी तेणेकह्युंके ए पुत्रमहारोछे अने धनपणमहारुंछे; एम बंने सोक्योनो टंटोथयो. ते वढतीवढती दरबारमां आवी तेवारे गर्भनामहिमांथी राणीने चुकादो क रवानी भली बुद्धि उत्पन्नथइ तेथी राणीयेकह्युं जे बन्ने मलीने धन अर्द्धोअर्द्ध वेंची लो अने छोकराना पण बे भाग करी अर्द्धोअर्द्ध वेंचीलो ते सांभली न्हानीस्त्री बोलीके मारे द्रव्यजोइतुंनथी अने छो कराना कांइबे विभाग थायनही माटे ए छोकरो एनो

छेतेमहारोजछे. ते सांजली राणीबोलीके ए छोकरो न्हानीस्त्रीनोछे केमके पुत्रनुं मृत्युथाय त्यांसुधी पण महोटीस्त्रीथी ना कहेवाणी नही अने न्हानीस्त्रीये मारवानी मनाइकरी; माटे एने पुत्र अने धन हवालेकरो अने महोटी स्त्रीने घरथी बाहेरकाढो. ए गर्जना महिमाथी जगवंतनी माताने एवी बुद्धिउपनी तेमाटे सुमति नामदीधुं. त्रणसेंधनुष्यप्रमाण शरीर, चालीसलाख पूर्वायु, सुवर्णवर्ण, क्रौंचलांछन.

छग पऊमप्पहंके० श्री पद्मप्रजस्वामि. कोशंबीनगरी, धरराजापिता, सुसीमाराणीमाता, जगवंत गर्जे आव्या पछी माताने कमलनी सय्याए सुवानो मोहोलोऊपन्यो ते देवताए पूरणकस्यो अने जगवंतनुं शरीर पद्म सरखुं रक्तवर्णे हतुं माटे पद्मप्रज नाम दीधुं अढीसें धनुष्य प्रमाण शरीर, त्रीसलाख पूर्वायु, रक्तवर्ण, पद्मलांछन.

सातमा सुपासंके० श्रीसुपार्श्वनाथ. वणारसी नगरी, सुप्रतिष्ठराजापिता, पृथ्वीराणीमाता माता

नां बन्ने पासां रोगेकरी कोढीयांहतां ते नगवंत ग र्नें आव्या पढी बन्ने पासां सुवर्णवर्णे घणां सु कोमलथयां माटे सुपार्श्वनामदीधुं. एकप्रतमां न गवंतनापितानां बे पासां लख्यां ढे तेने नगवंत नी मातायें हाथ फेरव्याथी सुकमाल निरोगी थया एम पण लख्युं ढे. बशेंधनुष्य प्रमाण शरीर, वीस लाख पूर्व आयु, सुवर्णवर्ण, स्वस्तिक लांढन.

आठमा जिणंचके० जिनवीतराग चंदप्पहंके० श्रीचंद्रप्रनस्वामी. चंद्रपुरीनगरी, महसेनराजा पि ता, लक्ष्मणा राणीमाता, नगवंत गर्नेआव्यापढी माताने चंद्रमा ने पानकरवानो मोहोलो ऊपन्यो ते प्रधाने बुद्धियेकरी पूर्णकर्यो एवो गर्ननो प्र नावजाणी चंद्रप्रननामदीधुं, एकसोपचासधनु ष्यप्रमाण शरीर, दशलाखपूर्वायु, श्वेतवर्ण, चंद्र लांढन तेने वंदेके० हुं वांदुढुं.

नवमा सुविहिंच पुप्फदंतके० श्री सुविधिना थ, अने बीजुंनाम पुष्पदंतढे. काकंदीनगरी सुग्री वराजापिता, रामाराणीमाता, नगवंत गर्नें आ

व्या पछी माता तथा पिता भलीविधिएकरी धर्म करवा लाग्या. एवो गर्भनो प्रभावजाणी सुविधि नाथ नामदीधुं, अने मुचकंदनाफूलनी कली सर खा प्रभुना उज्वल दांत हता. माटे बीजुं पुष्प दंत नामदीधुं, एकशो धनुष्य प्रमाण शरीर, बे लाख पूर्व आयु, सुवर्णवर्ण, मगरमछ लांछन.

दसमा सीयलके० श्रीशीतलनाथ. भद्दिलपुर नगर, दृढरथ राजापिता, नंदाराणीमाता, पिताना शरीरे दाहज्वरहतो ते भगवंत गर्भे आव्या पछी राजाना शरीरनी ऊपर राणीये हाथ फेरव्याथी शरीर ने शीतलताथई. एवो गर्भनो महिमा जाणी शीतलनाथ नामदीधुं. नेवुंधनुष्यप्रमाण शरीर, एकलाख पूर्व आयु, सुवर्णवर्ण, श्रीवछ लांछन.

अगियारमा सिज्जंसके० श्रीश्रेयांसजिन. सिंहपु रनगर, विष्णुराजा पिता, विष्णुराणीमाता, देरास रमांपरंपरागत देवताअधिष्टित सय्यानी पूजाथती हती ते सय्याए जे बेसे अथवा सुवे तेने ऊप द्रव ऊपजे ते भगवंत गर्भे आव्यापछी माताना

मनमां आव्युंजे देवगुरुनी प्रतिमानी पूजा थाय ते तो खरुंछे, पण सय्यानीपूजा तोक्यांये सांन्नलीनथी. एम चिंतवी सय्यानी रक्षाकरनार पुरुषे मनाई करया छतां पण प्रन्नुनी माता ते सय्या ऊपर बेगंतथा सुतां तेछतां गर्न्नना प्रन्नावथीअधिष्टितदेवता सय्यामूकी जतोरह्यो. तेवारपछी राजाप्रमुखे ते सय्या वपरासमां लीधी. एवो गर्न्ननो महिमा जाणी श्रेयांस नामदीधुं, एंसीधनुष्यप्रमाण शरीर, चौरासी लाख वर्षायु, सुवर्णवर्ण, षडगी, लांछन.

बारमा वासुपुज्जंचके० श्रीवासुपूज्यस्वामि. चंपानगरी, वसुपुज्यराजापिता, जयाराणीमाता, न्नगवंत गर्न्नें आव्यापछी इंड्महाराज वारंवार आवी वसु एटले रत्ननी वृष्टीकरी मातापितानी पूजाकरता, तेथी वासुपूज्य नामदीधुं, सित्तेरधनुष्यप्रमाण शरीर, बहोतेरलाख वर्षायु, रक्तवर्ण, महिषलांछन.

तेरमा विमलके० श्रीविमलनाथ. कांपिलपुरनगर, कृतवर्मराजापिता, श्यामाराणीमाता, न्नगवंत गर्न्नेंआव्यापछी तेमना नगरमां कोइ स्त्री

जर्त्तार दहरे आवी उतर्या त्यांकोइ व्यंतरिदेवी रहे
ती, तेणे ते पुरुषनुं सुंदररूप दीठुं तेथीकामक्रीडा
करवानी अभिलाषाथइ पछी तेनीस्त्रीनाजेवुं व्यं
तरिए पोतानुंरूपविकुर्वि तेनीपासेसुती. प्रभाते
बन्ने स्त्री समान देखी ते पुरुषे कह्युं जे,एमां म्हारी
स्त्रीकोणछे त्यारे पेलीबोलीके ए म्हारोजर्त्तार अ
ने बीजी बोलीके ए म्हारो जर्त्तारछे एम वढतां
वढतां सर्व राजापासे आव्यां, राजा तथा प्रधान
बन्ने बेहुस्त्रीने समानदेखी कोइरीते निवेडो करी
शक्यानही पण राणीये पुरुषने दूरउभोराख्यो
अने बन्ने स्त्रीओने पण दूरउभी राखी ने बोलीके
जे पोताना सत्यवचनना प्रभावथी जर्त्तारने स्पर्श
करे तेनो ए जर्त्तारजाणवो. ते सांभली व्यंतरीए दे
वशक्तिना प्रभावे पोतानो हाथलांबोकरी जर्त्तारने
स्पर्शकर्यो. तेवोज राणीये तेनो हाथ पकडीलइने
कह्युंके तुंतो व्यंतरीछे माटे ताहरे स्थानके जती
रहे. एवीरीते चूकादोथवाथी विमलमति वाली रा
णी कहेवाणी ते गर्भनोज प्रभावजाणी विमलना

थनामदीधुं, शाठधनुष्यप्रमाणशरीर, शाठलाखव र्षायु, सुवर्णवर्ण, सूकरलांछन.

चऊदमा मणंतंचके० श्री अनंतनाथ. अयोध्यानगरी, सिंहसेनराजापिता, सुयशाराणीमाता, स्वप्नमां जेहनो अंतनआवे एवुं एक महोटुं चक्र नमतु राणीएआकाशनेविषे दीठुं अने अनंत रत्ननी मालादीठी तथा अनंत गांठनादोराकरी बांध्या तेथी ताप गया एवो गर्ननो प्रनावजाणी अनंतनाथ नामदीधुं, पचास धनुष्य शरीर, त्रीस लाख वर्षायु, सुवर्णवर्ण, सिंचाणानुं लांछन.

पंदरमा ज्जिणंके० वीतराग धम्मंके० श्रीधर्मनाथस्वामि. रत्नपुरनगर, नानुराजापिता, सुव्रताराणीमाता, राजाराणीने पूर्वे धर्मऊपर अल्परागहतो ते नगवंत गर्ने आव्या पछी बन्नेने धर्म ऊपर अत्यंतरागथयो एवो गर्ननो महिमाजाणी धर्मनाथ नामदीधुं, पिस्तालीस धनुष्य प्रमाण शरीर, दशलाखवर्षायु, सुवर्णवर्ण, वज्र लांछन.

सोलमा संतिंचके० श्रीसांतिनाथ. गयपुर

नगर, विश्वसेनराजापिता, अचिराराणीमाता, ते देशमां मरकीनो उपद्रव घणोहतो ते जगवंत गर्ने आव्या पनी माताए अमृत गंटयुं तेथी मरकीनी शांतिथई एवा प्रजावथी शांतिनाथनाम दीधुं. चालीस धनुष्य प्रमाण शरीर, एकलाखवर्षायु, सुवर्णवर्ण, मृगलांडन, तेने वंदामिके० वांडुढुं.

सतरमा कुंथुंके० श्रीकुंथुनाथ. हस्तिनागपुरनगर, सूरराजापिता, श्रीराणीमाता. जगवंत गर्ने आव्यापनी माताजीए स्वप्नमांरत्ननो थुज पृथ्वीने विषे दीगे तथा शत्रुहता ते कुंथुआनीपेरे न्हानाथया अथवा कुंथुआ प्रमुखन्हाना मह्रोटा जीवोनी जयणा देशमां प्रवर्त्ति तेथी कुंथुनाथनाम दीधुं, पांत्रीस धनुष्य शरीर, पंचांणु हजार वर्षायु, सुवर्णवर्ण, गागलांगन.

अढारमा अरंचके० श्रीअरनाथ. गयपूरनगर, सुदर्शनराजापिता, देवीराणीमाता, जगवंतगर्ने आव्या पनी राणीए स्वप्नमांहे रत्नमय आरो तथा थुज दीगे एवो गर्जनो महिमा जाणी अरनाथ

नामदीधुं, त्रीस धनुष्य शरीरनो मान, चोरासी हजार वर्षायु, सुवर्णवर्ण, निदावर्त्तलांछन.

ओगणीसमा मल्लिंके० श्रीमल्लीनाथ. मिथिला नगरी, कुंभराजापिता, प्रभावतिराणीमाता, भग वंत गर्भेआव्या पछी माताने एक रात्रीये, छएऋ तुना फूलनी सय्याए सुवानो दोहलोउपनो ते देवताए पूर्यो. एवो गर्भनो प्रभाव जाणी, श्रीम ल्लीनाथ नाम दीधुं, पचीश धनुष्य शरीरनो मान, पंचावन हजार वर्षायु, नीलवर्ण, कुंभलांछन.

वीसमा वंदेके० वांदुबुं मुणिसुव्वयंके० श्रीमु निसुव्रत स्वामिप्रते. राजगृहनगर, सुमित्रराजा पि ता, पद्माराणीमाता, भगवंत गर्भे आव्या पछी मा तापिता मुनिराजनीपेरे सुव्रत के० भलां बारव्रत श्रावकनांसाचववा लाग्या. एवो गर्भनो प्रभाव जा णी, मुनि सुव्रत नामदीधुं, वीशधनुष्य शरीरमान, त्रीशहजार वर्षायु, कृष्णवर्ण, काछबानुं लांछन.

एकवीसमा नमिजिणंचके० श्रीनमिजिनेश्वर ने. वंदामिके० वांदुबुं मिथिलानगरी, विजयराजा

पिता, विप्राराणी माता, नगवंत गर्ने आव्या पठी सीमाडिआराजा नगवंतना पिताना शत्रु हता, ते चढी आव्या गामना किल्लाने चारे बाजु लशकरनो पडाव नाखी विंटीलीधुं. राजाने घणी बीक लागी पण राणीयें किल्लाउपर चढीने शत्रुउने वांकीनजरे जोयुं ते राणीनुं तेज वयरी राजाउथी खमायुं नही तेथी सर्व आवीने नगवंतनी माताने नमस्कारकरी कहेवालागाके अमारा उपर सोम्यदृष्टीयेजूउ. राणीये तेना उपर सोम्यनजरे जाई माथे हाथ राख्यो. सर्व राजाउ राणीने पगेलागी आज्ञामागी पोतपोताने नगरे गया. एवो प्रनावजाणी नमिनाथ नामदीधुं, पन्नरधनुष्य शरीरनुं मान, दश हजार वर्ष आयु, सुवर्णवर्ण नीलोत्पललांछन.

बावीसमा अरिष्टनेमिके० श्रीअरिष्टनेमिप्रभु, सोरीपुरनगर, समुद्रविजयराजापिता, शिवादेवीराणी माता, प्रभुगर्ने आव्या पठी मातायें स्वप्नमां अरिष्ट एटले कालारत्ननी रेलदीठी तथा आकाशमां चक्रऊछलतुंदीठुं एवो प्रनावजाणी अरिष्टनेमिना

मदीधुं. बीजुं नाम श्री नेमिनाथ. दसधनुष्य शरीर मान. एकहजारवर्षायु. श्यामवर्ण. शंख लांछन.

त्रेवीशमा पासंके० श्रीपार्श्वनाथस्वामि, वणारसीनगरी, अश्वसेनराजापिता, वामाराणी माता, भगवंत गर्भे आव्या पछी मातायें अंधारी रात्रे पोतानी पासे सर्प जतो दिठो ते सर्पना जवाना मार्गनी वचमां राजानो हाथ देखी राणीयें ऊंचो कीधो तेथी राजाजागी ऊठ्यो ने बोल्योके शामाटे हाथ ऊंचो कीधो राणिये सर्प दीठो कह्युं. राजा बोल्यो, तमे जुठुं बोलोछो. पछी दीपकमंगावी जोयुं तो सर्पदीठो. तेवारे विस्मय पामि राजायें विचार्युं जेमे न दीठोने राणीये दीठो ए गर्भनो प्रभाव छे. एम जाणी श्रीपार्श्वनाथ नामदीधुं. नवहस्त प्रमाणशरीर. एकशोवर्ष आयु, नीलवर्ण, सर्पलांछन.

चोवीशमा तहके० तेमजवर्द्धमाणंचके० श्री वर्द्धमानस्वामी, क्षत्रियकुंभ नगर, सिद्धार्थराजा पिता, त्रिसलाराणी माता, भगवंत गर्भे आव्या पछी मातापिता समस्त रुद्धियें वृद्धिपाम्यां. धन

धान्यादिकना भंमार तथा देश नगरादिकनी वृद्धि थई, सर्वराजा आज्ञामां वर्तवा लाग्या. एवो प्रजा वजाणी वर्द्धमान नामदीधुं. वली बालावस्थामां मेरुपर्वत अंगुठे चांप्यो, तथा आंबली क्रीडाकरतां देवताहार्यो माटे इंद्रमहाराजे श्री महावीर एवुं बीजुं नाम दीधुं. सात हाथ शरीर, बहुतेरवर्ष आयु, सुवर्णवर्ण, सिंह लांछन. ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥

एवमएके० ए रीते में चोवीशे तीर्थंकरने विशेषे जुदेजुदे नामेकरी अभिथुआके० संस्तव्या. विहुअ रय मलाके० टाल्याछे पापरूप रज अने मलजेणे तेमां रज ते तत्काल आश्रवनां बांध्यां कर्म, अने मल ते घणाकालनां पूर्वेश्रवना बांध्यांकर्म जाणवां. वली पहीणके० क्षय गयाछे जरमरणाके० जरा रोग अने मरण जेना एवा चउवीसंपि जिणवराके० चौवीश जिनवर वर्त्तमानकाले थया ते अपिशब्दथकी महाविदेह तथा ऐरवत क्षेत्रोने विषे जे तीर्थंकरोछे तेपण लेवा. एवा तित्थयराके० तीर्थंकरते मेके० मुजने पसियंतुके० प्रसन्नथाउ॥५

ए तीर्थंकरोने नामेकरी कित्तियके० स्तव्या वंदियके० वांद्या मह्अिाके० पूज्या जे ए लोगस्सके० जे तीर्थंकर ए लोकनेविषे उत्तम सिद्धाके० उत्तम सिद्ध थया ते मुजने आरुग्गके० आरोग्यता एटले निरोग्यता आपो केमके निरोगताहोयतो धर्म साधन थाय. वली बोहिलाभंके० बोधबीजनो लाभ एटले भवांतरे सम्यकत्व रूप धर्मनी प्राप्ति. थाय अने समाहिवरके० प्रधान समाधि ते मननुं स्वस्थपणु उत्तमंके० उत्तम ते मुजप्रते दिंतुके० द्यो आपो ॥६

चंदेसुनिम्मलयराके० चंद्रमाथकी अत्यंत निर्मल. वली आइच्चेसुके० आदित्य जे सूर्य तेथकीपण अहियंके० अधिक पयासगराके० प्रकाशना करनारछे. सागरवरगंभिराके० स्वयंभुरमण समुद्रथी पण अत्यंत गंभीरछे एवा सिद्धाके० सिद्ध ते सिद्धिके० मोक्षप्रते ममदिसंतुके० मुजनेद्यो. संपदा अठावीस पद अठावीस गुरु अक्षर अठावीस लघु अक्षर बशोने बत्रीस सर्वमली सबलोए सहित लोगस्सना बशों शाठ अक्षरोछे ॥ ७ ॥

॥ अथ सामायकनुं पच्चरवाण ॥

करेमि नंते सामाइयं, सावज्जं जोगं, पच्चरकामि, जाव निअमं, पज्जुवासामि, डुविहं, तिविहेणं, मणेणं, वायाए, काएणं, नकरेमि, नकारवेमि, तस्सनंते, पमिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि, इति ॥ ए ॥

अर्थः- करेमिनंते सामाइयंके० करूंछुं हे नगवंत बे घडीनुं सामायक व्रत जीवने समता परिणाममां राखवुं तेने सामायक कहियें ते सामायकमां सावज्जंके० जेणेकरी पापलागे तेने सावद्य कहिये तेनो जे जोगंके० व्यापार तेने पच्चरकामिके० पचखुंछुं एटले निषेधुंछुं. जावनियमंके० ज्यां लगे नियमछे पज्जुवासामिके० सामयकसेववानो त्यांलगें. ते जघन्य तो बे घडीनो काल जाणवो. डुविहंके० बे प्रकारनो सावद्य व्यापार ते तिविहेणं

के० त्रणप्रकारे न करवो. ते त्रण प्रकार कहेछे एक मणेणंके० मनेकरी बीजो वायाएके० वचनेकरी त्रीजो काएणंके० कायायेंकरी. हवे पूर्वोक्त बे प्रकार नो सावद्य व्यापारजे कह्यो तेनो अर्थ करे छे नकरेमिके०बे घडी पर्यंत पोते सावद्य व्यापार हुंनकरुं नकारवेमिके० बीजा पासें सावद्य व्यापार करावुंनही पण पुत्र स्त्री वाणोतर प्रमुख जे सावद्य व्यापार करेछे तेमाटे अनुमति मोकलीछे ए द्विविध त्रिविध कहिये तस्सके० ते सावद्य व्यापारथी नंतेके० हे नगवन हुं पडिक्कमामिके० पडिक्कमुबुं निवर्त्तुंबुं केवीरीते जे निंदामिके० निंदु बुं अने आत्मानीसांखे गरिहामिके०गरहुंबुं गुरुनी साखें पापनोकरनार एहवो जे महारो अप्पाणके० आत्मा तेने पापथकी वोसिरामिके० वोसिरावुंबुंइति

॥ अथ सामायक पालवानुं ॥

सामाइअ वयजुत्तो ॥ जाव मणे हो इ नियम संजुत्तो ॥ छिन्नइ असुहं

कम्मं ॥ सामाइअ जत्तिआवारा ॥१॥
सामाइअं मिउकए ॥ समणोइव सा
वउ हवइ जम्हा ॥ एएण कारणेणं॥
बहुसो सामाइअं कुज्जा ॥ २ ॥ सा
मायिक विधि लीधूं, विधि पारिउं ॥
विधिकरतां ॥ जेकोइ अविधि हुउ
होए॥ तेसविहुं मन वचन कायायेक
री ॥ मिछामिडुक्कडं ॥ इति ॥ १०॥

अर्थः—सामाइयवयजुतोके० बे घडीनुं जे सामायकव्रत तेणेकरीने युक्त जावमणेके० ज्यांलगें मनमांहे नियमसंजुत्तोके० ए नियमयुक्त होय त्यांलगे छिन्नई असुहंकम्मंके० अशुभकर्मने छेदे ते सामाइजत्तिआवाराके० सामायक जेटलीवारकीधी तेटलीवार अशुभकर्मने टाले ॥ १ ॥

वली सामाइअंमिउकएके० सामायक करतो छतो समणोइवके० साधुनीपरे सावउहवइके०

श्रावकपण निष्पापीहोय जम्हाके० जे माटे सामा यक करवाथी एवा परिणाम थाय छे तो एएण कारणेणंके० एकछुंजेकारण ते कारणे करी बहुसो सामाइअंकुज्जाके० घणा सामायक करियें ॥ २ ॥

१ सामाइके० सामायक अने पोसहके० पोसह तेनेविषे संठिअके० रह्यो थको जीवस्सके० जीवनो जाईजोकालोके० जे कालजाय छे सोसफलोके० तेकालने सफल बोधवोके० जाणवो अने सामायक तथा पोसहविना शेष जे कालछे ते संसार फलहेककेे० संसारना फलनो हेतु जणवो ॥ ३ ॥ ए गाथा उपर मूलपाठमां नाखी नथी.

॥ अथ जगचिंतामणि चैत्य वंदन. ॥

इछाकारेण संदिसह भगवन् चैत्यवंदन करूं, इछं ॥ जग चिंतामणि जगनाह ॥ जग गुरू जगरस्कण ॥ जग बंधव जग सछवाह ॥ जगभाव विअरकण॥अठावय संठविअरूव॥

कम्मठ विणासण ॥ चउवीसंपिजिण
वर जयंतु ॥ अप्पमिहय सासाणं॥१॥

अर्थः– हेवीतराग तमे जगचिंतामणिके० त्रणजगतमां चिंतामणि रत्न समानछो एटले चिंतामणि जेम मनोवांछित पूरणकरेछे तेम तमेपण आश्रित प्राणिउंनी सर्ववांछा पूरणकरोछो वली जगनाहके० त्रण जगतना नाथछो जगगुरुके० त्रण जगतना गुरुछो जगरस्कणके० त्रणजगतनी रक्षाना करनारछो जगबंधवके० जगतमां बांधव (नाई) समानछो, जगसछवाह के० जगतमां सार्थवाह समानछो. जेम सार्थवाह थकी विकट अटवीनो पारपामियें तेम नगवंतथी संसाररूप विकट अटवीनो पारपमायछे माटे, वली जगनावके० जगतनापदार्थ जाणवाने विअस्कणके० विचक्षणछो अठावयके० अष्टापद पर्वतनेविषे संठविअके० स्थाप्याछे रूवके० रूप जेमना कम्मठके० आठकर्मना विणासणके० विना

सना करनारछो एह्वा चउवीसंपिके० चोवीसजि नवर ते जयंतुके० जयवंता वर्त्तो जेनो अपडिह्य सासणके० अप्रतिहतशासन एटले कोईथी जी त्युं जायनही एवो सासन छे. ॥ १ ॥

कम्मभूमिहिं कम्मभूमिहिं ॥ पढम संघयणि ॥ उक्कोसय सत्तरिसय ॥ जिणवराण विहरंतलप्नइ ॥ नव कोडिहिं केवलिण ॥ कोडिसहस्स नव साहुगम्मई ॥ संपइ जिणवर वीसमुणि ॥ विहुकोडिहिं वरनाण ॥ समणह कोडि सहसडुअ ॥ थुणि जिअ निच्च विहाणि ॥ २ ॥

अर्थः– कम्मभूमिहिंके० ज्यां असी मसीने कसी ए त्रणेकरी आजीविकाचाले तेने कर्मभूमिका कहियें एवा भरतादिक पन्नर क्षेत्रनेविषे पढमसंघयिणके० पहेला वज्रऋषभनाराच संघयणवाला उक्कोसय

के० उत्कष्टेकाले सत्तरिके० सीतेर अने सयके० एकशो एम एकशोने सीतेर जिणवराणके० जिनवर ते तीर्थंकर विहरंतलप्भइ के०विचरतालाने एटले विचरता होय ते श्रीअजितनाथनेवारें एटला लाने वली नवकोडीहिंकेवलीणके० नवक्रोड केवली नगवान होय अने कोडिसहस्सनवसाहु गम्मइ के० नवहजारक्रोडसाधु होय अने संपइ के० हमणा सांप्रतकाले जिणवरवीसमुणिके० वीस तीर्थंकर विचरता पामियें वली बिहुकोडि हिंवरनाणके० बे क्रोड वरप्रधान केवलज्ञानना धरनार पामियें तथा समणा के० श्रमण ते साधु मुनिराज कोमीसहस्सडुअ के० बे हजार क्रोमपामियें तेमने थुणिज्जके० स्तवियें निच्चके० नित्यप्रते विहाणके० प्रनातसमय निरंतर स्तवियें॥ ४॥

जयउ सामीअ जयउ सामीअ ॥ रिसह सत्तुंजि उज्जित पहु नेमिजिण॥ जयउ वीर सच्चउरि मंमण ॥ नरुअ

ढाहिं मुणिसुव्वय ॥ मुहरिपास डुह
डुरिअ खंमण ॥ अवर विदेहिं तिह
यरा॥चिहुं दिसि विदिसि जिंकेवि॥ती
आणागय संपइअ॥वंडुजिण सव्वेवि॥३॥

अर्थः—जयउसामीअ जयउसामीअके० जयवं
तावर्त्तो जयवंतावर्त्तो स्वामि रिसहसेत्तुंजि के० श्री
रुषजदेव ते शत्रुंजय तीर्थनेविषे वली उज्ञितके०
गिरनारपर्वतनेविषे पहुके० प्रजु नेमिजिणंके० श्रीने
मिजिनेश्वरस्वामि ते जयवंतावर्त्तो तथा जयउ
के० जयवंताप्रवर्त्तो वीरके० श्रीमहावीरपरमेश्व
र ते सच्चउरके० श्रीसाचोरनगरने विषे मंमणके०
आजरणरूप वली जरूअञ्छहिंके० श्री जरूचन
गरने विषे मुणिसुव्वयके० मुनिसुव्रतस्वामि महुरिपा
सके० श्रीमहुरिनगरनेविषे श्रीपार्श्वनाथस्वामि ते
डुहडुरिअखंमण के० डुखडुरितना खंमन करना
रछे. अवरविदेहिंके० बीजा महाविदेहने विषे जे ति
ढयराके० तीर्थंकर छे ते तथा चिहुंदिसिके० पू

र्वे, पश्चिम, उत्तर, ने दक्षण ए चार दिसानेविषे अ
ने विदिसिके० अग्निकुण, नैरुतकुण, वायुकुण,
ने ईशानकुण ए चारविदिसि नेविषे जंकेविके० जे
कोई तीर्थंकरछे तीआणागय संपइअके० अतीत
अनागत, ने वर्त्तमान कालना जे तीर्थंकर ते वं
दुजिण सव्वेविके० ते सर्वेजिनप्रते वांदुबुं ॥ ३ ॥

सत्तावणइ सहस्सा ॥ लक्खा छप्पन्न
अठकोडीउ ॥ बत्तीसय बासिआइं ॥
तिअलोए चेइए वंदे ॥ ४ ॥

अर्थः—हवे निरंतर स्मरणनिमित्ते सास्वता जिन
प्रासादनी संख्या कहे छे सत्ताणवइसहस्स के० स
ताणुहजार अने लक्खाछप्पन्नके० छपन्नलाख त
था अठकोडीउके० आठकोड बत्तीसयबासिआ
इंके० बत्रीसशे ने व्यासी एटला तिअलोएके०
त्रणलोकनेविषे चेइएवंदेके० चैत्यछे तेने वांदुबुं ॥४

पनरस कोडि सयाइं ॥ कोडी बाया
ल लक्ख अडवन्ना ॥ छत्तीस सह

स्स असिइ ॥ सासय बिंबाइं पण
मामि ॥ ५ ॥ इति ॥ ११ ॥

अर्थः—ए प्रासादोनेविषे एकंदर प्रतिमानी संख्या कहेछे. पनरसकोडिसयाइंके० पन्नरशेक्रोड वली कोडीबायालके० बेतालीश क्रोडउपर तथा लख अडवन्नाके० अठावन्नलाख अने छत्तीससहस्सके० छत्रीस हजार ने असिइके० ऐंसी एटला सासयबिंबाइंके० साश्वता जिनबिंबने पणमामिके० हुंप्रणमुं, इतिचैत्यवंदन समाप्तः

॥ अथ जंकिंचि. ॥

जंकिंचि नाम तित्थं ॥ सग्गे पाया
ले माणुसेलोए ॥ जाइं जिणबिंबा
इं ॥ ताइं सव्वाइं वंदामि॥१॥इति ॥१२॥

अर्थः—जंकिंचिनामतित्थंके० जेकोई नामेकरी तीर्थछे सग्गेके० स्वर्गनेविषे पायालेके० पातालने विषे माणुसेलोएके० मनुष्यलोकनेविषे जाइं जिन

बिंबाइंके० जेकांई जिन तीर्थंकरना बिंबछे ताइं सव्वाइं वंदामिके० ते सर्व बिंबने हुंवांदुछुं. इति

॥ अथ नमुथ्थुणं वा सक्रस्तव ॥

नमुथ्थुणं, अरिहंताणं, भगवंताणं, आईगराणं, तिथ्थयराणं, सयं सं बुध्धाणं, पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहा णं, पुरिसवर पुंम्हरीआणं, पुरिसवर गंधहथ्थीणं, लोगुत्तमाणं, लोग ना हाणं, लोग हिआणं, लोग पई वाणं, लोग पज्जोअ गराणं, अ भय दयाणं, चख्खुदयाणं, मग्ग दयाणं, सरणदयाणं, बोहिदयाणं, धम्म दयाणं, धम्मदेसयाणं, ध म्म नायग्गाणं, धम्म सारहीणं, धम्म वर चाउरंत चक्कवट्टीणं, अ

प्पडिहय वर नाणं, दंसण धरा
णं, विअट्ट ब्उमाणं, जिणाणं जा
वयाणं, तिन्नाणं त्तारयाणं, बुद्धाणं
बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं, स
वन्नूणं, सव्व दरसिणं, सिव मय
ल मरुअ मणंत मरकय मव्वाबा
ह, मपुणराविति सिद्धिगई, नाम
धेयं, ठाणंसं पत्ताणं नमो जिणा
णं, जिय नयाणं, जेअ अईआ
सिद्धा ॥ जेअ नविस्संत णागए
काले ॥ संपइअ वट्टमाणा ॥ स
व्वे तिविहेण वंदामि॥१॥इति॥१३॥

अर्थः—नमुत्थुणंके०नमोस्तु नमस्कारहो अरिहं
ताणंके०आठकर्मरूप वैरीनेहण्या ते अरिहंतने तथा
अरहंताणंके० चोशठ इंद्रनी करेली पूजाने योग्य
तथा अरुहंताणंके०फरी संसारमां अवतरवुंनथी

ईहां णंकारछे ते पदना अलंकारनेअर्थे छे. अलं कारेकरी जेम स्त्री शोभे तेम णंकारेकरी पद शोभे छे. जगवंताणंके० ज्ञानवंत तेने नमस्कारकरीने अरिहंतनी स्तुतिकरशे. एम एमां विवेकीने स्तव वायोग्य अरिहंतकह्या तेमाटे ए बे पदनी प्रथम स्तोतव्य संपदा जाणवी.

आइगराणंके० धर्मनी आदिना करनार श्रुत धर्म ने चारित्र धर्मना दातारछे, तिछयराणंके० च तुर्विधसंघरूप तीर्थनाकरनारछे. सयंसबुद्धाणंके० स्वमेव पोतानीमेले प्रतिबोधपाम्या. ईहां धर्मनी आदिना करनार ते सामान्ये कह्या. ए त्रण पद नी उंघहेतु संपदा बीजी जाणवी.

पुरिसुत्तमाणंके० पुरुषमांहे उत्तमछे वली सिंहजेम हस्तिनो मर्दनकरेछे तेम जगवंत प रदर्शनरूप वादीना मदरूप हस्तिनुं मर्दनकरेछे माटे पुरिससीहाणंके० पुरुषमांहे सिंहसमान क ह्याछे. पुरिसवरपुंमरियाणंके० पुरुषमांहे वरप्रधा न पुंमरिक कमल समान छे केमके मातानुरुधिर

ने पितानुंवीर्य एने कामरूप कादवकहियें तेमां परमेश्वर आवी उत्पन्न थया अने पाचेंइंद्रियना जो गरूप पाणियेकरी वृद्धिपाम्या ढतां पण ते कामरूप कादवथी कमलनीपेरे वेगलारह्या माटे. वली पुरिस वरगंधहत्थीणंके० पुरुषमांहे प्रधान गंधहस्तिस मानढे. जेम गंधहस्ति मदना गंधेकरी बीजा हस्तिना मद गलीजायढे तेम परमेश्वर सातईतिरूप हस्तिना उपद्रव रूप मदने गलीजायढे. ईहां पुरिसुत्तमाणं इत्यादिकमां पुरुषमांहे उत्तमढे एमकह्युं तेमाटे ए इतर हेतु चारपदनी त्रीजी संपदा जाणवी.

लोगुत्तमाणंके० समस्त लोकमांहे उत्तमढे. अने ज्ञानादिकगुण अणपाम्याने पमाडे अने जे नव्य जीवो ज्ञानादिक गुणने पाम्याहोय तेनी रक्षा करे. माटे लोकनाहाणंके० लोकना नाथढे. द्रव्य थकी इहलोकनी संपदाआपे अने नावथकी परलोकनां सुखआपे; माटे लोगहियाणंके० लोकना हितना करनारढे. नव्यजीवोना समूहने मिथ्यात्वरूप अंधकारना टालवाथी लोगपईवाणंके० लोकप्रते

दीपक समानछे. नव्यजीवोना समूहनेविषे नगवं त सूर्यनीपरे उद्योतना करनारछे जेम सूर्य सर्ववस्तुनो प्रकाशकरेछे तेम नगवंत जीवाजीवादिक पदार्थना प्रकाशकरनार होवाथी लोगपज्जोयगराणं के० लोकनेविषे प्रद्योत एटले विशेष प्रकाशना करनारछे. ईहां लोगुत्तमाणं इत्यादिकेकरी लोकमां नत्तमकह्या. ए पांचपदेकरी चोथी विशेषहेतु संपदाः

नगवंतना दर्शनथी नव्यजीवोने संसारमां नमवारूप नयनो नाशथाय, माटे सर्वजीवोने अनयदयाणंके० अनयदानना देवावाला जाणवा. जेम आंखनेविषे आवेला पमलोने वैद्य औषध लगाडी साजां करेछे, तेम नगवंत नव्यजीवोना मिथ्यात्वरूप पमलो उतारी सम्यकत्वरूप चक्कुनी प्राप्तिकरी देखताकरेछे. माटे चक्कुदयाणंके० ज्ञानरूप चक्कुना दातारछे. जेम नूलापडेला वटेमार्गुनुं धन चोर लोकोये लुंटीने तेने उन्मार्गे पाड्यो होय, तेने कोई सत्पुरुष वस्त्र धन प्रमुख आपी खरो मार्गदेखाडी तेना स्थानके पहोचाडे. तेम

जगवंत मिथ्यात्व कशायरूप चोरोथी लुटायलाज नोने कुमार्गेथी मूकावी ज्ञानादिक रत्नत्रयरूप ज्ञ ञ्नीआपी मोक्षमार्ग देखाडेछे माटे मग्गदयाणंके० मोक्षमार्गना दातारछे. जेम वयरीथी बीकपामेला पुरुषने कोई उत्तम पुरुष शरण राखे, तेम दुर्ग तीथी बीकपामेला पुरुषने जगवंत शरणना देवा वाला छे; माटे सरणदयाणं कहिये. बोधबीज रूप सम्यक्त्वना दातारछे; माटे बोहिदयाणंक हिये ईहां अजयदयाणं इत्यादिकमां जे वस्तु क हिछे तेना दातारछे ते माटे ए पांच पदनी त्हे तु संपदा पांचमी जाणवी.

धम्मदयाणंके० चारित्ररूप धर्मना आपनारछे. धम्मदेसिआणंके० सर्वविरति देशविरतिरूप धर्म ना उपदेशकछे. धम्मनायगाणंके० चतुर्विध संघ ना प्रवर्त्तावनार माटे धर्मना नायक छे. धम्मसार हीणंके० धर्मरूप रथना सारथीछे. केमके जे ध र्मथी चूके तेने पाछा मेघकुमारनीपेरे धर्ममांस्थि र करे, माटे सारथीछे. धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं

के० धर्मनेविषे वरप्रधान छे. चाउरंत एटले चारग तीना अंतनुंकरनार एवुं जे धर्मरूप चक्र तेणेक री धर्मनी आज्ञा प्रवर्त्तावनारछे, अथवा धर्मने विषे प्रधान चारगतिना अंतनो करनार चक्रवर्त्ति समानछे. इहां धम्मदयाणं इत्यादिकमां धर्मना देवावाला एम विशेषउपयोग कह्युं तेमाटे ए पां चपदनी सविशेष उपयोग नामा छठी संपदाथइ.

अप्पडिहयवरनाणदंसणाधराणं के० अप्रति हत वरप्रधान ज्ञान दर्शन एटले पर्वतादिके क री नेद्योजाय नही, लोकालोकसुधी विस्तारने पा मे, एवुंवरप्रधान केवल ज्ञान तथा केवल दर्शन ना धरनारछे. विअट्टछउमाणंके० व्यावृत्त एटले गयाछे छद्मके० घनघातीआंकर्म तथा कामक्रोधादि क छ अंतरंग वयरी जेना. इहां अप्पडिहयवरनाणं इत्यादिकमां अस्खलित प्रधान केवल ज्ञान तथा केवल दर्शनना धरनार कह्या तेमाटे ए बे पदनी स्वरूप हेतुनामे सातमी संपदा थई.

जिणाणंके० पोते रागद्वेषथी रहित जिन थ

याछे, तथा नव्यजीवोना रागद्वेषरूप वयरीने जीपावे, माटे जावयाणं कहिये. तिन्नाणंके० पोते संसारसमुद्र थकी तख्या अने बीजाने तारया णंके०संसारसमुद्र थकी तारवानेसमर्थछे. बुद्धाणं के० सर्वतत्वना पोते जाणथया अने बोहयाणंके० परने तत्व समजाववाने समर्थछे मुत्ताणंके० पोते आठकर्मरूप बंधनथी मूकाणा अने बीजा नव्य जीवोने मोयगाणंके० आठकर्मरूप शत्रुथी मूकाव वाने समर्थछे. इहां जिणाणं इत्यादिकमां बीजाने पोता सरखा फलना आपनार कह्या, तेमाटे ए स्वतुल्य फलकारी चारपदनी आठमी संपदा थई.

सव्वन्नूणंके० लोकालोक सर्वने केवल ज्ञानेक री जाणे. सव्वदरिसीणंके०समस्त वस्तुउनुं सामान्य स्वरूप केवलदर्शनेकरी देखे. सिवके० उपद्रवरहित. मयलके०अचल एटलेजेने चलायमान थवुं नथी. म रुयके०अरुज, रोगरहित. मणंतके०अनंतज्ञान दर्शी न सुख वीर्य सहित. मरकयके० अक्षय. एटलेजेनो क्षय नथी. मव्वाबाह के० अव्याबाध. बाधापीडा

रहित, मपुणराविचित्तिके० अपुनरावर्त्ति एटले ज्यां थकी फरी आववुंनथी. ए साते गुणेकरी सिद्धि गइनामधेयंके० सिद्धगति एवुंछे नामजेहनुं. ठा णंसंपत्ताणंके० एवा स्थानकने संप्राप्त थयाछे एटले मोक्षनगरे पहोंच्याछे. णमोजिणाणं के० एवा जिनेश्वरने महारो नमस्कार होजो. जियभ याणं के० १ इहलोकभय ते मनुष्यने मनुष्यनो भय. २ परलोकभयते मनुष्यने देवतादिकनोभय. ३ आदान भयते रखेने महारूकोई लेईले. ४ आ जीविकाभय ते रखेने महारी आजीविका हणाइ जाय. ५ अकस्मात् भयते भीतिप्रमुख पडघाने शब्दे बीक राखे. ६ मरणभयते रखेने मुझने म रणआवे ७ अपयशभय ए सातभय जेणे जी त्याछे. इहां सव्वन्नूणं इत्यादिके करी मोक्षमां तेवुं स्वरूपछे एम कह्युं ए त्रणपदे करी मोक्ष सि द्धावस्था नामे नवमी संपदा थई.

हवे त्रिकालवर्त्ति देव वांदवाने पूर्वाचार्य कृ त गाथा कहेछे जेअअइआसिद्धाके० जे अतीत

काले तीर्थंकर थई सिद्धपर्यायपणु पाम्या. जे अ नविस्संतणागएकालेके० जे अनागतकाले ती र्थंकर पर्याय पामी सिद्धपणु पामशे अने संपइ अवट्टमाणा के० संप्रति ते हमणां वर्त्तमानकाले जे सिद्ध थाय छे. एटले वर्त्तमाने जे महाविदेहमां छद्मस्थपणे विचरे छे ते. सव्वेके० सर्वतीर्थंकर प्र ते, तिविहेणके० मन वचन ने काया ए त्रिविधे करी वंदामिके० हुं वांदुबुं एसर्वेमली संपदानव थई. गाथा एक. पद तेत्रीस. गुरुअक्षर ३३ लघु अक्षर २६४ सर्वाक्षर २९७ इति शक्रस्तवसमाप्तः

॥ अथ जावंति चेइआइं ॥

जावंति चेइआइं ॥ उड्ढेअ अहेअ
तिरिअ लोएअ ॥ सव्वाइं ताइं वंदे॥
इहसंतो तछ संताइं ॥१॥ इति॥१४॥

अर्थः— जावंतिके० जेटला चेईआइंके० चै त्य अने प्रतिमाछे, तेक्यांछे उड्ढेअके० उर्द्धलोक नेविषे, अहेअके० अधोलोकनेविषे, अने तिरिअ

लोएअके० तिल्लीलोकनेविषे, ए त्रण लोकमां जे जिनचैत्यछे, सव्वाइंताइं वंदेके० ते सर्वने हुं वांडु बुं. इहसंतोके० हुं इहां रह्यो थको पण तबसंताइं के० तीर्थंकरोनाचैत्य त्यांरह्याथका छे तो पण ते प्रत्ये हुं वांडुबुं. पछी इच्छामिखमासमणो कही:

॥ अथ जावंति केविसाहु ॥

जावंत केवि साहु ॥ जरहेरवय म
हाविदेहेअ ॥ सव्वसि तेसि पणा॥
तिविहेण तिदंम विरयाणं॥१॥इति॥१८

अर्थः– जावंतकेविसाहुके० जे कोइ साधु शुद्ध चारित्रना पालनार, चारित्रना खपकरनार, जरहेरवयमहाविदेहेअके० पांच जरत, पांच ऐरवत, पांच महाविदेह ए पन्नरकर्म जूमिनेविषे छे. सव्वसितेसिके० ते सर्व साधुउने हुं, पणउके० प्रणमुबुं, नमस्कार करुबुं, तिविहेणके० मनवचन अनेकायायेकरी नमस्कारकरुं छुं,अथवा तेसाधु कहेवाछे के मन वचन अने कायायेकरीने जे ति

दंम्हविरयाणंके० मनोदंम्ह, वचनदंम्ह अने कायदं म्ह ए त्रण दंम्हथी विरम्याछे. इति ॥ १ ॥

॥ अथ नमस्कार. ॥

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु
भ्यः ॥ इति ॥ १६ ॥ अर्थसुगमछे

॥ अथउपसर्ग हर स्तवन. ॥

उवसग्ग हरं पासं ॥ पासं वंदामि
कम्म घण मुक्कं ॥ विसहर विस नि
न्नासं ॥ मंगल कल्लाण आवासं ॥१॥

अर्थः— उवसग्गहरंपासंके० जेना शासनने विषे उपसर्गनो हरनार पार्श्वनामा यक्षछे एह्वा पासंवंदामिके० श्री पार्श्वनाथस्वामिने हुं वांदुछुं. प ण ते श्री पार्श्वनाथ कहेवाछे कम्मगणमुक्कंके० आठकर्मना गण जे समूह, तेथकी मूकाणाछे, मुक्त थयाछे, वली विसहरविसके० विषधरजे सर्प एट ले इव्यथकी तिर्यंच जातिनो सर्प अने भावथ

की मिथ्यात्वरूपसर्प तेनुं जे विष तेने, निन्नासं के० नाशना करनारछे. वली मंगलके० वर्त्तमान सुख अने कल्लाणके० परंपराये जे स्वर्गमोक्षादि सुख तेना आवासंके० स्थानकरूपछे. ॥ १ ॥

विसहर फुलिंग मंतं ॥ कंठे धारेइ
जो सया मणुउ ॥ तस्स गह रोगमा
री ॥ डुठ जरा जंति उवसामं ॥२॥

अर्थः—विसहरफुलिंगमंतंके० विषधर स्फुलिंग नामेमंत्र जे एज स्तोत्रमांथी निकलेछे, ते मंत्रने कंठे धारईजो सयामणुउके० जे मनुष्य सदैव कंठने विषे धारणकरे, तस्सग्गहके० ते मनुष्यना ग्रहने विषे रोगमारीके० अनेकजातना रोग अने मर कीनाविकार तथा डुठजराके० डुष्ट एवीजे जराव स्था ते जंतिके० जाय नाशपामे, उवसामंके० उपशांत थाय. ॥ २ ॥

चिठ्ठउ दूरे मंतो ॥ तुझ्पणामो वि ब .
हु फलोहोइ ॥ नरतिरिएसुवि जी
वा ॥ पावंति न डुरकदो गच्चं ॥ ३ ॥

अर्थः–चिठ्ठउ डुरेमंतोके० ते पाछली गाथामां कह्योजे मंत्र तेतो चिठ्ठउएटलेतिष्टतुरह्यो दूरे अथवा वेगलो रह्यो, पण तुझ्पणामोविके० तुझने प्रणामजे नमस्कार करवो तेथी पण बहुफलोहोइके० घणां एवांजे मोक्ष प्रमुखनां फल तेनो देनार होयछे. नरतिरिएसुविजीवाके० नरते मनुष्यनेविषे तथा तीर्यंचनेविषेपण जीवा जे जीव ते पावंतिन डुरकदोगच्चंके० डुःख ते रोगनां तथा वह्ननना वियोगनां ईत्यादिक डुःख जाणवां. अने दोगच्चं ते दारिद्रपणु ते नपावंति एटले नपामे.

तुह सम्मत्ते लद्धे ॥ चिंतामणिकप्प
पायवभ्नहिए ॥ पावंति अविग्घेणं॥
जीवा अयरामरं ठाणं ॥ ४ ॥

अर्थः–तुहके० ताहरा धर्मनी जेआस्था तेने स

म्मत्तेके० सम्यक्त्व कहिये. ते लद्धेके० पामे थके ते ताहरू सम्यक्त्व केवुंछे चिंतामणिकप्पपायवप्र हिये के० चिंतामणिरत्न अने कल्पपाद ते कल्प वृक्ष तेथकी पण अधिकछे, एथी पावंतिके० पामे अविग्घेणंके० विघ्नरहितपणु ते जीवाके० जव्य जीव अयरामरंगणंके० अजरामर स्थानक जे मोक्ष स्थानक ते प्रतेपामेछे. ॥ ४ ॥

इअ संथुठ महायस ॥ जत्तिप्रर नि
प्नरेण हिअएण ॥ ता देवदिज्जबोहिं ॥
जवे जवे पास जिणचंद ॥ १५ ॥

अर्थः—इअके० एरीते संथुओके० संस्तव्यो, महा यसके० त्रण जगतमां व्याप्तएवा महोटा यशनो धणी एवो जे श्री पार्श्वनाथ जगवंत ते प्रते केवी रीते स्तव्यो ते कहेछेः— जत्तिजरके० जक्तिनो जरजे समुदाय तेणेकरी निप्नरेणके० पूरीत एटले परिपूर्ण जर्युं एवोजे हिअएणके० हृद य तेणेकरी स्तव्यो तादेवके० तेमाटे हे देव हे

नगवंत, दिङ्क बोहिंके० द्यो मुजने, बोधबीज एट ले धर्मनुं पामवुं ते, नवेनवेके० नवनवनेविषे द्यो,पासजिणचंदके० हे पार्श्वनाथ तमे केवा बो? सामान्य केवलीउमा चंद्मासमानबो. ॥ ५ ॥ इति श्री नद्रबाहु स्वामिविरचितां उपसर्ग हरस्तोत्रंसमाप्तं.एमांपदवीस,संपदावीस, गुरुअक्करवीस, लघुअक्कर एकसोपांसठ सर्वाक्कर १८५, बे.

॥ अथ जयविअराय. ॥

जय वीअराय जगगुरु॥ होउ ममं
तुहप्पनावउ नयवं॥ नवनिवेउ मग्ग
णु॥सा रिआ इठ फलसिद्धी॥ १ ॥

अर्थः- जयके० जयवंतावर्त्तो वीअरायके० श्रीवीतराग राग द्वेषरहित. जगगुरुके० त्रणजगत ना गुरु. ए नगवंतने आशीषदीधी. हवे पोताना मननो अनिप्राय कहेबे. होउममंके० होजोमुजने तुहप्पनावउके० तहाराप्रनावथी नयवंके० हेनगवन् नवनिवेउके० नवनोनिर्वेद एटले नव

रूप बंदीखानाथी विरक्तपणु मग्गाणुसारियाके० कदाग्रहनो त्यागकरी ताहरा मार्गने अनुसारे चालवुं. तथा इष्टफलसिद्धिके० इष्टफल वांछितफलनी सिद्धि एटले प्राप्तिथाउ. ॥ १ ॥

लोगविरुद्धच्चाउ ॥ गुरुजणपूआ
परत्थकरणंच ॥ सह्गुरुजोगोतव्व
य॥ण सेवणा आभव मखंडा ॥२॥

अर्थः—लोगविरुद्धके० लोकविरुद्ध कर्त्तव्य एवी जे परनिंदा, चोरी, परस्त्रीगमनादिक तेनो च्चाउके० त्याग एटले छांमवुंथाओ, वली गुरुजणपूआके० मातापिता तथा धर्मना दातारजे सद्गुरु तेमनी पूजा नक्तिकरवी अने परत्थकरणंचके० परोपकारकरवो तथा परना अर्थनुंकरवुं सह्गुरुजोगोके० सद्गुरु जे शुद्धपरूपक कालानुसारे शुद्धक्रियाना खपकरनारा गुरु तेनो जोग एटले समागम. थाउ अने तव्वयणसेवा० तेज रुडागुरुना वचननी सेवा एटलांवानां ते आभवमखंमाके० आ नवजे संसार एटले

संसारावस्थालगे ज्यांसुधी संसारमां रहुं त्यांसुधी मुऊने अखंम परिपूर्णहोजो. ॥ १ ॥ ए प्रणिधान मननी समाधिनी याचनाकरी. ए बे गाथा गणधरजीनी करेलीछे. हवे आगली त्रणगाथा पूर्वाचार्यकृतछे. तेनो अर्थ लखियेछेये.

वारिज्जइ जइवि नि,आण बंधणं वी
अराय तुह समए ॥ तहवि ममहुज्ज
सेवा ॥ नवे नवे तुम्ह चलणाणं॥३॥

अर्थः— वारिज्जइके० वार्योछे एटले निवारणकर्योछे जइविके० यद्यपि नियाणानुं बांधवुं वीयरायके० हे वीतराग तुहसमएके० ताहारा सिद्धांतने विषे एटले हे वीतराग तारा सिद्धांतोमां नियाणनो बांधवो निषेध्युंछे तहविके० तथापि एटले तोपण एटलुं मांगुबुं के ममके० मुऊने हुज्जसेवाके० होजो सेवा नवेनवेके० नवनवनेविषे तुम्हचलणाणंके० तमारा चरणकमलनी सेवा ते मने नवनवमां होजो एटलुं मांगुबुं. ॥ ३ ॥

दुक्कखर्ज कम्मखर्ज ॥ समाहि मर
णंच बोहिलाभोत्र्य ॥ संपज्जर्ज मह
एत्र्यं ॥ तुह नाह पणाम करणेणं ॥४॥

अर्थः—दुक्कखर्जके० मननांदुःख तथा शरीरसंबं
धी जे संसारादिक दुःख तेनो क्षय, कम्मखर्जके०
अशुनकर्मनोक्षय, समाहिमरणंचके० समाधिम
रण, बोहिलाभोत्र्यके० बोधबीजनो लान. ते न
वांतरे जिनधर्मनी प्राप्तिनुं थावुं ते संपज्जर्जके०
संपजो प्राप्त थार्ज. महके० मुजने एत्र्यंके ए पाठ
ल कह्याजे बोल ते, तुहके० तुजने नाहके० हेना
थ, पणामकरणेणंके० प्रणामकरवेकरीने. ॥ ४ ॥

सर्व मंगल मांगल्यं ॥ सर्व कल्या
ण कारणं ॥ प्रधानं सर्वधर्माणां ॥
जैनं जयति शासनं ॥५॥इति॥१८॥

अर्थः—हवे जिनशासने मंगलिकनेअर्थे संस्कृत
श्लोकेकरी आशीर्वाद आपेछे. सर्वमंगलमांगल्यंके०
सर्वमंगलिकमां उत्कृष्टमंगलिक अने सर्व कल्याण

नुं कारणछे, अने जेमां जीवदयानी मुख्यताछे. माटे सर्वधर्मोमां प्रधानछे एवुं जिनेश्वरनुं शासन जयवंते वर्त्तो॥५॥ एमां पद सोल श्लोक एक गुरुअ क्षर बावीस लघु अक्षर १४० सर्वाक्षर १६२.

॥ अथ अरिहंत चेइआणं. ॥

अरिहंत चेइआणं ॥ करेमि काउस्स ग्गं ॥ १ ॥ वंदण वत्तिआए ॥ पूअ ण वत्तिआए ॥ सक्कार वत्तिआए॥ सम्माण वत्तिआए ॥ बोहिलाभ व त्तिआए ॥ निरुवसग्ग वत्तिआए ॥ सद्धाए, मेहाए, धिईए॥धारणाए, अणुप्पेहाए ॥ वड्ढमाणीए, ठामि का उस्सग्गं ॥ ३ ॥ इति ॥ १९॥ अन्नथ०॥

अर्थः—अरिहंत चेइआणंके० श्री अरिहंत ती र्थंकरना जे चैत्य प्रतिमा छे. ते निमित्ते, करेमि काउस्सग्गंके० हुंकाउसग्ग करुंछुं, ते वास्ते तेना

कारण कहेछे. ईहां अरिहंत चैत्यवांदवा निमित्त काउसग्ग करशो. ते माटे अभ्युपगम संपदा अंगीकार संपदा बे पदनी प्रथम संपदाथई.

वंदणवत्तिआएके० मनशुद्धे प्रणामनुं करवुं ते निमित्ते एटले तीर्थंकरना चैत्यने वांदतां जे फल होय ते फल काउसग्ग कर्याथी थजो. पूअणवत्तिआएके० फूलचंदनादिके करी पूजा कर्याथीजे फल होय तेने अर्थे, सक्कारवत्तिआएके० वस्त्र आभरणादिकेकरी सत्कार करवाथी जे निर्जरा थाय तेने अर्थे. सम्माणवत्तिआएके० सन्मान ते स्तवन स्तोत्रादिक गुणवर्णव्याथी जे फल थाय तेने अर्थे. बोहिलाभवत्तिआएके० इहभवे तथा परभवे श्री जिनधर्मनी प्राप्ति सुखे थाय तेने अर्थे, निरुवसग्गवत्तिआएके० ज्यां जन्म जरा ने मरणरूप उपसर्गनो नाश थई गयोछे एवोजे मोक्ष ते पामवाने अर्थे काउसग्ग करुं. एमां वंदण वत्तिआए इत्यादिक काउसग्ग करवाना निमित्त कह्यां ते माटे ए बीजी निमित्तसंपदा छ पदनी जाणवी.

हवे काऊसग्ग जे रीते सफल थाय ते रीत कहेछे. ए काऊसग्ग हुं सद्धाएके० श्रद्धायेकरी सहित नावे करुं, पण कोईना बलात्कारे न करुं. मेहाएके० मेधा ते रुडीबुद्धियेकरीजाणाजाणजाणी करुं पण माठी बुद्धिये नही करुं. धिईएके० धृतिते मननी समाधियेकरुं पण राग द्वेषे करी करुं नही, धारणाएके० अरिहंतना गुण हृदयमां धारण करतो छतो काऊसग्गकरुं. अणुप्पेहाएके० अरिहंतना गुण मननेविषे वारंवार संभारतो थको काउसग्गकरुं. एम वड्ढमाणीएके० ए श्रद्धा, मेधा, संतोष, धारणा ने अनुप्रेक्षा ए पांच बोल वृद्धिवंत थाय एम नावनी विशेषे वृद्धि, करवाने अर्थे. ठामिकाउसग्गंके० हुं काउसग्ग करुंछु. ईहां श्रद्धादिक पांच बोल वृद्धिवंत थवाने अर्थे काउसग्ग करुं. ते माटे ए सात पदनी हेतु संपदा त्रीजीथई. बधां मली पद १५, संपदा ३, गुरुअक्षर १६, लघुअक्षर ७२, सर्वाक्षर ८९. ईहां अनछ उससिएणं इत्यादिक केवा तेना अर्थ आगल कह्याछे. तेनी

पांच संपदा एनी साथे मेलवीये त्यारे बधी मली आठ संपदा थाय, ने तेतालीस पद थाय. गुरुअक्षर २ए थाय लघुअक्षर २०० थाय. सर्वाक्षर २२एथाय

॥ अथ कल्याणकंदं स्तुति. ॥

कल्याणकंदं पढमं जिणिंदं ॥ संतिं तओ नेमिजिणं मुणिंदं ॥ पासं पयासं सुगुणिक्क ठाणं ॥ नत्तीय वंदे सिरिवद्धमाणं ॥ १ ॥

अर्थः– कल्लाणकंदंके० मंगलिकना कंदरूप एवा प्रथम जिनेंद्र श्रीरुषनदेव प्रत्ये तथा श्रीशांतिनाथ तओके० तेवारपछी नेमिजिणंद मुनींद्र प्रत्ये वली श्री पार्श्वनाथ ते लोकालोकना पयासंके० प्रकाशकरनार, तथा सुगुणिक्कठाणंके० ज्ञानाज्ञानादिक गुणना एक अद्वितीयस्थानकछे. तेप्रत्ये अने शासनाधीश्वर श्रीवर्द्धमान स्वामिप्रत्ये नत्तीयवंदेके० नक्तियेकरीने वांडुबुं. ॥ १ ॥

अपार संसार समुद्दपारं ॥ पत्ता सि

वं दिंतु सुश्कसारं ॥ सव्वे जिणिंदा सुरविंदवंदा ॥ कल्लाणवल्लीण वि सालकंदा ॥ २ ॥

अर्थः—हवे समस्ततीर्थंकरनी बीजी थोइ कहेछे. अपारके० नथी जेहनो छेडो एवोजे संसाररूप समुद्र तेनापारने पत्ताके० पाम्याछे ते मुझप्रते सुश्कसारं के० नलोजे अनुष्ठाननो एक अद्वितीयफलरूप सिवंके० मोक्षछे ते दिंतुके० द्यो सव्वेजिणिंदाके० हे समस्त जिनेंद्रो तमे कहेवाछो? सुरविंदवंदाके० देवताओना वृंद तेने वांदवा योग्यछो. वली कल्याणरूप वेलीना विसालके० महोटा कंदछो.॥ २ ॥

निव्वाणमग्गे वर जाण कप्पं ॥ पणासिया सेसकुवायदप्पं ॥ मयं जिणाणं सरणं बुहाणं ॥ नमामि निच्चं तिजगप्पहाणं ॥ ३ ॥

अर्थः—हवे ज्ञान वर्णनरूप त्रीजीथोई कहेछे. जे निव्वाणमग्गेके० मोक्षमार्ग तेनेविषे वरके० प्रधान,

जाणकप्पंके० यान एटले रथ सदृसछे अने जे ऐ पणासिया सेस कुवायदप्पं के० अशेष समस्त कुवादिक अन्यदर्शनीनो जे दर्प एटले अहंकार तेने पणासिया एटले नाशपमाड्योछे. एवो मयंके० ए श्रीसिद्धांत ते जिणाणंके० जिनश्रीवीतरागनो नाषेलो ते सरणं बुहाणंके० पंमितोप्रत्ये आधारनूत अने तिजगके० त्रणजगत ने विषे पहाणंके० प्रधान एवुजे ज्ञान तेने हुं निच्चंके० नित्यप्रत्ये सदैव नमामिके० नमस्कार करुछुं. ॥ ३ ॥

कुंदिंदु गोरकीर तुसार वन्ना ॥ सरो
ज हत्था कमले निसन्ना ॥ वाएसिरी
पुछय वग्गहत्था ॥ सुहाय सा अ
म्ह सयापसत्था ॥ ४ ॥ इति ॥ २० ॥

अर्थः—हवे शासनना अधिष्टायक देव देवीना वर्णननी चोथीथोइकहेछे. कुंदके० मचकुंदनुं फूल, इंडुके० चंड्मा, गोखीरके० गायनुं डुध अने तुसारके० जलबिंडु. एना सरखो जेना शरीरनो व

न्नाके० वर्णछे जेना हत्थाके० हाथनेविषे सरोज के० कमलछे, वली कमलेनिसन्नाके० कमलनेविषे बिराजमानछे. जेना हत्थाके० हाथते पुत्थयवग्गके० पुस्तकेकरीने व्यग्रछे एवी वाएसरीके० वागीश्वरी नामे देवी ते अम्हके० अमने सुहायके० सुख नेअर्थे सयाके० सदासर्वदा पसन्नाके० प्रशस्तछे प्रधानछे. इति पंचतीर्थिनी स्तुति समाप्त. ॥ ४ ॥

॥ अथ संसार दावानी स्तुति. ॥

संसारदावानलदाहनीरं ॥ संमोहधू
लीहरणे समीरं ॥ मायारसादारणसा
रसीरं ॥ नमामि वीरं गिरिसारधीरं ॥१॥

अर्थः— संसाररूप दावानल तेमांजे दाहके० बलवुं. तेने उपशमाववाने नीरंके० मेघसमान. वली मोह अज्ञानरूप धूलीना समूहने हरणकरवाने समीरंके० वायरासमान. वली माया जे कपट तद्रूप रसाके० पृथ्वी तेने दारणके० विदारवाने सारके० प्रधान. सीरंके० हल समान. एवा श्री

वीरपरमात्मा तेमने हुं नमामिके० नमस्कारक रुंछुं. ते केवाछे? तो के गिरिसारधीरंके० मेरुपर्वत नीपरे धीरवंत साहसीकछे. ॥१॥

भावावनामसुरदानवमानवेन॥
चूलाविलोलकमलावलिमालि
तानि ॥ संपूरिताभिनतलोक
समीहितानि ॥ कामंनमामिजि
नराजपदानि तानि ॥ २ ॥

अर्थः—भावाके० भावेकरी वनामके० आनमता एटले पगेलागता जे सुरके० वैमानिक अने ज्योतिषी, तथा दानवके० पातालवासी भुवनपति तथा व्यंतरदेवता, अने मानवके० मनुष्य तेनाजे ठाकुर तेना, चूलाके० मुकुटना अग्रभाग तेनेविषे विलोलके० चपल एवाजे कमलके० कमल तेनी आवली ते श्रेणी, तेणेकरी मालितानीके० सहित एवा भगवंतना पदकमल. वली ते पदकमल केवाछे? संपूरिताके० पूर्याछे अभिनत

एटले नव्याछे जे नव्यजीवो तेना समीहितानी केο वांछितना देनार छे. एवा जिनराजपदानितानि केο जिनराजना जे पदकमलछे तेप्रत्ये कामंकेο अत्यंतपणे नमामिकेο नमस्कारकरुंछुं. ॥ २ ॥

बोधागाधं सुपदपदवीनीरपूरा
भिरामं ॥ जीवाहिंसाविरललह
रीसंगमागाहदेहं॥चूलावेलं गुरु
गममणीसंकुलं दूरपारं॥ सारंवी
रागमजलनिधिं सादरं साधु सेवे॥३॥

अर्थः—हवे आगमने समुद्रनी उपमा आपेछे. बोधकेο ज्ञानेकरी आगाधंकेο गंभीर उंडोछे. वलीजेमां सुपदकेο भलाजे पद तेनी पदवीकेο श्रेणी तेरूप नीरपूराभिरामकेο पाणीना समूहेकरी मनोहरछे. वली जीवाहिंसाकेο जीवोनी अहिंसा एटले जीवोनी रक्षाकरवी तेरूप अविरललहरी केο निरंतरकल्लोल तेनो जे संगमकेο मलवुं तेणे करी अगाहदेहंकेο अगाध एटले महागंभीर ए

वुं जेनुं शरीरछे. वली चूलावेलंके० ते सिद्धांतो ने विषे जे चूलिकाछे तेरूपणी वेलीछे जेमां. वली गुरु के० महोटा एवा गमके० सरखापाठ तेरू प जे मणीके० रत्न तेणेकरी संकुलंके० नय्योछे. तथा दूरपारंके० जेनो कांठो घणो दूरछे. केमके समुद्रनीपरे सिद्धांतोनो पारपामवो महा दूर्लन्नछे. संपूर्ण श्रुतज्ञानी अथवा केवलीनगवानविना बी जाथी जेनो पार पमाए नही एवो सारके० प्रधा न वीरागमजलनिधिं के० श्रीमहावीरस्वामिनो आगम सिद्धांतरूप समुद्र तेप्रत्ये सादरंके० आ दरसहित साधुके० नलीरीते सेवेके० सेवुं ॥ ३ ॥

आमूलालोलधूलीबहुलपरिम
लालीढलोलालिमाला ऊंका
रारावसारामलदलकमलागार
नूमीनिवासे ॥ छायासंन्नारसारे
वरकमलकरेतारहारान्निरामे ॥

वाणीसंदोहदेहे नवविरहवरं दे
हि मे देवि सारं ॥४॥ इति ॥२१॥

अर्थः—हवे आमूलाके० मूललगे मोलतुं अने धूलिके० पराग तेनो जे बहुल परिमल के० घणोज गंध तेणेकरी आलोढके० आश्रित एवी लोलालिमालाके० चपल जे अलि एटले भ्रमरनी श्रेणी, तेना जे जंकारना आरावके० शब्देकरी सार के० प्रधान एवा अमलके० निर्मल दलके० पांनडांछे जेहनां एवां जे कमल तेरूप आगारके० घर तेनी जे नूमि तेमां निवासछे जेनो. वली गयाके० शोजा तेनो जे संजारके० समूह तेणे करी सारेके० प्रधानछे वली जे वरके० प्रधान एवुंजे कमल तेने करेके० हाथनेविषे धर्युंछे वली तारके० मनोहर जे हार तेणेकरी अजिरामके० शोजेछे. वली वाणीके० वचन तेना जे संदोहके० समूह तेरूपिज जेनो देहके० शरीरछे. एवी हे देविके० सिद्धांतनी अधिष्ठायिका देवि ते नवविरहके० संसारनो जे वियोग तेने मोक्ष

कहिये. एवो सारंके० प्रधान तेनुं जे वरदान ते देहिमेके० मुजने द्यो. एमां पद शोल संपदा शोल अक्षर बसेने बावनछे. ॥ ४ ॥

॥ अथ पुरकर वरदी ॥

पुरकरवरदीवड्ढे ॥ धायइ संमेअ
जंबुदीवेअ ॥ नरहे रवय विदेहे ॥
धम्माइगरे नमंसामि ॥ १ ॥

अर्थः—पुरकरवरदीवड्ढेके० पुष्करवर अर्द्ध द्वीपनेविषे धायईसंमेअके० धातकीखंम अने जंबुदीवेयके० जंबुद्वीपमां नरहेरवय विदेहेके० पांच नर्त्त पांच ऐरवर्त्त अने पांच महाविदेह एटलानेविषे धम्माईगरेके० धर्मनी आदिनाकरनार एवाश्री तीर्थंकरदेव ने नमंसामिके० हुं नमस्कार करुंछुं.

तमतिमिरपमलविध्वंसणस्स सुरग
णनरिंदमहिअस्स ॥ सीमाधरस्स
वंदे ॥ पप्फोमिअ मोहजालस्स ॥२॥

अर्थः—तमके० अज्ञानरूप जे तिमिरपमलके० अं

धकारना समूह तेनो विध्वंसणके० विनाशनो कर नार. वली सुरगणके० देवताना समूह अने नरिं दके० राजा तेणे महिअस्सके० पूज्यो. अने सी माधरस्सके० सीमा एटले नयनिक्षेपादिक मर्यादा नो धरनार एवो जे सिद्धांत ते प्रत्ये वंदेके० वांदुबुं. ते सिद्धांत केवोछे. पप्फोडियके० फेड्या छे मोहजा लस्सके० मिथ्यात्वरूपीया जाल एटलेसमूह ॥२॥

जाइजरामरणसोगपणासणस्स ॥
कल्लाणपुक्खलविसालसुहावहस्स॥
को देव दाणव नरिंद गण च्चि
अस्स ॥ धम्मस्स सार मुवलप्न
करेपमायं ॥ ३ ॥

अर्थः—जाईजरामरणसोगके० जन्म जरा मरणने शोक तेनो पणासणस्सके० नाश करनार. वली कल्लाण एटले मंगलीकनो करनार, अने पुक्ख लके० संपूर्ण विसालके० विस्तीर्ण सुहके० ए वा आनंदरूप मोक्षसुख तेनो आवहस्सके० कर

नारभे. वली देवदाणवके० वैमानिक देवो अने पाताळवासी देवो तथा नरिंदके० राजा तेना गणके० समूह तेणे अच्चियस्सके० अर्च्यो, पूज्यो, स्तव्यो एवोजे धम्मसके० श्रुतधर्म जे श्री सिद्धांत तेनो सारमुवलप्नके० रहस्यपामिने कोके० कोण नव्यजीव विवेकी पुरुष करेपमायके० प्रमाद करे. ॥३॥

सिद्धे नो पयउ नमो जिणमए नंदी सया संजमे ॥ देवं नाग सुवन्न किन्नरगण सप्भूअ नावच्चिए ॥ लोगो जब पइठिउ जगमिणं तेलुक्क मच्चासुरं ॥ धम्मो वढ्ढउ सासउ विजयउ धम्मुत्तरं वढ्ढउ ॥ ४ ॥

सुअस्स नगवउ इति ॥ २२ ॥

करेमि काउसग्गं वंदणवत्तिआए० ॥

अर्थः—माटे सिद्धेके० प्रतिष्ठावंत एवा सिद्धांतने विषे नोके० हे, नव्यो तमे पयउके० आदरवंतथ

का नमोके० नमस्कार करो. जिणमएके० जिन जे तीर्थंकर तेनो प्रकास्यो जे सिद्धांत तेनी नंदि के० वृद्धिकरो ते शानेविषे वृद्धिकरो ? तेकहेछे. स याके० सदैव निरंतर संजमेके० चारित्रनेविषे सिद्धांतनी वृद्धिकरो एमकह्युं. वली सिद्धांत केवो छे जे देवंके० वैमानिकदेवता नागके० पाताल वासिनागेंद्र सुवन्नके० जेनो सुवर्णजेवो वर्णछे एवा ज्योतषी किन्नरके० व्यंतरविशेष तेना जे गणके० समूह तेणे सप्नूयनावके० सद्भूतनावे एटले साचानावेकरीने अच्चिएके० अर्च्यो (पूज्यो) एवो जे सिद्धांत, लोगोके० लोकालोकनुं त्रिकालवि षयि ज्ञान ते जच्छके० जे सिद्धांतनेविषे पइछिओके० रह्योछे जगमिणंतेलुक्कके० त्रणे जग एटले उर्ध्वलो क, अधोलोक, अने तिर्छोलोक तथा मच्चासुरंके० मर्त्त्य ते मनुष्य, अने असुरते देव, तिर्यंच, नारकी इत्यादिक सर्व सिद्धांतना बलेकरी जणायछे, एवो धम्मो वड्ढओके० सिद्धांतरूप धर्म वृद्धिवंत था ओ. सासओके० अर्थथी शाश्वतो विजयउके०

परवादीना जीपवाथी विजयवंतो थाउ. अने धम्मोत्तरं वढउके० जेम चारित्र धर्मने घणुं उत्तरोत्तर प्रधानपणुं थाय, तेम सिद्धांत ते वढउ एटले वृद्धिने पामो. ॥ ४ ॥ सुअस्सके० ते वली श्रुतज्ञान ते केवुं छे? नगवउके० महिमावंत छे. तेने आराधवाने अर्थे करेमिकाउसग्गंके० हुं काउसग्ग प्रत्ये करुं छुं. वंदणवत्तिआए एनो अर्थ पूर्वेकह्योछे. एमां शोल पद, शोल संपदा, गुरु अक्षर के० लघु अक्षर १७१ सर्व अक्षरो बशोने शोलछे. ॥२१॥

अथ सिद्धाणंबुद्धाणं २३

सिद्धाणं बुद्धाणं॥ पारगयाणं परंपर गयाणं॥ लोअग्गमुवगयाणं ॥ नमोसया सव्व सिद्धाणं ॥ १ ॥

अर्थ–सिद्धाणं के० आठ कर्मनो क्षय करी जे सिद्ध थया ते. बुद्धाणं के० ज्ञानवडे समस्त वस्तु तत्वना जाणनारा, पारगयाणं के० संसार समुद्रना पारने पामेला; परंपरगयाणं के० पेहे

ला मिथ्यात्वगुणठाणाथी अनुक्रमे चौदमा अयोगी गुणठाणासुधी चढवुं, अथवा क्षपकश्रेणीथी शुद्ध ज्ञान दर्शन चारित्रने अनुक्रमे पाम्या; तेने कहिये परंपरा. ते परंपराए करी जे सिद्ध थया छे; ते अने लोअग्ग मुवगयाणं के० चौदराज लोकना अग्रजागने विषे एटले सिद्धशिलानी उपर उवगयाणं के० योजनने चोवीशमे जागे पहोता छे, एवा नमोसया सव्व सिद्धाणंके० सर्व सिद्धोने सदा सर्वदा के० निरंतर नमस्कार होजो. ॥१॥

जो देवाणवि देवो ॥ जंदेवा पंजली
नमंसंति ॥ तं देव देव महिअं॥ सि
रसा वंदे महावीरं ॥ २ ॥

अर्थ—जो देवाणवि देवो के० जे वैमानिक प्रमुख चार निकायना देवोनो पण देव, एवा श्री महावीर जं देवा के० जे श्रीमहावीर प्रत्ये देवताउ पण पंजली के० बे हाथनी अंजली माथे चढावीने नमंसंतिके० नमस्कार करे छे तंके०

ते श्रीमहावीरने देव देव के० देवतानो देव जे इंद्र, तेणे महियं के० पूज्यो छे, सिरसावंदे महावीरं के० ते श्रीमहावीरने हुं पण मस्तके करी वंदना करुं छुं ॥ २ ॥

इक्कोवि नमुक्कारो ॥ जिणवर वसह
स्स वद्धमाणस्स ॥संसारसागराउ ॥
तारेइ नरंव नारिंवा ॥ ३ ॥

अर्थ—हवे नमस्कारनुं फल कहे छे. इक्कोवि नमुक्कारो के० एकवार पण जो नावे करी नमस्कार कस्यो होय; कोने तोके—जिण के० जिन जे केवलीतेनेविषे, वरवसहस्स के० वर एटले प्रधान वृषन सरखा एवा वद्धमाण के० श्रीमहावीर, तेहने घणा नमस्कार तो वेगला रहो, तथापि एक नमस्कार करवाथी पण संसार सागराउके० संसाररूपी समुड्रथी तारेइ के० तारे छे. एटले मोक्षपदवी आपे. ते कोने आपे छे?—नरंवके० पुरुषोने अथवा नारिंवा के० स्त्रीउने. इहां जे

दिगंबरो, स्त्रीने मोक्ष नथी एम कहे छे ते जूठुं कहे छे. केमके ज्ञान दर्शन चारित्र आराधवा थ्की स्त्रीपण पुरुषनी पेरेजछे एम जाणवुं. ॥ ३ ॥

उज्जिंतसेलसिहरे ॥ दिस्का नाणंच
निसिहिआजस्स ॥ तंधम्म चक्कव
ट्टिं ॥ अरिठनेमिं नमं सामि ॥ ४ ॥

अर्थ–उज्जिंतसेलसिहरे के० गिरिनारपर्वतना शिखरनेविषे सहस्राम्रवनमांहे दिस्का के० दीक्षा कल्याणक तथा नाणं के० ज्ञानकल्याणक अने निसिहिया के० निर्वाण कल्याणक, ए त्रणे कल्याणक जस्स के० जे स्वामिनां थयां छे. तं धम्म चक्कवट्टिं के० ते धर्मनेविषे चक्रवर्त्ति समान जे अरिष्टनेमि जिनेश्वर तेने नमंसामि के० हुं नमस्कार करुं छुं ॥ ४ ॥

चत्तारिअठदसदोय वंदिया जिण
वरा चउव्वीसं ॥ परमठ निठिअठा ॥

सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥५॥२३॥

अर्थ—हवे अष्टापद तीर्थने नमवाने अर्थे कहे छे. चत्तारिअठ्ठदसदोय वंदिया के० अष्टापद पर्वतनेविषे नरत चक्रवर्त्तिए कराव्यो छे जे चतुर्मुख प्रासाद, तेह्नेविषे थाप्या छे चत्तारि के० दक्षिणदिशानेविषे चार, अठ्ठ के० पश्चिम दिशाए आठ, दस के० उत्तरदिशिनेविषे दश, दोय के० पूर्व दिशानेविषे बे; ए एकठा मेलवीए त्यारे जिणवरा चउव्वीसं के० वर्त्तमान चोवीश जिन एटले तीर्थंकरो, ते परमठ्ठ निठ्ठि के० परमार्थे करी निष्ठितार्थ थया. अर्थात् सिद्धि पाम्या. एटले जेना अर्थ परिपूर्ण थया छे; एवा जे सिद्धाके०सिद्धा परमेश्वर, ते सिद्धिं मम दिसंतु के०मने मोक्ष दिउ. ए गाथा जे प्रकारे श्रीगौतम स्वामिए अष्टापद पर्वतनी उपर जइने देवनी वंदना करतां करी छे ते प्रकारेज निबंधन थएली छे. ॥ ५ ॥ २३ ॥

॥ अथ वेयावच्च गराणं ॥ २४ ॥

वेयावच्चगराणं ॥ संतिगराणं ॥ सम्मद्दिठि समाहि गराणं ॥ इति ॥२४॥ करेमि काउस्सग्गं ॥ अन्नत्थ० ॥

अर्थ—सव्वत्थ उचिअ करणं एम भगवंते कह्युं छे. तेमाटे उचित करवा भणी श्रीवीतरागना वैयावच्च करनार देवताना प्रत्ययने अर्थे काउसग्ग करवा सारुं आवीरीते कहेवुं. वेयावच्च गराणंके० वीतरागना शासननी भक्तिना करनार गौमुख यक्ष आदे देइने रक्षारूप जे वेयावच्च सानिध्यना करनार, संतिगराणं के०सर्व संघने शांतिना करनार, सम्मद्दिठि समाहिगराणंके० सम्यक्दृष्टि भव्यजीवोने समाधिना करनार, ते देवोने आश्रयीने तेने निमित्ते, करेमि काउसग्गं के० हुं काउसग्ग करुं छुं. इहां अन्नत्थ उस्ससिएणं कहिए. केमके देवता अविरति छे, माटे वांदवा पूजवायोग्य नथी. माटे. ए त्रेवीशमुं अने चोवीशमुं ए बे सूत्रो म

लीने तेमां पद वीश छे. संपदा वीश छे; सर्व मली अक्षरो एकशोने अढाणु छे तेमां एकत्रीश गुरु छे, अने एकसो सडशठ लघु छे. इति ॥ २४॥

॥ अथ नगवानादिवंदन ॥ २५ ॥

नगवान्हं ॥ आचार्यहं ॥ उपा ध्यायहं ॥ सव्वसाधुहं ॥ इति ॥ २५ ॥

अथ देवसिअ प्रतिकमणे ठाउं ॥ २६ ॥

इछाकारेण संदिसह नगवन् ॥ देवसिअ पमिक्कमणे ठाउं ॥ इछं सव्वस्सवि देवसिअ डुच्चिंतिअ डुप्नासिअ डुच्चिठिअ मिछामि डुक्कडं ॥

अर्थ—सव्वस्सवि के० सर्व पण देवसिअ के० दिवस संबंधी डुच्चिंतिअ के० मने करी डुष्ट एटले माठुं चिंतव्युं, डुप्नासिअ के० वचने करी डुष्ट एटले माठुं नाष्युं डुच्चिठिअ के० कायाए करी

मारी चेष्टा कीधी मिच्छामिदुक्कडं के० ते दुष्कृत मिथ्या होजो. इति समाप्तः ॥ २६ ॥

अथ इच्छामि ठामि ॥ २७ ॥

इच्छामि ठामि काउस्सग्गं॥जोमे देव सिउ॥अईआरोकउ॥काईउ,वाईउ॥ माणसिउ॥उस्सुत्तो॥उम्मग्गो ॥ अ कप्पो ॥ अकरणिज्जो ॥ दुझाउ ॥ दु विचिंतिउ॥अणायारो ॥ अणिच्छिअ वो॥असावग पाउग्गो॥नाणं तह दं सणे चरित्ता चरित्ते ॥ सुए सामाई ए तिण्हं गुत्तीणं ॥ चउण्हं कसाया णं ॥ पंचण्हं मणुव्वयाणं॥ तिण्हं गुण वयाणं चउण्हं ॥ सिक्खा वयाणं ॥ बारस विहस्स सावग धम्मस्स ॥ जं खंडिअं जंविराहिअं ॥ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ इति ॥ २७ ॥

अर्थ–इच्छाकारेण के० जो तमारी इच्छा हो य तो, संदिसह के० आदेश आपो, जगवन् देव सियं आलोएमि के० हे जगवन् जेथी दिवस सं बंधी अतिचार लाग्या होय, ते प्रत्ये हुं आलोवुं. प्रकाशुं, एम शिष्य कहे तेवारे गुरु कहे, आलोय के० आलोवो. त्यारे शिष्य कहे. इछं के० वांछु छुं, आलोएमि के० एमज आलोववाने. जो मे दिवसिउके० जे में दिवससंबंधी, अइआरोकउ के० अतिचार कस्या होय, ते अतिचार केवीरी ते लाग्या? ते कहेछे.काईउ के० कायासंबंधी,वाई उके० वचनसंबंधी, माणसिउ के० मनसंबंधी, अतिचार लाग्या,ते अतिचार विगते करी कहेछे.– उस्सुत्तो के० जे सिद्धांत विरुद्ध कांइ बोलायुं त था समाचस्युं, तेणे करी उत्पन्नथयुं जे उम्मग्गो के० धर्मना मार्गनुं कषायना उदये करी लोपवुं, उन्मार्गनु प्रवर्त्तावવું. तेथी नीपनो अकप्पोके०जे कल्पे नहि,एटले अकल्पनीयकार्य करवे करीने अक रणिज्जोके० जे करवा योग्य नहीं, तेवा कार्यने कर

वे करीने, डुब्भाउ के० घणी वार डुर्ध्यान धरवा थकी लाग्या जे अतिचार, डुव्विचिंतिउके० डुष्ट जे माठी चिंतवणा, तेने करवे करीने कीधो जे अणायारोके० अनाचार. जे आचार विरुद्ध छे, ते आचरवे करीने, अणिच्छिअव्वो के० जे इछवा योग्य नही, ते करवा योग्य केम होय? एवां आर्त्तरौद्रादिक ध्यान, तेनी वांछना करवे करीने लाग्या जे अतिचार, असावग पाउग्गोके० अश्रावकने प्रायोग्य एटले जे श्रावकने करवा योग्य नही ते कीधुं, तेथी लाग्या जे अतिचारो, ते किया अतिचारो? तेकहेछे. नाणं के० ज्ञाननेविषे, तह के० तेमज, दंसणे के० दर्शन जे सम्यक्त्व तेनेविषे चरित्ताचरित्ते के० कांइक चारित्रने कांइक अचारित्र एटले देशविरति चारित्रनेविषे, इहां श्रावकने चरित्ताचरित्ते ते शा सारुं कहिए? तोके श्रावकने केटलाएक पापोनो नियम छे, ते माटे चारित्र कहीए; अने केटलाएक पाप मोकलांछे, ते माटे अचारित्र कहीए. बन्ने चारित्र अने अचारित्र मेलवीए तेने चरित्ता

चरित्त एटले देशविरति चारित्र कहीए. तेना अति
चार लाग्या होय, ते क्यां लाग्या होय? ते हवे क
हेछे. सुए के० अकाले सिद्धांत नणवाथी सामाइए
के० सम्यक्त्व सामायक ते शंका, आकांक्षादिके
करी विराधना थइ होय. तिएहं गुत्तिणं के० मनो
गुप्ति, वचनगुप्ति, तथा कायगुप्ति ए त्रणे गुप्तिउ
रूडी पेरे पाली न होय, चउएहं कसायाणंके०
क्रोध, मान, माया, ने लोन ए चार कषायने
करवे करी, पंचएहं अणुव्वयाणं के० साधुनी अ
पेक्षाए न्हाना माटे अणुव्रत कहीए ते पांच अणु
व्रत कहेछे. एक निरापराध, त्रस जीवने जाणीकरी,
निरपेक्षपणे मारवानो नियम, बीजो महोटाथी जु
ठुं बोलवानो नियम, त्रीजुं जेणे चोरीनुं आल चढे
ते न करवुं. एटले अदत्त लेवानो नियम, चोथुं स्वदा
रा संतोषकरे; तथा परस्त्रीनो नियम, पांचमुं परिग्रह
नुं परिमाण करे. ए पांच अणुव्रतनी विराधना
कस्याथी तिएहं गुणवयाणं के० त्रणे गुणव्रत ते
कियां? एक दिशिपरिमाणव्रत, बीजुं नोगोपनो

ग परिमाणव्रत, त्रीजुं अनर्थदंडविरमणव्रत, ए त्रण गुणव्रत ते पाछल कह्यां जे पांच अणुव्रत, तेने गुण करे, ते माटे ए गुणव्रत कहेवाय छे. ए त्रणे गुणव्रतनी विराधना कर्याथी, चउण्हं सिक्खावयाणं के० चार शिक्षाव्रत ते कियां? एक जेवारें अवसर पामे तेवारे सामायक लेवुं; उभय काले पडिक्कमणुं करवुं, बीजुं देशावगासीउं दिन प्रते करवुं. त्रीजुं पर्व तिथिए पोसह करवो. चोथुं न्यायोपार्जित सूजतो आहार पाणी साधुने वहोरावे; ए चार शिक्षाव्रत जेम गुरु प्रमुखनी शीख वारंवार संभारीए-अभ्यासीए, तेम ए चार व्रत दिन दिन प्रते सेवीए. ते माटे चार शिक्षाव्रतने विराधवे करीने ए सर्व मली बारस्स विहस्स के० बारे प्रकारे जे सावग धम्मस्स के० श्रावकनो धर्म, तेनी जंखंडियं के० जे थोडी पण खंडना कीधी होय, जं विराहियं के० जे समस्त विराधना करी होय, तस्स मिच्छामि डुक्कडं के० ते डुष्कृत जे पाप ते मिथ्या

के० फोकट थाउ. एमां गुरुअक्षर अठावीश, लघु अक्षर एकशोने पांत्रीश सर्वाक्षर. १६३ ॥ २७ ॥

॥ अथ अतिचारनी आठ गाथा ॥ २८ ॥

नाणंमि दंसणंमिअ ॥ चरणंमि तवं
मि तहय विरियंमि ॥ आयरणं आ
यारो ॥ इअ एसो पंचहा नणिउ ॥१॥

अर्थ—नाणंमि के० ज्ञान, दंसणंमिअके० दर्शन, चरणंमि के० चारित्र, तवंमि के० तप, तहय के० तेमज विरिअंमिअके० वीर्य—ए पांचनेविषे आयरणं के० आचरवुं—तेने कहीए आयारोके० आचार. इअ के० एम, एसो के० ए आचार ते, पंचहा के० पांच प्रकारे नणिउ के० ज्ञानीये कह्यो छे. एटले ज्ञानाचार, दर्शनाचार, चारित्राचार, तपाचार, ने वीर्याचार—ए पांच प्रकारनो आचार ज्ञानीए कह्योछे ॥ १ ॥ तेमां प्रथम ज्ञानाचार कहेछे.

काले विणए बहुमाणे ॥ उवहाणे

तदुयनिएहवणे ॥ वंजण अब तडुन
य ॥ अठविहो नाण मायारो ॥ २ ॥

अर्थ—कालेके० काल वेलाए ज्ञान नणवुं, विणएके० विनयपूर्वक ज्ञान नणवुं, बहुमाणेके० ज्ञान तथा गुरुने बहु मान देइने नणवुं; उवहाणे के० श्रावके उपधान वहीने ज्ञान नणवुं, तथा यतिए योग वहीने ज्ञान नणवुं, तदुयके० तेमज अनिन्हवणे के० नणावनार गुरुने उलववो नही. वंजणके० सूत्रनो अक्षर खोटो बोलीए नही, शुद्ध उच्चार करवो, अब के० अर्थ खोटो करीए नही. शुद्ध अर्थ परुपवो, तडुनए के० सूत्र अने अर्थ खोटा कहीए नहीं, बेहुशुद्धपरुपवा. अठविहो नाण मायारो के० ए आठ प्रकारना आचार ज्ञानना जेम कह्या छे, तेम करीए तो ज्ञानाचारना अतिचार न लागे. अने तेथी विपरीत करीए तेवारे अतिचार लागे. ॥ ३ ॥

निस्संकिअ निक्कंखिअ ॥ निवितिगि

छा अमूढ दिठीअ ॥ उववूह थिरी
करणे॥ वछल्ल पभावणे अठ ॥ ३ ॥

अर्थ-हवे दर्शनाचार कहे छे. निस्संकिय के० जगवंते कहेलां जे तत्व, तेनेविषे शंका करवी नहीं. एकांते साचुं मानवुं ते पेहेलो निःशंकित गुण, बीजो निक्कंखियके०बीजा दर्शननी वांछा करवी नहीं. लगारेक तप क्षमादिकनो गुण देखी परदर्शननो अजिलाष करवो नहीं. त्रीजो निव्वितिगिछा के० जिनधर्मनेविषे क्रियानुष्ठानादिकना फलनेविषे संदेह करवो नही. अथवा साधु तथा साध्वीना मल मलीन शरीर तथा वस्त्र देखी ग्लानी करवी नही. चोथो अमूढ दिठिअके० मिथ्यात्वीना धर्मनो प्रजाव देखीने आज धर्म साचो हशे, एवुं मनमां चिंतवन करवुं नही. एटले एवा मूढदृष्टि न थवुं. पांचमो उववूहके० सम्यक्त्वधारी गुणवंतना थोडा गुणनी पण प्रशंसा करवी एटले मुखे करी प्रकाशवी. छठो थिरी कर

ए के० जेनुं मन धर्म उपरथी खसीजतुं होय तेनु मन धर्मनी उपर स्थिर कराववुं. सातमुं वछलके० साधर्मिनी उपर एकांतपणे हित, अने नक्ती करवी. आठमुं पनावणेके० जेणेकरी, जिनशासन दीपे, एवां जे काम तेना करवाथी, घणा लोक बोधबीज पामे तेनुं करवुं, जे देखीने मिथ्यात्वि पण पुण्य उपार्जे तेने प्रनावना कहीए. ए अठ के० आठ प्रकारे दर्शनाचार जाणवो. एवी रीते प्रवर्त्ते तेवारे दर्शनाचारना अतिचार न लागे. पण एथी विपरीत चालतां अतिचार लागे ॥

पणिहाणजोगजुत्तो ॥ पंचहिं समीई
हिं तीहिं गुत्तीहिं ॥ एस चरित्ताया
रो ॥ अठविहो होइ नायवो ॥ ४ ॥

अर्थ–हवे चारित्राचार कहेछे. पणिहाण जोग के० प्रणिधान एटले एकाग्र सावधानपणे करी मनवचन तथा कायाना योग, ते चारित्र पालवाने जुत्तो के०युक्त होय, एवो पंचहिं सीमई

हिं तीहिं गुत्तिहिं के० पांच समितिएकरी, अने त्रण गुप्तिएकरी एसचरित्तायारो के० ए चारित्र नो आचार, अठविहो होइ नायव्वो के० आठ प्रकारे थाय छे, एम जाणवुं. ए आठ बोले प्रवर्ते त्यारे चारित्राचारना अतिचार न लागे. अने ए पांच समिति ने त्रण गुप्ति न पाळे तो, चारित्राचारना अतिचार लागे. तेमाटे साधुने निरंतर, अने श्रावकने सामायक पोसह लीधे अवश्य पांच समिति, अने त्रण गुप्ति पाळवी ॥ ४ ॥

बारस विहंमिवि तवे ॥ सब्भिंतर बा
हिरे कुसल दिठे ॥ अगिलाइ अ
णाजीवी ॥ नायव्वो सो तवायारो ॥ ५ ॥

अर्थ—बारस विहंमिवि तवे के० बार प्रकारनुं तप छे, तेमां अब्भिंतर के० छ भेदे अभ्यंतरतप अने बाहिरे के० छ भेदे बाह्यतप, ए बे मळीने बार प्रकारनुं जे तप, ते कुसलदिठे के० तीर्थंकरे कहेलुं छे. ते तपनेविषे अगिलाइ के० ग्ला

नी थाए नही, तप करतां नंग करे नहीं; अ णाजीवी के० आजीविकाने अर्थे तप न करे, अने हुं जो तप करुं तो तपी कहेवाउं, पेट न राइ चाले, मने लोको तपसी जाणी धन प्रमुख वडे मारी नक्ति करे; एवी बुद्धिथी तप न करवुं; नायवोसोतवायारो के० ए प्रमाणे करे तेने तपा चार जाणवो. एवी रीते प्रवर्त्ते तेवारे तपाचार ना अतिचार लागे नही. ॥ ५ ॥

अणसण मूणो अरिया ॥ वित्ती संखे
वणं रसच्चाउ ॥ काय किलेसो संली
ण, याय बच्चो तवोहोइ ॥ ६ ॥

अर्थ—हवे बाह्यतपना ठ नेद विवरीने कहे ठे. पेहेलुं अणसण के० अहारनो त्याग जे उपवासादिक करवा ते बीजुं; मुणोयरिया के० पांच सात कोलीआ उंगा करवा तेने उणोदरि तप कहीए. त्रीजुं वित्ति संखेवणं के० वोरवा जतां साधु घरनी संख्या करे,

जेम के पांच, सात अथवा आटलांज घेरथी वो
रवुं; एटला घरमांथी जो सूझतो आहार मल्यो
तो लेवो, अने जो नही मले तो उपवास करवो,
तेने वृत्तिसंक्षेप कहीए: अने श्रावकने तो स
वारे जे पच्चरकाण करतां दश, पंदर के जेटलां
द्रव्य मोकलां राख्यां होय, तेउमांथी बे तथा त्र
ण द्रव्य जे उंगं करीए तेने वृत्तिसंक्षेप कहीए.
रसच्चाउ के० ठ विगयमांथी एक बे विगय तथा
लीलोतरी प्रमुखनो जे नियम लैये, तेने रसत्याग
तप कहीए. कायकिलेसो के० टाढ अथवा ता
पनी जे आतापना लेवी अथवा लोच कराववुं;
ऊघाडे पगे चालवुं; नूमि उपर सूवुं; इत्यादिक
प्रकारे शरीरने कष्ट देवुं, तेने कायक्लेश तप क
हीए. संलीणयाय के० जेम कूकडी पोताना पग
पसारेठे, तेम हाथ पग प्रमुख अंगोपांग संवरी
राखवां, कषाय न करवो, तेने संलीनता तप क
हीए. बत्रोतवो होइके० ए ठ प्रकारनुं बाह्य तपठे६

पायछित्तं विणउ ॥वेयावच्चं तहेव स
ज्झाउ ॥ झाणं उस्सग्गोविअ ॥ अप्निं
तरउ तवो होई ॥ ७ ॥

अर्थ—हवे अभ्यंतरतपना छ भेद विवरीने कहे
छे. पायछित्तंके० गुरुनी पासे सरळ मनवडे पाप अ
पराधनुं प्रकाशवुं; ते निवारण करवाने अर्थे गुरुए
कहेलुं जे तप, ते करवुं तेने प्रायश्चित्ततप कहेछे.

विणउ के० विनयतप. तेना आठ भेद छे. गु
रुने देखी ऊभा थवुं; गुरुने आवता देखी सांमे
जवुं, गुरुने देखीने हाथ जोडी मस्तके चढावीए,
गुरुने बेसवाने आसन नाखवुं, अने पोते आसने
बेसवानुं मूकी देवुं, ज्यां सुधी गुरु ऊभा होए त्यां
सुधी बेसवुं नही, गुरुने वांदणां देवां; गुरुनी पर्यु
पासना; सेवा करवी, पग चांपवा, विसामण क
रवा, तथा गुरु जाए त्यारे तेनी पाछळ वोळाव
वा जवुं. ए आठ भेद विनयना जाणवा.

वेयावच्चंके० वैयावच्च्य तपना दश भेदछे. आ

चार्य, ग्लान, बाल, वृद्ध, तपस्वी, नवदीक्षित सा धु, साधर्मी, कुल (एक आचार्यना संतानने कुल कहेछे) गछ (घणा आचार्यना संतान एकठां थएला होय तेने गछ कहीए) अने साधु साध्वी श्रावक तथा श्राविका एतद्रूप संघ–ए दशनुं जे वैयावच्च्य करवुं तेने वेयावच्च कहीए.

तहेवके० तेमज सज्झायतप पांच प्रकारेछे. ते आप्रमाणे–वाचना एटले जणवुं, पृछना ते संशय टालवाने पूछवुं; परावर्त्तना एटले विसरेलुं संभारवुं; अनुप्रेक्षा एटले तत्वचिंतवना करवी, धर्मकथा एटले गुणीजननी कथा करवी. ए पांच भेद सज्झाय तपना जाणवा.

झाणंके० ध्यानतपना बे भेदछे. एटले एक धर्मध्यान अने बीजुं शुक्लध्यान ए बे शुभ ध्यान ध्याइए.

उसग्गोविय के० कर्मना क्षयनिमित्ते काउसग्ग करवुं. तेकायोत्सर्गतप. अभिंतरउ तवो होइ के०ए छ प्रकारे अभ्यंतर तप थायछे. ॥ ७ ॥

अणगूहिअ बल विरिउ ॥ परिक्कम
इ जो जहुत्त माउत्तो ॥ जुंजइअ ज
हा थामं ॥ नायव्वो वीरिआयारो ॥८॥

अर्थ—हवे वीर्याचार कहेछे. अणगूहिय बल विरि
उके० शरीरनुं बल अने मननुं वीर्य गोपवे नही. ए
टले मनमां उत्साह धरतो थको अने वचने धर्म व्या
ख्यान करतो छतो खेद न पामे; एवो छतो परकम्मइ
के० धर्मनेविषे पराक्रम फोरवतो प्रवर्त्ते; जो जहुत्त
माउत्तोके० जे यथोक्त विधिये जे अवसरे जे क्रि
या करवानुं जेम भगवंते कह्युंछे, तेम करवाने उ
द्यमवंत थयो थको प्रवर्त्ते, अने वली जुंजइअके०
जोडे, जहाथामं के० बलने अनुसारे यथाशक्ति
ए धर्मनेविषे मन वचन तथा कायानो व्यापार
प्रयुंजे, ए त्रण भेदे वीर्याचार कह्यो. नायव्वो वी
रियायारो के० ए प्रमाणे वीर्याचार जाणी लेवो.
एथी विपरीत जो धर्मनेविषे बलवीर्य गोपवे तो
अतिचारलागे ॥ ८ ॥ एआठगाथा कही. इहां पां

च आचारना अतिचार लाग्या होय ते संजारे.

॥ अथ सुगुरु वांदणां ॥ १ए ॥

इत्तामि खमासमणो वंदिउं जाव
णिज्जाए निसीहिआए अणुजाण
ह मेमिउग्गहं निसिही अहो का
यं कायसंफासं खमणिज्जो ने कि
लामो अप्पकिलंताणं बहुसु ने
णने दिवसो वइक्कंतो जत्ताने॥ ज
वणि ऊंचने खामेमि खमासमणो
देवसिअं वइक्कम्मं आवसिआए॥
पमिक्कमामि खमासमणाणं देवसि
आए आसायणाए तित्तीसन्नयरा
ए जंकिंचि मिहाए॥ मणडुक्कडाए व
यडुक्कडाए कायडुक्कडाए कोहाए मा
णाए मायाए लोनाए सवकालिआ
ए सव मिहोवयाराए सव धम्माइक्क

मणाए आसायणाए जोमे अइआ
रो कउ तस्स खमासमणो पडिक्क
मामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं
वोसिरामि ॥ १ ॥ इति ॥ २ए ॥
बीजीवारने वांदणे आवसिआए पद
न कहेवुं राइ पक्खि चउमासी संवत्स
रीए आम पाठ कहेवो॥राइवइकंता,
चउमासीवइकंता, पक्खोवइकंतो, सं
वछरोवइकंतो, एम कहेवुं

व्याख्या- इछामि के० इछुछुं-वांछुछुं. खमा समणो के०हे क्षमा श्रमण तमने निसीहिआए एटलुं उनां थकां कहेतो थको वंदन करवानी इछा जणावे; पछी ते शिष्य लगारेक नीचो नमी उनो रहे त्यारे गुरु कहेके, छंदेण के० तमारी इछाथी वंदना करो पछी शिष्य कहे. अणुजाणह के० अनुमति ते आज्ञा दीउ,मे के० मने मिउग्गह के० मव्यो जे अवग्रह साडात्रण हाथ रूप

तेमां आववानो. त्यारे गुरु कहेके अणुजाणामि
के०आज्ञा आपुं बुं. वली शिष्य कहे जे निसीहि
के० पाप व्यापारनो निषेध करीने विधिए युक्त
वांडु बुं. एम कहीने जूमिने पुंजतो थको आघो
आवी संमासा पुंजीने बेसे. पठी शिष्य कहे के
अहोकायं के० अधःकाय एटले तमारां चरण रू
प जे हेठेनी काय ठे ते, काय संफासं के० मारा
मस्तकरूप कायायेकरी फरसुं; ते तमारे खमणि
ज्ञोने के० खमवुं. हे जगवन् जे के० तमने
किलामो के० पग फरसतां जे किलामणा
उपनी होय ते एम खमावी माथे हाथ च
ढावी कुशलता पूठे ; अपकिलंताणंके० किलाम
णारहित एवा तमने थोडा श्रम एटले थोडा प्र
यासे करी बहुसुजेणं के० घणी निराबाध संयम
क्रिया समाधीए करी, जे के० तमारो दिवसोवइ
कंतो के० दिवस अतिक्रम्यो. तेवारे गुरु कहे,
तहत्ति के० जेम तें कह्युं तेमज अमारो दिवस
अतिक्रम्यो ठे. वली शिष्य बे हाथ जोडी जत्ता

ने कहेतो थको त्रण आवर्त्त करे. ते केम-दश आंगलीउ समी राखी गुरुना पगने हाथ लगाडतो थको पहेलो(ज) अक्षर नीचे सादे कहे अने बीजो(त्ता) अक्षर मध्यम सादे कहे. त्रीजो(ने)अक्षर निलाडे फरसतो उंचे सादे कहे. एटले त्रणे अक्षरे पहेलो आवर्त्त जत्ताने के० सुखे संयमनी यात्रा छे तमने? तेवारे गुरु कहे तुप्भंवि वट्टएके० तुजने पण यात्रा वर्त्ते छे. ए जेम त्रणे अक्षरे पहेलो आवर्त्त कह्यो तेम बीजो अने त्रीजो आवर्त्त पण शिष्येज कहेवो. ते आ प्रमाणे-जवणिज्जंचभे के० तमारां पांच इंद्रिय अने नोइंद्रिय एटले मन ए छ वानां तमारे वश छे? अथवा तमारुं शरीर निराबाधछे? तेवारे गुरु कहे एवं के० एमज निराबाधछे-वश छे. वली शिष्य बे हाथ अने मस्तक गुरुना पगने लगाडीने कहे खामेमि खमासमणो के० खमावुं हुं हे क्षमाश्रमण, क्षमानेविषे उद्यमवंत, देवसियं वइक्कमंके० दिवस वितिक्रम्योतेसंबंधी अपराध. त्यारे गुरु कहे अहमवि

खामेमि तुमंके० हुं पण तमने खमावुं छुं. पछी शिष्य ऊनो थइ अवग्रहथी बाहेर नीकळतो कहे आवस्सियाए के० अवश्य क्रिया जे पडिलेहणादिकतेकरवाने अर्थे अवग्रह बाहेर नीकळी ऊनो थइ कहे पडिक्कमामि के० पडिक्कमुं छुं, निवर्त्तु छुं खमासमणाणं के० हेक्षमावंतयति तमने देवसीयाए आसायणाए के० दिवस संबंधी आशातना तित्तीसन्नयराए के० तेत्रीशमांनी अनेरी कोइ एके आशातना कीधी होय जंकिंचिमिछाए के० जे कांइ मिथ्यात्व एटले खोटा नावथी वेयावच्चविषे सर्व बळ छतां नही करवानी बुद्धिथी निर्बळपणुं देखाडतो मुखे खोटा उपचारे करी आशातना कीधी होय, मण डुक्कडाए के० गुरुनी उपर मने करी मातुं चिंतव्युं होय, वयडुक्कडाए के० वचन डुःष्कृत एटले असंबंधवचने करीने, काय डुक्कडाएके० कायाएकरी मातु कर्युं होय कोहाएके० क्रोधेकरी, माणाएके० मान अहंकारे करी, मायाएके० मायायेकरी, लोहाएके०लोनेक

री सव्व कालियाए के० सर्वकाल अतीत अनागत तथा वर्त्तमान काळनेविषे मिछ्छोवयाराए के० सर्वे मिथ्या उपचार जे उपाय–तेणेकरी जे खोटा मने विनय साचव्यो होय, सव्वधम्माए क्कमणाए के० जेणेकरी सर्व जिनधर्मनो अतिक्रम थयो होय, एटले सर्व धर्मने अतिक्रमवे करी इत्यादिक आसायणाए के० आशातनाए करी जो मे अइ यारो कउ के० जे में अतिचार अपराध कीधो हो य तस्स खमासमणो के० पाठल कह्या जेअति चार अपराध ते खमा समणोके० हे क्षमाश्रमण, क्षमावंत गुरु पडिक्कमामि के० ते अपराधने हुं त मारी साखे पडिक्कमुंछुं. निंदामि के० ए पापोने आत्मानी साखे निंदुछुं. गरिहामि के० गुरुनी सा खे गरहा करुंछुं, अप्पाणं वोसिरामिके० पापनो करनारो एवो आत्मा तेने वोसिरावुंछुं. एटले आ सातनानिमित्त जे काले उपनी जे मति ते रूप आ त्माने छांमुंछुं.बीजे वांदणे आवस्सीयाए न कहेवुं.

पचीश आवश्यक ग्रंथांतरनी गाथाथीलखीये

छैए–दोवणय के० बे वार नमवुं; यथाजात के० नग्न जावे थवुं; आवत्तबार के० आवर्त्त बार करवा. चउसिर के० चार मस्तक मेळववां. त्यां शिष्य खमावे त्यारे गुरु पण खमावे. एम बे माथां मेळवे. एम बे वार करे त्यारे चार मस्तक थाय तिगुत्तं के० त्रण गुप्तिउ ते मन गुप्ति, वचन गुप्ति तथा काया गुप्ति जाणवी. डुप्पवेस के० बे वार अवग्रहमां पेसवुं. इग निरकमणंके० एक वार अवग्रहमांथी नीकळवुं. ए पणवीसावसय के० पचीश आवश्यक किइकम्मे के० कृतकर्म एटले वांदणानेविषे थायछे. एमां पचीश आवश्यक, बे अवग्रह, अछावन पद, बशेने छवीश अक्षरो–तेमां पचीश गुरु ने बशे एक लघु छे

॥ अथ देवसिअंआलोउं ॥३० ॥

इछाकारेण संदिसह नगवन् देवसिअं आलोउं इछं ॥ आलोएमि जो मे देवसिउ ॥ इति ॥ ३० ॥

॥ अथसातलाख ॥ ३१ ॥

सातलाख पृथ्विकाय ॥ सातला
ख अप्पकाय ॥ सातलाख तेउकाय॥
सातलाख वाउकाय ॥ दशलाख प्र
त्येक वनस्पतिकाय॥चउदलाख सा
धारणवनस्पतिकाय ॥ बेलाख बें
द्री॥बेलाख तेरेंद्री॥बेलाख चौरिंद्री॥
चारलाख देवता॥चारलाख नारकी॥
चारलाख तिर्यंच पंचेंद्री ॥ चौदला
ख मनुष्य एवंकारे ॥ चौरासीलाख
जीवायोनीमांहिं॥ माहरे जीवे जे को
इजीव ॥ हण्योहोय हणाव्योहोय ॥
हणताप्रत्ये अनुमोद्योहोय ॥ तेसवे
हुं मन वचन कायाए करी ॥ मिछा
मि दुक्कडं ॥ इति ॥ ३१ ॥

॥ अथ अढार पापस्थानक ॥ ३२ ॥

पेहेले प्राणातिपात॥बीजे मृषावाद, त्रीजे अदत्तादान, चोथे मैथुन, पांचमे परिग्रह, छठे क्रोध, सातमे मान, आठमे माया नवमे लोभ, दशमे राग, इग्यारमे द्वेष, बारमे कलह, तेरमे अभ्याख्यान, चौदमे पैशून, पन्नरमे रति अरति, सोलमे परपरिवाद, सत्तरमे माया मृषावाद अढारमे मिथ्यात्व शल्य, ए अढार पापस्थानमांहि, मारेजीवे जेकोइ सेव्युंहोय ॥ सेवराव्युंहोय सेवतां प्रते अनुमोद्युं होय, ते सवे हुं मन वचन कायाएकरी ॥ तस्स मिछामि डुक्कडं ॥ इति ॥ ३२ ॥

॥ अथ सव्वस्सवि ॥ ३३ ॥

सव्वस्सवि देवसिअ दुचिंतिअ ॥ दु
भासिअ दुचिठिअ ॥ इच्छाकारेणसं
दिसह भगवनइच्छं ॥ तस्स मिच्छामि
दुक्कडं ॥ इति ॥ ३३ ॥

॥ इछामि पडिकमीउं ॥

जोमेदेवसिउ अइआरोकउ० ॥ ३४ ॥

इहां वंदितानो पाठ कहेतां प्रथम बधा मली ने एकशो चोवीश अतिचार जे छे ते क्रमे देखाडिये छैये. तेमां ज्ञानाचार दर्शनाचार तथा चारिचारना पत्येके आठ आठ अतिचार छे. ए चोवीश थया तेथा सम्यक्त्वना पांच अतिचार मेलवतां उगणत्रीश थाय अने बारव्रतना प्रत्यके पांच पांच अतिचार करतां साठ अतिचार थाय छे. ए सर्व नेव्यासी थया. तेमां पन्नर कर्मादानना मेलवीए तेवारे एकशोने चार थाय. तेमां संलेष

णाना पांच तथा तपाचारना बार, अने वीर्याचारना त्रण. ए त्रणेना मली वीश अतिचार मेलवीए, तेवारे बधा मली एकशोने चोवीश अतिचार थायछे. ते सर्व अतिचार विवरीने आलोवियें छैये.

॥ अथ श्रावकपडिकमणासूत्र ॥ ३५ ॥

अथवा वंदिता सूत्र.

वंदित्तु सव्व सिद्धे॥ धम्मायरिएअ स
व्वसाहूअ ॥ इच्छामि पडिक्कमिउं ॥
सावगधम्मा इआरस्स ॥ १ ॥

अर्थ—वंदितुं सव्व के० सर्व तीर्थंकर अने सिद्ध के० सिद्ध जे कृत्य कृत्य थया, मोक्ष पोहोता छे. धम्मा यरिअ के० श्रुत चारित्ररूप धर्मना पालक तथा धर्मना दातार ते धर्माचार्यप्रते अने चशब्दथी श्रुताध्यापक उपाध्यायप्रते साहुअ के० स्थविर कल्पादिक भेद भिन्न अथवा मोक्षना साधक ते सर्व साधुउ, ए पांच परमेष्टिने वंदित्तु के० वांदीने इच्छामि पडिक्कमिउंके० पडिकमवाने वांछुछुं. एटले

निवर्त्तवाने वांछुछुं. शाथकी निवर्त्तवाने? ते कहेछे. सावग धम्माइ आरस्स के० श्रावक धर्मनेविषे जे अतिचारो लाग्या होय ते निवर्त्तवाने अर्थे ॥१॥

जो मे वया इआरो ॥ नाणे तह दं
सणे चरित्ते अ ॥ सुहुमो अ बायरो
वा ॥ तंनिंदे तंच गरिहामि ॥ २ ॥

अर्थ–हवे सामान्यप्रकारे सर्व अतिचार पडिकमे छे. जोमेवयाइआरो के० जे मुजने व्रत आश्री अतिचार लाग्या होय, तह के० तेमज नाणे तह दंसणे चरित्ते के० ज्ञानाचारनेविषे, दर्शनाचारनेविषे तथा चारित्राचारनेविषे अने चशब्द थकी तपाचार तथा वीर्याचार तथा संलेषणा संबंधी अतिचार पण कहेवा. सुहुमं वा बायरं वा के० सूक्ष्म एटले थोडो अतिचार अथवा बादर एटले महोटो अतिचार वा के० अथवा एकशो चोवीशे अतिचारमांहे जे अतिचार लाग्या होय, तं निंदेतंच गरिहामि के० तेप्रते आत्मानी

साखे निंदुछुं, अने गुरुनी साखे गरहुं छुं ॥ २ ॥

दुविहे परिग्गहंमि ॥ सावज्जे बहुवि
हेअ आरंभे ॥ कारावणेअ करणे ॥
पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥ ३ ॥

अर्थ—दुविहे परिग्गहंमि के० प्राये परिग्रहज पापनुं मूल छे, ते माटे प्रथम परिग्रह आश्री कहेछे. ते बे प्रकारनो परिग्रह छे. ते कियो ? एक सचित्तपरिग्रह ते जानवर जे द्विपद चतुष्पदरूप. अने बीजो अचित्तपरिग्रह ते द्रव्य अने आभूषणादिक जाणवां. अथवा अभ्यंतर अने बाह्यपरिग्रहनेविषे सावज्ज बहुविहेअआरंभे के० पाप सहित अनेकप्रकारे जीवहिंसादिक आरंभ छे, एवा परिग्रहनो आरंभ कारावणेअ करणे के० बीजानी पासेथी करावतां, अने पोते करतां—चशब्द थकी अनुमोदन करतां जे अतिचार लाग्या होय ते पडिकम्मे देसियं सव्वं के० दिवस संबंधी सघळां पापथी पडिकमुं—निवर्त्तु छुं. ॥ ३ ॥

जं बद्ध मिंदिएहिं ॥ चउहिं कसाएहिं
अप्पसत्थेहिं ॥ रागेणव दोसेणव ॥
तंनिंदे तंच गरिहामि ॥ ४ ॥

अर्थ—हवे ज्ञानाचारना अतिचार आलोवेछे. जं के० जे अशुभ ज्ञानावरणीकर्म, बद्धमिंदिएहिं के० पांचेंद्रिये करी बांध्युं तथा चउहिंकसाएहिं के० चार कषाये करी बांध्युं. ते कषाय केवाछे? तो के अपसत्थेहिं के० अप्रशस्त एटले घणा माठाछे. ते क्रोधादिक कषाये करी ज्ञानवंतनी निंदाकरी तथा रागेणव के० रागे करी, अने दोसेणव के० द्वेषेकरी ज्ञानाचारना जे अतिचार लाग्या तं के० ते अतिचारप्रत्ये निंदे के० आत्मानी साखे निंदुछुं. च के० वली तं के० तेप्रत्ये गरिहामि के० गुरुनी साखे गरहुंछुं ॥ ४ ॥

आगमणे निग्गमणे ॥ ठाणे चंकमणे अणाभोगे ॥ अभिओगेअ निओगे पडिक्कमे० ॥ ५ ॥

अर्थ–हवे दर्शनाचारना अतिचार आलोवे छे. मिथ्यात्वीना उत्सवादिक जोवाने आगमणे के० आवतां निग्गमणे के० जातां, तथा मिथ्यात्वीना ठाणे के० स्थानके उना रहेतां चंकमणेके० फरतां एटले तिहांज अरहां परहां फरतां अणाजोगे के० अनाजोगे उपयोग रहित फरतां उना रहेतां, तथा अभिउगे के० राजादिकने बलात्कारे, वली निउगे के० मंत्री अथवा श्रेष्टी प्रमुखनी आज्ञा केलवतां एटले राजा प्रमुखना अधिकार केलवतां ?–जोडतां जे पाप बांध्युं, ते पडिक्कमे के० पडिकमुंछुं. देसिअंसव्वंके० दिवससंबंधी सम्यक्त्वना अतिचार लाग्या होय, ते आश्री सर्व. इहां सर्वत्र पडिक्कमे देसिअं सव्वं एम कहीए, पण देवसि अंसव्वं एम न कहीए. केमके प्राकृते वकारनो लोपथाय छे. तेमाटे. इहां प्रजाते राइअं कहीए, अने पांखिए पक्खिअं कहीए, तथा चोमासिए चोमासिअं संवछरिए संवछरिअं सव्वं एम कहीए. इत्यर्थः॥५॥

संका कंख विगिछा ॥ पसंस तह सं थवो कुलिंगीसु ॥ सम्मत्तस्स इआ रे ॥ पमिक्कमे० ॥६ ॥

अर्थ–जिनवचननेविषे संदेह करवो ते संका के० शंका कहीए. क्षमादिक गुण देखी अन्य दर्शनीनो अभिलाष धरे ते,कंखके०आकांक्षा कहीए. धर्म कस्यानुं फल छे के नथी एहवो संदेह धरवो ते विगिछाके०विचिकित्सा,अथवा साधुनां शरीर तथा वस्त्र मलीन देखी निंदा करे ते विदुगुपत्सा कहीए. तथा मिथ्यात्वीनी पसंसके०प्रशंसा एटले अहो आ महोटो तपस्वीछे!!इत्यादिक बोलवुं तहके० तेमज संथवो कुलिंगीसु के० कुलिंगी जे मिथ्यात्वी तेनी साथे संस्तव परिचय, करे ए दर्शन मोहनीयकर्म क्षयोपशमादिके उपनुं जे जिनप्रणिततत्व श्रद्धानरूप शुन आत्मपरिणामरूप जे समत्तस्स के०सम्यक्त्व, तेना ए पांच अइआ

रे के० अतिचारछे. ते आश्रीने जे दिवस संबंधी पाप बांध्युं, ते सर्व पडिकमुछुं ॥ ६ ॥

छक्काय समारंभे ॥ पयणेअ पयाव
णेअ जेदोसा ॥ अत्तछाय परछा ॥
उभयछा चेव तंनिंदे ॥ ७ ॥

अर्थ–हवे चारित्राचारना अतिचार आलो एछे. छक्काय समारंभे के० पृथ्वीकायादिक छ काय जीवोनो संघट, परिताप, उपद्रव ते समारंभ कहीए. पयणे पयावणे के० पचता एटले पोते रांधतां–पचावतां ते बीजा कने रंधावतां तेथी जे दोसा के० जे दोष एटले अतिचार लाग्या होय तेमां अत्तछाय के० आत्मार्थे, ते पोताने काजे तथा परछा के० पर जे प्राहुणादिक, तेमने अर्थे अने उभयछा के० उभयार्थे एटले पोताने तथा परने ए बेहुने अर्थे पचतां–पचावतां निरर्थक राग द्वेषादिके करी जे दोष लाग्या तं के० ते दोषने निंदे के० निंदु छुं. ॥ ७ ॥

पंचएह मणुव्वयाणं ॥ गुणवयाणंच
तिएह मइयारे ॥ सिक्काणंच चउएहं
पडिक्कमे० ॥ ८ ॥

अर्थ—हवे बारव्रतना अतिचार कहेछे. पंच एहमणुवयाणं के०पांच अणुव्रतना, अने गुण वयाणंच तिन्हमइआरे के० त्रण गुणव्रत, तेना जे अतिचार तथा सिक्काणं चउन्हं के० चार शिक्षाव्रतना. ए बारे व्रतना अतिचार आश्रीनें पाप बांध्युं ते दिवससंबंधी सर्व पापने पडिकमुंछुं.

पढमे अणुव्वयंमि ॥ थूलग पाणाइ
वाय विरईउ ॥ आयरिअ मप्पसछे ॥
इछ पमाय प्पसंगेणं ॥ ९ ॥

अर्थ—पढमे अणुव्वयंमी के० सर्वव्रतो मांहे मुख्य एहवा पांच अणुव्रतनेविषे प्रथम अणुव्रत ते थूलग के० महोटा बादर एटले प्रगटलिंग एवा, जे बेंड्रियादिक जीवो तेनो प्राण ते गमन आ

गमन प्रमुखेकरी जे पाणाइवाय के० प्राणातिपात एटले हिंसा, तेथी विरइउ के० विरति एटले निवृत्यों बुं, तेम बतां जे कोइ प्राणातिपात आयरिय के० आचस्युं होय, एटले वध्य वध बंधादिके करी अप्पसबे के० अप्रशस्त जे, माग क्रोधादिक उदयिक नाव बते आचस्युं, होय ते इब के० इहां पहेला व्रतनेविषे मद्यादिक पांच प्रकारनो प्पमाय के० प्रमाद, तेने प्पसंगेणं के० प्रसंगे करी जे अतिचार लाग्या ते गाथाए करी कहेबे. ॥ए॥

वह बंध बविहेए ॥ अइ नारे नत्त
पाण वुबेए ॥ पढम वयस्स इआरे॥
पडिक्कमे० ॥ १० ॥

अर्थ–क्रोधादिकने वश थको द्विपद चतुष्पदादिक जीवोने निर्दयपणे लाकडी पाटु प्रमुखेकरी मारे ते वध कहीए. निर्दयपणे दोरडादिके आकरा बंधने बांधवुं ते बंध कहीए. बलद समारवा कर्ण नासिकानो बेद ते बविबेद कहीए. पोठीआ

गाडलां प्रमुख उपर जेटलो नार लोकप्रसिद्धछे, ते प्रमाणथी उपरांत लोजने वश थको निर्दय पणे नरे ते अतिनारारोपण अतिचार कहीए. पांचमो नत्तपाण वुछ्छए के० नात पाणीनो विछेद करे, निषेध करे. एटले बलदादिकने चारो पाणी न आपे अथवा आपे तोपण वेलासर आपे नहीं, ए पढमवयस्सअइआरे के० प्रथम अणुव्रतना पांच अतिचारआश्री जे कांइ दिवस संबंधी अतिचार लाग्या ते सर्व पडिक्कमुंछुं॥१०॥

हवे बीजुं अणुव्रत कहेछे.

बीए अणुवयंमि॥ परिथूलग अलि
अ वयण विरईन॥ आयरिअ मप्प
सछे॥ इछ पमाय प्पसंगेणं ॥११॥

अर्थ–बीए अणुवयंमीके०बीजा अणुव्रतनेविषे परिथूलगके० अति मोहोटका अलिअ के०अलिक एटले जूठां,असत्य वयणंके०वचन बोलवां, जेथकी अपयश थाय. तेनी विरईउके०विरति क

री छे. ते पांच अति महोटकां जूठ कहे छे. एक कन्यालिक, जे निर्दोष कन्याने सदोष कहे, अने सदोष कन्याने निर्दोष कहे. एमां द्विपद संबंधी जे जूठुं बोलवुं ते सर्व जाणी लेवुं. बीजुं गवालिक ते थोडुं दुध आपनार गायने घणुं दुध आपनारी कहे, अने घणुं दुध आपनारी गायने थोडुं दुध आपनारी कहे; एटले चतुष्पद विषयिक समस्त जे जुठ ते एमां आवे छे. त्रीजुं भूम्यलिक ते पारकी जमीनने पोतानी कहे. अथवा द्रव्यादिक संबंधी जे जूठु बोलवुं ते सर्व एमां आवेछे. चोथुं न्यासापहार एटले स्थापण मोसो, अने पांचमुं कुडीसाख ते मत्सरनेलीधे अथवा लांचलेइने जूठी साक्षी आपे, तथा कुडा करहानुं काढवुं, विश्वासघात करवो. ए पांचने विषे अप्पसत्थे के० अप्रशस्त एटले माठां एवां जे क्रोधादिक—तेना वश थकी खोटुं वचन आयरिय के० आचर्युं होय. ते इत्थ के० इहां बीजाव्रतनेविषे पमाय पसंगेण के० प्रमादने प्रसंगेकरी जे पाप लाग्यां ते पडिक्कमुडुं ॥ ११ ॥

ते पापरूप पांच अतिचार छे, ते नाम लेइ कहे छे

सहसा रहस्स दारे ॥ मोसुवएसे अ
कूडलेहे अ ॥ बीअंवयस्स इआरे ॥
पडिक्कमे० ॥ १२ ॥

अर्थ—सहसा के० सहसात्कारे अणविचार्युं कोइने जूठुं आल आपे; एटले कोइना उपर कलंक चढावे, ते प्रथम सहसाभ्याख्यान. कोइने छानी वात करतां देखी कहेके, तमे अमुक अमुक राज्यविरुद्ध वात करता हता, एम कहे; अथवा पारका मर्म प्रकाश करे ते, बीजो रहोभ्याख्यान अतिचार जाणवो. सदारेके० पोतानी स्त्रीए अथवा मित्रादिके पोतानी कांइ छानीवात कही होए, तेवात बीजा आगल प्रगट करे; एटले साचुं वचन पण परने पीडाकारी थवाथी जूठुं जाणवुं. ते त्रीजो स्वदारामंत्रभेद अतिचार जाणवो. मोसोवएसे के० मृषोपदेश ते अज्ञान मंत्र, अज्ञान औषधादिक शीखवाडे अथवा कोइने कष्टमां पाडवाने अ

थें कूडी बुद्धि आपे ते, चोथो मृषोपदेशअतिचार जाणवो. कूडलेहेअ के० कूडा लेख एटले जुगा कागल, लेख, खत, पत्र प्रमुख करवा इत्यादिक मसिभेद सर्व एमां आवेछे. ए बीअंवयस्सइआरे के० बीजा व्रतना पांच अतिचारछे, ते आश्रीने जे पाप लाग्युं ते दिवससंबंधी सर्व पापने पडिक्कमुछुं ॥ १२ ॥ हवे त्रीजुं अणुव्रत कहेछे

तइए अणुव्वयंमि ॥ थूलग परदव्व
हरण विरईअ ॥ आयरिअ मप्पसत्थे
इत्थ पमाय प्पसंगेणं ॥ १३ ॥

अर्थ—तइएअणुव्वयंमि के० त्रीजा अणुव्रतने विषे थूलग के० महोटका जेणेकरी चोरीपणु चढे, एवा परदव्वहरण के० पारकुं द्रव्य लेवानी जे विरईअ के० विरति करीछे ते वक्ष्यमाण स्तेनाहृतादिक अपसत्थे के० अप्रशस्त भावेकरी आयरिअ के० आचर्युं, इत्थपमाय के० इहां त्रीजाव्रत

नेविषे प्रमादने प्रसंगेकरी जे अतिचार लाग्या ते नामे करी प्रगट कहेछे ॥ १३ ॥

तेनाहड प्पउगे ॥ तप्पडिरूवे विरु
द्ध गमणेअ ॥ कूड तुल कूडमाणे ॥
पडिक्कमे० ॥ १४ ॥

अर्थ–प्रथम तेनाहड के० स्तेनाहृत एटले चोरनी आणेली केसर कस्तुरिआदिका बहुमूल्य वस्तु,तेने सोंघी जाणी लोए. बीजुं प्पउगे के० प्रयोगे एटले चोरने उजमाल करी सखाइ मेलवी आपे,खरचादिक संबल आपी चोरी करावे. त्रीजुं तप्पडिरूवे के० तत्प्रतिरूप एटले जे वस्तु जेमांहे मले ते वस्तु तेमांहे संभेल करे, जेम घहुंना लोट मांहे जुवारनो लोट, तथा घृतमांहे तैल, गोलमांहे राख, अने अर्द्धजुनुं वस्त्र निखरावी रंगावी नवाने मूले वेचे, अथवा कारमी सिंदूर कपूर अफिणादिक वस्तु होय ते खराने मूल्ये वेचे, सूत्र कपासादिक पाणीए भीजावीने वेचे, लविंग जाय

फलादिकमांहे ढुधनुं पोतु दिए, ए सर्व तत्प्रतिरूप नामे त्रीजो अतिचार जाणवो चोथो विरुद्धगमणे अ केण विरुद्धराज्यातिक्रम एटले राजाना वयरी ना देशमांहे अथवा तेना कटकमांहे ज्यां राजाए निवार्युंहोय ते स्थले धान्यादिकना आकरा नाव जाणीने लोभनो वाह्यो राजाथी छानो त्यां जइ वेचे,ए जो राजा जाणे तो अनर्थमां पडे, ते माटे राज्यविरोध न करवो. ए चोथो अतिचार जाणवो पांचमो कूडतुल्ले केण कूडां तोलां कूडमाणे एटले कूड मापां करे,उछे मापे आपे,अधिके मापे लीए,जे थकी राजदंड ऊपजे,ए त्रीजा व्रतना पांच अतिचा र आश्री जे कांइ दिवससंबंधी पाप लाग्युं ते सर्व पडिक्कमुंछुं ॥ १४ ॥ हवे चोथुं अणुव्रत कहेछे.

चउछे अणुव्वयंमि ॥ निच्चं परदार ग
मण विरईउ ॥ आयरिअ मप्पस
छे ॥ इछ पमाय प्पसंगेणं ॥ १५ ॥

अर्थ–चउछेअणुव्वयंमी केण चोथा अणुव्रतने

विषे निच्चंके० नित्य–सदैव–निरंतर परदारगमण
कें० बीजाए परणेली अथवा बीजाए संग्रही जे
स्त्री, तेनुं गमन एटले सेववुं, तेथी विरइउके० वि
रति करीछे. एटले तेनो निषेध कस्योछे, तेने मण्ण
सछेके० अप्रशस्त जावेकरी अपरिगृहिता गमना
दिक ने आयरिअके० आचर्युं होय तेइछपमाय
के० इहां चोथाव्रतने विषे प्रमादने प्रसंगेकरी जे
अतिचार लाग्या ते नामे करी प्रगट कहेछे ॥१५॥

अपरिग्गहिआ इत्तर ॥ अणगं वी
वाह तिव्व अणुरागे ॥ चउछं वयस्स
इआरे ॥ पडिक्कमे० ॥ १६ ॥

अर्थ–प्रथम अपरिग्गहिआके० अपरिगृहि
तागमन ते जे स्त्री परणी नथी, एटले कुमारिका
होय अथवा जे विधवा होय ते अपरिगृहिता
कहीए, तेने सेवे. तेमज श्राविकाने पण कुंआरा
अथवा रांम्ड्या पुरूषनी वांछाकरतां पहेलो अति
चार लागेछे. बीजुं इत्तर के० इत्वर परिगृहिताग

मन ते जे,कोइके केटलाक कालसुधी नाडुं आपी ने वेस्यादिकने स्त्रीने स्थानके राखेली होय,ते स्त्रीनुं सेवन करे.तेमज स्त्री पोतानी सोक्यनो दिवस होय तेनुं निवारण करी नर्त्तारने सेवे ते बीजो अतिचार जाणवो.त्रीजो अणंगके०काम तेनी क्रीडा जे आलिंगन,गालप्रमुखे चुंबन,होठदंसे अने स्तन मर्दनादिक परस्त्रीने करे,अथवा कंदर्पनां चोराशी आसन सेवे.अथवा पुरूषचिन्ह टाली साथले-अंगुठादिके मैथुन सेवे, ते त्रीजो अनंगक्रीडा अतिचार कहीए. चोथो विवाह के० परविवाहकरण अतिचार.ते पोतानां छोरू टाली परना विवाह,यश लेवाने अर्थे जोडे ते परविवाहकरण अतिचार जाणवुं. पांचमो तिव्वअणुरागे के०तीव्रानुराग, एटले पोतानी स्त्री उपर तीव्रानिलाष धरे, अथवा शरीर बलवंत करवाने अर्थे नांग.अफीण,पोस्त, चूर्ण,गोली,रसांगादिक आरोगे;दिवसे स्त्रीसेवा करे, ते कामनोगतीव्रानिलाषअतिचार जाणवो. ए चोथाव्रतना पांच अतिचार आश्री जे कांइ दिवस

संबधी पाप लाग्युं होय ते सर्व पडिक्कमुंछुं.॥१६॥

हवे पांचमुं अणुव्रत कहेछे

इत्तो अणुव्वए पंच ॥ मंमि आयरि
अ मप्पसछंमि ॥ परिमाण परिछेए॥
इछ पमाय प्पसंगेणं ॥ १७ ॥

अर्थ—इत्तो अणुव्वयपंचमंमि के० ए चोथा पछी पांचमां अणुव्रतनेविषे अप्पसछंमि के० अप्रशस्तभावे करी धनधान्यातिक्रमादिकने आयरिअ के० आचर्युं परिमाणा परिछेए के० परिग्रहना परिमाणनुं जे कांइ परिछेद एटले उलंघन कर्युं होय; ते इछपमायप्पसंगे के० इहां पांचमे व्रते प्रमादने प्रसंगेकरी जे अतिचार लाग्या ते कहेछे. ॥१७॥

धण धन्न खित्त वछू ॥ रुप्प सुवन्ने
अ कुविअ परिमाणे ॥ डुपए चउप्प
यंमि ॥ पडिक्कमे० ॥ १८ ॥

अर्थ—धणधन्न के० तेमां धन चार प्रकारे छे

एक गणिम जे नंग गणीने वेचाय,ते नालीएरादिक कोडीबंध जाणवुं. बीजुं धरिम जे तोलीने वेचाय, ते गोल शाक चोपड प्रमुख जाणवुं. त्रीजुंमेय जे मव्युं वेचाय, ते लूणादिक जाणवुं. चोथुं परिछेद्य जे परखीने वेचाय,ते नाणु-सुवर्ण,मोती, माणिक्य प्रमुख जाणवां, ए चार प्रकारे प्रथम धनपरिग्रह जाणवो.बीजुं धान्य ते गोधुम शालि मुगादिक सर्व जातनुं, ते परिमाण ऊपरांत थयुं देखीने ज्यांसुधी आगलुं वेचाय नही त्यांसुधी बीजाने घेर रखावे,अथवा संचकार आपी मूके, कोइ अथवा मुडानुं परिमाण कीधुं होय तो ते न्हानाने बदले महोटा बंधावे, ते प्रथम धनधान्यातिक्रमअतिचार कहीए. बीजो खित्तवत्थु अतिचारछे. तेमां क्षेत्र त्रण प्रकारनांछे. एक शेतुक्षेत्र जे अरहट्टने पाणीए नीपजे. बीजुं केतुक्षेत्र जे वरसादने पाणीए नीपजे. त्रीजुं उभय क्षेत्रजे,बेहु पाणीए नीपजे. ए त्रण प्रकारनां क्षेत्र, तथा वस्तु के० घर, हाट,वखार प्रमुख ते पण त्रण प्रकारेछे. एक खात

जे नीचे जमीन खोदीने करीए ते नोंयरादिक जाणवां बीजुं ऊच्छ्रित ते मालिआदिक जे ऊंचा चणावीए ते जाणवां. त्रीजुं खातोच्छ्रित ते ज्यां खणवुं चणवुं एटले नोंयरूपण करीए, अने उपर मालपण चणावीए एम बंने वानां करीए. गाम नगरादिकपण वास्तुमां हेआवे, तेनुं परिमाण अतिक्रमे; ते आवीरीते जे, एक क्षेत्र मोकळुं होय अने बीजुं लेवरावे, तेवारे नियमभंगना भयथी पूर्वना क्षेत्रनी वाड भांगीने बन्नेनु एक क्षेत्र करी मूके तथा घर हाट वखार प्रमुख अधिकां थतां देखीने वचमांनी भींत तथा मोभ पाडीने एक करी मूके ए क्षेत्रवास्तुपरिमाणातिक्रम बीजो अतिचार जाणवो. त्रीजुं रूप्य सोवन्नेय के० रूपा सोनानो नियम कह्यंछे. अधिक थतुं देखीने भार्यादिकना नाम ऊपर करी मूके; ते रूप सुवर्ण परिमाणातिक्रम त्रीजो अतिचार जाणवो. चोथुं कुविअपरिमाणे के० सोनु तथा रूपु टाळी बाकीनी समस्त धातुना त्रांबडा, थाळी, कळसीआ, वाटकाइ, चरू खाटला पाटला

प्रमुख समस्त घर वाखरो जे होयछे, तेने कुप्य कही
ए. तेनुं परिमाण अतिक्रमे, अथवा दशनाजन राख
वां; उपरांत राखवानो नियम होय, अने तेथी वध
तां थाय, तेवारे ते नाजन नांगी नंखावी महोटां करी
ने संख्याए दशज राखे, ते कुप्यपरिमाणातिक्रम चो
थो अतिचार जाणवो. पांचमो डुप्पए चउप्पयंमिके०
द्विपद चतुष्पद परिमाणातिक्रम, तेमां द्विपद ते गा
डां वहेल. दास, दासी, रांधणी, वाणोतर प्रमुख; अने
चतुष्पद ते गाय नेंस इत्यादिक जाणवां. तेनुं परिमा
णातिक्रमे—ते नियम उपरांत थता जाणी गर्न ग्र
हण घणुं मोडुं करावे, तथा वेचे, ते द्विपद च
तुःपद प्रमाणातिक्रम पांचमो अतिचार जाणवो.
ए पांचमा व्रतना पांच अतिचार आश्री जे दिवस
संबंधी पाप लाग्युं होयते सर्व पडिकमुं ॥ १८॥

गमणस्सउ परिमाणे ॥ दिसा सु उहुं
अहेअ तिरिअंच ॥ वुढिसइ अंतर
द्धा ॥ पढमंमि गुणव्वए निंदे ॥ १९॥

अर्थ—हवे प्रथम दिग् विरमण व्रत कहेछे चार दिशि, चार विदिशि, ऊर्ध्व ने अधो ए दशदिशाए गमणस्सयपरमाणो के० जावा आववानुं परिमाण करे, तेना पांच अतिचार कहेछे. प्रथम दिसा सुउड्ढंके० ऊर्ध्वदिशिनुं परिमाण अतिक्रमे, बीजो अहेअ के० अधोदिशिनु परिमाण अतिक्रमे त्रीजुं तिरिअंचके० तिर्यग्—ए पदथकी चारदिशि अने चारविदिशिनुं परिमाण अतिक्रमे, अथवा नियमभंग थवाना भयने लीधे वाणोतर प्रमुखने मोकले; ए त्रीजो अतिचार जाणवो. चोथो वुढ्ढिके० बे दिशिए शो शो योजन जवानुं परिमाण कर्युं होय, तेमां एकदिशिए कामविशेषे दोढशो योजन तथा बीजी दिशिए पचाश योजनप्रमाण करे, सरवाले सरखुं मेलवी लिए, ते चोथो क्षेत्रवृद्धिअतिचार जाणवो पांचमो सइअंतरद्धाके० स्मृतिनुं अंतर्द्धान एटले नियमभूमिका स्मरणमां न रहे, जे कइ दिशिए केटला योजन नियम छे? एवो संदेह छते आघो जाय. ए पांच अतिचार ते पढमंमिगुणव्वए

के० पहेला गुण व्रतनेविषे निंदे के० निंडुं- ॥ १ए ॥ हवे बीजुं उपनोग परिनोग परिमाण गुणव्रत कहेछे

मझंमिअ मंसंमिअ ॥ पुप्फेअ फ
लेअ गंधमल्लेअ ॥ उवनोगे परिनो
गे ॥ बीअंमि गुणव्वए निंदे ॥ २० ॥

अर्थ-मझंमि के० मदिरा अके० बावीश अनक्ष्य मंसंमि के० मांस अके० च शब्दे बत्रीश अनंतकाय पुप्फ के० फूल महुडां कइरडां प्रमुख ना जाणवा च शब्दथी जे त्रस जीवोए संसक्त एवां नागरवेलीनां पत्रादिक जाणवां. फलेके० फल ते जांबु, बीलां, पीलूडां पीचू बोर, पाकां करमदां, एमांहे त्रस जीव कुंथुआ प्रमुख होय; तेमाटे त्याज्यछे ए वस्तु खाधामांहे वपराय ते कही. हवे बाहेर ना नोगमां आवे तेवी वस्तु कहेछे. गंधके० गंधद्रव्य ते कस्तूरि, जबाधि, कर्पूरादिक जाणवां. मल्लेअ के० माल्य ते केतकी चंपकादिकनां फूल, ते नोग

हेतुए वावरे तेमां जे फूलमां जेटली पांखडी होय ते फूले तेटला जीवो जाणवा. ऊपनोग परिनोगके० ए पूर्वोक्त वस्तुनो उपनोग परिनोग करतां थकां बीअंमिगुणव्वएनिंदे के० ए बीजा गुणव्रतनेविषे जे अतिचार लाग्या ते निंडुबुं ॥ २०॥ हवे ए सातमा व्रतना पांच अतिचार कहेछे.

सच्चित्ते पडिवद्धे ॥ अप्पोल डुप्पो
लिअंच आहारे ॥ तुछोसहि नरक
णया ॥ पडिक्कमे० ॥ २१ ॥

अर्थ–सच्चित्तेके० समस्त सचित्तनो नियम होय, अथवा सचित्तनुं परिमाण कर्युं होय, तेथी अधिकुं सचित्त लिए ते सचित्ताहार नामा प्रथम अतिचार जाणवो. तथा पडिबद्धेके० सचित्तप्रतिबंध एवा सचित्तनो नियम होय, अने वृक्षथी उखेडी गुंदर अचित्तनीबुद्धिए वापरे, अथवा आंबा गोटली सहित, अने रायण कलीआसहित मुखमां घाले, ते सचित्तपडिबद्धेके० सचित्तप्रतिबद्धाहार बीजो अति

चार जाणवो तथा अपक्वके० अपक्वाहार एटले जे
ने अग्निनो संस्कार कीधो नहोय, अथवा पीस्या प
ढी काचो लोट केटलाक दिवस मिश्र रहे, पढी अ
चित्त थाय. केमके सिद्धांतमां कह्युंढे के, अणचाल्यो
लोट श्रावण अने नाद्रवे मासे पांच दिवस मिश्र
रहे पढी अचित्त, थाय आसो मासे चारदिवस मिश्र
रहे, तथा कार्त्तिक, मार्गशीर्ष अने पौष, ए त्रणमासे
त्रण दिवस मिश्र रहे, महा तथा फाल्गुने पांच प्रह
र मिश्र रहे, चैत्र वैशाषे चार प्रहर मिश्र रहे. ज्येष्ट
तथा आषाढे त्रण प्रहर मिश्र रहे, पढी अचित्त था
य. ते काचो लोट पीसवा नणी अचित्त बुद्धिए लीए
ते अपक्वौषधिनक्षण त्रीजो अतिचार जाणवो. दु
प्पोलिअंच के० दुःपक्वाहार ते कांइक पाको अने
कांइक काचो एवा उंला, उंबी, पोंक पापडी प्रमु
ख–तेनुं जे नक्षण ते दुप्पोलिअंचआहारेके० दुप
क्वौषधि नक्षण चोथो अतिचार जाणवो. तुच्छोस
हिनरकणया के० तुच्छौषधिनक्षण ते तुच्छ, असा
र, जे घणु खावाथी पण तृप्ति न थाय, एवी जे औ

षधि कुंली फली रूप ते तुच्छ अचित्ते करी जो वा परे तो ए तुच्छौषधिजक्षण नामे पांचमो अतिचार लागे. जेहने सचित्त खाधानो नियम होय तेने ए पांच अतिचार संजवे. ए अतिचार आश्री जे दिवस संबंधी पाप लाग्युं ते सर्व पडिक्कमुबुं॥ २१॥

हवे जे गृहस्थ आजीविकाना हेतुए कुव्यापार करे, तेने पण जोगोपजोगज कहीए, ते पांच कर्म पांच वाणिज्य, अनेपांच सामान्य–एवं पन्नर कर्मादानछे; ते अत्यंत घणा कर्मो उपार्जन करवानां कारणछे. तेमाटे एमने कर्मादान कहीए. ते गृहस्थे जाणवा पण आचरवा नहीं. तेना पन्नर अतिचार बे गाथाएकरी कहेछे.

इंगाली वण साडी॥ जाडी फोडीसु
वज्जए कम्मं॥ वाणिज्जं चेव दंत॥
लख रस केस विस विसयं॥ २२॥

अर्थ–इंगालीके० अंगारकर्म ते काष्ठ बाली अंगारा करीने वेचे. सोनार, कुंजार, लोहार, जाडनुं

जानुं कर्म, इंटवाडोकरवो इत्यादिक जेटलुं अग्नि ने आरंने नीपजे ते सर्व अंगारकर्म जाणवुं.

बीजुं वणके० वनकर्म. ते छेद्यां अथवा अण छेद्यां वन आखां वेचे. पान फल फूल लीलां तृण काष्ट अने कंद वेचे, वाडी वनखंम करावे, आजीविका हेतुए कण दले,दलावे,खांमे,खंमावे ते वनकर्म.

त्रीजुं साडीके० शकटकर्म, ते शकटना अवयव धूंसरी धूंसरा समोल प्रमुख घडे, घडावे, घडावीने वेचे वेचावे ते शकटकर्म जाणवुं.

चोथुं नाडीके० नाडीकर्म ते गाडां, बलद, उंट नेंस, खर, वेसर घोडा एउ राखी पारको नार व हावे पोते नाडुं लीए; एम जे आजीविका निमित्ते करे ते नाडीकर्म जाणवुं.

पांचमुं फोडी सुवज्जए कम्मंके० फोडीकर्म. ते कुवा वापि तलाव प्रमुख खणे खणावे, उड लोकोनुं अथवा शिलाटनुं काम करे,हल दंतालीए नूमिखेडे, खाण टांकुं खणावे इत्यादिक जेटलो पृथ्वीनो आरंन ते सर्व फोडी कर्म जाणवुं ए पांचकर्म वर्जे छांमे

हवे पांच कुवाणिज्य कहेछे. चेव पदपूर्णार्थेछे. तेमां पहेलो दंतके० दांत कुवाणिज्य, ते हाथीदांत चमरी, गायना वालना चमर, मत्स्यादिकना नख, संख, कोमा, चीम, पोइसा, कस्तूरि मुक्ताफल तथा वाघ, चितरा, अने मृगादिकनां चर्म नाथ डीबछ हिंग हांसरू प्रमुख रोम इत्यादिक त्रसजी वोना अंगनुं वाणिज्य एमां आवेछे ते जो आगरें जइ वहोरे तो घणो दोष लागे.

बीजो लखके० लाख कुवाणिज्य, ते मणशिल, टंकणखारादिक वस्तु. एथकी बाहेरना जीवोनुं मृत्यु थाय तेमाटेए सदोषछे. गुली घणा जीवोना वधथकी नीपजेछे, अने धावडी तथा मद्य प्रमुखनो व्यापार ते सर्वलाख कुवाणिज्य कहेवायछे.

त्रीजो रसवाणिज्यतेमां खांम घी तेल गोल मध प्रमुखनो व्यापार, ते सर्व रसवाणिज्य कहेवायछे

चोथो केसकुवाणिज्य. तेमां द्विपद ते मोर सूडा प्रमुख, अने चतुःपद ते गाय, नेंस, बलद, घोडा, छाली प्रमुखनो व्यापार, ते केसवाणिज्यमांहे आवेछे.

पांचमो विसविसयं के० विषवाणिज्य. विष ते सोमलखार, सींगीउं वच्छनागादिक कटारी,छुरी,धनुष्य,बाण, कुहाडादिक शस्त्र,तथा सन्नाह पाखर प्रमुख. जेना बले करी संग्राममां घणा जीवोनो संहार थाय तथा हल,कोदाल घंरटी,ऊखलो, साबु हरिआल,नांग,अफीण, पोस्त इत्यादि समस्त कुवस्तुनो जे व्यापार,ते विषकुवाणिज्य कहीए.॥२२॥

एवं खु जंतपिल्लण ॥ कम्मं निल्लंछ
णंच दवदाणं ॥ सर दह तलाय सो
सं ॥ असईपोसंच वज्जिज्जा ॥ २३॥

अर्थः-हवे पांच सामान्य कर्म कहेछे. एवंके० एमखुके० निश्चे जंतपिल्लणकम्मं के० यंत्रपीलण कर्म, ते घाणी घंटी कोल्हु, चरखा करावे नीसा घंटी ऊखल मुसल कांकसी प्रमुख करीने वेचे, ते यंत्रपीलन कर्म कहीए.

बीजुं निल्लंछणं के० निर्लांछन कर्म. ते घोडा बलदनां नाक वींधावे, आंक पडावे,समरावे,कर्ण

कंबल पूछडां छेदावे,कोटवालपणु करे, ईजारे गाम एलि आकरा कर करे. इत्यादिक जेटलुं निर्दयपणानुं कामछे ते सर्व निर्लांछन कर्म कहीए.

त्रीजुं दवदाणं के० दवदान कर्म ते व्यसनने माटे, अथवा धर्मनी बुद्धिए अथवा सुखे मोकली नूमिए संग्राम थाय अथवा स्वनावे, अथवा तृण बाल्या पछी नवां अंकुरा गायो चरे, एवी बुद्धिए दव आपे. अथवा क्षेत्रनां तृण एकठा करी बाली नाखे ते दवदानकर्म कहेवायछे

चोथुं सरदहतलाइ सोसं के० सरोवर, खण्याविना जे जग्यामां जल रहे तेवुं ठाम ते सर कहीए, अने दह के० इह, तलाव, कुआ, वापि विगेरे पाणीना स्थानकोने शोषवे. जलाशयनुं शोषण करवो तेमानुं पाणी उलेचावे तिहां अनेक जलचर पचेंद्रीजीवोनी हिंसा थायछे. तथा नील फूल प्रमुख घणा जीवोनो विनाश थायछे

पांचमु असइपोसंच के० असतिपोषक जे, कु

शील हिंसक जीवो छे, ते एवा के श्वान, मांजार, मोर, कूकडा, सूडा, सालही, दुष्ट नारी, दुष्ट पुत्रादिकनुं पोषण करे. अथवा दुष्टदास दासीनुं नरण पोषण करे, तथा माछी, कसाइ, वाघरी, तेलीनी साथे व्यापार करे. एम जे अधर्मी जीवोनुं पोषण करवुं, ते सर्व असतिपोषण कर्म कहीए. ए पांच सामान्य कर्म कह्यां. ए पनर कर्मादानने वर्ज्जिवा के० वर्जवा-छांमवा २३ हवे त्रीजुं अनर्थदंमविरमण नामा गुणव्रतकहेछे.

जे थकी निरर्थक आत्मा दंमाय-पाप लागे तेने अनर्थदंम कहीए. ते चार प्रकारेछे. तेमां पहेलुं अपध्यानाचरित्त, ते बेगो बेगो मनमां चिंतवणा करे जे, वयरीने बांधुं, मारी नाखुं, अने राजा थाउं तो वयरीना गाम बाली नाखुं, विद्याधर थाउ तो स्वेछाए ज्यां नावे त्यां जाऊं, मनमानती स्त्रीनी साथे विलास करूं. इत्यादिक जे मातुं ध्यान करे, ते अपध्यानाचरित्त कहीए, बीजुं पापकर्मोपदेश, ते लोकोने माठा उपदेश देतो रहे. जेम के, आ वाछर

डानेसमारो एने दमोखेत्रे अग्नीयो हलखेडो इत्या
दिक उपदेश आपे ते पापोपदेश कहीए. त्रीजुं हिं
सक वस्तुनुं परने आपवुं ते गाथाये करी कहेछे.

सत्थग्गि मुसल जंतग ॥ तण कठे
मंत मुल भेसज्जे ॥ दिन्ने दवाविएवा
॥ पडि० ॥ २४ ॥

अर्थ—सत्थग्गी के० शस्त्र ते पाली प्रमुख,तथा
अग्नि, अने मुसल उखल,जंतग के०यंत्र ते घाणी
गामलां प्रमुख, तणके० सावरणी प्रमुख कठके०
काष्ट ते अरहट्टनी जाति प्रमुख, मंतके० मंत्र ते
साप खिलवा प्रमुखना जाणवा, मूल के० गर्भ
शातन पातन प्रमुखना जाणवा, भेसज्ज के० भै
षज्य ते उषधादिक वशीकरण उच्चाटनादिक हेतु.
इत्यादिक वस्तु दाक्षिणता टाली बीजांने दिन्नके०
दीधां होय. वाके० अथवा देवाविएके० बीजाने
देवराव्यां होए तेनां जे दिवससंबंधी पाप लाग्या

होय ते सर्व पडिक्कमुं ॥ २४ ॥ हवे जे प्रमाद थकी अनर्थदंम लागे ते कहेछे.

न्हाणु वट्टण वन्नग ॥ विलेवणे सद्द रूव रस गंधे ॥ वछा सण आजर णे ॥ पडि० ॥ २५ ॥

अर्थ—न्हाण के० स्नान, जे अभ्यंगन करी तेल चोपडीने नाहीए, त्यां अजयणाए जीवाकुल नूमिकाए स्नान करे, अथवा अणगल पाणीए स्नान कीधुं होय, ऊवट्टण के० ऊघटणु जे पीठीप्रमुखे करी शरीरनो मेल ऊतारवो. वन्नग के० कस्तुरी प्रमुखना मांमणां प्रमुख, विलेवणे के० विलेपन ते सूखड केसर मलिआगरादि चंदन विगेरेनुं जाणवुं. सद्द के० शब्द ते वंश वीणादिकना कौतुके सांजल्या होय, रूवके० रूपस्त्रीना तथा नाटक जोयां होय, रसगंधेके० रस—गंध वर्णवीने वांछा ऊपजावी होय, वछासण के० वस्त्र तथा आसन जे मांचा, पाटला दिक, आजरणे के० आजरण ते मुकुटादिक, तथा

बीजां पण कामशास्त्र, चोराशी कामासन, कोक वात्स्यायनादिक शास्त्र जोयां होय, शीख्या होय, द्यूतक्रीडा, मद्यपान, जलक्रीडा, हींचवुं, इत्यादिक दुष्ट वानां कीधां होय, जोयां होय तेनुं जे कांइ दिवससंबंधी पाप लाग्युं होय ते सर्व पडिक्कमुं.२५

हवे एना पांच अतिचार कहेछे.

कंदप्पे कुक्कुइए ॥ मोहरि अहिगरण
जोग अइरित्ते ॥ दंडंमि अणठाए ॥
तइअंमि गुणव्वए निंदे ॥ २६ ॥

अर्थ—कंदप्पेके० जे वचनथकी कंदर्पविकार उत्पन्न थाय, कुक्कुइएके० मुख, आंख अने भ्रकुटिए करी भांडचेष्टा एवी करे के, जे थकी हास्य उत्पन्न थाय, मुहरिअ के० मुखरीवचन ते वाचालपणे मुखे करी असंबंध वचन घणां बोले. अहिगरण के० अधिकरण ते पापोपकरण सज्ज करी मूके; एटले कोश, कोदालो, कपल, मुसल, नीसा, लोढुं, घंटी प्रमुख सज्ज करी राखे; कोइ

मांगवा आवेतो तेने आपे. नोगअइरित्ते के० नोग उपनोग योग्य वस्तुनां पोताना खपकरतां पण अधिक अधिकरण करे; एटले नोगवस्तु ते तेल कंकोडी, खयल पाणी, अधिकां करे, जे देखीने बीजाने नहावानी वांछा उपजे. तेथी नोगाधिक वस्तुनो दोष लागे. अने उपनोगवस्तु ते, जो एक घरनो खप होय ने बे चार घर प्रमुख खपविना सामटां करावे; तेथी उपनोग वस्तुनो अधिक दोष लागे. एरीते दंमंमिअणछाए के० अर्थविना जे जीव दंमाय तेने अनर्थदंम कहीए तइअंमिगुणव्वए के० ए त्रीजा गुणव्रतनेविषे जे अतिचार लाग्या तेने निंदे के० निंडुंडुं ॥ २६ ॥ हवे सामायक व्रतना पांच अतिचार आलोवे छे.

तिविहे डुप्पणिहाणे ॥ अणवछाणे
तहासइ विहूणे ॥ सामाइअ वित
ह कए ॥ पढमेसिक्खावए निंदे ॥२७॥

अर्थ—तिविहे के० त्रण प्रकारे डुप्पणिहाणे

के० दुःप्रणिधान, एटले मनेकरी कुव्यापार मागो चिंतवे. बीजुं वचनदुःप्रणिधान ते सावद्य वचन बोलवुं, त्रीजुं कायाए दुःप्रणिधान ते पूंज्याविना शरीर हलाववुं, नींतनुं उंगीगण करवुं. ए त्रण थयां हवे चोथुं अणवट्ठाणेके० अनवस्था ते निरादरपणे सामायिक लेइ तत्काल पाल्युं होय, तथा असूर करीने पाल्युं होय. पांचमुं तहासइविहूणेके० तथा स्मृतिविहिन एटले सामायक लीधुं के नथी ली धुं? ए रीते स्मरण कर्युं न होय. इत्यादिक सामा इअ के० सामायकव्रतनेविषे वितहकएके० वितथ एटले खोटुं कीधुं. तेथीजे अतिचार लाग्या होय, तेने पढमे के० पहेले सिरकावए के० शिक्षाव्रतने विषे जे अतिचार लाग्या तेने निंदेके० निंदुछुं॥ २७॥

हवे बीजा शिक्षाव्रतना अतिचार कहेछे

आणवणे पेसवणे ॥ सद्दे रूवेअ
पुग्गलरकेवे ॥ देसावगासिअंमि ॥
बीए सिरकावए निंदे ॥ २८ ॥

अर्थ—आणवणेके० आनयन् ते निभेली भूमि काना बाहेरथी कांइ पोता पासे अणाववुं, ते अ नायतनामे पहेलो अतिचार जाणवो. बीजुं पेसव णेके० प्रेषण ते पोतानापासेनी वस्तुने निमेली भू मिकाथी बाहेर मोकले. त्रीजुं सद्देके० कांइ कार्य उपने थके निमेली भूमिकाथी बाहार रह्या जे मनुष्य तेने साद खुंखारो करी आपण पुं छतुं जणावे. चोथुं रूवे के० उंचो थइ पोतानुं रूप दे खाडे ने सामाने तेडे. पांचमुं पुग्गलपरकेवेके० पु ज्जल प्रक्षेप ते निमेली भूमिकाथी बाहेर रहेलाने कांकरादिक नाखी आपण पुं छतुं जणावे. ए देसा वगासियंमी के० देसावगासिक नामे बीए सिरका वएके० बीजे शिक्षाव्रते जे पाप लाग्युं तेने आ त्म साखे निंदेके० निंडुबुं ॥ २८ ॥ हवे त्रीजा पोषदनामा शिक्षाव्रतना पांच अतिचार कहेछे.

संथारुच्चारविही ॥ पमाय तहचेव

भोअणाभोए ॥ पोसह विहि विव
रीए ॥ तइए सिख्खावए निंदे ॥ ३ए ॥

अर्थ—संथारके० पाटी कांबलादिक जे संथारे होय, अने उच्चारके० वडीनीति लघुनीतिना ठं मिल, तेनी विहिके० विधि तेनेविषे पमाय के० प्रमाद करे. ते प्रमाद चार प्रकारेछे. एटले एक बोले चार आगार जाणवा. ते आवीरीते. अप्प डिलेहिअ डुप्पडिलेहिअ सिद्यासंथारे अप्पमद्यि अडुप्पमद्यिअसद्यासंथारे ॥ अप्पडिलेहिअ डुप्प डिलेहिअ उच्चारपासहवण नूमी॥अप्पमद्यिअडु प्पमद्यिअउच्चारपासहवणनूमि एनोअर्थ—संथारो तथा लघुनीति वडीनीतिना ठंमिलने दृष्टिएकरी जु ए नही; तेमज चरवला तथा दंमासणादिकेकरी प्रमार्जे नहीं, जुएतो अथवा पूंजेतो शून्यचित्ते पूंजे, तहेवके० तेमज वली भोयणाभोए के०पो सह लीधा पडी निश्चे भोजनादिकनी चिंता करे. एटले क्यारे पोसह पूरण थशे? अने क्यारे पार

एुं करशुं ? अथवा पारणे अमुक नोजन करशुं. पोसहविहिविवरिएके० ए पोसहविधिनेविषे पांचे अतिचारे करी विपरीतपणे कांइ कीधुं होय ते त इए सिरकावए निंदे के० त्रीजे शिक्षाव्रते निंडुबुं ॥२७॥ हवे चोथा शिक्षाव्रतना अतिचार कहेडे.

सच्चित्ते निरिकवणे ॥ पिहिणे ववएस
मह्वरे चेव ॥ कालाइक्कम दाणे ॥ च
उडे सिरकावए निंदे ॥ ३० ॥

अर्थ—सच्चित्ते निरिकवणेके० देवायोग्य वस्तु ऊपरे अणदेवानी बुद्धिए सचित्त मूके ए पहेलो अतिचार. तथा पहिणेवके० देवायोग्य वस्तु ते स चित्त फलादिके ढांके ए बीजो अतिचार जाणवो. त्रीजो ववएसके० व्यपदेश ते पोतानी वस्तुने अ णदेवानी बुद्धिए पारकी करीने कहे, अथवा देवा नी बुद्धिए पारकी वस्तुने पोतानी करीने कहे ते व्यपदेश, एटले वांकु बोलवुं; ए त्रीजो अतिचार जाणवो. चोथो मह्वरेचेवके० कोइने दान देतो दे

खीने तेनाथी अधिक थवा सारूं मत्सर सहित दान आपे, ते चोथो अतिचार जाणवो. पांचमो कालाइक्कम्मदाणेके० काल ते वहोरवानी वेला अतिक्रमिने साधुने तेडे; अने मनमां जाणे जे साधु हमणां वहोरशे नहीं अने म्हारो नियम पण जंग थशे नहीं, ए चकच्छे सिरकावए निंदे के० चोथे शिक्षाव्रते ए पांच अतिचार आश्री पाप लाग्युं होय ते निंदु छुं. ॥ ३० ॥

सुहिएसुअ दुहिएसुअ ॥ जामे अ
संजएसु अणुकंपा ॥ रागेणव दोसे
णव ॥ तं निंदे तंच गरिहामि ॥३१॥

अर्थ–सुहिएसुअ के० ज्ञान दर्शन अने चारित्रे करी सुखीआ अने दुहिएसुअ के० रोगेकरी अथवा तपेकरी दुखीआ, एवा जे साधु–ते साधु केवाछे? तोके–अस्संजएके० स्वछाए विचरनार नही, पण गुरुनी आज्ञाए विचरनार, तेने जामेके० जे में अनुकंपाके० आहार·पाणी वस्त्र

पात्र प्रमुख दाने करी नक्ति करीहोए, ते केवी री ते करी होय? ते कहेछे. रागेणवके० रागेकरी एट ले मह्हारो पुत्र तथा नाइ प्रमुखछे, एवा रागथी दान दीधुं, पण गुणवंतनी बुद्धिए दान दीधुं न ही. वली दोसेणव के० द्वेषे करी एटले ए बाप डाने आपणे आहार पाणी न आपीएतो बीजो कोण आपे? नहीं आपशुं तो नुखे मरशे, एवी निंदारूप जे द्वेष, तेणे करी जे दान दीधुं होए तेने आत्मा साखे निंदवुं; तथा गुरुनी साखे गरहवुं. एटले इहां रागद्वेषनी निंदा जाणवी पणदान दीधु ते निंदवुं नही.

तथा बीजो अर्थ सुहिएसु के० वस्त्र पात्र प्र मुखे करी सुखीआ, तथा रोग प्रमुखे करी दुखी आ, एवा जे असंजए के० असंजति पासबादि कने विषे जे अनुकंपा तेपण माह्हरा नाइ प्रमु खछे, एवा रागे करी दान दीधुं; अथवा नगवंत नी आज्ञाविरुद्ध करतां देखीने द्वेष उपन्यो तो पण घरे आव्या माटे दान आप्युं ते निंदवुं.

त्रीजो अर्थ आहार पाणीए करी सुखी एवा जे कुलिंगी सन्यासी प्रमुख असंयतिने गुणवंत जाणी नक्ति कीधी होय, ते एवा हेतुथी के आ आपणा उलखाणना छे एक गामना रेहेवासीछे, एवा रागेकरी, अथवा षट्कायनी हिंसाना करनार इत्यादिक दोष देखीने द्वेष उपन्यो पण घरे आव्या माटे दान दीधुं होय ते निंडवुं. इहां गुणवंत साधुने जे दान दीधुं ते निंदवुं नही पण पूर्वे कह्यां जे राग द्वेष तेनी निंदा करवी. अने पासबादिक तथा कुलिंगी प्रमुखने गुणवंतनी बुद्धिए जे दान दीधुं होय, ते निंदवुं पण सेहेज अनुकंपाए दान दीधुं होय, ते तो अनुकंपा कहेवाय तेने नगवंते निषेध्युं नथी. ॥ ३१ ॥

साहुसु संविनागो ॥ नकउ तव चर
ण करण जुत्तेसु ॥ संते फासुअदा
णे ॥ तं निंदे तंच गरिहामि ॥ ३२॥

अर्थ—हवे साधुने दान न दीधुं ते आलोवेछे.

साहुसुके० सुसाधु प्रत्ये संविजागोके० ढती शक्तिए संविजाग नकर्ज के० न कस्युं होय. ते साधु केवा छे? तो के–तवके० बार जेदे तप, चरणके० चरण सितरीना सित्तेरबोल, करण के० करणसित्तरीना सित्तेरबोल, तेणेकरी जुत्तेसु के० सहित तेने संते के० ढते फासुदाणे के० प्रासुक दाने एटले देवायोग्य वस्तु ढते पण में जे साधुनो संविजाग न कस्यो होय तंके० ते आत्मसाखे निंडुबुं, अने गुरुसाखे गरहुंबुं ॥ ३२ ॥

हवे संलेपणाना पांच अतिचार कहेछे.

इहलोए परलोए ॥ जीविअ मरणे
अ आसंस पर्डगे ॥ पंचविहो अइ
आरो ॥ मामप्र हुज्ज मरणंते ॥३३॥

अर्थ–इहलोएके० आ धर्मने प्रजावे आवते जन्वे मनुष्यपणु पामुं, एवी चिंतवणा ते इहलोका शंस प्रयोग पहेलो अतिचार जाणवो. परलोके धर्मना प्रजावे देवपणानी वांछा करवी ते परलो

काशंस प्रयोग बीजो अतिचार जाणवो. त्रीजो जीविअ के० अनशनलीधे सत्कार सन्मान देखी जीववुं वांछे ते त्रीजो अतिचार जाणवो. चोथो मरणे के० अनशन लीधे कोइ पूजा अर्चा न करता होए, अने क्षुधादिके पीडयो थको मरणने वांछे, ते मरणाशंस प्रयोग चोथो अतिचार जाणवो. आसंसपउगे के० आ धर्मने प्रभावे आवते भवे रूडा शब्दरूप रसादिक जे कामभोग छे तेनी वांछा करे. ते कामभोगाशंस प्रयोग पाचमो अतिचार जाणवो. ए पांच प्रकारना अतिचार ते मरणंतेके० मरणांते पण मामहुज्जके० मुजने म होजो ॥ ३३ ॥ हवे प्राये ए सर्व अतिचार ते मन वचन कायाने कुव्यापारे होय ते कहेछे.

काएण काइअस्स ॥ पडिक्कमे वाइ
अस्स वायाए ॥ मणसा माणसिअ
स्स॥सवस्स वया इआरस्स॥ ३४॥

अर्थ–जेकाएणके० कायाएकरी जीववधादिक

पाप लाग्यां होय ते, काइअस्सके० कायाए तप काउस्सग्ग अनुष्ठाने करी पडिक्कमेके० पडिक्कमुबुं-निवर्त्तुबुं. वाइअस्स वायाए के० वचने करी कर्कश वचनादिक बोलतां पाप लाग्युं ते वचने मिच्छामि डुक्कडादिकने देवे करी पडिक्कमुबुं. मणसा के० मनेकरी जे सम्यक्त्वनेविषे शंकादिक पाप लाग्युं ते माणसिअस्स के० मनेकरी मातुं कर्युं एम चिंतवणा करतो थको पडिक्कमुबुं. एम सवस्सवय के० सर्व व्रतोना अइआरस्स के० अतिचार पडिक्कमुबुं ॥ ३४ ॥ वली एहज वात विशेषे कहेछे.

वंदणवय सिरकागारवेसु सन्ना क
साय दंमेसु ॥ गुत्तीसु अ समिईसु अ॥
जो अइआरो अ तं निंदे ॥ ३५ ॥

अर्थ—एक देववंदन, बीजुं गुरुवंदन. एरीते वंदण के० वांदणा बे नेदेछे. अने वयके० प्राणातिपातविरमणादिक व्रत बार नेदेछे. सिरका के० शिक्षा बे नेदेछे. एक ग्रहणाशिक्षा अने बीजी

आसेवनाशिक्षा. तेमां श्रावक. गुरुपासेथी नवक रथी मांमीने उत्कृष्ट दशवैकालिकना छजीवण या अध्ययन लगे सूत्र अने अर्थ एबंने जणे–ग्रहे–धारे–शीखे.त्यां लगे ग्रहणाशिक्षा जाणवी.अने जे श्रावकनी दिवसादिक संबंधिनी जेटली समाचारी छे, ते सर्व जाणे. एटले श्रावकनी समाचारी आम छे के, पहेलो नवकार कहेतो थकोज सुतो उठे. पछी पोतानुं स्वरूप विचारे जे हुं श्रावकछुं. केटलां व्रत मुजने छे? इत्यादिक वातो श्राधदिनकृत प्र करण तथा श्राधविधिमांहे जे सामाचारी कही छे ते सर्व जाणे–आचरे–आसवे–तेने आसेवना शिक्षा कहीए. गारवेसु के० गारव ते त्रण प्रकार ना गारवछे. तेमां जे पोतापासे धन तथा कुटुंब परिवार प्रमुख घणुं देखी मननेविषे अहंकार आणे ते ऋद्धिगारव कहीए. अने जे सरस अ न्नपाणी प्रमुखनेविषे लालचु थाय, ते रसगार व कहीए. जे सुकुमाल वस्त्र सय्या घर प्रमुखने मोहे बांध्यो तेथी तेने मूकीशके नही, तेने सा

तागारव कहीए. ए त्रण प्रकारना गारव कह्या. ते नुं सेवन करवाथी. तथा सन्ना के० आहार, नय, मैथुन, अने परिग्रह–ए चार संज्ञाउ ते एकेंद्रियादिक सर्व जीवोने होय छे. कसायके० क्रोधादिक चार कषाय जाणवा. दंमेसु के० धर्मधनथी जेणेकरी आत्मा दंमाय ते दंम, मनादिक त्रणनेदे छे. गुत्तीसु के० मनादिक त्रण गुप्ति, समिईसु के० इर्यादिक पांच समिति, च शब्द थकी श्रावकनी अगीआर प्रतिमा प्रमुख, सर्व धर्मकर्त्तव्य जे छे, तेने विषे जे अतिचार लाग्या ते निंडुं ॥ ३५ ॥

हवे सम्यक्त्वनुं माहात्म्य कहेछे.

सम्मद्दिठी जीवो ॥ जइविहु पावं
समायरे किंचि॥ अप्पोसि होइ बंधो॥
जेण न निद्धंध संकुणइ ॥ ३६ ॥

अर्थ–सम्मद्दिठी के० सम्यक्त्व दृष्टि यथावस्थित स्वरूपनो जाण, एहवो जीवो के० जीव ते जइविहु के० यद्यपि निर्वाह चलाववाने अ

र्थे कर्षणादिक आरंजरूप पावंके० पापने किंचि
के०कांइक थोडुं पण समायरइ के०समाचरे, तो
पण ते आरंजथी ते श्रावकने अपोसिह्रोइबंधोके०
अल्प एटले थोडोशोकर्मबंध होय. जेणके० जेमा
टे ते ननिद्धंधसंकुणइ के० निद्धंधस एटले निर्दय
पणे न करे, पण शंका राखीने करे जे धिक्कार पडो
आ गृहस्थाश्रमने के जेनेविषे केटलां पापकरवां
पडेछे ? एवी, बीक राखीने करे जे थकी तेने पा
प थोडुं लागेछे ॥ ३६ ॥ इहां शिष्य पूछे छे के
हे जगवन् थोडुं पण विष खाधुं थकुं जेम मारे
छे, तेम थोडुंपण पाप ते घणुं दोहिलुंछे; माटे
तेनी शीगति थाय ? ते गाथायेंकरी कहेछे.

तं पिहु सपडिक्कमणं ॥ सप्परिआ
वंसउत्तरगुणंच ॥ खिप्पं उवसामेई ॥
वाहिव सुसिस्किउ विज्जो ॥ ३७ ॥

अर्थ—तंपिहुसपडिक्कमणं के० ते अल्प पाप
लाग्युं ते पण पडिक्कमणाने करवे करी अने सं

परिश्रावंत के० पश्चात्तापने करवे करी, वळी सउ त्तरगुणंच के० गुरुदत्त प्रायश्चित्तने एटले आलो यण करवे करी एने उत्तर गुण कहेछे; एमकरतो खिप्पंउवसामेइके० ते श्रावक क्षिप्र एटले उतावळुं ते पापने उपशमावे. ते कोनीपेरे? तोके–वाहिव के० व्याधिवत् एटले रोगने जेम सुसिरकउविज्जोके० सुशिक्षित एटले माह्यो वैद्य उतावळे उपशमावे तेनीपरे जाणवुं॥३७॥ वळी बीजुं दृष्टांत कहेछे.

जहा विसं कुठगयं ॥ मंत मूल विसा
रया ॥ विज्जा हणंति मंतेहिं ॥ तो तं
हवइ निव्विसं ॥ ३८ ॥

अर्थ–जहाके० जेम विसंके० विष ते कुठगयं के० कोठामांहे एटले शरीरमांहे गतं एटले प्राप्त थयुं; तेने मंतमूलविसारया के० मंत्रमूलनेविषे विसारद के० माह्या एवा विज्जा के० वैद्य ते मंते हिं के० मंत्रे करीने हणंति के० हणे छे तो.के०

तेवार पछी तं के० ते निव्विसं के० निर्विष एट
विषरहित हवइ के० थाय ॥ ३८ ॥

एवं अठविहं कम्मं ॥ राग दोस स
मज्जिअं ॥ आलोअंतोअ निंदंतो ॥
खिप्पं हणइ सुसावउ ॥ ३९ ॥

अर्थ—एवं के० ए पूर्वोक्त दृष्टांते जेम मं
प्रभाव थकी विष जायछे, तेम राग दोससम
के० रागद्वेषे करी उपार्जित कर्यां, जे अठ
म्मं के० आठ प्रकारनां कर्म, तेप्रते गुरु
आलोअंतो के० आलोवतो अने आत्मान
निंदंतोके० निंदतो थको खिप्पंके० उतावळ
वउ के० सुश्रावक ते हणइ के० हणे; एट
लां कर्मोने टाले ॥ ३९ ॥ वळी एहज वात

कय पावोवि मणुस्सो ॥ आलोइ
निंदिअ गुरु सगासे ॥ होइ अइरे
लहुउ ॥ उहरिअ भरुव भारवहो ॥

अर्थ–कयपावोविमणुस्सो के० जेणे घणां ाप कीधां एवो मनुष्य, तेपण जो गुरुसगासेके० ुरुआगळ आलोइअ के० ते पापने आलोवे, अने ंदिअके० ते पापने निंदे तो होइके० थाय. अइ ग के० अतिरेक एटले घणुं निर्मायपणे आ ोवतां जीवने घणा पापनो नार लहुउके० हल ो थाय. इहां दृष्टांत कहेछे. जेम नारवहोके०ना रनो ऊपाडनार अथवा वहीतरु करनार–तेना क परथी उहरिअनरुव्व के० नार ऊतरे थके हलुवो थाय तेनी परे जाणी लेवुं ॥ ४० ॥

आवस्स एण एएण ॥ सावउ जइवि
बहुरउ होइ ॥ डुक्काण मंत किरिअं॥
काही अचिरेण कालेण ॥ ४१ ॥

अर्थ–एएण के०ए छप्रकारना आवस्सएणके० आवश्यकने करवे करीने जइवि के० जोपण सा ्न के० श्रावक बहुरउहोइ के० बहुरत्त होय, ए े आरंन परिग्रहे करी घणां पापसहित हो

य, तोपण दुरकाण के० दुःखोनो अंतकिरिअं के० अंत करे,एटले विनाश करे. अचिरेणकालेण के० थोडाकालमांहे ते पापोनो विनाश ते काही के० करशे, ते अनुक्रमे मोक्ष पामशे ॥ ४१ ॥हवे प डिक्कमणु करतां अतिचार आलोववाने जे विसर्ज न थया ते आलोवे छे.

आलोअणा बहु विहा ॥ नयसंनरि
आ पडिक्कमणकाले ॥ मूलगुण उत्त
रगुणे ॥ तंनिंदे तंचगरिहामि ॥४२॥

अर्थ—आलोअणाबहुविहाके० आलोचवा यो ग्य जे पाप ते घणा प्रकारेछे. तेमां पडिक्कमणका ले के० पडिकमणुं करवाने अवसरे जे नयसंभ रिआके० न सांभस्या, विसर्जन थया, एवा जे श्राव कना मूलगुणउत्तरगुणे के० मूलगुण ने उत्तरगु ण—तेनेविषे जे पाप लाग्यां होय, तंके०ते पापने निंदे के० निंदुं, तथा गरिहामि के० गरहुं छं ॥ ए बेंतालीश गाथा बेगं थकां कहेवी; पछी क्ष

तो तस्सधम्मस्सकेवलिपणत्तस्स एम कही ऊनो थइ बे हाथ जोडी आठ गाथा कहे. ते कहेछे.

तस्स धम्मस्स केवलि पण्णत्तस्स॥
अब्भुट्ठिउमि आरा,हणाए विरउमि
विराहणाए तिविहेण पडिक्कंतो॥ वं
दामिजिणे चउव्वीसं॥ ४३॥

अर्थ–तस्सधम्मस्स के० ते धर्म केवलिपण्णत्त स्सके० केवली भगवानना भाषेलोछे, तेने हुं आरा हणाएके० आराधवाने अर्थे अब्भुट्ठिउके० उद्यमवंत थयोछुं. विराहणाएके० विराधना थकी विरउमि के० विरम्योछुं–निवर्त्योछुं–अलगो थयोछुं. शेणे करी विरम्योछुं? ते कहेछे. तिविहेणके० मन वचन अने कायाए करी पडिक्कंतो के० सर्व पाप प्रतिक्रमण करी ने. वंदामि जिणे चऊव्वीसं के० चोवीस तीर्थंकरप्रत्ये वांदुछुं. ॥ ४३ ॥

जावंति चेईआइ० ॥ ४४ ॥

अर्थ–ए गाथामां त्रणे भुवनमां जेटलां शाश्वतां

चैत्यछे तेने वंदना करीछे.एनो अर्थ पूर्वे लखाणोछे.

जावंत केविसाहू० ॥ ४५ ॥

अर्थ–ए गाथामां पन्नर कर्मभूमिमां जे सर्वसाधुछे, तेने वांडुछुं.॥४५॥हवे मोक्ष वांछतो प्रार्थना करेछे.

चिर संचिय पाव पणासणीइ नव
सय सहस्स महणीए॥चउवीस जिण
विणिग्गय॥कहाइंवो।लंतुमे दिअहा॥४६

अर्थ–चिरसंचिय के० घणा कालनां संचित करेलां जे पावके० पाप, तेने पणासणीइ के० प्रणाशिनी एटले टालनारी, तथा नवके० संसारना जे सयसहस्सके० शतसहस्त्र एटले लाखोगमे जे नव करवा, तेनी महणीए के० मंथन करनारी, एवी चउवीसजिण के० चोवीश तीर्थंकरो थकी विणिग्गय के० नीकली–प्रगट थइ, एवी जे कहाइके० चरित्ररूप कथा, ते कथाए करी वोलंतुके० वोलो अतिक्रमो. मेके०महारा दिअहाके० दिवसो–एटले चोवीश तीर्थंकरोनी कथा करतां म

ह्मारा दिवसो अतिक्रमो. एवी प्रार्थना करीछे॥४६॥
हवे जन्मांतरे बोधबीज पामवानी प्रार्थना करेछे

मम मंगल मरिहंता ॥ सिद्धा साहू
सुअंच धम्मोअ ॥ सम्मद्दिठीदेवा ॥
दिंतु समाहिंच बोहिंच ॥ ४७ ॥

अर्थ—ममके० मुजने मंगलके० एटलां वानां मंगलनां करनार थाउ, अरिहंताके० अरिहंत, सिद्धाके० सिद्ध, साहुके० साधु, सुअंचके० श्रुतसिद्धांत अग्यारअंग चउदपूर्व, धम्मोअके० धर्म ते चारित्ररूप. एटलां वानां मुजने मंगलकारी होजो. सम्मद्दिठिदेवाके० सम्यक्त्वदृष्टि जिनभक्त जे देवो छे, ते मुजने दिंतुके० दीउ—आपो, समाहिंके० मननी समाधिप्रत्ये तथा बोहिंचके० वली बोधबीज ते भवांतरे धर्मनी प्राप्ति आपो ॥ ४७ ॥ हवे चार प्रकारे अतिचार लागे ते कहेछे. अर्थात् जेटला वानानुं पडिक्कमवुं होय ते कहे छे.

पडिसिद्धाणं करणे ॥ किच्चाण मकरणेअ पडिक्कमणं ॥ असद्दहणेअ तहा॥विवरीय परूवणाएअ ॥ ४८ ॥

अर्थ—पडिसिद्धाणंके० प्रतिषेध ते निषेधि जे वस्तु एवां जे प्राणातिपातादिक अढार पापस्थानक तेने करणे के० करवे करी पडिक्कमवुं. किच्चाण के० करवायोग्य जे सामायक, देवपूजा, विनय दानादिक, तथा अरिहंतनी नक्ति—तेने अकरणे के० अणकरवाथी पडिक्कमवुं. पडिक्कमणं ए पदनो अर्थ गाथाने ठेडे कहीशुं. असद्दहणे के० निगोदादिकना विचारने अणसर्द्दवे करीने पडिक्कमवुं. च के० वली तहा के० तेम ज विवरिअ के० विपरीत परूवणाएअ के० परूपणा करवे करीने, एटले जे सिद्धांत साथे मले नहीं, एवा उत्सूत्रनी परूपणा करवे करीने. ए रीते ए चार प्रकारेकरीने जे पाप लाग्युं तेहने उपशमाववाने अर्थे पडिक्कमणुं करवुं ॥ ४८ ॥

हवे सर्व संसारी जीवने खमावे छे.

खामेमि सव्व जीवे॥सव्वे जीवा खमंतुमे ॥
मित्तिमे सव्वजूएसु॥वेरंमझंनकेणइ॥४ए॥

अर्थ—खामेमिसव्वजीवे के० हुं सर्व जीवो प्रत्ये खमावुं हुं,अने सव्वेजीवाखमंतुमे के० हे सर्व जीवो तमे पण मह्यरो अपराध खमजो. मित्ति मे सव्वजूएसु के० जेमाटे माह्यरे सर्वजूत के० सर्व प्राणी साथे मैत्रीछे. वेरंमझंनकेणइ के० म ह्यरे कोइनी साथे वैर नथी, पण बधा साथे मै त्री छे. ॥ ४ए ॥ हवे मंगलिक गाथा कहे छे.

एवमहं आलोइअ॥ निंदिअ गरहि
अ डुगंछिअ सम्मं॥ तिविहेणपडि
क्कंतो ॥ वंदामि जिणेचउव्वीसं ॥५०॥

अर्थ—एवं के० ए पूर्वोक्त रीते अहं के० हुं सर्व पापने गुरु आगल आलोइअके० आलोचीने, अने निंदिअ के० आत्मानी साखे निंदिने अने गरहीअ के० गुरुनी साखे गरहीने अने सम्मं के०

सम्यक्प्रकारे डुगंछिअ के० डुगंछा करीने एटले अमुक में मारां कार्य कर्यां, एम वारंवार कहीने तेने तिविहेणपडिक्कंतो के० मन वचन अने काया ए त्रिविधे करी पडिक्कमुं, एटले ते पापो थकी निवर्त्तिने वंदामिजिणेचउव्वीसं के० चोवीशे जिनप्रत्ये हुं मंगलिकने अर्थे वांडु छुं ॥ ५० ॥ इहां नवमा सामायक व्रतना अर्थमां नीचे लखेली वात रहीगएली छे ते इहां लखिए छैए. शिष्य पूछे छे के हे जगवन् सामायक लेइने पछी सर्वथा मननो संवर तो करी शकीए नही, अने मनने कुव्यापारे सामायकनो जंग थायछे, एकतो तेनुं पाप लागे; अने बीजुं सामायक जंग थाय तेनुं प्रायश्चित्त फरी करवुं जोइए, माटे सामायक करवाने बदले नही करवुं तेज जलुं छे. एवुं पूछनारने सुगुरु उत्तर आपेछे के, सामायक तो अवश्य करवुं. केम के सामायक तो डुविहंतिविहेणं ए जांगे लेवायछे. एमां मन वचन अने कायाएकरी सावद्य व्यापार करुं नही अने करावुं

नही. ए ठ नियम आवे तो ठ मां केवारेक एक नियम नंग थाय, तोपण पांच तो अखंमित रहे. अने मनना कुव्यापारनु पाप अल्प होय ते मि ह्यामिडुक्कडं देवाथी बुटीए पण एवा कारणथी जो सामायक करवानो चाल टालीए तो आ कालमां चारित्रिउ कोइज नथी एवुं थइ जाय, तेमाटे सा मायक अवश्य लेवुं. अने सामायक लेइने शुद्ध पालवानो खप करवो. कारण हमणांनी दीक्षा अने सामायक प्रमुख जेटे ते सर्वे अच्यास मात्र ठे. माटे अच्यास करतां थकां कोइ वखते शुद्ध चारित्रनुं लान पण थशे. इति वंदितासूत्र समाप्तः

पठी वली तेमज बे वांदणा देइने गुरुने अ पराध खमाववाने आवीरीते कहे ते कहे ठे.

॥ अथ अनुठिउहं ॥ ३६ ॥

इठाकारेण संदिसह नगवन् ॥ अ नुठिउ हं अप्निंतर देवसिअं ॥ खा मेउं इठं खामेमि देवसिअं ॥ जंकिं

चि अप्पत्तियं परप्पत्तियं नत्ते पा
णे विणए वेआवच्चे आलावे संलावे
उच्चासणे॥ समासणे अंतरनासाए॥
उवारिनासाए जंकिंचि ॥ मज्झविणय
परिहीणं॥सुहुमंवा बायरंवा॥ तुप्ने जा
णह अहं नयाणामि ॥ तस्समिच्छा
मिडुक्कडं ॥ इति ॥ ३६ ॥

अर्थ—इच्छाकारेण संदिसह के० जो तमारी इच्छा होय तो आदेश दीउ. नगवन् के० हे ज्ञानवंत, अब्बुहिउहं के० हुं उजमाल—साव धान थयो बुं. अप्निंतर देवसिअंखामेउं के० दिवस मांहेलो अपराध, खमाववाने काजे स ज्ज थयो बुं. तेवारे गुरु कहे. खामेह के० खा मो. तेवारे शिष्य कहे. इच्छं के० वांबुबुं. त मारी आज्ञा प्रत्ये. पढी पंचांग प्रणाम करी मु खे मुहपती राखी एम कहे के, खामेमि देवसिअं के० खमावुंबुं. दिवससंबंधी विरुद्ध आचरवुं. ते

कियुं? जंकिंचिअप्पत्तियं के० जे कांइ अप्रीति उ पजावी होय, परप्पत्तियं के० विशेष अप्रीति उ पजावी होय, शानेविषे? नत्ते पाणे के० जात पाणीनेविषे विणए के० विनयनेविषे. ते गुरु आवे उना थावुं, गुरुने आसन प्रमुख आपवुं तेने विनय कहीए. वेयावच्चेके० औषध पथ्य पाणी, वि सामणा प्रमुख, जे वैयावच्च तेनेविषे. आलावे के०एकवार बोलाववुं,ते आलाप. तेनेविषे अने सं लावेके०वारंवार बोलाववुं ते संलाप, तेनेविषे जे विनय चूक्यो होय,वली उच्चासणेके० गुरुथी ऊंचे आसने बेसतां समासणेके०गुरुनी पासे सरखा त था बराबरनाआसने बेसतां वली अंतर नासाएके० गुरुना बोलतां वचमां बोली कथाथी,उवरि ना साए के० गुरुबोली रह्या पछी तेज वात पोता नी चतुराइए विशेषे बोल्याथी, इत्यादि जंकिंचिम झ विणय परिहीणं के० जे कांइ में विनयही नपणे कीधुं होय, एटले में जे कांइ अविनय कर्यो होय, सुहुमं के० सूक्ष्म एटले न्हानो, बायरं वा

के० अथवा बादर एटले मोटो जे अविनय;
राध मुजथी थयो ते हे ज्ञानवंत बहुश्रुत,
जाणहकें० तमे पंम्रितपणे करी जाणोछो.
न याणामि के० हुं मूर्ख हुं माटे जाणतो न
तस्स मिछामिडुक्कडं के० ते सर्व डुष्कृत जे प
ते मिथ्या के० फोकट थाउ. ॥ ३६ ॥

॥ अथ आयरिअउवझाए ॥ ३७ ॥

आयरिअ उवज्जाए ॥ सीसे साह
म्मिए कुलगणेअ ॥ जेमे केइ कसा
या ॥ सवे तिविहेण खामेमि ॥ १ ॥

अर्थ–आयरिय उवझाए, सीसे साहमिए
ल गणेय के० आचार्य, उपाध्याय, शिष्य, सा
र्मिक, कुल (एक आचार्यना संताननें कुल क
हेछे) अने गण (घणा साधु तथा आचार्योन
संतानोने गछ कहे छे) एउने विषे जे में केइ क
साया के० जे कांइ माराथी क्रोधादिक कषाय उ
पन्या होय ते सवे तिविहेण खामेमि के० बधा

मन वचन अने कायाए करी खमावुंछुं ॥ १

सव्वस्स समण संघस्स॥ नगवउ अं
जलिं करिअ सीसे ॥ सव्वं खमावइ
त्ता ॥ खमामि सव्वस्स अहयंपि॥२॥

अर्थ–सव्वस्स समण संघस्स के० पन्नर क
नूमि मांहे जे सर्व श्रमण संघ, ते केवोछे ? तो
नगवउके०ज्ञानवंत अने यशवंत एवा अने स
सुरासुर मनुष्यने पूजनिक, तेने अंजलिं करेसी
के० बे हाथ जोडी माथे चडावीने सव्वं खमा
इत्ता के० बधो अपराध विनय पूर्वक खमावुं
. खमामि सव्वस्स अहयंपि के० ते ते सर्व जीव
बंधी अपराध हुं पण खमुं छुं ॥ २ ॥

सव्वस्स जीव रासिस्स ॥ नावउ
धम्म निहिअ निअचित्तो ॥ स
व्वंखमावइत्ता ॥ खमामि सव्वस्स
अहयंपि ॥ ३ ॥ इति ॥ ३७ ॥

अर्थ—सव्वस्स जीवरासिस्सके० सघला चोरा शीलाख जीवराशीने जावउ धम्मनिहिय निअ चित्तो के० जेणे जावेकरी धर्मने विषे पोतानुं चित्त थाप्युं ठे एवो थको हुं, ते सव्वंखमावइत्ताके० बधानो अपराध खमावीने, खमामि सव्वस्स अहयंपिके० हुं पण ते बधानो अपराध खमावुंछुं.॥२

॥ अथ नमोस्तु वर्द्धमानाय ॥ ३८॥

इछामो अणुसठिं ॥ नमो खमा
समणाणं ॥ नमोर्हत्० ॥ नमो
स्तु वर्द्धमानाय ॥ स्पर्द्धमानाय
कर्मणा ॥ तज्जया वाप्त मोक्षाय
॥ परोक्षाय कुतीर्थिनां ॥ १ ॥

अर्थ—नमोस्तुवर्द्धमानाय के० श्रीवर्द्धमान स्वामिने नमस्कार हो. स्पर्द्धमानायकर्मणाके० श्री वर्द्धमान केवाठे तो? के—जे कर्मरूप वैरी साथे स्पर्द्धा एटले इर्षा करे ठे. एवाठे. तज्जयाके०ते क

मेंरूप वैरीने जीतवे करी वाप्तमोक्षायके० पाम्यो छे मोक्ष जेणे. वली परोक्षाय के० वेगला छे कुती र्थीनां के० परदर्शनीउंनाथी एवा छे. ॥ १ ॥

येषां विकचार विंदराज्या॥ज्यायः क्र मकमलावलिं दधत्या॥ सदृशै रिति संगतं प्रशस्यं ॥ कथितं संतु शिवा य ते जिनेंद्राः ॥ २ ॥

अर्थ—येषांके० जे स्वामिना विकचारविंदराज्या के० विकस्वर सुवर्णमय कमलनी श्रेणी तेणे स्वा मिना क्रमकमलावलिंके० पदकमलनी श्रेणीप्र त्ये, दधत्या के० धारण करीने सदृशैरितिसंगतं के० सरखासाथे अमे मल्या, ए प्रशस्यंके० अति शय नलुं थयुं. जेमाटे अमे पण कमल अने स्व मिना पग तेपण कमल, तो अमने एनासाथे म लतां अत्यंत नलुं. ते जिनेंद्राः के० ते जिनेंद्र मने शिवायके० मोक्षने अर्थे संतुके० थाउ.॥२॥

कषाय तापार्दित जंतुनिर्वृतिं ॥ करो

तियो जैनमुखांबुदोज्ञतः ॥ सशु
क्रमासोद्भव वृष्टि संनिभो ॥ दधातु
तुष्टिं मयि विस्तरोगिरां॥३॥इति॥३८॥

अर्थ—कषायरूप तापे करी अर्दित के० पी
ड्यां एवां जे जंतु के० प्राणी, तेने निर्वृतिं के०
समाधीप्रत्ये करोति के० करो. योके० जे आग
म, जैनमुख के० जिनना मुखरूपी अंबुद के०
मेघथकी उज्ञत के० उपन्युं. सके० ते आगम
शुक्रमासो के० ज्येष्ट महीनाना मेघनी वृष्टी स
न्निभो के० सरखो, तुष्टिंके० तुष्टिप्रत्ये मयि के०
माहरेविषे गिरां के० वाणीनो विस्तरो के० वि
स्तार, दधातुके० धारण करो ॥ ३ ॥ ३८ ॥

॥ अथ विशाललोचन ॥ ३९ ॥

विशाल लोचन दलं ॥ प्रोद्यद्दंतां
शु केसरं ॥ प्रातर्वीरजिनेंद्रस्य ॥ मु
खपद्म पुनातुवः ॥ १ ॥

अर्थ—मुखकमल केवुंछे? विसाललोचनके०

विस्तीर्ण लोचनरूपी दलं के० पांदडांछे ज्यां. वली प्रोद्यत् के० जलहलता दंताके० दांतना किरणरूपी केसरं के० परागछे ज्यां, एवा श्रीवीर जिनेंद्रस्य के० श्रीवीरजिनेंद्रनुं मुखपद्मं के० मुख रूप कमल ते प्रातः के० प्रजातकाले वः के० तमोने एटले नव्यजीवोने पुनातु के० पवित्र करो? ॥ १ ॥

येषा मभिषेक कर्म कृत्वा ॥ मत्ता ह
र्षन्नरात् सुखं सुरेंद्राः ॥ तृणमपि
गणयंति नैवनाकं ॥ प्रातःसंतुशिवा
यते जिनेंद्रा ॥ २ ॥

अर्थ—येषाके० जेमनो अनिषेककर्मकृत्वाके० अनिषेक महोत्सव करीने मत्ता के० मत्त एटले पुष्ट थका हर्षनरात् के० हर्षना समूहथी सुखं सुरेंद्राके० सुख जेम होय तेम देवेंद्र पण तृणमपि गणयंतिनैवनाकं के० तृणप्राये पण देवलोकने गणतो नथी. तेजिनेंद्राके० ते जिनेंद्र प्रातःके० प्र जाते शिवायके० मंगलिकने कार्ये संतुके० थाउ २

कलंक निर्मुक्त ममुक्त पूर्णतं ॥ कुतर्क राहु ग्रसनं सदोदयं ॥ अपूर्व चंड्र जिनचंड्र नाषितं ॥ दिनागमे नौमि बुधै र्नमस्कृतं ॥ ३ ॥ इति ॥ ३ए ॥

अर्थ—कलंकनिर्मुक्त के० कलंकरहित अमुक्त पूर्णतं केवारे संपूर्णपणु न मूके, कुतर्कराहुग्रसनं के० परदर्शनरूप कुतर्कराहुने ग्रसतो, वली सदोदयंके० सदा सर्वदा उदय पामनारो पण अस्त न थाय, तेमाटे अपूर्वचंड्र एवो नाषितंके० जिनेश्वरनाषित सिद्धांतप्रत्ये दिनागमेनौमिके० दिवसने उदए एटले प्रनात समये हुं स्तवुं बुं ते सिद्धांत केवो बे? तोके जेने बुधैर्नमस्कृतंके० पंमितोए नमस्कार कस्यो बे. एवो बे ॥ ३ ॥ ३ए॥

॥ अथ श्रुतदेवता स्तुति ॥ ४० ॥

सुअदेवयाएकरेमि काउस्सग्गं० ॥ सुअदेवया नगवई ॥ नाणावरणी अ कम्मसंघायं ॥ तेसिं खवेउ सय

यं॥जेसिं सुअ सायरे नत्ती॥१॥इति॥४०

अर्थ–श्रुतसिद्धांतनी अधिष्टायका जे सरस्वती, तेने आराधवा निमित्त काउस्सग्ग करुं. इहां 'वंदणवत्तिआ' ए पाठ न कहीए.अन्नछउससिएणं कहीए. सुअदेवया नगवईके० हे श्रुत देवता केवीछे? तोके नगवती के० महिमावंत छे, सययं के० निरंतर जेसिं सुअ सायरे नत्ती के०जे नव्य जीवने श्रुतरूप समुद्रनेविषे नक्तिछे. नाणावरणीय कम्म संघाय के० जे ज्ञानावरणीय कर्मनो संघात एटले समूह तेसिंके० ते नव्य जीवोनो तेप्रत्ये क्षपवो एटले टालो. ॥ १ ॥

॥ अथ खेत्रदेवतानी स्तुति ॥ ४१ ॥

जीसेखित्ते साहू॥ दंसण नाणेहि च
रण सहिएहिं॥ साहंति मुक्कमग्गं॥
सादेवी हरउ डुरिआइं ॥१॥ इति॥४१॥

अर्थ–जीसे खित्ते साहूके०जे देवताना क्षेत्रने विषे साधुउ, दंसण नाणेहिं चरण सहिएहिंके०

ज्ञान दर्शन तथा चारित्र आदिगुणे करी युक्त, सा
हंति मुरकमग्गं के० मोक्षमार्गने साधे छे, ते सा
धुउना सा देवी हरउ डुरिआइं के० ते क्षेत्रदेव
ता समस्त डुरित जे कष्ट ते प्रते अपहरो ॥ २ ॥

॥ अथ नवणदेवतानी स्तुती ॥ ४२ ॥

नुवण देवयाए करेमि काउस्सग्गं ॥
यस्याक्षेत्रं समाश्रित्या ॥ साधुनिः
साध्यते क्रिया ॥ सा क्षेत्रदेवता नि
त्यं ॥ नूयान्नः सुखदायिनी ॥ १ ॥

अर्थ—यस्याः क्षेत्रं समाश्रित्य के० जे देवता
नां क्षेत्र ते ठेकाणे आश्रयिने साधुनिः साध्यते
क्रिया के० यतिउए धर्मनी क्रिया साधी जायछे.
साक्षेत्रदेवतानित्यं के० ते क्षेत्रनी अधिष्ठायिका
देवी ते निरंतर नःके० अमने सुखदायिनी के०
सुखनी देनारी नूयात् के० थाउ. ॥ १ ॥

ज्ञानादिगुणयुतानां ॥ नित्यं स्वाध्या
य संयम रतानां ॥ विदधातु नुवनदे

वी ॥ शिवं सदा सर्व साधूनां ॥ २ ॥

अर्थ—ज्ञानादिगुणयुतानां के० ज्ञान दर्शन तथा चारित्र गुणे करी युक्त, अने नित्यं के० निरंतर स्वाध्याय अने सत्तरप्रकारनो संयम, तेने विषे रतानांके० आसक्त एवा सर्व साधुनांके० सर्व साधुउ, तेमने नुवनदेवता एटले हे नुवननी अधिष्टायिका देवि, शिव के० मंगलिकने सदा के० निरंतर विदधातु के० नीपजावो ॥ २ ॥ ए नुवनदेवतानो काउस्सग्ग करवो आवश्यकमां कह्यो छे. तेमाटे ए मिथ्यात्व समजवुं नही. ॥४२॥

॥ अथ कमलदल स्तुति ॥ ४३ ॥

कमलदल विपुल नयना ॥ कमल मुखी कमलगर्न सम गौरी ॥ कमले स्थिता नगवती॥ ददातु श्रुतदेवता सिद्धिं ॥ १ ॥ इति ॥ ४३ ॥

अर्थ—कमलदल विपुल नयना, के० कमलनां दल एटले पत्र तेउनी परे विपुल एटले मो

टां अने तीक्ष्ण लोचन छे जेनां. कमलमुखीके० कमलना जेवुं सुगंधी, वाटलुं, अने सुशोभित छे, मुख जेनुं, कमल गर्भसमगौरी के० कमलनो गर्भ अर्थात् कमलना मध्यभागमां जे गर्भ छे, तेनासरखो गौरवर्ण छे जेनो एवी, कमलेस्थिता भगवती के० कमलनेविषे बेठेली भगवती एटले जे सरस्वती, एवी श्रुतदेवताके० श्रुत देवता एटले सिद्धांतनी अधिष्टायिका देवी ते, मुजने सिद्धिके० धर्मनी सिद्धिने दधातुके० आपो. अथवा मोक्षनी प्राप्ति करो.

॥ अथ अढ्ढाइज्जेसु मुनिवंदन ॥ ४४ ॥

अढ्ढाइ ज्जेसु दीव समुद्देसु ॥ पन्नरससु कम्म भुमीसु ॥जावंत केवि साहू रयहरण गुछ पडिग्गह धारा ॥ पंचमहव्वयधारा॥ अढारस सहस्स सीलंग धारा ॥ अरकयायारचरित्ता ॥ तेसव्वे सिरसा मणसा ॥ मछएण वंदामि ॥ १ ॥ इति ॥ ४४ ॥

अर्थ—अड्ढाइज्जेसु दीवसमुद्देसु के० अढीद्वी पनेविषे एटले प्रथम जंबूद्वीप, बीजो धातकीखंम, अने त्रीजो पुष्करवर द्वीपनुं अर्द्ध, अने बे समुद्र एटले लवणसमुद्र अने कालोदधि समुद्र—एउने विषे पन्नरससुकम्मभूमिसु एटले पांच भरत, पांच ऐरवत, तथा पांच महाविदेह, ए पन्नर कर्मभूमिने विषे जावंतकेवि साहू के० जेटला कोइ साधुउ छे, ते रयहरणके० उघो, गुच्छ के० पात्रानी झो लीनी उपरनुं उपकरण ते गुच्छो, अने पडिग्गहके० पतद्ग्रह, ते पात्रु एटलां वानांना धराके० धारण करनारा, एटले साधुवेषे संपूर्ण, तेमज पंच मह व्वयधराके० पांच महाव्रतना धारण करनारा, अ ढार सहस्स सीलंगधराके० अढार हजार सीलंग रथना धरनार, अरकयायार चरित्ता के० अखं म आचार तथा चारित्र छे जेहनां, ते सव्वे सिर सा मणसा मच्छएण वंदामिके० ते सर्व साधुउने मस्तके करी तथा मने करी मच्छएण वंदामि ए वचने करी पंचांग प्रणामे करी वांडुंछु. ॥४४॥

॥ अथ वरकनक ॥ ४५ ॥

वरकनक शंख विद्रुम ॥ मरकत घ
न संनिभं विगतमोहं ॥ सप्तति शतं
जिनानां ॥ सर्वामर पूजितं वंदे ॥१॥

अर्थ—वरके० प्रधान उत्तम जातिवंत एवुं क
नकके० सुवर्ण शंखके० शंख विद्रुमके० परवालुं,
मरकतके०नीलुरत्न, घनके०वरसाद, तेउना सन्नि
भंके० सरखा एटले पांचवर्णना शरीरवाला, अने
विगतमोहं के० जीत्योछे मोह जेणे एवा, उत्कृ
ष्टे काले सप्ततिशतं के० एकशोने सित्तेर जिनानां
के० तीर्थंकरो जेउ सर्वामरपूजितंके०सर्व देवताउ
ए पूजितछे ते तीर्थंकरोने वंदे के० हुं वांदुछुं॥४५

॥ अथ चउकसाय ॥ ४६ ॥

चउक्कसाय पडिमल्लु ल्लूरणु ॥ डुज्ज
य मयण बाण मुसुमूरणु ॥ सरस
पिअंगु वन्नु गयगामिउ ॥ जयउ पा

पासु त्रुवणत्तय सामिउ ॥ १ ॥

अर्थ– चउकसायके० क्रोधादि चार कषाय, ते रूपीजे पडिमल्ल के० प्रतिमल्ल, एटले वैरी तेना उल्लूरण के० टालणहार, वली डुज्जय के० डुर्जय एटले डुखे जीताय एवो जे, मयण के० मदन एटले कंदर्प तेनां तीक्ष्ण बाण, तेनुं मस मूरणके० उन्मूलन करनार, वली सरसके० रसे करी सहित एवुं पीयंगु के० प्रीयंगुवृक्ष तेना सदृस नीलवर्णछे जेनुं, वली गयगामिय के० हाथीनीपरे गतिछे जेमनी, एवा जयउपासत्रुवणत्तय सामिअके० त्रण जगत्ना स्वामि श्री पार्श्वनाथ ते जयवंता वर्त्तो ॥ १ ॥

जसुतणु कंति कम्प्पसिणिद्धउ ॥ सो
हइ फण मणि किरणालिद्धउ ॥ नि
व्व जलहर तडिल्लय लंछिउ ॥ सो
जिणु पासु पयछउ वंछिउ ॥२॥इति॥४६

अर्थ–जस तणुकंतिके० जेना शरीरनी कांतिनो

कडप्पके० कलाप एटले समूह तेकेवोछे तोकेसिण छउके० स्निग्ध-एवो सोहइके० शोनेछे. वली फणि मणिकिरणा लिछउके० सात फणोनीजे मणिउ ते उनी किरण एटले कांतिए करी,आलिछउ एटले व्याप्त थएलो, अथवा मिश्रथएलो मलेलो ते नं नव जलहर तडिल्लय लंछिउ के० नं एटले जा णिए नव जलहर एटले नवीन मेघ ते जेमा तडिल्लय लंछिउ एटले विजलीए करी सहित शो नेछे तेनी परे शोनतो होयना! एवोछे सोजिण पा सु पयछ्उ वंछिअ के० एवा हे श्रीपार्श्वजिन, मा हरा वांछित पयछउ एटले प्रत्ये दीउ ॥२॥४६॥

॥ अथ पोसहनुं पच्चरकाण ॥ ४७ ॥

करेमि नंते पोसहं आहारपोसहं देसउ सवउ सरीर सक्कार पोसहं सवउ बंनचेर पोसहं सवउ अ वावार पोसहं सवउ चउविहे पोसे हंगमि जाव दिवसं अहोरत्तं प

ऊुवासामि डुविहं तिविहेणं म
णेणं वायाए काएणं नकरेमि न
कारवेमि ॥ तस्सन्नंते पडिक्कमामि
निंदामि गरिहामि अप्पाणं वो
सिरामि ॥ १ ॥ इति ॥ ४७ ॥

अर्थ–करेमि नंते पोसहंके० हे नगवन्, अग्यार
मा पोसह नामे व्रतने अथवा धर्मने पुष्टी करेते
पौषध ते प्रते हुं करूंबुं. पोसह एटले अष्टमि अने
चउदश प्रमुखनेविषे जे नियम करवो ते. नियमचा
र प्रकारेछे. एक आहारपोसहंके० आहारनो नियम
ते, देशउ के० देशथी करूंबुं, सव्वउ के० सर्वथीक
रूंबुं ; जो देशथी करे तो आहार अथवा पाणी
पोते लिए. अने बीजाने लेवरावे. उपवास तथा ए
कासणादिक तप करे, वली सर्वथी उच्चरे तो चो
ऊविहार उपवास करे. बीजो सव्वउ सरीर सक्कार
पोसहंके० सर्वथी शरीरनो सत्कार, स्नान, मज्जन,
वस्त्र, तथा आनरणादिके करी शोनानो नियम तथा

नखकेश रोमनुं समारवुं, तेल चोलावबुं, पीठीनुं कर वुं. इत्यादिक सर्व निषेध करे. त्रीजो सव्वउ बंभचेर पोसहंके० सर्व थकी ब्रह्मचर्यनी पुष्टी करे, एटले सर्व प्रकारे स्त्रीनुं सेवन करे नही; चोथुं सव्वउ अ व्वावार पोसहं के० सर्वथी अव्यापारनी पुष्टी करे, एटले घर प्रमुखना जे पापव्यापार, तेनो सर्व थी निषेध करे. ए चार प्रकारे पोसहने ठामि एट ले अंगीकार करूंछुं. जाव दिवस पज्जुवासामि के० ज्यां सुधी दिवसछे त्यां सुधी कह्या जे ए चार नियम ते निरतिचारपणे पालुं. अथवा जाव अहो रत्तके० ज्यांसुधी दिवस अने रात्रछे, त्यां सुधी पोस ह रूप नियम, अने थोडोएक दिवस होए ते वारे रात्रि पोसह लिएतो आ प्रमाणे पाठनो उच्चार करवो. जाव दिवस सेसं रत्तिं पज्जुवासामिके० ज्यां सुधी थोडो दिवस होय. त्यांथी लइने आखीरात्र सुधी पोसह निरतिचार पालुं. दुविहंतिविहेणंके० बे प्रकारे अने त्रण प्रकारे मणेणं वायाए काए णं के० मन वचन अने कायाए करी न करेमि

के० पोते सावद्य करूं नहीं, अने नकरावेमि के०बीजाने उपदेश आपी तेनी पासे सावद्य करा वुं नही. अने अनुमति मोकलीछे. केमके अनुमोदनानो नियम गृहस्थथी पले नहीं. तस्स नंतेके० सावद्य पाप थकी हे नगवन् पडिक्कमामिके०पडिक्कमुंछुं. निवर्त्तुंछुं. निंदामिके० आत्मानीसाखे करी निंदुछु. गरिहामि के० गुरूनी साखे गरहुंछुं. अप्पाणंवोसिरामि के० पापनो करनार एवो जे आत्मा ते प्रत्ये वोसिरावुंछुं. ॥४७॥

॥ अथ पोसह पारता गाथा ॥४८॥

सागरचंदोकामो ॥ चंदवडिंसो सुदं
सणो धन्नो ॥ जेसिं पोसह पडिमा॥
अखंडिआ जीविअंतेवि ॥ १ ॥

अर्थ—सागर चंदो कामोके०सागर चंद अने कामदेवनामे श्रावक, चंदवडिंसो सुदंसणोके० चंद्रावतंसक राजा वलीसुदर्शनशेठ तेने राणीए चूकाव्यो पण चूंक्यो नही. ते, धन्नो के०धन्य एटले नाग्यवंत,

जेसिं पोसहपडिमाके० जेउना पोसहनो पडिमा ए टले अभिग्रह ते, अखंडिआ जीविअंतेविके० अखं डित एटले खंडना रहित एवा जेउए मरणांत सु धी नियम पाल्या एवा पूर्वोक्त पुरुषो ते तथा १

धन्ना सलाहणिज्जा ॥ सुलसा आणं द कामदेवाय ॥ जेसिं पसंसइ नय वं ॥ दढव्वयंतं महावीरो ॥ २ ॥

पोसह विधे लीधो ॥ विधे पारिउ विधि करतां ॥ जेकांइ अविधि हु उ होय ॥ ते सवि हुं मन वचन काया ए करी ॥ मिच्छामि डुक्कडं॥ ३ ॥ इति

अर्थ–धन्नाके० धन्य एटले मोटा नाग्यवं त सलाहणिज्जाके० श्लाघनीय एटले प्रशंसा क रवा योग्य, सुलसा आणंद काम देवाय के० सुलसा श्राविका, आणंद श्रावक तथा कामदेव श्रावक जेसिंपसंसइ नयवं के० जेउनी प्रशंसा

श्री नगवाने पोते करेली बे, दढव्वयं तं महा वी
रो के० एज दृढ व्रतवाला बे, एवी रीते श्री म
हावीर नगवाने श्री मुखे वखाण करेलुं बे. इहां
पोसह, विधें लीधो इत्यादिकनो अर्थ सुगम बे.

॥ अथ संथारा पोरिसि प्रारंनः ॥ ॥ ४ए ॥

निसिही निसिही निसिही ॥ नमो
खमा समणाणं गोयमाइणं महामु
णीणं॥नमो अरिहंताणं०॥करेमि० ॥
अणु जाणह जिठिज्जा ॥ अणु जाण
ह परम गुरु गुरुगुणरयणेहिं मंमि
य सरीरा बहु पडिपुन्ना पोरिसी राई
अ संथारए ठामि ॥ १ ॥

अर्थ—निसीहीनिसीहिनिसीहि के० नमस्का
रविना बीजो व्यापार निषेधीने नमोखमासम
णाणंके० नमस्कार हो. क्षमासहित एवा जे गो
अमाइणंके० गोतमादिक महामुणीणंके० मोहो
टामुनीश्वरने.इहां नवकार कहीने वली करेमिनंते

कहीये. एम त्रणवार कहीए. पछी अणुजाणह के० आज्ञा आपो. जिछिज्जा के० महोटा साधु अणुजाणह परमगुरू के० आज्ञा आपो, एम जे पोशालमां महोटा गुरूछे तेने केहेवुं. ते गुरू केवाछे? तोके गुरुके०महोटा एवा जे गुण रयणेहिं के०गुण तद्रूप रत्नेकरीने मंमित छे एटले शोनायमानछे शरीर जेनुं, बहुपडिपुन्नापोरिसि के० अतिशय प्रतिपूर्ण थइ पोरिसी राइअसंथारए के० रात्रीना संथाराने विषे ठामि के० ठाऊं ॥ १ ॥

अणु जाणह संथारं ॥ बाहु वहाणे
ण वाम पासेणं ॥ कुक्कडि पाय पसा
रेणं ॥ अतरंतु पमज्जएनूमि ॥ २ ॥

अर्थ-अणुजाणह के० आज्ञा आपो मूजने तो हुं संथारंके०संथारो करुं.बाहुवहाणेणके०हाथने उसीके वामपासेण के० मावे पासे कुक्कुडि पायपसारेणं के० कुकडीनी पठे पग पसारी ऊंचा लांबा करी अतरंतुपमज्जएनूमि के० एम करीन

शकुंतो अनुक्रमे नूमी पुंजी पग पसारुं ॥ २ ॥

संकोइअ संमासा जवट्टंतेय कायप
डिलेहा दवाई जवनगं ॥ णिस्सास
निरुंजणा लोए ॥ ३ ॥

अर्थ–संकोइअसंमासा के० संमासा एटले प
गने संकोचीने सूवुं जवट्टंतेअ के० पासुं पालटुं
तो कायपडिलेहा के० कायानी पडिलेहणा करुं;
अने जागृत थए थके दवाईके० इव्यादिकचारनो
जवजगंके० जपयोग करुं. संजारुं, एम करतां पण
जो निड्रा जडी न जाय तो जसासनिरुंजणालोए
के० श्वासोश्वास रूंधीने पढी दिशालोक करुं ॥३ ॥

जइ मे हुज्ज पमाज ॥ इमस्स देहस्स
इमाइ रयणीए ॥ आहार मुवहिदेहं
सवं तिविहेण वोसिरिअं ॥ ४ ॥

अर्थ–जइ के० जो मे के० मह्यारा जीवने हुज
के० होय, पमाज एटले प्रमाद जे मरण इमस्स

देहस्स के० ए देहने इमाइरयणीए के० ए रात्रीने विषे अर्थात् आ रात्रीनेविषे माहरा देहनुं मरण नीपजे तो आहार के० चार प्रकारना आहार अने उवह्के० उपधि जे उपकरण, तथा देहं के० शरीर ए सव्वंके० सर्वपरिग्रहने तिविहंके० मन वचन अने कायाए करी वोसिरिअं के० वोसिरावुंछुं॥४

चत्तारि मंगलं अरिहंता मंगलं सिद्धा मंगलं साहु मंगलं ॥ केवली पन्नत्तो धम्मो मंगलं ॥ ५ ॥

अर्थ—चत्तारिमंगलंके० चार मंगल पडिवज्जुं. ते चार मंगलनां नाम कहेछे. अरिहंतामंगलंके० प्रथम अरिहंत मंगलिक, सिद्धामंगलं के० बीजुं सिद्धमंगलिक, साहुमंगलं के० त्रीजुं साधु मंगलिक, केवलिपन्नत्तोधम्मोमंगलं के० चोथुं केवली जाषित धर्म मंगलिक ॥ ५ ॥

चत्तारि लोगुत्तमा अरिहंता लोगुत्त

मा सिद्धालोगुत्तमा साहु लोगुत्त
मा केवली पन्नत्तो धम्मोलोगुत्तमो ॥६॥

अर्थ—चत्तारिलोगुत्तमा के० चारवानां लोक मांहे उत्तम छे.तेमनां नाम कहेछे.प्रथम लोक थकी प्रधान गुणछे, माटे त्रैलोक्यनेविषे अरिहंत उत्तम छे, बीजा लोकने अग्रनागे रह्या, अथवा अष्टकर्म क्षीण कस्याछे. माटे त्रैलोक्यनेविषे सिद्ध उत्तम छे, त्रीजा ज्ञान, दर्शन तथा चारित्रना साधनारा छे ते हेतुमाटे साधु ते पण त्रैलोक्यने विषे उत्तम छे, चोथो दुर्गतिमां पडनारा जंतुउने उद्धार करवापणाना हेतुए केवलीनो परूप्यो धर्म तेपण त्रैलोक्यनेविषे उत्तम छे ॥ ६ ॥

चत्तारिसरणं पवज्जामि ॥ अरिहंते सरणं पवज्जामि सिद्धे सरणं पवज्जा मि साहू सरणं पवज्जामि ॥ केवलि पन्नत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि ॥ ७ ॥

अर्थ—चत्तारिसरणं पवज्जामि के० चारे शरण पडिवज्जुंछुं. ते शरणनां नाम कहेछे. एक अरिहं तनुं शरण पडिवज्जुंछुं. बीजुं सिद्धनुं शरण पडिव ज्जुंछुं. त्रीजुं साधुनुं शरण पडिवज्जुंछुं. चोथुं केव लीपरूपित धर्म, तेनुं शरण पडिवज्जुंछुं ॥ ७ ॥

पाणाइवाय मलिअं चोरिक्कं मेहु
णं दविणमुछं ॥ कोहं माणं मायं
लोहं पिज्जं तहादोसं ॥ ८ ॥

अर्थ—प्रथम पाणाइवाय के० प्राणातिपात, बीजो मलियं के० अलिकं ते मृषावाद, त्रीजुं चोरिक्कं के० अदत्तदान, चोथुं मेहुण के० मैथुन, पांचमो दविणमुछं के० द्रव्यादिकनी मूर्छा ते परिग्रह, छठो क्रोध, सातमुं मान, आठमो माया, नवमो लोज, दशमो प्रेम ते राग, अग्यारमो तहा के० तेमज दोसं के० द्वेष, ॥ ८ ॥

कलहं अप्नक्काणं पेसुन्नं रइअरइ

समाउत्तं परपरिवायं माया मोसं
मिछत्तसल्लं च ॥ ए ॥

अर्थ-बारमो कलह ते वढवाड, तेरमुं अन्या
ख्यान ते आलनुं देवुं, चोदमुं पैशून्य ते चाडी, प
न्नरमुं रति ते अधर्मकरणीनेविषे राग, अने
अरति ते धर्मकरणीनेविषे द्वेष, तेउएकरी समा
उत्तं के० सहित, सोलमुं परपरिवायं के० परना
अवर्णवाद बोलवा, सत्तरमो माया मृषावाद, च
के०वली अढारमुं मिथ्यात्व शल्य. ॥ ए ॥

वोसिरिसुइमाइं मुरकमग्ग संसग्ग
विग्घ नूआइं ॥ डुग्गइ निबंधणाइं
अठा रस पावठाणाइं ॥ १० ॥

अर्थ-वोसिरिसुइमाइंके०वोसिरावुंबुं. ए प्रत्यक्ष
जे पूर्वे कह्यां ते अढारे पापस्थानकने. एकेवांछे?तो
के-जीवने मुरकमग्गसंसग्गके०मोक्ष मार्गना संस
र्गे एटले परिचयने विग्घनूआइंके०विघ्ननूतछे.एट

ले विघ्ननां करनारछे. डुग्गइ केο दूर्गति जे नरक निगोदादिकनी गति तेनां निबंधणाइंकेο कारणछे. अठारसपावठाणाइं केο एवा ए अढारे पापस्थानक प्रत्ये वोसिरावुंछुं ॥ १० ॥

एगोहं नछिमेकोइ नाहमन्नस्स कस्सई एवं अदीणमणसो ॥ अप्पाणमणुसासए ॥ ११ ॥

अर्थ—एगोहं केο एकलोहुं नछिमेकोइकेο माहारो कोइ नथी. नाहमन्नस्सकस्सइ केο हुं अनेरा एटले बीजा कोइनो नथी. एवं केο एम अदीणमणसो केο अदीन एटले नथी दीन मन जेनुं एवो वैराग्य मय मन ते अप्पाणमणुस्सासए केο आपणा आत्माने शीखामण आपे छे. ॥ ११ ॥

एगोमे सासओअप्पा नाण दंसणसंजुओ सेसामे बाहिरा भावा ॥ सवे संजोग लक्कणा ॥ १२ ॥

अर्थ–एगोमेसासउअप्पाके० एक महारो आत्मा छेते शाश्वतो छे. तेकेवोछे? तोके–नाणदंसणसंजुउ के० ज्ञान दर्शनेकरी संयुक्तछे. सेसा मे बाहिराजावा के० शेष थाकतां माहारे सघलांए उपकरण ते बाह्यजाव जाणवा. सव्वेसंजोगलरकणाके० सर्व संयोगादिक पदार्थ ते बाह्यलक्षणछे. संयोग मात्रछे, १२

संजोग मूला जीवेण पत्ता डुरक परंपरा ॥ तम्हा संजोग संबंधं सव्वं तिविहेण वोसिरिअं ॥ १३ ॥

अर्थ–संजोग मूलाजीवेणके० संयोग छे मूल जेनुं, एवी अनेक दुःखनी परंपरा ते जीवे पामी. तम्हाके० तेमाटे संसारना संयोगनो जे संबंध ते सर्वे मन वचन अने काया ए त्रिविधे वोसिराबुंछुं १३

अरिहंतो महदेवो ॥ जावज्जीवं सुसाहुणो गुरुणो ॥ जिण पन्नत्तं तत्तं ॥ इयसमत्तं मए गहिअं ॥ १४ ॥

अर्थ–अरिहंत म्हारो देवछे, अने जावजीव लगे सुसाधु म्हारा गुरुछे, अने जिननुं परूप्युं तत्व जे जीवदया मूल धर्म, ए त्रण तत्वे सहित एवुं सम्यक्त्व ते मए के० में गहिअं के० ग्रह्युं आदर्युं ॥ १४ ॥ इति संथारापोरिसी समाप्त.

॥ अथ महावीरस्तुति प्रारंभ ॥ ५० ॥

स्नातस्याप्रतिमस्यमेरुशिखरे सच्या विभोः शैशवे॥रूपालोकन विस्मया हृतर सभ्रांत्याभ्रमच्चक्षुषा॥उन्मृष्टं नयनप्रभा धवलितं क्षीरोदकाशंकया॥वक्त्रंयस्यपुनः पुनःसजयति श्रीवर्द्धमानोजिनः ॥१ ॥

अर्थ–स्नातस्यके० नवराव्यो अप्रतिमस्यके० निरुपम, मेरुशिखरेके० मेरुपर्वतना शिखरनेविषे शच्याके० इंद्राणिए,विभोके० स्वामिना, शैशवेके० बालावस्थानेविषे, रूपालोकनके० रूपनुं आलोकन एटले जोवुं, तेथकी उपन्युं जे विस्मयके० आश्चर्य,

तेरूप आह्तके०खाधो जे रसके०पारो, तेनी ग्रां त्याके० ग्रांते करी ग्रमत् के० नमतां एवांजे चक्षुषा के० चक्षु जेनां, एवी इड्राणीए उन्मृष्टं के० मांज्युं लुबयुं, नयनके० चक्षुनी प्रनाके० कांतीए करी धवलितं के० ऊज्वल कर्युं; क्षीरोदक के० क्षीरसमुड्ना पाणीनी आशंकया के० शंका ए करी वक्र के० मुखप्रत्ये यस्य के० जे नगवं तना पुनः पुनःके०वारंवार सके०ते जयति के० सर्वोत्कृष्टे वर्त्तेछे एवा वर्द्धमानोजिनःके० श्रीवर्द्ध मान नामा वीतराग देव ॥ १ ॥

हंसांसाहृतपद्मरेणुकपिशक्षीरार्णवांनो नृतैः ॥ कुंनै रप्सरसांपयोधरनरप्रस्प र्द्धिनिः कांचनैः ॥ येषामंदररत्नशैल शिखरे जन्मानिषेकःकृतः सर्वैः सर्वसु रासुरेश्वरगणैस्तेपांनतोहंक्रमात् ॥ २ ॥

अर्थ—हंसांसाके०राज हंसपंखीना अंसएटले

पांख तेणेकरी हतके० जम्राडया एवा पद्मरेणुके० कमलना पराग, तेणेकरी कपिश के० रातु पीलुं थयुं एवुंजे क्षीरार्णवांभोके० क्षीरसमुद्रनुं पाणी तेणेकरी नृतैः के० जस्या एवा कुंभैः के० कलश तेणेकरी अप्सरसांपयोधरके० देवांगनानास्तन तेना भर के० समूहने प्रस्पर्द्धिभिः के० स्पर्द्धाना करनार एवा कांचनैः के०कंचन संबंधी कलशो तेणेकरी, येषांके० जेमनो मंदर रत्नशैलशिखरे के० मेरुपर्वतना शिखरनेविषे जन्माभिषेकः कृतः के०जन्म महोत्सव कस्यो.कोणेकस्यो?सर्वेसुरासुरे श्वरके०सर्व देवता अने असुर ते दानव तेना इश्वरजे इंद्रो,तेना गणके०समूह तेमणेकस्यो तेषांके० ते सर्वजिनोना क्रमान् के० चरणकमलप्रत्ये नतोहं के० हुं पण नम्योछुं ॥ २ ॥

अर्हद्वक्त्र प्रसूतं गणधर रचितं द्वादशांगंविशालं॥चित्रंबह्वर्थयुक्तं मुनिगण वृषभैर्द्धारितं बुद्धिमद्भिः॥मोक्षाग्रद्वारभूतं व्र

तचरणफलं ज्ञेयभाव प्रदीपं॥भक्तयानित्यं
प्रपद्ये श्रुतमहमखिलं सर्वलोकैकसारं ३

अर्थ–अर्हद्वक्त्र के० अरिहंतना वदनथकी प्रसूतं के० प्रगट थयो, अने गणधररचितं के० गणधरे रच्यो एवो, द्वादशांगंके० आचारांगादिक द्वादशांगरूप विशालं के० विस्तीर्ण, अने चित्रं के० आश्चर्यकारी, बहुअर्थयुक्तं के० घणे अर्थे सहित, जेने मुनिगणवृषभैर्धारितं के० साधुसमुदायना नायक एटले स्वामिए धर्यो. ते साधु केवाछे?तोके–बुद्धिमद्भिः के० बुद्धिवंतछे मोक्षाग्र द्वारभूतं के० मोक्षरूप गृहना मुख्य बारणा सरखो. वली व्रतचरणफलं के० व्रत अने चारित्र फल छे जेनुं, ज्ञेयभाव के० जाणवायोग्य पदार्थनेविषे प्रदीपं के० दीवा सरखो,तेने भक्त्या के० भक्तिए करीने नित्यं के० निरंतर प्रपद्ये के० अंगिकार करुंछुं. श्रुतके० सिद्धांतने अहंके० हुं अखिलं के० अखिल एटले समस्त सिद्धांतने. ते सिद्धां केवो छे? सर्वलोकै

कके० सर्वलोकनेविषे अद्वितीय सारंके० प्रधानछे.

निष्पंकव्योमनीलद्युतिमलसदृशं बाल चंद्राभदंष्ट्रं ॥ मत्तंघंटारवेण प्रसृतमदज लं पूरयंतं समंतात्॥आरूढो दिव्यनागं विचरति गगने कामदः कामरूपी यक्षः सर्वानुभूति र्दिशतुममसदासर्वकार्येषु सिद्धिं ॥ ४ ॥ इति श्री वीरस्तुतिः ॥

अर्थ–निष्पंक के० वादले रहित व्योम के० आकाश, तेना सरखी नीलके० श्याम, द्युति के० कांतिछे जेनी, अने अलसदृसं के० मदेघूर्मित नेत्रछे जेहनां, वली बालचंद्राभ के० बालचंद्रमाना सरखी दंष्ट्रं के० दाढाछे जेहनी, मत्तं के० मदोन्मत्त घंटारवेणं के० घंटाना शब्द साथे प्रसृतके० प्रसरंतु जे मदवारी, तेणेकरी पूरयंतं के० पूरयंतं समंतात् के० सर्व जगाए आरूढो के० बेगो,दिव्य नागंविचरति के० देवरूप हस्तिप्रत्ये विचरे छे,ग

गने के० आकाशने विषे विचरेछे. कामदः कामरू
पी के० मनोवांछितदायक इछाचारि यक्षः सर्वानु
नूति के० सर्वानुनूति नामा यक्षदेवता ते दिशतु
के० आपो. ममके० मुजने सदा के० निरंतर सर्व
कार्येषुसिद्धिं के० सर्व कार्यनेविषे सिद्धिप्रत्ये आ
पो ॥ ४ ॥ इतिमहावीरस्तुतिः ॥

॥ अथ पंचमी स्तुति. ॥ ५१ ॥

श्रीनेमिः पंचरूप त्रिदशपतिकृत प्रा
ज्य जन्माभिषेक ॥ श्चंचत्पंचाक्षमत्त
द्विरद मदभिदा पंचवक्रोपमानः॥निर्मुक्त
पंचदेह्या परम सुखमय प्रास्त कर्म प्रपं
चः॥ कल्याणं पंचमीसत्तपसि वितनुतां
पंचम ज्ञानवान्वः ॥ १ ॥

अर्थ—श्रीनेमिः के० श्रीनेमिनाथने पंचरूपे
करी त्रिदशपति के० इंद्र तेणे कृत के० कस्योछेः
प्राज्यके० महोटो जन्माभिषेक एटले जन्म महो

त्सव जेनो, श्चंचतुके० दीपता एवाजे पंचाक्षके० पांचइंद्रिय तेरूप जे मत्तके० मदोन्मत्त एवो द्वि रदके० हाथी, तेनो मदके० अहंकार तेनो भिदा के० भेदवुं, तेनेविषे पंच वक्त्रोपमानः के० सिंह नुं उपमानछे जेहने एवा, वली निर्मुक्तः पंचदेह्यां के० औदारिक प्रमुख शरीरे करी रहित परम सु खमय के० अतेंद्रिय सुख सहित प्रास्तकर्मप्रपंच के० टाल्याछे कर्मना प्रपंच एटले विस्तार जेणे एवा पंचमज्ञानवान एटले केवल ज्ञानवंत ते वः के० तमने पंचमो सत्तपसिके० पंचमीना भला त पने विषे कल्याणंके० कल्याण आरोग्य प्रत्ये नि र्विघ्न पणे मंगलिकने वितनुतांके० विस्तारो.॥१॥

संप्रीणन् सच्चकोरान् शिव तिलक स मः कौशिकानंद मूर्त्तिः ॥पुण्याब्धि प्री तिदायी सित रुचिरिवयः स्वी यगोभि स्तमांसि ॥सांद्राणि ध्वंसमानः शाकल

कुवलयोल्लासमुच्चै श्चकार ॥ ज्ञानं पुष्याज्जिनौघः सतपसि जविनां पंचमी वासरस्य ॥ २ ॥

अर्थ–हवे सर्वजिनने चंद्रमानी समानता वखाणेछे. संप्रीणन् के० सम्यक्प्रकारे हर्षवंत करे छे. सच्चकोरान्के० सत्पुरुषरूप चकोरप्रत्ये शिवके० मोक्षनेविषे तिलकसमःके० तिलकसमान छे कौशिकानंदिमूर्त्तिःके०कौशिक जे इंद्र–तेने आनंदकारी मूर्त्ति छे जेहनी. चंद्रपक्षे कौशिक के० घूअड, तेने आनंदकारी मूर्त्तिछे जेनी, पुण्याब्धिप्रीतिदायी के० पुण्यरूप समुद्रने प्रीतिनो करनार, शितरुचिरिवयःके० चंद्रमाइव, एटले चंदमानीपरे उपमानने अर्थे जे जिननो समूह–ते स्वीय के० पोतानी गोभिस्तमांसि के० वाणीरूप किरणे करा अज्ञानरूप अंधकारप्रत्ये सांद्राणि ध्वंसमानी के०निवडपणे टालतो छे. अने सकलकुवलयोल्लासंके० समस्त पृथिवी वलयने उल्लासप्रत्ये, अने

चंद्रपक्षे समस्त कुवलय जे चंद्रविकाशी कमल तेने उल्लासप्रत्ये उच्चैःप्रकार के० अतिशयपणे करतो हवो. ज्ञानं के० ज्ञानप्रत्ये पुष्यात् के० पुष्टी करो. जिनौघः के० जिननो समूह. सतपसि के० जला तपनेविषे नविनां के० नव्यजीवोने. पंचमी वासरस्य के० पंचमीना दिवसनेविषे. ॥ २ ॥

पीत्वा नानाविधार्थामृतरसमसमंयां
ति यास्यंतिजग्मुः ॥ जीवा यस्मादने
केविधिवतमरतां प्राज्य निर्वाणपुर्यां ॥
यात्वा देवाधिदेवागमदशमसुधा कुं
द्मानंद हेतु ॥ स्तत्पंचम्या स्तपस्यु
द्यतविशदधियां नाविनामस्तुनित्यां ॥३॥

अर्थ—नानाविधार्थामृतरसके० नानाप्रकारनां छे नाम जेहनां, एवा अमृतरस प्रत्ये पीत्वाके० पान करीने असमं के० उपमारहित यांति के० जायछे, यास्यंतिके० जशे, जग्मुः के० गया. जी

वाके० जीवः यस्मात्कें० जे अर्थरूप अमृतना पीवाथी अनेकेके० घणा विधिवत्के० विधि पूर्वक अमरतां के० अजरामरपणाप्रत्ये प्राज्य के० महोटी एवी निर्वाणपूर्ष्यांके० मोक्ष नगरीनेविषे यात्वाके० पामीने, देवाधिदेवके० वीतरागना आगमके० सिद्धांत–तेरूप दशमसुधाकुंभके० दशमो अमृतकुंभ, आनंदहेतुके० मोक्षनुं कारण. स्तत्पंचम्या स्तपसीके० ते पंचमीना तपनेविषे विशदके० निर्मल एवा धियांके० बुद्धिवंत भविनां के० भव्य जीवोने नित्यं के० निरंतर अस्तु के० हो. उद्यत के० उजमाल ॥ ३ ॥

स्वर्णालंकार वल्गन्मणिकिरण गण ध्वस्तनित्यांधकारा ॥ हुंकाराराव दूरीकृत सुकृतजनव्रात विघ्नप्रचारा॥देवीश्री अंबिकाख्या जिनवरचरणांभोजभृंगीसमाना ॥ पंचम्य न्हस्तपोर्थं वितरतुकुशलं धीमतां सावधाना ॥ ४ ॥

अर्थ–सुवर्णना अलंकारनेविषे वल्गन्मणिके० वलगेला जे मणि तेनां किरण के० तेज तेना गण के० समूह तेणेकरी ध्वस्तके० टाल्युंछे नित्यांधकारा के० निरंतर अंधकार जेणीए. हुंकाराराव के० हुं कारशब्द, तेणेकरी दूरीकृतके० दूर कीधा नक्त ज न समूहना विघ्नसमूह जेणीए, एवी देवीश्रीअं बिकाख्याके० अंबिका एवे नामे देवी जिनवरचर णांभोजभृंगीसमाना के० वीतरागना चरण कम लनेविषे भमरी समान, ते सावधाना के० साव धान होतीथकी पंचम्यन्हस्तपोर्थंके० पंचमी दि वसना तपने अर्थे धीमंता के० पंमितोने कुशलं के० कुशल प्रत्ये वितरतुके० दीउ. ॥४॥इति॥५१॥

अथ सकलार्हत् प्रारंभ ॥ ५२ ॥

सकलार्हत्प्रतिष्ठान ॥ मधिष्ठानं
शिव श्रियः ॥ भूर्भुवः स्वस्त्रयीशान
मार्हंत्यं प्रणिदध्महे ॥ १ ॥

अर्थ–सकलार्हत् के० समस्त अर्हत् पूजनीय

गुणना धणी, अथवा अर्हत् पदवाचक जे अर्ह, एहवुं जे स्याद्वाद सूत्र, तेहनुं प्रतिष्ठानं के० स्थानक. वली केवुंछे? शिव श्रियः के० मोक्षरूप लक्ष्मीनुं अधिष्ठानं के० साधनछे. वली केवुंछे? भूः के० मनुष्यलोक अने भुवः के० पाताललोक स्वः के० देवलोक, ए त्रयी के० त्रण, तेहनो ईशानके० स्वामीछे; एहवो जे आर्हन्त्यं के० अरिहंतनो समूह, ते प्रत्ये प्रणिदध्महे के० चित्तमांहे धरुं ध्यानारूढे करुं. इतिगाथार्थ ॥ १ ॥

नामाकृति द्रव्यभावैः ॥ पुनतस्त्रि ज
गज्जनं ॥ क्षेत्रे कालेच सर्वस्मि न्न
र्हतः समुपास्महे ॥ २ ॥

अर्थ—नामके० नामनिक्षेप ते तीर्थंकरनामकर्मोदय, आकृति के० थापनानिक्षेप ते जिनप्रतिमा, द्रव्यके० जिनना जे जीव आगल थाशे ते, भावैः के० समवसरणनेविषे विराजमान श्री सीमंधरस्वामिप्रमुख. ए जे चार निक्षेपा, तेणेकरी त्रिजगज्जनंके०

त्रण जगतूना जनप्रत्ये पुनतः के० पवित्र करताछे. सर्वस्मिन् क्षेत्रे के० समस्त क्षेत्रनेविषे च के० पुनः काले के० समस्त कालनेविषे एटले अतीतकाल, तथा अनागत काल, अने वर्त्तमानकालनेविषे अर्हतः के० पूर्वे वखाण्या एवा जे अरिहंत ते प्रत्ये हुं वंदन, सतूकार, सनमानादिके करी समुपास्म हे के० अमे सेवाकरीए छैए. इतिगाथार्थः ॥२॥

हवे वर्त्तमान चोवीशजिनने प्रणाम करे छे.

आदिमं पृथिवीनाथ मादिमंनिः
परिग्रहं आदिमंतीर्थनाथंच ऋ
षभस्वामिनंस्तुमः ॥ ३ ॥

अर्थ—आदिमंपृथिवीनाथं के० प्रथम पृथिवीना राजाप्रत्ये आदिमंनिःपरिग्रहं के० प्रथम साधु छे, आदिमंतीर्थनाथंच के० पेला तीर्थनाथ एटले प्रथ म तीर्थंकर छे. एहवा जे ऋषभस्वामिनंके० ऋषभ स्वामि तेप्रत्ये स्तुमः के० स्तवना करीएछीए. मा ताए स्वप्नमध्ये वृषभ दीठो, माटे ऋषभनाम, अ

थवा दक्षिण जंघानेविषे वृषजनुं चिन्हछे ते माटे. अनेसर्व तीर्थंकरने चिन्ह दक्षिणजंघानेविषेजाणवुं.

अर्हंतमजितंविश्व ॥ कमलाकर जा
स्करं ॥ अम्लानकेवलादर्श ॥ सं
क्रांत जिगतंस्तुवे ॥ ४ ॥

अर्थ—अर्हंतं के० त्रैलोक्यपूजनीय एहवा अजितं के० कर्मे जीती न शकीए ते माटे अजीत नाम, अथवा माताना गर्जनेविषे रहे छते अन्य राजा जीती न शके, तेमाटे श्रीअजितनाथ. वली केवाछे? विश्वकमलाकरजास्करं के० जगत्रूप जे कमलाकर के० कमल जेमां छे एवुं सरोवर, तेहने प्रकाशवाने जास्कर एटले सूर्यसमान छे. अम्लान के० निर्मल केवल ज्ञानरूप आदर्श के० आरिसो, तेहनेविषे संक्रमाव्युंछे, एटले प्रतिबिंबित कर्युं छे, जगत् के० लोकालोक जेणे, एहवा अरिहंत प्रत्ये स्तुवेके० स्तवना करुं छुं. इति गाथार्थ.॥४॥

विश्वजव्यजनाराम ॥ कुल्यातुल्या

जयंतुताः ॥ देशनासमयेवाचः ॥ श्री
शंभव जगत्पतेः ॥ ५ ॥

अर्थ–विश्व के० जगत्नेविषे अथवा विश्वके० समस्त भव्यजनरूप जे आराम एटले उद्यान, तेने सिंचवाने कुल्या के० नीक, तेहने तुल्या के० सरखी एहवी जे विख्यात, जयंतु के० जयवंती प्रवर्त्तो. देशना समये के० उपदेशकाले वाचः के० वाणी. केहनी वाणी? श्रीशंभवनाथ जगत्स्वामिनी. सुख उपजे जेहथी तेहने शंभव कहीए, अथवा जन्मसमये धान्यना समुदाय विशेषे नीपना, तेमाटे शंभवनाथ. इति गाथार्थ ५

अनेकांत मतांभोधि ॥ समुल्लासनचं
द्रमाः ॥ दद्यादमंदमानंदं ॥ भगवा
नभिनंदनः ॥ ६ ॥

अर्थ–अनेकांत के० अनेकांत मत जे स्याद्वादरूप अंभोधि के० समुद्र ते अपरंपार. अगाध पाणी

माटे. तेह्नो समुल्लास के० उल्लास करवाने चंद्रमा सरखा, एटले जेम चंद्रमा देखी समुद्र वृद्धि पामे, तेम जगवंतथी जव्यजीव आनंद पामे एवा जे अजिनंदनजगवान् जे ते अमंदं के० घणो एवो जे आनंदके० हर्ष तेप्रत्ये दद्यात् के० आपो. इति गाथार्थः ६

द्युसत् किरीट शाणाग्रो त्तेजितांह्रि
नखावलिः॥ जगवान् सुमति स्वामी
तनोत्वजिमतानिवः ॥ ७ ॥

अर्थ–द्युसत् के० देवता, तेना जे किरीटके० मुकुट, तद्रूप जे शाणाग्र के० अग्रजाग जे खुणा–तेणे उत्तेजित के० अतिशय तेजवंत कीधा बे अंह्रि के० चरणना नखनी आवली के० श्रेणी जेह्नी, एह्वा जगवान् श्रीसुमतिस्वामि ते वः के० तमारा अजिमतानि के० वांबित प्रत्ये तनोतु के० विस्तारो. इति गाथार्थ ॥ ७ ॥

पद्मप्रज प्रजोर्देह ॥ जासःपुष्णंतुवः

श्रियं ॥ अंतरंगारिमथने ॥ कोपाटो
पादिवारुणाः ॥ ८ ॥

अर्थ–पद्मप्रभ के० स्वामिनी माताने रक्तकम लनी शय्यानुं दोहद थयुं तेमाटे पद्मप्रभ एवुं नाम. पद्मप्रभप्रभुनी देहभासः के० शरीर संबंधी कांतिछे, ते वः के० तमारी श्रियं के० कल्याणरूप लक्ष्मीप्रत्ये पुष्टंतु के० पुष्ठ करो. पद्मप्रभ स्वामिना शरीरनेविषे रक्तवर्ण छे, जेहनी कांतीराति होए ते उपर कवि भावना करे छे, अंतरंगारि के० अंतरंगना जे अरि मोहादिकछे, तेमने मंथन करवाने अर्थे एटले दूर करवाने अर्थे कोप एटले क्रोधनो आ टोप के० प्रबलता थकीज इव के० जाणे अरुणा के० राती थई होयना! ॥ ८ ॥

श्री सुपार्श्व जिनेंद्राय ॥ महेंद्र महि
तांह्रये ॥ नमश्चतुर्वर्ण संघ ॥ गग
नाभोगभास्वते ॥ ९ ॥

अर्थ–महेंद्र के० मोटा जे चोसठ इंद्र, तेम णे महित के० पूज्या छे, अंह्रि के० चरण जेह ना, ते श्रीसुपार्श्वस्वामीने नमस्कार होजो. वली सुपार्श्व केहवा छे? चतुर्वर्ण जे संघ एटले साधु, साधवी तथा श्रावक श्राविका–तद्रूप जे गगन एटले आकाश, तेहनो आजोग के० प्रकाश–तेने विस्तार करवाने जास्वत् के० सूर्यसमान छे. ॥९॥

चंद्रप्रज प्रजोश्चंद्र ॥ मरीचिनिचयो
ज्वला ॥ मूर्त्तिमूर्त्त सितध्यान ॥ निर्मि
तेवश्रियेस्तुवः ॥ १० ॥

अर्थ–चंद्रप्रज प्रजो के० चंद्रप्रज प्रजुनुं शरीर छे ते, चंद्रमरीचिनिचयोके० चंद्रमानां जे किरण तेनो निचयके० समूह, ते थकी अधिक उज्वल--निर्मल एहवी मूर्त्तिके० शरीर छे. मूर्त्तके० मूर्त्तिवंत जे सितध्यानके० शुक्लध्यान, तेणे करीनेज जाणे निर्मिताके० नीपजावी इव के० होयना! एहवी

जे चंद्रप्रनमूर्त्ति ते वः केο तमने श्रिये केο ज्ञानादि लक्ष्मीने अर्थे अस्तु केο थाउ.॥ १० ॥

करामलकवद्विश्वं ॥ कलयन् केवल
श्रिया ॥ अचिंत्य माहात्म्यनिधिः ॥
सुविधिर्बोधये स्तुवः ॥ ११ ॥

अर्थ–करकेο हाथ, तेहनेविषे अमल केο निर्मल जे, क केο पाणी, तेहनी परे विश्वंकेο समस्त नव्यप्राणिप्रत्ये केवलश्रियाकलयन केο केवलज्ञानरूप लक्ष्मीए करी जाणता बता अचिंत्यकेο न चिंतवी शकीए, एहवुं जे माहात्म्य एटले मोटापणुं, तेहना निधि केο निधान छेः एहवा श्रीसुविधिनाथ वः केο तमने बोधये केο बोधि एटले सम्यक्त्वने अर्थे अस्तु केο थाउ.॥ ११

सत्वानांपरमानंद ॥ कंदोद्भेदनवां
बुदः ॥ स्याद्वादामृत निस्यंदी ॥ शी
तलः पातुवो जिनः ॥ १२ ॥

अर्थ–सत्वानां के० प्राणीउंने परम के० उत्कृष्ट जे आनंद–चित्त प्रसन्नता लक्षण, तेहनो जे कंद एटले अंकूरो, तेहनुं उद्भेदके० प्रगटथवुं, तेहनेविषे नवांबुदः के०नवीनमेघ समान स्याद्वादके०अनेकांत शासन, तद्रूप जे अमृतरस,तेहना निस्यंदी के० फरनारा एहवा श्रीशीतलनाथ छे; ते वः के०तमने पातु के०रक्षण करो. अर्थात् संसारथी रक्षणकरो. वली ते शीतलनाथ केवा छे? जिनः के० रागादिवैरीने जीतनारा छे. ॥ १२ ॥

भवरोगार्त्त जंतूना मगदंकार द
र्शनः ॥ निश्रेयस श्रीरमणः॥ श्रे
यांसः श्रेयसे स्तुवः ॥ १३ ॥

अर्थ–भव के० संसाररूप जे रोगार्त्त के० जन्म जरा मरण ते रूप जे रोग,तेणेकरी आर्त्त एटले पीडायेला जे जंतु,तेमने अंगदंकार दर्शनःके० वैद्यसमान छे सम्यक्त्व जेहनुं. अथवा दर्शन एटले देखवुंछे जेहनुं. वली केवा छे? निश्रेयस के० मो

रूप श्री के० लक्ष्मी तेहना रमणः के० नर तार छे. एहवा श्रेयांसः के० श्रेयांस जिन छे, ते वः के० तमारुं जे श्रेयसे के०कल्याण तेहने अर्थे अस्तु के० थाउ. इति गाथार्थ ॥ १३ ॥

विश्वोपकारकीभूत ॥ तीर्थकृत् कर्म
निर्मितिः ॥ सुरासुरनरैः पूज्यो ॥ वा
सुपूज्यः पुनातुवः ॥ १४ ॥

अर्थ— विश्व के० समस्त जगत्ना जीवोने उपकारकीभूत के०उपकारनो हेतु, एहवुं तीर्थंकर नामकर्म,तेहनी निर्मितिः के०नीष्पत्ति करीछे जेणे. पंचकल्याणके सुखहेतु. वली केहवा छे? सुर के० वैमानिक देवता, असुर के०भवनपत्यादि देवता, तथा नर के०मनुष्य,तेमणे पूज्य के०पूजवा योग्य छे. एवा वासुपूज्य के०वासुपूज्यस्वामी वः के०तमने पुनातु के०पवित्र करो.एटले पाप तमारां टालो.

विमलस्वामिनो वाचः ॥ कतकक्षो

दसोदराः ॥ जयंतित्रिजगच्चेतो ॥ ज
लनैर्मल्यहेतवः ॥ १५ ॥

अर्थ—विमलस्वामिनोवाचः के० श्री विमल स्वामिनी जे वाणी छे, ते जयंति के० जयवंती व र्तेछे. ते वाणी केवीछे? कतकक्षोदसोदराः के० क तक फलनुं जे चूर्ण तेने सोदराके०सरखी छे. जेम कतकफलने योगे पाणि निर्मल करीए, तेम विम ल परमेश्वरनी वाणी छे ते त्रिजगच्चेतः के० त्रण जगत्नां जे संकल्पे करी मलिन मनरूप पाणी तेने नैर्मल्यहेतवः के० निर्मलपणु करवानुं हेतु छे. जेम कतकफलचूर्णे करी मेल सहित पाणी पण निर्मल थाय, तेम जगवंतनी वाणीए क री मेलां एवां त्रण जगत्नां जे चित छे ते निर्म ल थाय छे. इतिगाथार्थ ॥ १५ ॥

स्वयंभू रमण स्पर्द्धि ॥ करुणारस

वारिणा ॥ अनंत जिदनंतांवः ॥ प्र
यच्छतुसुखश्रियं ॥ १६ ॥

अर्थ—स्वयंभूरमण जे अंतिमसमुद्र, तेहने स्प र्धा करे एटले तेहथी अधिक एहवो जे करुणा रस, एटले सर्व जगत्‌नेविषे मैत्री; तद्रूप जे वारि के० पाणी—तेणे करी अनंतजित् के० अनंत ना थ परमेश्वरछे; ते अनंतां के० नथी अंत जेहनो, एटले अक्षयपणुंछे जेने विषे, एहवी सुखश्रियं के० मोक्षसुखरूप लक्ष्मी तेप्रत्ये वः के० तमने ए टले भव्य जीवोने प्रयच्छतु के० आपो ॥ १६ ॥

कल्पद्रुमसधर्माण मिष्टप्राप्तौ
शरीरिणां॥चतुर्धा धर्म देष्टारं॥
धर्मनाथमुपास्महे ॥ १७ ॥

अर्थ— कल्पद्रुमसधर्माणं के० कल्पवृक्ष स रखाछे, पण कोनेविषे? इष्टप्राप्तौ के० वांछित फ लनी प्राप्तिनेविषे. कोने? शरीरिणां के० शरीरधारी

प्राणीउने. वली केवाछे? चतुर्धा के० चार प्रकारे धर्म ते दान, शील, तप, तथा नाव, तेना देष्टारं के० देखाडणहारछे. एहवा श्रीधर्मनाथप्रत्ये उपास्म हे के० सेवीएछीए. इति श्लोकार्थ. ॥ १७ ॥

सुधासोदर वाग्ज्योत्स्ना ॥ निर्मली
कृत दिग्मुखः ॥ मृगलक्ष्मा तमः
शांत्यै ॥ शांतिनाथ जिनोस्तुवः ॥ १८॥

अर्थ—सुधा के० अमृतने सोदरा के० सरखी जे वाग् के० वाणी तद्रूप जे ज्योत्स्ना के० चंद्रिका—तेणे करी निर्मलीकृत दिग्मुखः के० निर्मल कस्यांछे दिशिवासी जननां मुख जेणे. वली केवा छे? मृगलक्ष्मा के० मृगनुंछे लांछन एटले चिन्ह जेमने, एहवा श्रीशांतिनाथ जिनछे. ते वः के० तमारी एटले नव्यजीवोनी शांत्यै के० अज्ञाननी शांतिने अर्थे अस्तु के० थाउ. इति श्लोकार्थ. ॥ १८ ॥

श्रीकुंथुनाथो नगवान् ॥ सनाथो

तिशयर्द्धिभिः ॥ सुरासुर नृनाथाना॥
मेकनाथोऽस्तुवः श्रिये ॥ १ए ॥

अर्थ–श्रीकुंथुनाथ जगवान् ठे ते केवाठे? अतिशयर्द्धिभिः सनाथः के० चोत्रीश अतिशयरूप जे ऋद्धि, तेणेकरी सनाथके० सहितठे. वली केवा ठे? सुरासुर नृनाथानां–सुरके० वैमानिक देवता, असुरके० जवनपत्यादि देवता, नृके० मनुष्य–ते मना नाथ जे इंड, अने उपेंड, एटले चक्रवर्त्यादि–तेह्नो एकनाथ के० एक एटले अद्वितीयपणे नाथठे; एह्वा श्री कुंथुनाथठे. ते वःके० तमारी जे श्रिये के० कल्याणरूप लक्ष्मी, तेने अर्थे अस्तु के० थाउ. इति श्लोकार्थ ॥ १ए ॥

अरनाथ स्तुजगवां ॥ श्चतुर्थारन
जो रविः ॥ चतुर्थ पुरुपार्थश्री ॥ वि
लासं वितनोतु वः ॥ ७० ॥

अर्थ–अरनाथजगवान् ज्ञानादि बार अर्थ

युक्तछे. एटले नग शब्दना चउद अर्थ थायछे. तेमांथी बार अर्थ परमेश्वरने घटेछे, माटे अहीं यां बार लीधा छे. वली चतुर्थार नभोरविः के० चोथा आरारूप जे नभके० आकाश, तेह नेविषे रवि एटले सूर्य समानछे. एहवा जे अरना थ छे, ते वः के० तमने चतुर्थ पुरुषार्थ के० मो क्ष, तेहनी श्रीके० लक्ष्मी, तेनो जे भोग विला स, तेप्रत्ये वितनोतुके० विस्तारो, ॥ २० ॥

सुरासुरनराधीश ॥ मयूरनववारिदं॥
कर्मद्रून्मूलनेहस्ति॥मल्लिंमल्लिमभिष्टुमः॥

अर्थ—सुरासुर—सुर के० ज्योतिषि वैमानिका दि देवता, अने असुर के० भवनपति व्यंतरादि देवता, नरके० मनुष्य—तेहना अधीश एटले इंद्र, उपेंद्र, चक्रवर्त्यादि तद्रूप जे मयूरके० मोर, तेह ने उल्लास करवाने वारिदंके० मेघ समान छे. व ली केवाछे? कर्म जे ज्ञानावरणादि—तद्रूप जे द्रुमके० वृक्ष तेहनुं जे उन्मूलने के० उखेडी ना

खवुं एटले दूरकरवुं; तेहनेविषे हस्तिमल्लं के० ऐरावत हाथी. एहवा मल्लिंके० श्रीमल्लिनाथप्रत्ये अनिष्ठुमः के स्तवना करीएछैए.॥इतिश्लोकार्थ.२१

जगन्महामोहनिद्रा ॥ प्रत्यूपसम
योपमं॥मुनिसुव्रतनाथस्य ॥ देशना
वचनंस्तुमः ॥ २२ ॥

अर्थ–मुनिसुव्रतनाथस्य के० मुनिसुव्रतस्वामि संबंधी जे, देशनावचनं के० धर्मोपदेशनानुं जे वचन तेप्रत्ये स्तुमः के० स्तवी छैए. पण ते वचन केवुंछे? जगन्महामोह निद्रा प्रत्यूप समयोपमंके० जगत्नेविषे रहेला एहवा जे प्राणीउ, तेमनो जे महामोहनिद्रा के० महामोहरूप निद्रा तेनेदूर करवाने प्रत्यूप समयोपमं के० प्रजातकालनीछे उपमा जेहने. एटले जेम प्रजाते उंघ थकी जागीए तेम जेमना धर्मोपदेशथी अज्ञानरूप निद्रा जायछे.

लुठंतो नमतांमूर्ध्नि ॥ निर्मलीकार

कारणं ॥ वारिप्लवाइवनमेः ॥ पां
तुपादनखांशवः ॥ ७३ ॥

अर्थ—नमतांके० नमस्कार करता जे, प्राणी उ, तेमना मूर्ध्नि के० मस्तकनेविषे लुठंतः के० पडता जे नमेःपादनखांशवः के० श्री नमिनाथ स्वामिना पगना नखनी जे कांतिछे, ते पांतु के० संसारसमुद्रथी रक्षा करो. पण ते पादनखांशव केवाछे? निर्मलीकारकारणं के० निर्मल एटले पाप रहितपणानुं कारण एटले हेतुनूतछे. अहींयां वंदन करनार प्राणीना मस्तक उपरे नगवंतना पादनख नी कांति जे पडेछे, तेउपर कवि नावना करेछे. वारिप्लवाके० पाणीना प्रवाहज जाणे इवके० होयना!

यदुवंशसमुद्रेंदुः ॥ कर्मकक्ष हुताश
नः ॥ अरिष्टनेमिर्नगवान् ॥ नूया
द्वोरिष्टनाशनः ॥ ७४ ॥

अर्थ—यदुवंश के० यादववंश तद्रूप जे समुद्र तेने उल्लास पमाडवाने इंदु के० चंद्रमा सदृश

छे. वली केवाछे? कर्मकक्षहुताशनः के० क
र्म ते ज्ञानावरणादि अष्टविध तद्रूप जे कक्षएटले
वनखंम तेहनेविषे हुताशन के० अग्नि सदृशछे.
शुक्लध्यानानले सर्व कर्म नस्म कर्यांछे माटे. ए
हवा अरिष्टनेमिन्नगवान्छे, ते वः के० तमारा
जे अरिष्ट के० उपद्रव, तेने नाशकरनार एवा नू
यात् के० थाउ. ॥ इति श्लोकार्थ. ॥ २४ ॥

कमठे धरणेंद्रेच स्वोचितंकर्मकुर्वति
प्रनुस्तुल्यमनोवृत्तिः ॥ पार्श्वनाथः
श्रियेऽस्तुवः ॥ २५ ॥

अर्थ– कमठे के० कमठनामे पूर्वनववैरी ए
हवो जे मेघमाली देवता, तेनेविषे च के० वली
धरणेंद्रे के० प्रनुए जे बलतो उगार्यो एहवो सर्प
ते मरीने धरणेंद्र थयो. तेनेविषे तुल्यमनोवृत्ति
के० सरखो छे मननो व्यापार जेमनो; शत्रु मित्र
नेविषे समान दृष्टिछे. केवल आत्मनावनेविषे वर्त्ते
छे. पण कमठ तथा धरणेंद्र केवाछे? स्वोचितं क

र्मे कुर्वंतिके० पोतपोताने जे उचित कर्मछे ते क रेछे. कमठ छे ते उपसर्ग करेछे, अने धरणेंद्र उपस र्ग निवारेछे; पण पार्श्वनाथ जगवान् छे ते परजा वमां वर्त्तता नथी. एहवा श्रीपार्श्वनाथछे, ते वः के० तमारी जे श्रिये के० ज्ञानादि लक्ष्मी तेहने अर्थे अस्तु के० थाउ. इतिश्लोकार्थ ॥ २५ ॥

श्रीमते वीरनाथाय ॥ सनाथायाद्भुतश्रिया ॥ महानंदसरोराज ॥
मरालायार्हते नमः ॥ २६ ॥

अर्थ- श्रीमते के० केवलज्ञानरूप धन छे जेने, वली केवा छे? अद्भुतश्रिया सनाथायके० आठ महा प्रातिहार्य, तथा चोत्रीश अतिशयादि जे अद्भुत लक्ष्मी, तेणीए करी सनाथाय एटले सहि तछे; एहवा वीरनाथाय के० वीरस्वामिछे. वली ते वीरस्वामी केवा छे? महानंदसरोराजमरा लाय के० महानंदरूप जे सरोवर तेहनेविषे क्री डा करवाने राजमरालाय एटले उत्तम हंसनामा

पक्षी सदृश छे. एहवा अर्हत के० अरिहंत महा राजने नमः के० नमस्कार थाउ. ॥ २६ ॥

जयतिविजितान्यतेजाः ॥ असुरसुराधीश सेवितः श्रीमान् ॥ विमलस्त्रास विरहितः॥त्रिभुवन चूडामणिर्भगवान्॥२७॥

अर्थ—विजितान्यतेजाः के० विशेषे करी जीत्युं छे अन्यनुं तेज जेणे, अने असुरसुराधीश सेवितः के० असुरने सुरना जे इंद्र तेमणे सेवेला छे, तथा श्रीमान्के० केवलज्ञानरूप लक्ष्मीवंतछे, तथा विमलः के० निर्मल छे. तथा त्रासरहितः के० सप्त भये रहितछे. तथा त्रिभुवन चूडामणिःके० त्रण भुवननेविषे मुकुट समान एहवा भगवान् छे. ते जयति के० जयवंता वर्त्तेछे. ॥ २७ ॥

वीरः सर्व सुरासुरेंद्र महितो वीरंबुधाः संश्रिताः ॥ वीरेणाभिहतः स्वकर्मनिचयो वीराय नित्यं नमः॥वीरात्ती

र्थमिदं प्रवृत्त मतुलं वीरस्य घोरंत
पो॥वीरेश्री धृतिकीर्त्ति कांति निचयः
श्रीवीरजद्रं दिश ॥ २८ ॥

अर्थ—सर्वे जे सुर के० वैमानिक देवता अने असुरके० जवनपत्यादिदेवता, तेमना जे इंद्रोछे, तेमणे महित के० पूजित एहवा वीरः के० श्रीवीर स्वामीछे. वली पूर्वोक्त विशेषणे करी युक्त जे वीरं के० वीरस्वामी, तेप्रत्ये बुधाः संश्रिताः के० पंमित पुरुषो आश्रय करेछे. तथा वीरेणके० वीरस्वामिए स्वकर्मनिचयः के० पोताना कर्मनो जे निचय एटले समुदाय छे, ते अजिहतः के० समस्त प्रकारे हण्यो छे. एवा वीरायनित्यंनमः के० वीरस्वामिने निरंतर नमस्कार थाउ. तथा वीरात् इदंतीर्थं प्रवृत्तं के० वीरस्वामीथी आ प्रत्यक्ष चतुर्विध संघरूप तीर्थ अथवा द्वादशांगीश्रुतरूप तीर्थ प्रवर्त्युंछे. पण तीर्थ केवुं छे? अतुलं के० नथी उपमान जेहनुं. तथा वीरस्यघोरंतपः के० श्रीवीरस्वामिनुं जे तपछे,

ते घोर एटले कायरप्राणीए आचरवुं घणुं कठण छे. तथा वीरे के० वीरस्वामिनेविषे श्रीके० केवलज्ञानरूप लक्ष्मी, तथा धृति के० धैर्य कीर्त्ति के० सर्वव्यापी कीर्त्ति, तथा कांतिके० अद्भुतरूप तेनो जे निचय के० समूह ते वर्त्ते छे. एहवा हे श्रीवीर के० हे श्रीवीरस्वामि तमे, नइंके० कल्याणप्रत्ये दिश के० आपो. ॥ २७ ॥

देवोनेक भवार्जितोर्जितमहा पापप्रदीपानलो ॥ देवःसिद्धिवधू विशाल हृदयालंकार हारोपमः॥ देवोष्टादश दोष सिंधुर घटानिर्भेद पंचाननो ॥ भव्यानां विदधातु वांछितफलं श्रीवीतरागो जिनः ॥ २९ ॥

अर्थ—अनेक भवकोडाकोडिनेविषे अर्जितके० संचेलां, एवां ऊर्जित के० घणा एहवां जे महा पाप, तेनेप्रदीप के० प्रकर्षे करी बालवाने अर्थे अनल के० अग्निसदृश छे. वली देव केवा

छे ? सिद्धिवधू विशाल हृदयालंकारहारोपम—सि द्धिवधू के० मोक्षरूप जे स्त्री ते संबंधी जे विशा लहृदयः के० विस्तीर्णहृदय तेहनेविषे अलंकार हा रनी छे उपमा जेमने. वली देव केवाछे ? अष्टा दश दोष के० अढार दोष तद्रूप जे सिंधुरघटा के० गजघटा तेह्ने निर्भेद के० भेदवाने पंचान नः के० केसरीसिंह समान एहवा श्रीवीतरागदेव छे. ते भव्यानां के० भव्यप्राणीने वांछितफलं के० वांछितफलप्रत्ये विदधातु के० करो. ॥ २९ ॥

ख्यातोष्टापद पर्वतोगजपदः सम्मे
तशैलाभिधः॥श्रीमान् रैवतक प्रसि
द्धमहिमा शत्रुंजयोमंडपः॥वैभारः क
नकाचलोर्बुदगिरि श्रीचित्रकूटादय॥
स्तत्रश्रीऋषभादयो जिनवराः कुर्वंतु
वो मंगलं ॥ ३० ॥

अर्थ—ख्यातः के० ख्यातवंत जे अष्टापद

पर्वत छे, तथा गजपदः के० गजपद पर्वत छे, तथा सम्मेतशैलाभिधः के० समेत शिखर छे. तथा श्रीमान् के० लक्ष्मीवंत रेवतकः के० गिरनार पर्वत छे; प्रसिद्धमहिमा के० प्रसिद्ध छे. महिमा जेहनो एहवो शत्रुंजयः के० श्रीसिद्धाचल पर्वत छे. वली वैभारः के० वैभारपर्वत छे, तथा कनकाचल के० मेरुपर्वत, अर्बुदगिरि के० आबुपर्वत तथा श्रीचित्रकूटादि पर्वतो छे. तत्र के० ते पूर्वोक्त पर्वतोनेविषे श्रीऋषभादयो जिनवरा. के० श्रीऋषभादिको जिनवर केवा छे? सामान्य केवली नेविषे प्रधान एहवा जे तीर्थंकर महाराज छे, ते वः के० तमारुं मंगलं के० कल्याण ते प्रत्ये कुर्वंतु के० करो. ॥ ३० ॥ इति श्लोकार्थ.

अवनितलगतानां कृत्रिमाकृत्रिनानां
वरभुवनगतानां दिव्यवैमानिकानां॥इ
हमनुजकृतानांदेवराजार्चितानां जिन
वरभुवनानां भावतोहं नमामि ॥ ३१ ॥

अर्थ—अवनितगलतानां के० पृथ्वीतलनेवि षे रहेला तथा कृत्रिमाकृत्रिमानां—कृत्रिम के० करेलां अकृत्रिम के० न करेलां एटले शाश्वतां असाश्वतां चैत्य, तथा वरजुवनगतानां दिव्यवै मानिकानां—वर के० प्रधान एहवा जवन के० घर जवनपतिव्यंतरादिकनां तेहनेविषे रह्या, तथा इहमनुजकृतानां के० आ मनुष्यलोकनेविषे जरतादिराजा प्रमुखनां करावेलां, तथा देवराजा र्चितानां के० देवतानो राजा जे इंड तेणे अर्चि त एटले पूजित छे, एहवा जिनवर जवनानांके० सामान्यकेवलीनेविषे प्रधान एहवा जे तीर्थंकर तेमनां जवनानां एटले चैत्य जे जिनप्रतिमा, तेम ने जावतो के० जावथकी अहं के० हुं नमामिके० नमस्कार करुं छुं. इति चतुर्विंशति जिननमस्कारः

अथ लघुशांतिस्तव प्रारंज ॥ ५३ ॥

शांतिशांति निशांतं ॥ शांतिशांता

शिवं नमस्कृत्य ॥ स्तोतुःशांति नि

मित्तं ॥ मंत्रपदैः शांतयेस्तौमि ॥१॥

व्याख्या-शांतिंके० श्रीशांतिनाथ देव प्रत्ये स्तौमिके० स्तवना करुंछुं. ते शांतिनाथ केवाछे? शांतिनिशांतं के० मंगळीकनुं निशांत एटले घरछे. वळी शांतिनाथ केवाछे? शांताशिवं के० उपशमाव्यो छे अशिव के० उपद्रव जेणे एहवा जे, शांतिंके० शांतिनाथ स्वामि-ते प्रत्येनमस्कृत्यके० नमस्कार करीने शांतये के० शांतिने अर्थे स्तौमि के० स्तवना करुंछुं. स्तोतुः शांतिनिमित्तंके० स्तवना करनारनी शांतिनिमित्ते मंत्रपदैः के० मंत्रना जे पद अक्षरगर्भित, तेणे करी शांतिनाथ स्वामिनी स्तवना करुंछुं. इतिश्लोकार्थ. ॥ १ ॥

ॐमितिनिश्चितवचसे॥नमोनमोभगवतेर्हतेपूजां शांतिजिनाय जयवते॥यशस्विने स्वामिने दमिनां ॥ २ ॥

व्याख्या-ॐइतिके० ॐकार एहवुं निश्चित वचसे के० पंचपरमेष्ठि वाचक निश्चय छे वचन जेम

नुं तथा पूजांअर्हते के० पूजाने योग्यछे, तथा नगवते के० ज्ञानवंतछे, तथा दमिनां स्वामिने के० दम्याछे एटले वश कस्याछे इंद्रियो जेमणे, एहवा जे मुनिमहाराज तेमना स्वामि छे. तथा यशस्विनेके० महायशवंत छे. तथा जयवतेके० जय छे जेमनो; एहवा जे शांतिजिनायके० शांतिजिन तेमने नमोनमो के० वारंवार नमस्कार थाउ.

सकलातिशेषकमहा॥संपत्तिसमन्वि
तायशस्याय॥ त्रैलोक्यपूजितायच॥
नमोनमः शांतिदेवाय ॥ ३ ॥

अर्थ—सकलातिशेषकमहा संपत्तिसमन्विताय के० समस्त जे अतिशेष के० अतिशय ते रूप महा संपत्ति के० मोटी संपदा, तेणेकरीने सहित, तथा शस्याय के० प्रशंसवा योग्य छे. च के० वली त्रैलोक्यपूजिताय के० स्वर्ग मृत्यु अने पाताल ते रूप त्रणलोक, तेणे पूजिताय के० पूजितछे एहवा, शांतिदेवाय के० शांतिनाथ सो

त्नमा तीर्थंकर तेमने नमोनमःके० नमस्कार थाउ.

सर्वामरसुसमूह ॥ स्वामिकसंपूजिता
यनिजिताय ॥ ज्जुवनजनपालनोद्य
त ॥ तमायसततं नमस्तस्मै ॥ ४ ॥

अर्थ—सर्वामरसुसमूह के० समस्त देवना स मूह एटले चारनिकायना देवताना समूह, तेहना स्वामिक के० स्वामी एटले चोसठ इंद्र, तेणे संपूजिताय के० सम्यक् प्रकारे पूज्याछे. निजिताय के० वली नथी जीत्या देवादिके एहवा, तथा ज्जुवनजनपालनोद्यततमाय के० त्रण ज्जुवनना जे लोक तेमनुं जे प्रतिपालन करवुं, तेहनेविषे अत्यंत उद्यमवंतछे. तस्मै के० ते शांतिनाथ माहाराजने सततं के० निरंतर नमः के० नमस्कार थाउ. इति श्लोकार्थ. ॥ ४ ॥

सर्वडुरितौघनाशन ॥ कराय सर्वा
शिवप्रशमनाय ॥ डुष्टग्रहज्जूतपि
शाच शाकिनीनांप्रमथनाय ॥ ५ ॥

अर्थ—सर्वके० समस्त जे दुरित के० पाप ते हनो उंघ के० समूह तेहना नाशन कराय के० नाशकरणहारछे. वली केहेवाछे, सर्वाशिव के० सर्व जे अशिव एटले उपद्रव तेहना प्रशमनाय के० प्रकर्षेकरी एटले अतिशयपणे समावणहा रछे. वली केहेवाछे, दुष्टग्रह के० दुष्टग्रह एटले क्रुद्र आकरा ग्रह मंगल, शनीश्वर, राहु अने केतु इत्यादि असुखना करनार तथा नूत के० वृक्षादिक नेविषे वसनार पिशाच के० राक्षसादि तथा शाकिनीनां के० शाकिनी ए मंत्राधिष्टित स्त्री पुरुष तथा दुष्टदेवाधिष्टित शाकिनी ए पूर्वोक्त उपद्रवोने प्रमथनाय के० प्रकर्षेकरी एटले अतिशयपणे मंथन एटले नासकरणहारछे. ॥५॥ इतिश्लोकार्थ.

यस्येति नाममंत्र,प्रधानवाक्योपयो
गकृततोषा ॥ विजया कुरुते जनहित
मिति च नुता नमत तं शांतिं ॥ ६ ॥

अर्थ—यस्यके० जे नगवंतनो इतिके० एहवो

जे नाममंत्र के० नामरूप जे महामंत्र अने प्र धान के० प्रकृष्टसर्वोत्तम पवित्र जे तद्रूप वाक्योप योग के० वचननो उपयोग स्मरणरूप तेणे करीने कृततोषाके० कस्योछे. तोष एटले हर्ष जेणे एहवी विजया नामे जे देवीछे, ते जनहितंकुरुते के० भव्यजनना हित प्रते करेछे. इति के० एणे प्रकारे च के० वली नुता के० स्तवेलीछे, तंशांतिं के० ते शांतिनाथ प्रतेहे नव्यलोको? तमे नमत के० नमस्कार करो. ॥ ६ ॥ इति गाथार्थ.

नवतु नमस्ते नगवति विजये सुज
ये परापरैरजिते ॥ अपराजिते जग
त्यां जयतीति जयावहे नवति ॥७॥

अर्थ—ते तुजप्रत्यें नमः के० नमस्कार नवतु के० थाउ. नगवति के० महामहिमावंत शास ननी अधिष्टायका विजये के० हेविजया देवी, सु जये के० सुष्टुनला यशनी कर्त्ता एहवी जया देवी तथा परापरैः के० परा अने अपर तेणे अ

जिते एटले प्रकृष्ट बलवंतें नथी जीती एहवी अ जितादेवी, अपराजिते के० हे अपराजितादेवी, तुं जगत्यां के० जगतनेविषे जयति के० जयवंती वर्त्तेछे. इतिके० एरीते जयावहेके० जयनो आवा वहन करनार नवतिके० छे. ॥७॥ इतिश्लोकार्थ.

सर्वस्यापिचसंघ, स्यनडकल्याणमं
गलप्रददे ॥ साधूनांच सदाशिव
तुष्टिपुष्टिप्रदे जीयाः ॥ ८ ॥

अर्थ—सर्वस्यापि के० समस्तने अपिइति सं नावना संघस्य के० संघ जे चतुर्विधरूप तेहनें नइके० निरुपड्वपणुं. कल्याण के० ते सर्व प्र कारनी वृद्धि मंगल ते मंगलीक उत्सवरूप प्रद देके० ए पूर्वोक्त पदार्थ आपनार एवी हे देवि? तुं जीयाः के० पृथ्विनेविषे जयवंती वर्त्तो. ॥ ८ ॥

नव्यानां कृतसिद्धे निर्वृत्तिनिर्वाण
जननि सत्वानां ॥ अनयप्रदाननिरते
नमोस्तुस्वस्तिप्रदे तुन्यं ॥ ए ॥

अर्थ—जव्यानांके० जव्यजीवनी कृतसिद्धके० करीछे कार्यनी सिद्धि जेणे एहवी, तथा हे निर्वृति के० सुखरूप जे निर्वाण के० मोक्ष सुख ते हने जननि के० उत्पन्न करणहारी छे, वली सत्वानां के० समस्त जीवने अजयप्रदान के० अजयदान देवाने निरते के० ततूपरछे. स्वस्तिप्रदेके० हे मंगलीकनी आपनारी, हे शासनदेवी? तुभ्यंके० तुज प्रत्ये नमोस्तु के० नमस्कार थाउ. ॥ ए ॥

जक्ताना जंतूना शुजावहे नित्यमुद्यते देवि ॥ सम्मग्दृष्टीनांधृति रति मतिबुद्धिप्रदानाय ॥ १० ॥

अर्थ—जक्तानां जंतूनां के० जक्तिवंत एहवा जे जीव छे, तेमनो जे शुजावहेके० शुजमंगलीकनो आवहकार एहवी अने जक्तनेविषे नित्यंके० निरंतर उद्यतेके० उद्यमवंत एहवी हे देवी, तमे सम्यग् दृष्टिनां के० सम्यक्त्ववंत जीवने धृति एटले मन संतोष, रतिते मन समाधि, मतिते शुज मतिने,

बुद्धिते जलीबुद्धि. तेहना प्रदानाय के० प्रकर्षे ए टले अतिशयपणे देवाने उजमाल थाउ. ॥१०॥

जिनशासन निरतानां शांतिनतानां
च जगति जनतानां॥श्रीसंपत्कीर्त्तिय
शोवर्द्धनि जय देवि विजयस्व ॥ ११ ॥

अर्थ—जिनशासन के० श्रीवीतरागना शासन ने विषे निरतानांके० रागवंतछे. चके० वली शांति नतानां के० शांतिनाथदेव तेहने नमस्कार कस्यो छे जेणे, तथा जगति के० पृथ्वीने विषे जनतानां के० उत्पन्न थएला जे नव्य प्राणी तेमने श्रीके० लक्ष्मीते सुवर्णादि तथा संपत् के० संपदाते धा न्यादि प्रकारनी तथा कीर्त्ति ते एक दिगव्यापि, यशते सर्व दिगव्यापि सर्वत्र प्रसिद्ध तेहनी वर्द्ध नीके० वधारणहारी एहवी जे जयनामे देवीछे, ते विजयस्वके० विजयकरो. ॥ ११ ॥

सलिलानलविषविषधर, दुष्टग्रह

राजरोगरणभयतः राक्षसरिपुगण
मारीचौरेति श्वापदादिभ्यः ॥ १२ ॥

अर्थ–सलिलते पाणि, अनलते अग्नि अने विष ते अफीणादि विषधर. तेसर्प दुष्टग्रहके० दुष्ट स्वभावना शनि अने राहु तथा केतु प्रमुख तथा राजभय तथा रोगते दुष्ट ज्वरादिकनुं भय रणभयते रण संग्राम इत्यादि भय थकी राक्षस ते भूत पिशाच आदि रिपुगणते वेरी समूह मारी तेदुष्टव्यंतर मरगी जनकारी तथा चोरना भयथकी रक्षरक्षके० राख राख. हे माता रक्षए क्रियापद आगल तेरमा श्लोके आवसे. ते मध्येथी अनुवृत्ति करवी.॥ १२॥

अथ रक्ष रक्ष सुशिवं कुरुकुरु शांतिंच
कुरुकुरु सदेति ॥ तुष्टिंकुरुकुरुपुष्टिं कु
रुकुरु स्वस्ति च कुरुकुरु त्वं ॥ १३ ॥

अर्थ–अथके० अथा नंतर सुशिवंकुरुकुरुके० निरूपद्रवपणुं ते प्रते करो करो हे माता! वली शां

तिं कुरुकुरुके० शांतिते पूर्वे उपन्या जे रोग तेह नी निवृत्ति, कर कर सदाके० सदाकाल इतिके० एणे प्रकारे तथा तुष्टिंकुरु कुरु के० तुष्टि ते मन नुं स्वार्थपणुं ते प्रत्यें कर कर तथा पुष्टी कुरुकुरु के० पुष्टी ते शरीरनुं निरोगतापणुं ते प्रत्यें कर क र तथा स्वस्तिं कुरु कुरु के० ते महा मंगलीक पणुंते प्रत्यें कर कर त्वंके० तुं हेजया देवी? शास न नीरखवाली ॥ १३ ॥

नगवति गुणवति शिवशांतितुष्टिपु
ष्टिस्वस्ती हकुरुकुरुजनानां ॥ उमि
तिनमो नमो ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रः यः क्षः ह्रीं
फुट्फुट् स्वाहा ॥ १४ ॥

अर्थ—हे नगवति मोटा महिमानी धणीश्रा णी, हे गुणवंति, सत्व, रजो तथा तमो ए त्रि गुणेयुक्त तुं शिव ते निरुपद्रवपणुं अने शांती ते सर्व रोगशोकनी उपशांती; तथा तुष्टि ते मनः सं तोष पुष्टि ते शरीरनुं दृढपणुं, स्वस्ति ते महामंग

लीकंपणुं, इह के० इहां पृथ्वीनेविषे कुरु कुरु के० कर कर कोने, तोके जनानांके० समस्तलोकने ॐइति के० ॐकारए अक्षरप्रत्ये नमो नमो के० नमस्कार थाउ. ॐनमो ह्रां ह्रीं ह्र यः क्षः ह्रीं फुट्फुट् स्वाहा. ए शांतीनो मूलमंत्र जाणवो.॥१४

एवंयन्नामाक्षर, पुरस्सरं संस्तुता ज
यादेवी॥ कुरुते शांतिं नमतां नमो
नमः शांतये तस्मै ॥ १५ ॥

अर्थ–एवं के० ए प्रकारे यन्नामाक्षर के० जे ना नामाक्षररूप मंत्र पुरस्सरंके० ते पूर्वक संस्तु ता के० नली रीते स्तवी श्रीशांतिनाथनी अधिष्टा यिका, एहवी जे जयानामे देवीछे; ते शांतिंनम तां के० शांतीनाथने नमस्कार करनारा जे नव्य जीवो तेमनी शांतिप्रते कुरुतेके० करेछे. तस्मैशांत येके० तेमाटे शांतिनाथ महाराजने नमोनमः के० वारंवार नमस्कार थाउ. इति श्लोकार्थ. ॥१५॥

इतिपूर्वसूरिदार्शीत मंत्रपदविदर्भित

स्तवः शांतेः ॥ सलिलादिनयवि
नाशी शांत्यादिकरश्च नक्तिमतां ॥१६॥

अर्थ—इतिके० ए प्रकारे पूर्वसूरि दर्शित मंत्र पद के० पूर्वाचार्ये देखाड्यो जे मंत्रपद अक्षर रूप, तेणेकरी विदर्शित के० गुंथ्यो एहवो जे शांतेः के० शांतिनाथनुं स्तव के० ए स्तोत्ररूप स्तव न ते सलिलादि नयविनाशी के० पाणिप्रमुख सर्व नयनो नाश करनार बे. वली नक्तिमतां के० जे नगवंत उपर नक्ति रागवंतबे, तेमने शांत्यादि करः के० शांत्यादिकरणहार एहवुं स्तोत्र कह्युंबे.॥१६॥

यश्चैनं पठति सदा शृणोति नावयति
वा यथायोग्यं॥ सहि शांतिपदं याया
त् सूरिःश्रीमानदेवश्च ॥ १७ ॥

अर्थ—यः के० जे पुरुष च के० वली एनंपठति सदाके० ए शांति स्तवन प्रते सदा नणेबे, तथा सदाश्टणोति के० सदाकाले सांनलेबे, तथा नावय

तिवा के० मनमांहेजावें थकीस्मरण करे, यथायोग्यं के० यथायोगपणे हइति निश्चितं सके० ते पुरुष शांतिपदं के० मंगलिकना पदप्रते यायात् के० पामे. एम श्रीमानदेवसूरि कहेछे. ॥ १७ ॥

उपसर्गाः क्षयं यांति छिद्यंते विघ्नवल्लयः ॥ मनः प्रसन्नतामेति पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥ १८ ॥

अर्थ—उपसर्गाःके० देवादिकृत उपसर्ग जे छेते क्षयंयांतिके० विलयजाएछे, तथा विघ्नवल्लयःछिद्यंते के० कष्टरूपवेलछे ते पणक्षय जायछे. तथा मनः प्रसन्नतामेति के० मनछे ते प्रसन्नपणाने एति एटले पामेछे. शुं करेथी तो के जिनेश्वर पूज्यमानेके० जिनेश्वरमाहाराजने पूजे थके. ॥१८॥

॥ इति श्रीलघु शांति स्तोत्रं समाप्तं ॥ ५३ ॥

॥ अथ नरहेसरनीसद्याय ॥ ५४ ॥

॥ नरहेसर बाहुबली ॥ अनयकुमारोअ ढंढण

कुमारो ॥ सिरिउ अणियाउत्तो ॥ अइमुत्तो नाग दत्तोअ ॥ १ ॥ मेअज्ज थूलिभद्दो ॥ वयररिसि नं दिसेण सीहगिरी ॥ कयवन्नोअ सुकोसल ॥ पुंडरि उ केसि करकंडू ॥ २ ॥ हल्ल विहल्ल सुदंसण ॥ साल माहासाल सालिभद्दोअ ॥ भद्दो दसन्नभद्दो ॥ पसन्नचंदोअ जसभद्दो ॥३॥ जंबूपहु वंकचुलो ॥ ग यसुकुमालो अवंतिसुकुमालो ॥ धन्नो इलाइपुत्तो॥ चिलाइपुत्तोअ बाहुमुणी ॥ ४ ॥ अज्जगिरि अज्जरक्खिअ ॥ अज्जसुहत्थी उदाइगो मणगो ॥ कालयसूरी संबो ॥ पज्जुन्नो मूलदेवोअ ॥ ५ ॥ पभवो विन्हुकुमारो ॥ अद्दकुमारो दढप्पहारीअ॥ सिज्जंस कुरगडूअ ॥ सिज्जंभव मेहकुमारोअ॥६॥ एमाइ महासत्ता ॥दिंतु सुहं गुणगणेहिं संजुत्ता॥ जेसिं नामग्गहणे ॥ पावपबंधा विलय जंति॥७॥ सुलसा चंदनबाला ॥ मणोरमा मयणरेहा दम यंति ॥ नमया सुंदरि सीया ॥ नंदा भद्दा सुभद्दा य ॥ ८ ॥ रायमई रिसिदत्ता ॥ पउमावई अंज णा सिरीदेवी॥ जिठ सुजिठ मिगावइ ॥ पभावइ चि

लणा देवी ॥ ए ॥ बंभी सुंदरी रूप्पिणि ॥ रेवइ कुंती सिवा जयंतीय ॥ देवइ दोवइ धारणि ॥ क लावई पुप्फ चूलाय ॥ १० ॥ पउमावईय गोरी ॥ गंधारी लरकणा सुसीमाय॥ जंबूवइ सच्चनामा॥ रूप्पिणि कन्हह महिसीउ ॥ ११ ॥ जरकाय ज रकदिन्ना ॥ भूआ तहचेव भूवदिन्नाय ॥ सेणा वे णा रेणा॥भयणीउ थूलिभद्दस्स ॥१२॥ इच्चाइ म हासइउ ॥ जयंतिअकलंक सील कलिआउ ॥ अ ज्जवि वज्जइ जासिं ॥ जस पडहो तिहुअणे सयले ॥१३॥ इति सता सतीउनी सज्झाय शमाप्तः॥५४॥

॥ अथ मन्हजिणाणं सझाय ॥ ५५ ॥

॥ मन्हजिणाणं आणं॥ मिछं परिहरह धर स मत्तं ॥ छविह आवसयंमि ॥ उज्जुत्तोहोइ पइ दि वसं ॥१॥ पव्वेसु पोसहवयं॥ दाणं सीलं तवोअभा वोअ ॥ सज्झाय नमुक्कारो ॥ परोवयारोअ जयणा अ ॥ २ ॥ जिणपूआ जिणथुणणं ॥ गुरुथुअ साहम्मि आणवछल्लं ॥ ववहारस्सय सुद्धि ॥ रह

जुत्ता तिब्बजुत्ताय ॥ ३ ॥ उवसम विवेक संवर॥ नासासमिई छजीवकरुणाय ॥ धम्मिअजण संस ग्गो॥करणदमो चरिण परिणामो ॥४॥ संघोवरि ब हुमाणो ॥ पुब्बय लिहणं पनावणा तिब्बे ॥ सड्डा ण किच्च मेअं ॥ निच्चं सुगुरुवएसेणं ॥ ५ ॥५५॥

॥ अथ तीर्थ वंदना ॥ ५६ ॥

॥ सकल तीर्थ वंडुं करजोड ॥ जिनवरनामे मं गलकोड ॥ पहेले स्वर्गे लाख बत्रीश ॥ जिन वर चईत नमुं निसदिस ॥ १ ॥ बीजे लाख अगावीश कह्यां ॥ त्रीजे बारलाख सदह्यां ॥ चो थे स्वर्गे अडलख धार ॥ पांचमे वंडुंलाखज च्यार ॥ २ ॥ छठे स्वर्गे सहस्स पचास ॥ सातमे चालि श सहसप्रासाद ॥ आठमे स्वर्गे छ हजार ॥ नव द समे वंडुं सतचार ॥ ३ ॥ अग्यारबारमे त्रण सें सार॥नवग्रैवेकें त्रणसें अढार ॥ पांचअनूत्तर सर्वे मली ॥ लाखचोरासि अधिकांवली ॥ ४ ॥ सहस सत्तांणु त्रेवीश सार ॥ जिनवर जुवन तणो

अधिकार ॥ लांबां सो योजन वीस्तार ॥ पंचास
उचां व्होतेर धार ॥ ५ ॥ एकसो एंसि बिंब प्र
माण ॥ सजासहित एक चैत्यें जाण ॥ सोकोड
बावन कोड संजाल ॥ लाखचोराणु सहस चौंआ
ल ॥ ६ ॥ सातसें उपर साठ विशाल ॥ सवि बिंब
प्रणमुं त्रणकाल ॥ सातकोडने व्होतरलाख ॥
नूवनपतिमां देवल जांख ॥ ७ ॥ एकसोएंसि बिंब प्र
माण ॥ एकएक चइतें संख्या जाण ॥ तेरसेंकोड
नव्याशि कोड ॥ साठलाख वंडुं करजोड ॥ ८ ॥ बत्रीसें
ने उंगणसाठ ॥ त्रीगलोकमां चइतनो पाठ ॥ त्रण
लाख एकाणु हजार ॥ त्रणसें विशते बिंब जुहार
॥ ९ ॥ व्यंतरज्योतषिमां वलीजेह ॥ सास्वता जिन वं
डुंतेह ॥ रिषज चंडानन वारिषेण ॥ वर्द्धमान नामेगु
णषेण ॥ १० ॥ समेतशिखर वंडु जिनवीश ॥ अष्टापदवं
डुं चोवीश ॥ विमलाचलने गढ गिरनार ॥ आबुउ
पर जिनवर जुहार ॥ ११ ॥ संखेस्वर केशायिो
सार ॥ तारंगे श्री अजीत जुहार ॥ अंतरीक
वरकांणोपास ॥ जीरावलोने थंजणपास ॥ १२ ॥

गाम नगर पुर पाटण जेह ॥ जिनवरचैत्य नमुं गुणगेह ॥ वेहेरमान वंडुं जिनवीश ॥ सिद्धअनंत नमुं निसदीस ॥१३॥ अढीद्वीपमां जे अणगार॥ अढारसहस सिलांगनाधार ॥ पंच महाव्रत समितिसार ॥ पाळे पळावे पंचाचार ॥१४॥ बाह्य अभिंतर तप उजमाळ ॥ तेमुनिवंडुं गुण मणिमाळ॥ नितनित ऊठीकिरतीकरूं॥जीवकहे भवसायरतरूं॥

॥ अथ श्रीमहावीरजिन छंद ॥ ८७ ॥

॥सेवो वीरने चित्तमां नित्य धारो ॥ अरी क्रोधने मंनथी दूरवारो ॥ संतोष व्रति धरो चितमांहिं ॥ रागद्वेषथी दुर थाउ उछांहिं ॥१॥ पडयामो हना पासमां जेह प्राणी ॥ शुद्ध तत्वनी वात तेणे नजाणी ॥ मनुज जन्मपामी वृथा कां गमोछे ॥जैनमार्ग छंडी भुला कां भमोछे ॥२॥अलोभी अमानी निरागी तजोछो ॥ सलोभी समानी सरागी भजोछो ॥ हरी हरादी अन्यथी शुं रमोछो ॥ नदीगंगमुकी गलीमां पडोछो॥३॥केइ देवहाथें असी चक्र धा

रा॥केईदेवघालेगले रुंममाला॥केइदेव उछंगि राखेछ वामा॥केईदेव साथे रमे व्रंद रामा॥४॥केईदेव जप्पे लेईजप्पमाला॥केई मांसभक्षी महा वीकराला॥के ई योगणी भोगणी भोग रागे॥ केई रुद्रणी छागनो होम मागे॥५॥ ईस्या देव देवीतणी आश राखे॥त दा मुक्तिनां सूखने केमचाखे॥ जदा लोभना थोक नो पार नाव्यो॥ तदामछनो बिंदुओ मंनभाव्यो॥ ॥६॥ जेहदेवलां आपणी आशराखे॥ तेहपिंमने मंनसूले अचाखे॥दीन हीननी भीडते केम भाजे॥ फुटो ढोलहोए कहोकेम वाजे॥ ७ ॥ अरे मुंढ भ्राता भजो मोक्षदाता॥अलोभी प्रभुनें भजो वि श्व ख्याता॥ चिंतामणी सारीखो एह साचो॥ कलंकी काचना।पिंमशुंमत राचो॥ ८ ॥ मंदबुद्धि शुं जेह प्राणीकहेछे॥सवीधर्म एकत्व भूलोभमेछे॥ किहां सर्षवाने किहां मेरुधीरं॥ किहां कायराने किहां शूरवीरं॥ए॥ किहां स्वर्णथालं किहां कुंभ खंमं॥ किहां कोद्रवाने किहां खीरमंमं॥ किहां खीरसिंधू किहां खारनीरं॥किहां कामधेनुं किहां

छाग खीरं॥ १ ०॥किहां सत्यवाचा किहां कूडवाणी॥
किहां रंकनारी किहां रायराणी ॥ किहां नारकीने
किहां देवजोगी ॥ किहां इंद्रदेही किहां कुष्टरोगी
॥ ११ ॥ किहां कर्मघाती किहांकर्मधारी ॥ नमो
वीरस्वामी नजो अन्यवारी ॥ जिसी सेजमां स्वप्न
थी राज्यपामी ॥ राचेमंदबुद्धि धरीजेह स्वामी॥१ २
अथिरसुख संसारमां मंनमाचे ॥ तेह मुढमां
श्रेष्ट शुं इष्ट छाजे ॥ तजो मोहमाया हरो दंजरो
सी ॥ सजो पुन्यपोसी नजो ते अरोसी ॥ १३ ॥
गतीचार संसार अपारपामी ॥ आव्या आशधारी
प्रजूपायस्वामी ॥तुंही तुंहि तुंही प्रजू पर्मरागी॥जव
फेरनी श्रृंखला मोह जागी ॥ १ ४॥ मानीएवीरजी अ
र्जछे एक मोरी॥ दीजें दासकुं सेवनाचर्णतोरी॥ पु
न्यउदयहुउ गुरु आज मेरो॥ विवेकें लह्यो में प्रजु द
र्शी तेरो ॥१५॥ इति श्री महावीरजिनछंद॥ ५७ ॥

॥ अथ गणधरस्तवलिख्यते ॥ ५८

॥ एकादश गणधरनांनाम ॥ प्रह्रऊठीने करूं प्रणा

म ॥ इंद्रभुति पहेलोते जाण ॥ अग्निभुती बीजो गुणखाण ॥ १॥ वायुभुती त्रीजोजगसार ॥ गण धरचोथो व्यक्त उदार ॥ सासनपती सूधर्मासार॥ मंमीतनामे बहो धार ॥ २ ॥ मौर्यपुत्रते सातमो जेह॥ अकंपीत अष्टम गुणगेह ॥मुनिवरमांही जेह प्रधान ॥ अचलभ्रात नवमोए नाम ॥ ३ ॥ ना मथकी होय कोड कल्याण ॥ दशमो मेतारज अ विरलवाण ॥ एकादशमो प्रनास कहेवाय ॥ सुख संपति जसनामे थाय ॥ गाया वीरतणा गणधा र ॥ गुणमणिरयणतणा नंमार ॥ उत्तमविजय गुरुनोशीश ॥ रत्नविजय वंदे निसदीश॥५॥इति०

॥अथ नक्तामरस्तोत्र प्रारंन वसंततिलका वृत्तम्॥

॥ नक्तामरप्रणतमौलिमणिप्रनाणामुद्योतकंद लितपापतमोवितानं॥ सम्यक् प्रणम्य जिनपादयु गं युगादा, वालंबनंनवजले पततां जनानां॥१॥ यः संस्तुतः सकलवाङ्मयतत्वबोधाडुद्भूतबुद्धिप टुन्निः सुरलोकनाथैः ॥ स्तोत्रैर्जगत्रितयचित्तहरैरु दारैः स्तोष्ये किलाहमपि तं प्रथमं जिनेंद्रं ॥२॥

बुध्याविनापि विबुधार्चितपादपीठः, स्तोतुं समुद्य
तमतिर्विगतत्रपोहं ॥ बालं विहाय जलसंस्थित
मिंदुबिंबमन्यः कइच्छति जनः सहसागृहीतुं ॥ ३ ॥
वक्तुंगुणान् गुणसमुद्रशशांककांतान्, कस्ते क्ष
मः सुरगुरुप्रतिमोपि बुध्या ॥ कल्पांतकालपवनोद्ध
तनक्रचक्रं, कोवा तरीतुमलमंबुनिधिं भुजाभ्यां
॥ ४ ॥ सोहं तथापि तव भक्तिवशान्मुनीश,
कर्तुं स्तवं विगतशक्तिरपि प्रवृत्तः ॥ प्रीत्यात्मवीर्यम
विचार्य मृगोमृगेंद्रं, नाभ्येति किं निजशिशोः परि
पालनार्थं ॥ ५ ॥ अल्पश्रुतं श्रुतवतां परिहास
धाम, त्वद्भक्तिरेव मुखरीकुरुते बलान्मां ॥ यत्को
किलः किल मधौ मधुरं विरौति, तच्चारु चाम्रक
लिकानिकरैकहेतोः ॥ ६ ॥ त्वत्संस्तवेन भव
संततिसंनिबद्धं, पापं क्षणात् क्षयमुपैति शरी
रभाजां ॥ आक्रांतलोकमलिनीलमशेषमाशु सू
र्यांशुभिन्नमिव शार्वरमंधकारं ॥ ७ ॥ मत्वेति
नाथ तव संस्तवनं मयेदमारभ्यते तनुधियापि
तव प्रभावात् ॥ चेतो हरिष्यति सतां नलिनीद

लेषु, मुक्ताफलद्युतिमुपैति ननूदबिंदुः ॥ ८ ॥
आस्तां तव स्तवनमस्तसमस्तदोषं, त्वत्संकथापि
जगतां दुरितानि हंति ॥ दूरे सहस्रकिरणः कुरुते
प्रनैव, पद्माकरेषु जलजानि विकाशनांजि ॥ ९ ॥
नात्यद्भुतं भुवनभूषण भूतनाथ भूतैर्गुणैर्भुवि भवं
तमभिष्टुवंतः॥ तुल्याभवंति भवतोननु तेन किंवा,
भूत्याश्रितं यइह नात्मसमं करोति ॥ १० ॥ दृ
ष्ट्वाभवंतमनिमेषविलोकनीयं, नान्यत्र तोषमुप
याति जनस्य चक्षुः ॥ पीत्वा पयः शशिकरद्युति दु
ग्धसिंधोः क्षारं जलं जलनिधेरशितुं कइच्छेत् ॥
॥ ११ ॥ यैः शांतरागरुचिभिः परमाणुभिस्त्वं,
निर्मापितस्त्रिभुवनैकललामभूत ॥ तावंतएव खलु
तेप्यणवः पृथिव्यां, यत्ते समानमपरं नहि रूप
मस्ति. ॥ १२ ॥ वक्त्रं क्वते सुरनरोरगनेत्रहारि,
निःशेषनिर्जितजगत्त्रितयोपमानं ॥ बिंबं कलंकम
लिनं क्व निशाकरस्य, यद्वा रसे भवति पांडुपलाश
कल्पं ॥१३॥ संपूर्णमंडलशशांककलाकलापशुभ्रा
गुणास्त्रिभुवनं तव लंघयंति ॥ ये संश्रितास्त्रिजग

दीश्वरनाथमेकं कस्तान्निवारयति संचरतोयथेष्टं ॥ १४ ॥ चित्रं किमत्र यदि ते त्रिदशांगनानिर्नी तं मनागपि मनोन विकारमार्गं ॥ कल्पांतकालमरु ता चलिता चलेन, किं मंदराद्रिशिखरं चलितं कदाचित् ॥ १५ ॥ निर्धूमवर्त्तिरपवर्जिततैलपूरः कृत्स्नं जगत्रयमिदं प्रकटीकरोषि ॥ गम्यो न जातु मरुताचलिताचलेन दीपोपरस्त्वमसि नाथ जगत्प्र काशः ॥ १६ ॥ नास्तं कदाचिडुपयासि नराहुग म्यः स्पष्टीकरोषि सहसा युगपज्जगंति ॥ नांनोधरो दरनिरुद्धमहाप्रनावः, सूर्यातिशायिमहिमासिमु नींद्रलोके ॥ १७ ॥ नित्योदयं दलितमोहमहां धकारं; गम्यं न राहुवदनस्य न वारिदानां ॥ विच्रा जते तवमुखाब्जमनल्पकांति, विद्योतयज्जगद पूर्वशशांकबिंबं. ॥ १८ ॥ किं शर्वरीषु शशिनान्हि त्रिवस्वता वा युष्मन्मुखेंडुदलितेषु तमस्सु नाथ ॥ निष्पन्नशालिवनशालिनि जीवलोके, कार्यं कि यज्जलधरैर्जलनारनम्रैः ॥१ए॥ ज्ञानं यथा त्वयि विनाति कृतावकाशं नैवं तथा हरिहरादिषु नायके

षु ॥ तेजः स्फुरन्मणिषु याति यथा महत्त्वं, नैवं तु काचशकले किरणाकुलेपि. ॥२०॥ मन्ये वरं हरिह रादय एव दृष्टा, दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तोषमेति॥ किं वीक्षितेन भवता भुवि येन नान्यः कश्चिन्मनो हरति नाथ भवांतरेपि ॥ २१ ॥ स्त्रीणांशतानि शतशो जनयंति पुत्रा, न्नान्यं सुतं त्वदुपमं जननी प्रसूता॥ सर्वादिशो दधति भानि सहस्ररश्मिं, प्रा च्येव दिग्जनयति स्फुरदंशुजालं ॥ २२ ॥ त्वामा मनंति मुनयः परमं पुमांसमादित्यवर्णममलं त मसः परस्तात् ॥ त्वामेव सम्यगुपलभ्य जयंति मृ त्युं, नान्यः शिव. शिवपदस्य मुनींद्र पंथाः ॥२३॥ त्वामव्ययं विभुमचिंत्यमसंख्यमाद्यं ब्रह्माणमी श्वरमनंतमनंगकेतुं ॥ योगीश्वरं विदितयोगमनेकमे कं, ज्ञानस्वरूपममलं प्रवदंति संतः ॥ २४ ॥ बु द्धस्त्वमेवविबुधार्चित बुद्धिबोधात्त्वं शंकरोसि भु वनत्रयशंकरत्वात् ॥ धातासि धीरशिवमार्गविधेर्वि धाना द्व्यक्तं त्वमेव भगवन् पुरुषोत्तमोसि. ॥२५॥ तुभ्यं नमस्त्रिभुवनार्त्तिहराय नाथ तुभ्यं नमः

क्षितितलामलभूषणाय ॥ तुभ्यं नमस्त्रिजगतः प
रमेश्वराय, तुभ्यं नमोजिनभवोदधिशोषणाय. ॥
॥ २६ ॥ कोविस्मयोत्र यदिनाम गुणैरशेषै
स्त्वंसंश्रितो निरवकाशतया मुनीश ॥ दोषैरुपा
त्तविविधाश्रयजातगर्वैः स्वप्नांतरेपि न कदाचिद
पीक्षितोसि. ॥ २७ ॥ उच्चैरशोकतरुसंश्रितम
न्मयूख माभातिरूपममलं भवतोनितांतं ॥ स्पष्टो
ल्लसत्किरणमस्ततमोवितानं बिंबं रवेरिव पयो
धरपार्श्ववर्त्ति. ॥ २८ ॥ सिंहासने मणिमयूखशि
खाविचित्रे, विभ्राजते तव वपुः कनकावदातं ॥
बिंबं वियद्विलसदंशुलतावितानं, तुंगोदयाद्रि
शिरसीव सहस्ररश्मेः ॥ २९ ॥ कुंदावदातचलचा
मरचारुशोभं, विभ्राजते तव वपुः कलधौतकांतं॥
उद्यच्छशांकशुचिनिर्झरवारिधारमुच्चैस्तटं सुरगिरे
रिव शातकौंभं. ॥ ३० ॥ छत्रत्रयं तव विभाति
शशांककांत, मुच्चैःस्थितं स्थगितभानुकरप्रतापं ॥
मुक्ताफलप्रकरजालविवृद्धशोभं, प्रख्यापयत्रिजग
तः परमेश्वरत्वं ॥ ३१ ॥ उन्निद्रहेमनवपंकजपुंजकां

ती पर्युल्लसन्नखमयूखशिखा निरामौ॥ पादौ पदानि तव यत्र जिनेंद्र धत्तः पद्मानि तत्र विबुधाः परिकल्पयंति ॥ ३२ ॥ इत्थं यथा तव विभूतिरभूज्जिनेंद्र धर्मोपदेशनविधौ न तथा परस्य ॥ यादृक् प्रभा दिनकृतः प्रहतांधकारा, तादृक्कुतोग्रहगणस्य विकाशिनोपि ॥३३॥ श्च्योतन्मदाविलविलोलकपोलमूलमत्तभ्रमद्भ्रमरनाद विवृद्धकोपं ॥ ऐरावताभमिभमुद्धतमापतंतं दृष्ट्वा भयं भवति नो भवदाश्रितानां ॥३४॥ भिन्नेभकुंभगलदुज्ज्वल शोणिताक्त मुक्ताफलप्रकरभूषितभूमिभागः॥ बद्धक्रमः क्रमगतं हरिणाधिपोपि नाक्रामति क्रमयुगाचलसंश्रितं ते ॥ ३५॥ कल्पांतकालपवनोद्धत वन्हिकल्पं, दावानलं ज्वलितमुज्ज्वल मुत्स्फुलिंगं॥ विश्वं जिघत्सुमिव संमुखमापतंतं, त्वन्नामकीर्त्तन जलं शमयत्यशेषं ॥ ३६ ॥ रक्तेक्षणं समदकोकिलकंठनीलं, क्रोधोद्धतं फणिनमुत्फणमापतंतं॥ आक्रामति क्रमयुगेन निरस्तशंकस्त्वन्नामनागदमनी हृदियस्य पुंसः ॥ ३७ ॥ वल्गत्तुरंगगजगर्जित

भीमनादमाजौबलं बलवतामपि भूपतीनां ॥ उद्य
द्दिवाकरमयूखशिखापविद्धं, त्वत्कीर्त्तनात्तम इवाशु
भिदामुपैति. ॥ ३८ ॥ कुंताग्रभिन्नगजशोणितवा
रिवाह वेगावतारतरणातुरयोधभीमे ॥ युद्धे जयं
विजितदुर्जयजेयपक्षास्त्वत्पादपंकजवनाश्रयिणो
लभंते. ॥ ३९ ॥ अंभोनिधौक्षुभितभीषणनक्रच
क्रं, पाठीनपीठभयदोल्बणवाडवाग्नौ ॥ रंगत्तरंगशि
खरस्थितयानपात्रा स्त्रासं विहाय भवतः स्मर
णाद्व्रजंति. ॥ ४० ॥ उद्भूतभीषणजलोदर
भारभुग्नाः, शोच्यां दशामुपगताश्च्युतजीविताशाः ॥
त्वत्पादपंकजरजोमृत दिग्धदेहा, मर्त्या भवंति
मकरध्वजतुल्यरूपाः ॥ ४१ ॥ आपादकंठमुरुशृं
खलवेष्टितांगा, गाढं बृहन्निगडकोटिनिघृष्टजंघाः ॥
त्वन्नाममंत्रमनिशं मनुजाः स्मरंतः सद्यः स्वयं
विगतबंधभया भवंति ॥ ४२ ॥ मत्तद्विपेंद्रमृगरा
जदवानलाहि संग्रामवारिधि महोदरबंधनोत्थं ॥ त
स्याशु नाशमुपयाति भयं भियेव यस्तावकं स्तवमि
मं मतिमानधीते. ॥ ४३ ॥ स्तोत्रस्त्रजं तव जिनें

इगुणैर्निबद्धां, नत्तया मयारुचिरवर्णविचित्रपु
ष्पां ॥ धत्ते जनो य इहकंठगता मजस्रं, तं मानतुंग
मवशा समुपैति लक्ष्मीः ॥ ४४ ॥ इतिसमाप्तः ॥

अथ ॥ अजितशांतिस्तवन प्रारंनः॥

॥ अजिअं जिअसव्वनयं संतिं च पसंतसव्वगय
पावं ॥ जयगुरु संतिगुणकरे दोवि जिणवरे प
णिवयामि ॥१॥ गाहा ॥ ववगयमंगुलनावेतेहंवि
उलतवनिम्मलसहावे ॥ निरुवममहप्पनावे थो
स्सामि सुदिठ्ठसप्नावे ॥ गाहा ॥ २ ॥ सव्वडुःरक
प्पसंतीणं सव्वपावप्पसंतिणं ॥ सया अजियसंती
णं नमोअजियसंतिणं ॥ सिलोगो ॥ ३ ॥ अजि
अजिण सुहप्पवत्तणं तव पुरिसुत्तम नामकित्तणं
॥ तहय धिइमइप्पवत्तणं तव य जिणुत्तम संति
कित्तणं ॥ मागहिआ ॥ ४ ॥ किरिआविहिसंचि
अकम्मकिलेसविमुरकयरं ॥ अजिअं निचिअं च
गुणेहिं महामुणिसिद्धिगयं ॥ अजिअस्स य सं
तिमहामुणिणोविअ संतिकरं ॥ सययं मम निव्वु
इकारणयं च नमंसणयं ॥ आलिंगणयं ॥ ५ ॥

पुरिसाजइडुरकवारणं जइ अ विमग्गहसुरककार
णं ॥ अजिअं संतिं च नावउ अनयकरे सरणं
पवज्जहा ॥ मागहिआ ॥ ६ ॥ अरइरइतिमिरवि
रहिअमुवरयजरमरणं ॥ सुरअसुरगरुलनुयगवइ
पयपणिवइअं ॥ अजिअमहमविअसुनयनयनि
उणमनयकरं ॥ सरणमुवसरिअ नुविदिविजमहि
अंसययमुवणमे ॥ संगययं ॥ ७॥ तं च जिणुत्तममु
त्तमनित्तमसत्तधरं ॥ अज्जवमद्दवखंतिविमुत्तिसमा
हिनिहिंसंतिकरं पणमामि दमुत्तमतिडयरं ॥ संति
मुणिं मम संति समाहिवरं दिसउ ॥ सोवाणयं ॥
॥ ८ ॥ सावडिपुव्वपडिवं च वरहडिमडयपसड
विडिन्नसंथिअं थिरसरिडवडं मयगयलीलायमा
णवरगंधहडिपडाणपडिअं संथवारिहं ॥ हडिह
डबाहु धंतकणगरुयगनिरुवहयपिंजरं पवरलरक
णोवचियसोम्मचारुरूवं ॥ सुइसुहमणाभिराम
परम रमणिज्जवर देवडुंडुहिनिनायम हुरयरसुन
गिरं ॥ वेढ्ढउ ॥ ९ ॥ अजिअं जिआरिगणं
जिअसव्वनयं नवोहरिउं ॥ पणमामि अहं प

यउ पावं पसमेउ मे नयवं ॥ रासलुद्धउ ॥१०॥
कुरुजणवयहत्थिणाउरनरीसरो पढमं तउ महा
चक्कवट्टिनोए महप्पनावोजो बाहत्तरि पुरवरसह
स्सवरनगरनिगमजणवयवई बत्तीसारायवरसह
स्साणुआयमग्गो चउद्दसवररयणनवमहानिहिच
उसठ्ठिसहस्सपवरजुवईणसुंदरवई चुलसीहयगय
रहसयसहस्ससामी छन्नवइगामकोडिसामी आ
सीजो नारहम्मि नयवं ॥ वेढउ ॥ ११ ॥ तं
संतिं संतिकरं संतिस्सं सव्वनया ॥ संतिंथुणामि
जिणं संतिं विहेउ मे ॥ रासानंदिअयं ॥ युग्मं
॥ १२ ॥ इरकाग विदेहनरीसर नरवसहा मुणि
वसहा । नवसारयससिस कलाणण विगयतमा
विहुयरया ॥ अजिउत्तमतेअ गुणेहिं महामुणि
अमिअ बला विउलकुला । पणमामि ते नवन
यमूरण जगसरण मम सरणं ॥ चित्तलेहा ॥१३॥
देवदाणविंदचंदसूरवंद हठ्ठतुठ्ठजिठ्ठपरमलठ्ठरूव धं
तरुप्पपट्टसेयसुद्धनिद्धधवलदंतपंति संति सत्तिकि
त्तिमुत्तिजुत्तिगुत्तिपवर दित्ततेअवंद धेअ सव्वलोअ

नाविअप्पनावणेअ पइस मे समाहिं ॥ ना
रायउं ॥ १४ ॥ विमलससिकलाइरेअसोम्मं ।
वितिमिरसूरकराइरेअतेअं ॥ तिअसवइगणाइरेअ
रूवं । धरणिधरप्पवराइरेअसारं ॥ कुसुमलया ॥
॥ १५ ॥ सत्ते अ सया अजिअं । सारीरे अ ब
ले अजिअं ॥ तवसंजमे अ अजिअं । एस अहं
थुणामि जिणं मजिअं ॥ भुअगपरिरिंगिअं॥१६॥
सोम्मगुणेहिं पावइ न तं नवसरयससी तेअगु
णेहिं पावइ न तं नवसरयरवी ॥ रूवगुणेहिं
पावइ न तं तिअसगणवई सारगुणेहिं पावइ न
तं धरणिधरवई ॥ खिज्जिययं ॥ १७ ॥ तित्थवरप
वत्तयं तमरयरहियं धीरजणथुअच्चिअं चुअकलि
कलुसं ॥ संतिसुहपवत्तयं तिगरणपयओ सं
तिमहं महामुणिं सरणमुवणमे ॥ ललिअयं
॥ १८ ॥ विणओणयसिररइअंजलिरिसिगणसंथु
अं थिमिअं ॥ विबुहाहिवधणवइनरवइथुयमहिअ
च्चिअं बहुसो ॥ अइरुग्गयसरयदिवायरसमहिअ
सप्पभं तवसा ॥ गयणंगणविहरणसमुइअचारणवं

दिअं शिरसा ॥ किसलयमाला ॥ १९ ॥ असुरग
रुलपरिवंदिअं किंनरोरगनमंसिअं ॥ देवकोडिस
यसंथुयं समणसंघपरिवंदिअं ॥ सुमुहं ॥ २० ॥
अजयं अणहं अरयं अरुअं अजिअं अजिअं
पयओ पणमे ॥ विज्जुविलसिअं ॥ २१ ॥
आगया वरविमाणदिव्वकणगरहतुरयपहकरसये
हिं हुलिअं ॥ ससंभमोअरणखुभिअलुलिअच
लकुंमलंगयतिरीडसोहंतमउलिमाला ॥ वेढ्ढउ ॥
॥ २२ ॥ जं सुरसंघा सासुरसंघा वेरविउत्ता भ
त्तिसुजुत्ता आयरभूसिअसंभमपिंडिअसुठुसुविम्हि
असव्वबलोघा ॥ उत्तमकंचणरयणपरूविअभासुर
भूसणभासुरिअंगा गायसमोणयभत्तिवसागयपंज
लिपेसिअसीसपणामा ॥ रयणमाला ॥ २३ ॥
वंदिऊण थोऊण तो जिणं तिगुणमेव य पुणो
पयाहिणं ॥ पणमिऊण य जिणं सुरासुरा पमुइ
आ सभवणाइं तो गया ॥ खित्तयं ॥ २४ ॥ तं
महामुणि महं पि पंजली रागदोसभयमोहवज्जि
अं ॥ देवदाणवनरिंदवंदिअं संति मुत्तम महात

वं नमे ॥ खित्तयं ॥ २५ ॥ चतुर्भिः कलापकं ॥
अंबरंतरविआरणिआहिं ललिअहंसवहुगामिणि
आहिं ॥ पीणसोणीथणसालिणिआहिं सकलकम
लदललोअणिआहिं ॥ दीवयं ॥ २६ ॥ पीणनि
रंतरथणभरविणमिअगायलयाहिं । मणिकंचण
पसिढिलमेहलसोहिअसोणितडाहिं ॥ वरखिंखि
णिनेउरसतिलयवलयविभूसणिआहिं । रइकरचउ
रमनोहरसुंदरदंसणिआहिं ॥ चित्तक्खरा ॥ २७ ॥
देवसुंदरीहि पायवंदिआहिं वंदिआ य जस्स ते
सुविक्कमा कमा अप्पणोनिडालएहिं मंडणोड्डण
पगारएहिं केहिं केहिं वि अवंगतिलयपत्तलेहना
मएहिं चिल्लएहिं संगयंगयाहिं भत्तिसंनिविट्ठवंद
णा गयाहिं हुंति ते वंदिआ पुणोपुणो ॥ नारा
यओ ॥ २८ ॥ तमहं जिणचंदं अजिअं जि
अमोहं धुयसव्वकिलेसं पयओ पणमामि ॥ नं
दिअयं ॥ २९ ॥ थुयवंदिअस्सा रिसिगणदेव
गणेहिं तो देववहूहिंपयओ पणमिअस्सा ॥ ज
स्सजगुत्तमसासणयस्सा भत्तिवसागयपिंडिअया

हिं देववरच्छरसाबहुआहिं सुरवररइगुणपंडिअआ हिं ॥ नासुरयं ॥३०॥ वंससद्दतंतितालमेलिए तिउ क्कराभिरामसद्दमीसए कए अ सुइसमाणणे अ सुद्धसज्जगीअपायजालघंटिआहिं ॥ वलयमेहला कलावनेउराभिरामसद्दमीसए कए अ ॥ देवनट्टि आहिं हावभावविब्भमपगारएहिं नच्चिऊण अंग हारएहिं वंदिआ य जस्स ते सुविक्कमा कमातयं तिलोयसव्वसत्तसंतिकारयं ॥ पसंतसव्वपावदोस मे सहं नमामि संति मुत्तमं जिणं नारायउ ॥ ॥ ३१ ॥ छत्तचामरपडागजूवजवमंडिआ झयव रमगरतुरयसिरिवच्छ सुलंछणा दीवसमुद्दमंदर दिसागयसोहिआ सत्थिअवसहसीहरहचक्कवरंकि आ ॥ ललिअयं ॥ ३२ ॥ सहावलठ्ठा समप्पइ ठ्ठा अदोसदुठ्ठा गुणेहिं जिठ्ठा ॥ पसायसिठ्ठा तवे ण पुठ्ठा सिरीहिं इठ्ठा रिसीहिं जुठ्ठा वाणवासिया ॥ ३३ ॥ ते तवेण धुयसव्वपावया सव्वलोअहि अमूलपावया ॥ संथुआ अजिअसंतिपायया हुं तु मे सिवसुहाणदायका अपरांतिका ॥ ३४ ॥

एवं तवबलविउलं ॥ थुअं मए अजिअसंतिजिण जुयलं ॥ ववगयकम्मरयमलं ॥ गयं गयं सासयं विउलं ॥ गाहा ॥ ३५ ॥ तं बहुगुणप्पसायं ॥ मुरकसुहेण परमेण अविसायं ॥ नासेउ मे विसायं ॥ कुणउ अ परिसा वि अ पसायं ॥ गाहा ॥ ३६॥ तंमोएउ अ नंदिं ॥ पावेउ अनंदिसेण मभिनंदिं॥ परिसा विअसुहनंदिं ॥ मम य दिसउ संजमे नंदिं॥गाहा ॥ ३७ ॥ परिकअचाउम्मासिअ ॥ संवछरिए अवस्सभणिअव्वो॥सोयव्वो सव्वेहिं॥ उवसग्गनिवारणो एसो ॥ गाहा ॥३८॥ जो पढइ जो अ निसुणइ ॥ उभउकालंपि अजिअसंतिथयं ॥ न हु हुंति तस्स रोगा॥ पुव्वुप्पन्ना विनासंति ॥गाहा ॥३९॥ जइ इछह परमपयं ॥ अहवा कित्तिं सुविछमं भुवणे ॥ ता तेलुक्कुध्दरणे ॥ जिणवयणेआयरं कुणह ॥४०॥

॥ इति अजित शांतिस्तोत्रं संपूर्ण ॥ ६० ॥

॥ अथ श्री कल्याणमंदीर स्तोत्र प्रारंभः ॥६१॥

ॐनमःसिध्दम् ॥ कल्याणमंदिरमुदारमवद्यभेदि

नीतान्नयप्रदमनिंदितमंघ्रिपद्मं ॥ संसारसाग
रनिमज्जदशेषजंतु पोतायमानमभिनम्यजिनेश्वर
स्य ॥ १ ॥ यस्य स्वयं सुरगुरुर्गरिमांबुराशेः स्तो
त्रं सुविस्तृतमतिर्नविभुर्विधातुं ॥ तीर्थेश्वरस्यकमठ
स्मयधूमकेतोस्तस्याहमेषकिलसंस्तवनंकरिष्ये॥२॥
सामान्यतोपि तववर्णयितुं स्वरूपमस्मादृशाः कथ
मधीश भवंत्यधीशाः ॥ धृष्टोपि कौशिकशिशुर्यदिवा
दिवांधो रूपं प्ररूपयति किं किलघर्मरश्मेः ॥३॥ मो
हक्षयादनुभवन्नपि नाथ मर्त्यो नूनं गुणान् गणयि
तुं न तव क्षमेत ॥ कल्पांतवांतपयसः प्रकटोपि य
स्मान्मीयेत केन जलधेर्ननु रत्नराशिः ॥४॥ अभ्यु
द्यतोस्मि तव नाथ जडाशयोपि कर्त्तुं स्तवं लसदसं
ख्यगुणाकरस्य ॥ बालोपि किं न निजबाहुयुगं वित
त्य विस्तीर्णतां कथयति स्वधियांबुराशेः ॥ ५ ॥ ये
योगिनामपि न यांति गुणास्तवेश वक्तुं कथं भवतु
तेषु ममावकाशः ॥ जाता तदेवमसमीक्षितकारिते
यं जल्पंति वा निजगिरा ननु पक्षिणोपि ॥ ६ ॥
आस्तामचिंत्यमहिमा जिनसंस्तवस्ते नामापिपाति

नवतो नवतोजगंति ॥ तीव्रातपोपहत पांथजना
न्निदाघे प्रीणातिपद्मसरसः सरसोनिलोपि ॥ ७ ॥
हृद्वर्तिनित्वयिविनोशिथिलिनवंति जंतोः क्षणेन
निबिडाअपि कर्मबंधाः ॥ सद्योनुजंगममयाइव
मध्यनाग मन्यागतेवनशिखंडिनिचंदनस्य ॥ ८ ॥
मुच्यंतएवमनुजाः सहसाजिनेंद्र रौद्रैरुपद्रवशतै
स्त्वयिवीक्षितेपि ॥ गोस्वामिनिस्फुरिततेजसि
दृष्टमात्रे चौरैरिवाशुपशवः प्रपलायमानैः॥ ए ॥
त्वंतारकोजिनकथं नविनांतएव त्वामुद्वहंतिहृ
दयेन यडुत्तरंतः ॥ यद्वादृतिस्तरतियज्जलमेषनू
नमंतर्गतस्यमरुतःसकिलानुनावः ॥ १० ॥
यस्मिन्हरप्रनृतयोपिहतप्रनावाः सोपित्वयार
तिपतिःक्षपितःक्षणेन ॥ विध्यापिताहुतनुजःप
यसाथयेन पीतंनकिंतदपिडुर्द्धरवाडवेन ॥ ११ ॥
स्वामिन्ननल्पगरिमाणमपिप्रपन्ना स्त्वांजंतवःक
थमहोहृदयेदधानाः॥ जन्मोदधिंलघु तरंत्यतिला
घवेन चिंत्योनहंतमहतांयदिवाप्रनावः ॥ १२ ॥
क्रोधस्त्वयायदिविनोप्रथमंनिरस्तो ध्वस्तास्तदा

वतकथंकिलकर्मचौराः प्लोषत्यमुत्रयदिवा शिशि
रापिलोके नीलद्रुमाणिविपिनानिनकिंहिमानि
॥ १३ ॥ त्वांयोगिनोजिन सदापरमात्मरूप म
न्वेषयंतिहृदयांबुजकोशदेशे ॥ पूतस्यनिर्मलरुचे
र्यदिवाकिमन्य दक्षस्यसंभवपदंननुकर्णिकायाः
॥ १४ ॥ ध्यानाज्जिनेशभवतोभविनःक्षणेन दे
हंविहायपरमात्मदशांव्रजंति ॥ तीव्रानलाडुपल
भावमपास्यलोके चामीकरत्वमचिरादिवधातुभे
दाः ॥१५॥ अंतःसदैवजिनयस्यविभाव्यसेत्वं । भ
व्यैःकथंतदपिनाशयसेशरीरं॥ एतत्स्वरूपमथमध्य
विवर्त्तिनोहियद्विग्रहंप्रशमयंतिमहानुभावाः॥१६॥
आत्मामनीषिभिरयंत्वद भेदबुध्याध्यातोजिनेंद्रभ
वतीहभवत्प्रभावः ॥ पानीयमप्यमृतमित्यनुचिंत्य
मानं किंनामनोविषविकारमपाकरोति ॥ १७ ॥
त्वामेववीततमसंपरवादिनोपि नूनंविभोहरिहरा
दिधियाप्रपन्नाः ॥ किंकाचकामलिभिरीशसितोपि
शंखो नोगृह्यतेविविधवर्णविपर्ययेण ॥ १८ ॥
धर्मोपदेशसमयेसविधानुभावा दास्तांजनोभवति

तेतरुरप्यशोकः ॥ अभ्युझतेदिनपतौसमहीरुहो
पि किंवाविबोधमुपयातिनजीवलोकः ॥ १९ ॥
चित्रंविलोकयमवाङ्मुखवृंतमेव विष्वक्पतत्य
विरलासुरपुष्पवृष्टिः ॥ त्वगोचरेसुमनसांयदिवामु
नीश गह्वंतिनूनमधएवहिबंधनानि ॥ २० ॥
स्थानेगभीर हृदयोदधिसंभवायाः पीयूषतांतव
गिरःसमुदीरयंति ॥ पीत्वायतःपरमसंमदसंगभा
जो भव्याव्रजंतितरसाप्यजरामरत्वं ॥ २१ ॥
स्वामिनसुदूरमवनम्यसमुत्पतंतो मन्येवदंतिशुच
यःसुरचामरौघाः ॥ येऽस्मैनतिंविदधतेमुनिपुंगवा
य तेनूनमूर्ध्वगतयःखलुशुद्धभावाः ॥ २२ ॥
श्यामंगभीरगिरमुज्वलहेमरत्न सिंहासनस्थमिहभ
व्यशिखंडिनस्त्वां ॥ आलोकयंतिरभसेननदंतमु
च्चैः श्चामीकराद्रिशिरसीवनवांबुवाहं ॥ २३ ॥
उद्गह्वतातवसितिद्युतिमंडलेन लुप्तह्वदह्वविरशो
कतरुर्बभूव ॥ सांनिध्यतोपियदिवातववीतराग
नीरागतांव्रजतिकोनसचेतनोपि ॥ २४ ॥ भोभोः
प्रमादमवधूयभजध्वमेन मागत्यनिर्वृतिपुरींप्रति

सार्थवाहं ॥ एतन्निवेदयतिदेवजगत्त्रयाय मन्ये
नदन्नभिनभःसुरदुंदुभिस्ते ॥ २५ ॥ उद्योतितेषुभ
वताभुवनेषुनाथ तारान्वितोविधुरयंविहताधिका
रः॥ मुक्ताकलापकलितोच्छ्वसितातपत्र व्याजात्त्रि
धाधृततनुर्ध्रुवमभ्युपेतः ॥२६॥ स्वेनप्रपूरितजगत्त्र
यपिंडितेन कांतिप्रतापयशसामिवसंचयेन ॥मा
णिक्यहेमरजतप्रविनिर्मितेन शालत्रयेणभगवन्न
भितोविभासि ॥ २७ ॥ दिव्यस्रजोजिननमत्त्रि
दशाधिपाना मुत्सृज्यरत्नरचितानपिमौलिबंधान् ॥
पादौश्रयंतिभवतोयदिवापरत्र त्वत्संगमेसुमन
सोनरमंतएव ॥ २८ ॥ त्वंनाथजन्मजलधेर्विपरा
ङ्मुखोपि यत्तारयस्यसुमतोनिजपृष्ठलग्नान् ॥
युक्तंहिपार्थिवनिभस्यसतस्तवैव चित्रंविभोयदसि
कर्मविपाकशून्यः ॥ २९ ॥ विश्वेश्वरोपिजनपा
लकदुर्गतस्त्वं किंवाक्षरप्रकृतिरप्यलिपिस्त्वमी
श ॥ अज्ञानवत्यपिसदैवकथंचिदेव ज्ञानंत्वयि
स्फुरतिविश्वविकाशहेतुः ॥ ३० ॥ प्राग्भारसंभृत
नभांसिरजांसिरोषा दुत्थापितानिकमठेनशठेनया

नि ॥ ृयापितैस्तवननाथहृताहृताशो ग्रस्तस्त्व
मीनिरयमेवपरंदुरात्मा ॥ ३१ ॥ यर्ज्जदुर्ज्जितघ
नौघमदभ्रभीमं भ्रश्यत्तडिन्मुसलमांसलघोरधारं ॥
दैत्येनमुक्तमथदुस्तरवारिदध्रे तेनैवतस्यजिनदुस्त
रवारिकृत्यं ॥ ३२ ॥ ध्वस्तोर्ध्वकेशविकृताकृतिम
र्त्यमुंड प्रालंबभृद्भयदवक्त्रविनिर्यदग्निः ॥ प्रेत
व्रजःप्रतिभवंतमपीरितोयः सोस्याभवत्प्रतिभवंभ
वदुःखहेतुः ॥ ३३ ॥ धन्यास्तएवभुवनाधिपयेत्रि
संध्य माराधयंतिविधिवद्विधुतान्यकृत्याः ॥ भ
क्त्योल्लसत्पुलकपक्ष्मलदेहदेशाः पादद्वयंतवविभो
भुविजन्मभाजः ॥ ३४ ॥ अस्मिन्नपारभववारिनि
धौमुनीश मन्येनमेश्रवणगोचरतांगतोसि ॥ आ
कर्णितेपितवगोत्रपवित्रमंत्रे किंवाविपद्विषधरीस
विधंसमेति ॥ ३५ ॥ जन्मांतरेपितवपादयुगंनदे
व मन्येमयामहितमीहितदानदक्षं ॥ तेनेहज
न्मनिमुनीशपराभवानां जातोनिकेतनमहंमथि
ताशयानां ॥३६॥ नूनंतमोहतिमिरावृतलोचनेन
पूर्वविभोसकृदपिप्रविलोकितोसि ॥ मर्माविधोवि

धुरयंतिहिमामनर्घाः प्रोद्यत्प्रबंधगतयःकथमन्यथैते ॥ ३७ ॥ आकर्णितोपिमहितोपिनिरीक्षितोपिनूनंनचेतसिमयाविधृतोसिजक्त्या ॥ जातोस्मितेनजनबांधवडुःखपात्रं यस्मात्क्रियाः प्रतिफलंतिनजावशून्याः ॥ ३८॥ त्वंनाथडुःखिजनवत्सलहेशरण्यकारुण्यपुण्यवसतेवशिनांवरेण्य ॥ जक्त्यानतेमयिमहेशदयांविधाय डुःखांकुरोद्दलनतत्परतांविधेहि ॥ ३९ ॥ निःसंख्यसारशरणंशरणंशरण्य मासाद्यसादितरिपुप्रथितावदातं ॥ त्वत्पादपंकजमपि प्रणिधानवंध्यो वध्योस्मिचेद्भुवनपावनहाहतोस्मि ॥ ४० ॥ देवेंद्रवंद्यविदिताखिलवस्तुसारसंसारतारकविनोजुवनाधिनाथ ॥ त्रायस्वदेवकरुणाह्रदमांपुनीहि सीदंतमद्यजयदव्यसनांबुराशेः ॥ ४१ ॥ यद्यस्तिनाथजवदंघ्रिसरोरुहाणां जक्तेः फलंकिमपिसंततिसंचितायाः ॥ तन्मेत्वदेकशरणस्यशरण्यजूयाः स्वामीत्वमेवजुवनेऽत्रजुवांतरेपि ॥ ४२ ॥ इछंसमाहितधियोविधिवज्जिनेंद्र सांद्रोल्लसत्पुलककंचुकितांगजागाः ॥ त्वद्बिंबनिर्मल

मुखांबुजबद्धलक्षाः येसंस्तवंतवविबोरचयंतिन
व्याः ॥ ४३ ॥ जननयनकुमुदचंद्र प्रभास्वराः
स्ववर्गसंपदोभुक्त्वा ॥ तेविगलितमलनिचयाअचि
रान्मोक्षंप्रपद्यंते ॥ ४४ ॥ इतिकुमुदचंद्राचार्यवि
रचितंकल्याणमंदिरस्तवनंसंपूर्ण ॥ ६१ ॥ ॥

॥ अथ शांतिकरस्तवनं लिख्यते ॥६२॥

॥ संतिकरंसंतिजिणं ॥ जगसरणंजयसिरी
इदायारं ॥ समरामिभत्तपालग निव्वाणीगरुडक
यसेवं ॥१ ॥ ॐसणमोविप्पोसहि,पत्ताणं संतिसा
मिपायाणं ॥ क्रौंस्वाहामंतेणं सव्वासिवदुरिअ हर
णाणं ॥ २ ॥ ॐसंतिनमुक्कारो खेलोसहि माइल
द्धिपत्ताणं ॥ सौंह्रींसनमोसव्वो सहिपत्ताणंचदेइ
सिरिं ॥ ३ ॥ वाणीतिहुअणसामिणि सिरिदेवी
जरकरायगणिपिडगा ॥ गहदिसिपालसुरिंदा सया
विरकंतुजिणभत्ते ॥ ४ ॥ रकंतुममंरोहिणि प
न्नत्ती वज्जसिंखलायसया ॥ वज्जंकुसि चक्केसरि,न
रदत्ता कालि महाकाली ॥ ५ ॥ गोरीतह गंधारी

महाकालामाणवी य वइरुट्टा ॥ अबुत्ता माणसि
या मह माणसियाउदेवीउ ॥ ६ ॥ जरकागोमु
हमहज, रकतिमुहजरकसुतुंबुरूकुसुमो ।मायंगवि
जय अजिया बंभो मणुएसरकुमारो॥७॥ छम्मुह
पयाल किन्नर गरुडोगंधव्व तहय जरिकंदो॥ कूबर
वरुणोनिउडी । गोमेहो पास मायंगा ॥ ८ ॥ दे
वीउ चक्केसरि अजिया डुरिआरि कालि महाका
ली ॥ अच्चुअसंता जाला सुतार यासोयसिरिव
च्छा ॥ ए ॥ चंभा विजयं कुसि पन्नइ तीनिव्वाणि
अच्चुआ धरणी ॥ वइरुट्टदत्तगंधारी अंबपउमाव
ईसिद्धा ॥ १० ॥ इयतिछरकणरया अन्नेविसुरा
सुरीइचउहावि ॥ वंतर जोयणि पमुहा कुणंतु र
रकंसयाअम्हं ॥ ११ ॥ एवंसुदिठिसुरगण सहिउ
संघस्ससंतिजिणचंदो ॥ मज्झविकरेउरकं मुणि
सुंदरसूरिथुअमहिमा ॥ १२ ॥ इयसंतिनाहसम्म
दिठीरकं सरइतिकालंजो ॥ सव्वोवद्दवरहिउ सल
हइसुहसंपयंपरमं ॥ १३ ॥ तवगछगयणदिणयर
जुगवर सिरिसोमसुंदरगुरूणं ॥ सुपसायलद्धगण

हर विज्जासिद्धिंनणइसीसो ॥ १४ ॥ इतिशां
तिकरस्तोत्रं संपूर्णं ॥ ६२ ॥

॥ अथ तिजयपहुत्तस्तवो लिख्यते ॥ ६३॥

तिजयपहुत्तपयासय । अठमहापाडिहेरजुत्ताणं ॥
समयखित्तठिआणं । सरेमिचक्कंजिणंदाणं ॥ १ ॥
पणवीसायअसीया ॥ पनरसपन्नासजिणवरसमू
हो ॥ नासेउसयलदुरिअं । नवियाणंनत्तिजूत्ताणं
॥ २ ॥ वीसापणयालाविअ । तीसापन्नत्तरीजि
णवरिंदा ॥ गहनूअरस्कसाइणि । घोरुवसग्गंप
णासंतु ॥ ३ ॥ सित्तरिपणतीसाविय । सठीपंचे
वजिणगणोएसो ॥ वाहिजलजलणहरिकरि । चो
रारिमहानयंहरउ ॥ ४ ॥ पणपन्नायदसेवय ।
पन्नठीतहयचेवचालीसा ॥ रस्कंतुमेसरीरं । देवासु
रपणमिआसिद्धा ॥ ५ ॥ ॐहरहुंहःसरसुंस.हरहुं
हःतहचेवसरसुंसः ॥ आलिहियनामगप्नं । चक्कं
किरसव्वउनदं ॥ ६ ॥ ॐ रोहिणिपन्नत्तीवज्जासिंख
लातहयवज्जअंकुसिआ ॥ चक्केसरीनरदत्ता । का

ल्लिमहाकाल्लितहागोरी ॥ ७ ॥ गंधारिमहाजाला । माणविवइरुट्टतहयअछुत्ता ॥ मानसिमहमाणसिया । विज्ञादेवीउरख्खंतु ॥ ७ ॥ पंचदसकम्मभूमिसु । उप्पन्नंसत्तरिंजिणाणसयं ॥ विविहरयणाइवन्नो । वसोहियंहरउडुरियाइं ॥ ए ॥ चउतीसअतिसअजुआ । अठमहापाडिहेरकयसोहा ॥ तिछयरागयमोहा । जाएअव्वापयत्तेणं ॥ १० ॥ ॐ वरकणयसंखविद्दुम ॥ मरगयघणसंन्निहंविगयमोहं ॥ सत्तरिसयंजिणाणं ॥ सव्वामरपूइयंवंदे ॥ स्वहा ॥ ११ ॥ ॐ चुवणवइवाणमंतर ॥ जोइसवासीविमाणवासीय ॥ जेकेइडुठदेवा । तेसव्वेउवसमंतुममस्वाहा ॥ १२ ॥ चंदणकप्पूरेणं । फल्लिहेल्लिहिऊणखाल्लिअंपीअं ॥ एगंतराइगहचुअ । साइणिमग्गंपणासेइ ॥१३॥ इयसत्तरिसयजंतं ॥सम्मं मंतं डुवारिपडिल्लिहिअं॥डुरिआरिविजयजंतंनिप्भंतं निच्चमच्चेव ॥ १४ ॥ इति तिजयपहुत्तस्तवःसमाप्तः

॥ अथ नमिउण स्तवो ल्लिख्यते ॥ ६४ ॥

नमिउणपणयसुरगण । चूडामणिकिरणरंजिअंमु

णिणो ॥ चलणजुअलंमहाजय । पणासणंसं
थवंवुछं ॥ १ ॥ सडिअकरचरणनहमुह । निवू.म
नासाविवन्नलायन्ना ॥ कुठमहारोगानलफुलिंग
निद्दढ्ढसव्वंगा ॥ २ ॥ जेतुहचलणाराहणसलिलं
जलिसेअवुढ्ढिउछाहा ॥ वणदवदढ्ढगिरिप्पा, यव
व्वपत्तापुणोलछिं ॥ ३ ॥ डुव्वायखुभिअजलनिहि ।
उप्भडकल्लोलभीसणारावे ॥ संभंतभयविसंठुल,
निज्झामयमुक्कवावारे ॥ ४ ॥ अविदलिअजाण
वत्ता खणेणपावंतिइछिअंकूलं ॥ पासजिणचल
णजुअलं । निच्चंचिअजेनमंतिनरा ॥ ५ ॥ खरप
वणुधूअवणदव, जालावलिमिलिअसयलडुमगह
णे ॥ मझंतमुद्धमयवद्धु, भीसणरवभीसणंमिव
णे ॥ ६ ॥ जगगुरुणोकम्मजुअलंनिव्वाविअसय
लतिहुअणाभोअं॥जेसंभरंतिमणुआ नकुणइजल
णोभयंतेसिं ॥ ७ ॥ विलसंतभोगभीसण, फुरि
आरुणनयणतरलजीहालं ॥ उग्गभुअंगंनवजल,
यसच्छहंभीसणाआरं ॥ ८ ॥ मन्नंतिकीडसरिसं ।
दूरपरिछूढविसमविसवेगा ॥ तुहनामक्खरफुडसि,

ह्मंतगुरुआनराज्जोए ॥ ए ॥ अडवीसुनिब्नत
क्करपुलिंदसद्दूलसद्दनीमासु ॥ नयविहुरबुन्द्धका
यरउच्चूरिअपहिअसब्बासु ॥ १० ॥ अविलुत्तवि
ह्वसारातुह्नाहपणामभित्तवावारा ॥ ववगयवि
ग्घासिग्घं, पत्ताहियइच्छियंह्वाणं ॥ ११ ॥ पज्ज
लिआनलनयणंदूरवियारियमुहंमहाकायं ॥ नह
कुलिसघायविअलिअ गइंदकुंनब्बलानोयं ॥१२॥
पणयससंनमपत्थिव नहमणिमाणिक्कपडियपडिम
स्स ॥ तुहवयणपहरणधरासीहंकुद्धंपिनगणंति
॥ १३ ॥ ससिधवलदंतमुसलंदीहकरुह्वालवुड्ढि
उच्छाहं ॥ महुपिंगनयणजुअलंससलिलनवजलह
रारावं ॥ १४ ॥ जीमंमहागइंदं अच्चासन्नंपितेन
विगणंति ॥ जेतुम्हचलणजुअलं मुणिवइतुंगंसम
ह्नीणा ॥ १५ ॥ समरंमितिरकखग्गा । जिग्गायप
विद्धउद्धुअकबंधे ॥ कुंतविणिन्निन्नकरिकल,हमुक्क
सिक्कारपउरंमि ॥ १६ ॥ निज्जियदप्पुद्धररिउ ।
नरिंदनिवहानडाजसंधवलं ॥ पावंतिपावपसमि
ण । पासजिणतुहप्पनावेण ॥ १७ ॥ रोगजल

जलणविसहर । चोरारिमयंदगयरणनयाइं ॥
पासजिणनामसंकि,त्तणेण पसमंतिसवाइं ॥१८॥
एवंमहानयहरं । पासजिणंदस्ससंथवमुआरं ॥
नवियजणाणंदयरं । कल्लाणपरंपरनिहाणं ॥१९॥
रायनयजरकररकस । कुसुमिणडुःस्समिणरिरकपी
डासु ॥ सञ्झासुदोसुपंथे । उवसग्गेतहयरयणी
सु ॥ २० ॥ जोपढइजोअनिसुणइ । ताणंकइणो
यमाणतुंगस्स ॥ पासोपावंपसमे,उ सयलनुव
णच्चिअच्चलणो ॥ २१ ॥ उवसग्गंतेकमठा । सुरं
मिझाणाउ जोनसंचलिउ ॥ सुरनरकिन्नरजुवई,
हिंसंथुउजयउपासजिणो ॥ २२ ॥ एअस्सम
ज्झयारे । अठारसअरकरेहिंजोमंतो ॥ जोजाणइ
सोजायइ,परमपयडंफुडंपासं ॥ २३॥ पासहसम
रणजोकरइसंतुठियहियएण अठुत्तरसयवाहि
नयनासइतस्सदूरेण ॥ २४ ॥ इतिश्रीनमिउण
वानयहरस्तवःसंपूर्णः ॥ ६४ ॥ ॥ ॥

॥ अथ वृद्धशांतिस्मरणंलिख्यते ॥६५॥

नोनोनव्याःश्रृणुतवचनं प्रस्तुतंसर्वमेतत्येयात्रा

यां त्रिजुवनगुरोरार्हतांनक्तिनाजः ॥ तेषांशांतिर्न
वतुनवतामर्हदादिप्रनावादारोग्य श्रीधृतिमतिक
रीक्लेशविध्वंसहेतुः ॥ १ ॥ नोनोनव्यलोका इह
हिनरतैरावतविदेहसंनवानां समस्ततीर्थकृतां ज
न्मन्यासनप्रकंपानंतरमवधिनाविज्ञाय सौधर्माधि
पतिः सुघोषाघंटाचालननानंतरं सकलसुरासुरेंद्रैः
सह समागत्यसविनयमर्हन्नट्टारकंगृहीत्वाच गत्वा
कनकाद्रिश्रृंगे विहितजन्मानिषेकःशांतिमुद्घोषय
ति ॥ यथाततोहंकृतानुकार मितिकृत्वा महाज
नोयेनगतःसंपथाः इतिनव्यजनैःसहसमेत्य स्नात्र
पीठेस्नात्रंविधाय शांतिमुद्घोषयामि ॥ तत्पूजाया
त्रास्नात्रादिमहोत्सवानंतरमितिकृत्वाकर्णंदत्वानि
शम्यतां निशम्यतांस्वाहा ॐपुण्याहंपुण्याहं प्रीयंतां
प्रीयंतां नगवंतोर्हंतःसर्वज्ञाःसर्वदर्शिनःस्त्रिलोकना
थास्त्रिलोकमहिता स्त्रिलोकपूज्यास्त्रिलोकवंद्यास्त्रि
लोकेश्वरा स्त्रिलोकोद्योतकराः ॥ ॐऋषन १ अजित
२ संनव ३ अनिनंदन ४ सुमति ५ पद्मप्रन ६ सुपा
र्श्व ७ चंद्रप्रन ८ सुविधि ९ शीतल १० श्रेयांस

११ वासुपूज्य १२ विमल १३ अनंत १४ धर्म
१५ शांति १६ कुंथु १७ अर १८ मल्लि १९ मु
निसुव्रत २० नमि २१ नेमि २२ पार्श्व २३ वर्द्ध
मानांता २४ जिनाः शांताः शांतिकरा नवंतुस्वा
हा ॥ ॐमुनयोमुनिप्रवरा रिपुविजयदुर्भिक्षकांता
रेषु दुर्गमार्गेषुरक्षंतुवो नित्यंस्वाहा ॥ ॐह्रीं श्री धृ
ति मति कीर्त्ति कांति बुद्धि लक्ष्मी मेधा विद्या सा
धनप्रवेशनिवेशनेषुसुगृहीत नामानो जयंतुतेजिनें
द्राः ॥ ॐरोहिणी १ प्रज्ञप्ती २ वज्रश्रृंखला ३
वज्रांकुशी ४ अप्रतिचक्रा ५ पुरुषदत्ता ६ काली
७ महाकाली ८ गौरी ९ गांधारी १० सर्वास्त्रा
महाज्वाला ११ मानवी १२ वैरोट्या १३ अछु
प्ता १४ मानसी १५ महामानसी १६ षोडशवि
द्यादेव्यो रक्षंतुवो नित्यंस्वाहा॥ ॐ आचार्योपाध्या
यसाधुप्रभृतिचातुर्वर्ण्यस्यश्रीश्रमणसंघस्य शांतिर्भ
वतुतुष्टिर्भवतुपुष्टिर्भवतु ॥ ॐग्रहाश्चंद्र १ सूर्यां२गा
रक ३ बुध ४ बृहस्पति ५ शुक्र ६ शनैश्चर७ रा
हु ८ केतुसहिताःसलोकपालाःसोम १ यम २ व

रुण ३ कुबेर ४ वासवाऽदित्यस्कंदविनायकोपेता येचान्येऽपिग्रामनगरक्षेत्रदेवतादयःस्तेसर्वे प्रीयंतां प्रीयंतां ॥ अक्षीणकोष्ठागारानरपतयश्चभवंतुस्वाहा ॥ ॐपुत्रभ्रातृमित्रकलत्रसुहृत्स्वजनसंबंधिबंधुवर्गसहिताः नित्यंचामोदप्रमोदकारिणः अस्मिंश्चभूमंमलायतननिवासि साधु साध्वी श्रावक श्राविकाणां रोगोपसर्गव्याधिदुःख दुर्भिक्षदौर्मनस्योपशमनायशांतिर्भवतुस्वाहा॥ ॐतुष्टिपुष्टिऋद्धिवृद्धिमांगल्योत्सवाः सदाप्रादुर्भूतानिपापानि शाम्यंतुदुरितानिशत्रवः पराङ्मुखाभवंतुस्वाहा ॥श्रीमतेशांतिनाथायनमः शांतिविधायिने ॥ त्रैलोक्यस्यामराधीशमुकुटाभ्यर्चितांघ्रये ॥ १ ॥ शांतिःशांतिकरःश्रीमान्शांतिंदिशतुमेगुरुः ॥ शांतिरेवसदातेषांयेषांशांतिर्गृहेगृहे ॥३॥ उन्मृष्टरिष्टदुष्टग्रहगतिदुःस्वप्नदुर्निमित्तादि ॥ संपादितहितसंपन्नामग्रहणंजयतिशांतेः ॥४॥श्रीसंघजगज्जनपदराजाधिपराजसन्निवेशानां॥ गोष्ठिकपुरमुख्यानांव्याहरणैर्व्याहरेच्छांतिः ॥ ५ ॥ श्रीश्रमणसंघस्यशांतिर्भवतु ॥ श्रीपौरजनस्यशांति

र्नवतु ॥ श्रीजनपदानांशांतिर्नवतु ॥ श्रीराजाधि
पानांशांतिर्नवतु ॥ श्रीराजसन्निवेशानांशांतिर्नवतु
श्रीगोष्ठिकानांशांतिर्नवतु॥श्रीपुरमुख्याणांशांतिर्नव
तु ॥ श्रीब्रह्मलोकस्यशांतिर्नवतु ॥ ॐस्वाहा ॥ ॐ
स्वहा ॥ ॐश्रीपार्श्वनाथायस्वाहा एषांशांतिप्रतिष्ठा
यात्रास्नात्रावसानेषुशांतिकलशंगृहीत्वा कुंकुम चं
दन कर्पूरागरुधूपवासकुसुमांजलिसमेतः स्नात्रच
तुष्किकायांश्रीसंघसमेतः शुचिः शुचिवपुःपुष्पवस्त्र
चंदनाभरणालंकृतः पुष्पमालांकंठेकृत्वा शांतिमु
द्घोषयित्वाशांतिपानीयंमस्तकेदातव्यमिति॥नित्यं
चनित्यंमणिपुष्पवर्षंसृजंति गायंतिचमंगलानि ॥
स्तोत्राणिगोत्राणिपठंतिमंत्रान् कल्याणभाजोहि
जिनाभिषेके ॥१॥ शिवमस्तुसर्वजगतः परहितनि
रताभवंतुभूतगणाः ॥ दोषाः प्रयांतुनाशंसर्वत्र सु
खीभवंतुलोकाः॥२॥ अहंतित्थयरमायासिवादेवीतु
म्हनयरनिवासिनी ॥ अम्हसिवंतुम्हसिवंअसिवोप
समंसिवंभवतुस्वाहा ॥ ३ ॥ उपसर्गाःक्षयंयांति
छिद्यंतेविघ्नवल्लयः ॥ मनःप्रसन्नतामेतिपूज्यमानेजि

श्वरे ॥ ४ ॥ सर्वमंगलमांगल्यंसर्वकल्याणकारणं ॥ प्रधानंसर्वधर्माणांजैनंजयतिशासनं ॥ ५ ॥ इति श्रीवृद्धशांतिस्तवस्मरणं संपूर्ण ॥ ६५ ॥

॥ अथ श्रावकना पक्खिक अतिचार. ॥६६॥

नाणंमि दंसणंमिअ चरणंमि ॥ तवंमि तह यविरयंमि ॥ आयरणं आयारो ॥ इयएसोपंचहा नणिउ ॥ १ ॥ज्ञानाचार दर्शनाचार चारित्राचार तपाचार विर्याचार ॥ एपंचविध आचारमांहे ॥ अनेरो जे कोइ अतिचार ॥ पक्खदिवसमांहें ॥ सुक्ष्मबादर जाणतां अजाणतां॥हुउहोय ते सविहुं मने वचने कायाएकरी ॥ तस्समिच्छामिदुक्कडं ॥१॥ तत्रज्ञानाचारना आठअतिचार ॥ कालेविणए बहुमाणे ॥ उवहाणेतहय निन्हवणे ॥ वंजणअत्थतदुनए ॥ अठविहोनाणमायारो ॥ १ ॥ ज्ञान कालवेलामांहे पढिउ गुणीउनहीं ॥ अकालेनण्यो ॥ विनयहिन बहुमानहिन योगउपधानहिन ॥ अनेराकने नणी अनेरो गुरुकह्यो ॥ देवगुरूवंद

णे पडिकमणे ॥ सिज्झायकरतां जणतां गणतां ॥ कुडोअक्षर कानें मात्रे अधिकोउंगो जण्यो ॥ सूत्रकुडुंकह्युं, अर्थकुडोकह्यो ॥ तदुनयकुडांकह्यां, जणीनेंविसाख्यां ॥ साधुतणे धर्मकाजे काजोअणउधख्यो मांमोअणपडिलेह्यो ॥ वसतिअणसोधि ॥ असझाय अणोझामांहे ॥ श्रीदशवैकालिकथिविरावलि उपदेशमाला प्रमुख ॥ सिद्धांतजण्यो गुण्यो ॥ ज्ञानोपगरण पाटी, पोथी, ठवणी, कवली नोकरवाली सांपडा सांपडी दस्तरी वहि उलिया प्रमुख प्रते पग लाग्यो, थुंकेकरी अक्षर मांज्यो, उसीसेंधख्यो ॥ कन्हेंछतां अहार निहारकीधो ज्ञान द्रव्यजक्षता उपेक्षाकिधी ॥ प्रज्ञापराधे विणसतो विनाश्यो विणस्तोउवेख्यो ॥ छती शक्तिए सारसंभालनकिधी, ज्ञानवंतप्रते द्वेष मत्सरचिंतव्यो ॥ अवज्ञा आसातनाकिधी. कोईप्रते जणतां गणतां अंतरायकिधो ॥ आपणा जाण पणा तणो गर्वे चिंतव्यो ॥ मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनपर्यवज्ञानने केवलज्ञान ए पंचविध ज्ञानतणी

असदेहणाकिधी ॥ कोइ तोतडो बोबडोहस्यो, वितर्क्यो, अन्यथा परूपणाकीधी ॥ ज्ञानाचार विषइउ अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवस० ॥

२ दर्शनाचारनाअतिचार॥ निस्संकिय निक्कंखिय निवितिगिच्छा अमूढदिठीअ ॥ उववूहथिरीकरणे वछलपभावणेअठ ॥३॥ देव गुरु धर्मतणेविषे निःसंकपणुं न कीधुं॥तथा एकांत निश्चय न कीधो. धर्म संबंधिया फल तणेविषे निःसंदेह बुद्धी धरीनहीं॥ साधु साध्वीनां मलमलिन गात्रदेखी दुगछानीपजावी॥ कुचारित्रियादेखी चारित्रियाउपर अभावहुउ. मिथ्यात्वितणी पूजा प्रभावनादेखी मूढदृष्टिपणुंकीधुं॥ संघमांहेगुणवंततणी अनुपबृहणाकिधी ॥ अस्थिरीकरण,अवात्सल्य,अप्रीतीअभक्तिनिपजावी॥ अबहु मान कीधुं॥तथा देवद्रव्य,गुरुद्रव्य साधारणद्रव्य भक्षित उपेक्षित् प्रज्ञापराधे विणास्युं विणसतांउवेख्युं॥छती शक्तीए सार संभाल नकीधी ॥ तथा साधर्मिकसाथे कलह कर्मबंध कीधो,अधोति अष्टपड मुख कोश पखें देवपूजाकीधी, बिंबप्रते वासकुंपी

धुपधाणुंकलश तणोठबको लाग्यो॥बिंब हाथथकी पड्यो,उसास निसास लाग्यो॥देहरे अपासरे मल श्लेष्मलोह्यो॥ देहरां मांहे हाश्य खेल केलि कुतुहल आहार निहार कीधो; पान सोपारी निवेदीआं खाधां ठवणहारिहाथथकीपाड्यो,पडिलेहवोविसार्यो ॥ जिनभुवनेचोरासी आसातना, गुरू गुरूणी प्रते तेत्रीश आसातना किधीहोय ॥ गुरुवचन तहत करीपडिवज्युंनहिं ॥ दर्शनाचार विषइउ अनेरो जेकोऽअतिचार पक्ष दिवस० ॥

३ चारित्राचारनाआठअतिचार॥पणिहाणजोगजुत्तोपंचहिं समिइहिं तिहिं गुत्तिहिं ॥एसचरित्तायारो अठविहोहोऽनायव्वो ॥ इर्यासमितितेअणजोए हिंड्या,जाषासमितिते सावद्य वचन बोल्या,एसणासमिति तृण डगल अन्नपाणी असुझतुंलीधुं॥आदानभंडमत्तनिखेवणासमिति असन, शयन, उपगरण मातरुं प्रमुख अणपुंजी भूमीकाएमुक्युं लीधुं ॥परिष्टापनिका समिति मल मूत्र श्लेषमादिक अणपुंजी जीवाकुलभूमीकाए परठव्युं ॥ मनो गुप्ति मन

मा आर्त्त रोद्रध्यान ध्याया ॥ वचनगुप्ति सावद्यव
चन बोल्या ॥ कायगुप्ति शरीरअणपडिलेह्युं हला
व्युं, अणपुंजेबेग ॥ एअष्टप्रवचन माता सामाय
क पोसह लीधे रूडीपेरे पाल्यांनही ॥ खंमणा वि
राधनाहुइ ॥ चारित्राचार विषइउ अनेरोजेकोइ
अतिचार पक्खदिवसमांहिं० ॥ ३ ॥ ॥ ॥

विशेषतःश्रावकतणेंधर्मे श्रीसम्यक्त मूलबारव्रत॥
सम्यक्ततणा पांचअतिचार॥संका कंख विगिच्छा॥
शंका श्रीअरिहंततणा ॥ बल अतिशय ज्ञानल
क्ष्मी गांभिर्यादिकगुण शास्वतिप्रतिमा चारित्रया
नाचारित्र श्रीजिनवचनतणो संदेहकीधो ॥ आ
कंक्षा ब्रह्मा विष्णु महेश्वर क्षेत्रपाल गोगो आस
पाल पादरदेवता गोत्रदेवता ग्रहपूजा विनायक
हनुमंत सुग्रीव वाली नाह इत्येवमादिक देश,नगर,
गाम गोत्र जूजूआ देवदेहेरानाप्रभावदेखी रोगी अ
त्यंतकष्टआवे इहलोकपरलोकार्थे पूज्या मान्या ॥
सिद्धविनायक जीराउलाने मान्युं, इछ्युं, बोध सां
ख्यादिक सन्यासी, भरडा, भगत, लिंगीया जोगी

दरवेश अनेरा दर्शनियातणो कष्ट मंत्र चमत्का
र देखी परमार्थ जाण्याविना नूलाव्या, मोह्या.
कुशास्त्रशिख्यां सांनल्यां ॥ श्राद्धसंवछरी, होलि,ब
लेव, माहिपुनिम, अजापडवो,प्रेतबीज,गौरत्रीज,
विनायकचोथ,नागपांचम,जिलणाछठ,शीलसातम
डोआठम,नोलिनोम,अहवादशम,व्रतझ्यारस, व
छबारस,धनतेरस,अनंतचउदशनेअमावास्या॥आ
दित्यवार उतरायण नैवेद्यकीधां,नवोदक याग नोग
उतारणाकीधां, कराव्यां अनुमोद्यां पिपलेपाणीघा
ल्यां, घलाव्यां. घरबाहिर क्षेत्र, खले, कुवे, तलावे,
नदी समुद्र कुंम पुन्यहेतु स्नानकीधां,कराव्यां.अनु
मोद्यां दानदीधां ॥ ग्रहण शनैश्चर माहामासे नव
रात्री नाहायां अजाणनाथाप्या,अनेरांही व्रतव्रतो
लां कीधां कराव्यां वितिगिछा धर्मसंबंधीआफलत
णेविषे संदेहकीधो. जिनअरिहंत धर्मना आगर,
विश्वोपकारसागर, मोक्षमार्गनादातार इस्यागुणन
णी नमान्या,नपूज्या.महासतिमाहात्मानी इहलो
क परलोकार्थे नोगवांछितपूजाकीधी.रोगअंतकक

ष्ट आवे, खीन्नवचन जोग मान्यां माहात्मानाजात पाणी मल शोना तणी निंद्याकीधी, कुचारित्रिया देखी चारित्रियाउपर कुनाव हुउ. मिथ्यात्वितणी पूजा प्रनावनादेखी प्रसंसाकिधी प्रीतमांमी दाक्षि णलगेतेहनोधर्ममान्यो ॥ श्रीसम्यक्तविषइउ अने रोजे कोइ अतिचार पक्षदिवसमांहि० ॥

१ पेहेले स्थुलप्राणातिपात विरमण व्रते पांच अतिचार ॥ वहवंधछविछे ॥ द्वीपद चतुष्पद प्रते रीसवसे, गाढोघाव घाल्यो, गाढेबंधनेबांध्यो, अधि क नार घाल्यो. निर्लांछनकर्मकीधां, चारा पाणी त णीवेलाये सारसंनालनकीधी, लेहणे देणे कि णहीप्रते लंघाव्यो, तेनीनूखे आपणजम्या. कन्हे रहीमराव्यो, बंधीखाने घलाव्यो, सल्यांधानताव डे नाख्यां, दलाव्यां, नरडाव्यां. सोधी नवावर्यां; इंधण छाणांअणसोध्यां बाल्यां तेमांहे, साप, विंछि खजूरा, सरवला, माकड, जुआ साहतां मुआ, डुहव्या, रुडेस्थानके नमुक्या. किडीमकोडिना इमांविछोह्यां, लीखफोडि, उदेहीकीडी, मकोडी, घी

मेल,कातरा,चुडेल,पतंगिया,देडकां,अलसीयां,इअ
ल,कुंता,मांस,मसा,बगतरा,माखी अने तीड प्रमुख
जीवविणाग मालाहलावतांचलावतां पंखीचकलां
तथा कागतणां इंडां फोडयां. अनेरा एकेंडियादि
कजीव विणास्या,चांप्या दुहव्यां कांइ हलावतां च
लावतां पाणी गांटतां अनेराकांइ काम काजकरतां
निद्धंसपणुंकीधुं.जीवरक्षा रुडी न कीधी,संखारोसुक
व्यो रुडुंगलणुंनकीधुं.अणगलपाणीवावखुं. रुडिज
यणानकीधी,अणगलपाणीएफील्या, लुगडांधोयां,
खाटला तावडे नाख्या, फाटक्या,जीवाकुल नूमी
लीपी वासीगाररराखी॥दलणे,खांमणे, लीपणे रुडी
जयणानकीधी आवम चउदसना नियम नांग्या,धु
णीकरावी ॥ पहेलेस्थुलप्राणातिपातविरमणव्रतवि
षइउं अनेरोजेकोइअतिचारपक्षदिवसमांहें० ॥

२ बीजेस्थुलमृषावाद विरमणव्रतेपांचअतिचार॥
सहस्सारहस्सदारे॥सहसातुकारे कुणहि प्रतेंअधि
कुंआलअन्याखानदीधुं,स्वदारामंत्रनेदकीधोअनेरा
कुणहिनो मंत्र आलोच मर्म प्रकास्यो कुणहिने अ

नथी पाडवा कुडिबुद्धिदीधी, कुडो लेख लख्यो, कुडि शाखभरी, थापणमोसोकीधो, कन्या गौ भूमी संबंधी लेहेणेदेणे व्यवसाय वाद वढवाडकरतां वधारे ज्ञ तुंबोल्या, हाथ पग तणीगालदीधी, कडकडामोडया, मर्मवचन बोल्या ॥ बीजे स्थुल मृषावादविरमण व्रतविषइउ अनेरोजेकोइअतिचार पक्ष० ॥

३ त्रीजेस्थुलअदत्तादान विरमणव्रते पांच अति चार ॥ तेनाहृडपयोगे ॥ घर बाहिर खेत्र खले प राइवस्तु अण मोकली लीधी, वावरी, चोरोइ, वस्तु वोहरी. चोरधाडप्रते संकेतकीधो तेने संबल दीधुं, तेहनीवस्तुलीधी, विरुद्ध राज्यातिक्रम की धो, नवा पुराणा सरस विरस सजीव निर्जीव व स्तुना भेलसंभेलकीधा, कुडेकाटले तोले, माने मा पे वोहर्यां, दाणचोरीकीधी. कुणहिने लेखे वरास्यो, साटेलांच लीधी, कुडोकरहोकाढ्यो, विस्वाशघात कीधो, परवंचनाकीधी, मात पिता पुत्र कलत्र वंची कोइने दीधुं. गांठकीधी, थापणउलवी कुणहिने लेखे पलेखेभोलव्युं, पडीवस्तु उलवी लीधी ॥ त्री

जे स्थुलअदत्तादान विरमणव्रत विषइउ अनेरो जेकोइअतिचार पक्ष० ॥

४ चोथेस्वदारासंतोष परस्त्रीगमनविरमणव्रतेंपां चअतिचार ॥ अपरिगहियाइत्तर ॥ अपरिग्रहिता गमन इत्वर परिग्रहिता गमन विधवा वेस्या पर स्त्री कुलांगना स्वदाराशोकतणेंविषेदृष्टि विपर्याश कीधो, सरागवचनबोल्यां, आठम चउदश अनेरा एपर्वेतिथें नियम लांग्या,घरघरणांकीधां कराव्यां,व र वहु वखाण्यां,कुविकल्पचिंतव्या. अनंगक्रीडा की धी, स्त्रीनाअंगोपांगनिरख्यां, परायाविवाहजोड्या, ढिंगलाढिंगली परणाव्या, कामलोगनेविषेतिव्रअ भिलाषकीधो,कुस्वप्न लाधां,नटविटस्त्रिप्रत्ये हासुंकि धुं,चोथाव्रतविषइउ अनेरो जेकोइअतिचारपक्ष०॥

५ पांचमेस्थूलपरिग्रहपरिमाण विरमणव्रते पांच अतिचार॥धणधन्नखित्तवत्थु॥धन, धान्य,खेत्र,वास्तु रूप्पसुवर्ण,कुप,द्विपद चतुःपदनवविधपरिग्रहतणा नियमउपरांत वृद्धिदेखी मूर्छालगे संक्षेपनकीधो.मा तापिता पुत्र स्त्रीतणेलेखेकीधो,परिग्रहपरिमाणलेइ

पढिउंनहिं पढवुं. विसार्युं, अलीधुं, मेल्युं, नियम विसार्यो ॥ पांचमे परिग्रह परिमाणव्रत विषइउ अनेरोजेकोइ अतिचार पक्ष० ॥

छठ्ठेदिग्परिमाणव्रते पांचअतिचार॥ गमणस्स यपरिमाणे ॥ उर्द्धदिशि अधोदिशी तिर्यग्दिशिए जावाआववातणानियमलइनांग्या, अनाभोगवि स्मृतलगें अधिक भूमीगया, पाठवणी आघी पाछी मोकली. भूमीका एक गमा संक्षेपी बीजी गमा वधारी ॥ छठ्ठे दीगविरमणव्रत विषइउ अनेरोजे कोइ अतिचार पक्ष० ॥

७सातमे भोगोपभोगविरमणव्रते भोजन आश्री पांचअतिचार ॥अनेकर्मद्हुंती. पंदर एवं. वीस अ तिचार ॥ सच्चित्तपडिबद्ध॥ सचित्त नियमलीधे अ धिकसचित्तलीधुं ॥ अपक्काहार दुपक्काहार तुच्छोष धितणुंभक्षणकीधुं; उला, उंबी.पुंक, पापडी कीधां सच्चित्तदव्वविगइवाहणह तंबोल वत्थकुसुमेसु वाहा णसयण विलेवण बंभदिशिनाणभत्तेसु ॥ ए चौद नियम दिनप्रते लीधा नहीं, लेइनेभांग्या, बावीश

अनक्ष बत्रीश अनंतकायमांहि आडु, मुला, गा
जर, पिंमपिंमालू, कचुरो, सूरण, कुलि, आंब
लि, गलो तथा वाघरडां खाधां, वासीकठोल पो
लि रोटली त्रणदिवसनुं दहिलीधुं मधु; महुडां,
मांखण, माटी, वेंगण पीलुं पीचुं पंपोटा, विष,
हिम, करा, घोलवडां, अजाण्यांफल टिंबरु, गुंदां,
बोर, अथाणुं, आमणबोर, काचुंमीठुं, तिल, ख
सखस तथा कोठिबडांखाधां, रात्रिभोजन, कीधां,
लगजग वेलाए वालुंकिधुं; दिवसविणउगे सीरा
व्या, तथा कर्मतःपन्नरकम्मादान ॥ इंगालकम्मे
वणुकम्मे साडिकम्मे भाडिकम्मे फोडिकम्मे दंत
वाणीक्क लखवाणीक्क रसवाणीज्यक्क केशवाणी
क्क विस वाणीक्क जंत्तपिलणकम्मे निलंछणकम्मे
दवग्गि दावणया सरदहतलाव सोसणया ॥ अ
सइ पोसणया एपांचकम्मे, पांचवाणीज्य, पांच
सामान्य एवंपन्नरकर्मादान बहुसावद्य महारंभ
रिंगणी लीहालाकराव्या. इंटनिबाहपचाव्यां, धा
णी चणानां पकवानकरी वेच्यां, वासी माखण

तपाव्यां. तिल वोह्स्या, फागुणमास उपरांत रा
ख्या दलीदोकीधो, अंगीठ कराव्या, श्वान बीला
डा सुडा सालहिपोस्या. अनेरा जे कांइ बहुसाव
द्य खरकर्मादिक समाचस्या, वासीगारराखी. ली
पणे गुपणेमाहारंजकीधो, अणसोध्याचुला संधु
क्या. घी, तेल, गोल तथा छास तणा जाजन उ
घाडा मुक्या, तेमांहि माखी, कुंति, उंदर, के गि
रोली पडी, कीडीचडी, तेनीजयणानकीधी ॥ सा
तमे जोगोपजोग विरमणव्रतविषइउअनेरोजेकोइ
अतिचारपक्षदिवसमाहि० ॥

८ आठमेअनर्थदंड विरमणव्रतेपांचअतिचार ॥
कंदपेकुक्कुइए॥कंदर्प्पलगें विट चेष्टा, हास्य, खेलकुतू
हल कीधा; पुरुष स्त्रीना हावजाव, रूपशृंगार विषयर
सवखाण्या. राजकथा, जक्तकथा, देशकथा तथा स्त्री
कथा कीधी. पराइवातकीधी तथा पैशून्यपणुंकीधुं.
आर्त्तरौद्रध्यानध्याया; खाडां कटार, कोश; कुहाडा, र
थ, उखल, मुशल, अग्नि, घरटी, निसाहतथा दातरडां
प्रमुखअधिकरण मेलीदाक्षिणलगेमाग्यांआप्यां, पा

पोपदेशदीधो, अष्टमी चतुर्दशीए खांमवा दलवा त
णानियम नांग्या, मुरखपणांलगे असंबंधवाक्यबो
ल्या, प्रमादाचरणसेव्या. अंघोले, नाह्णे, दातणे प
गधोअणे खेल पाणि तेलछांटयां, झीलणेझील्या,
जूवटेरम्या, हिंचोलेहिंच्या, नाटिक प्रेक्षणक जो
यां कणक वस्तु ढोर लेवराव्यां, कर्कसवचन बो
ल्या आक्रोसकीधा, अबोलालिधा, करकडामो
ड्या, मछरधर्यो संन्नेडालगाड्या सरापदिधा नेंसा
सांम्ह हुड कुकडा स्वानादिकझुझताजोया खादिल
गें अदेखाइ चिंतवी, माटी, मीठुं, कण, कपासीया
काजविणचांप्या; तेउपरबेठा. आलिवनस्पतिखुं
दी. सूइशस्त्रादिक निपजाव्यां घणीनिंद्रा कीधी, रा
ग द्वेष लगे एकने ऋद्धिपरिवारवांछीने एकने मृत्यु
हानिवांछी ॥ ए आठमें अनर्थदंड विरमणव्रत वि
षइउ अनेरोजे कोइ अतिचार पक्षदिवस मांहि०

ए नवमे सामायकव्रते पांच अतिचार ॥ तिविहे
डुपणिहाणे ॥ सामायकलीधे मनआहट्ट दोहट्टचिं
तव्युं. सावद्य वचन बोल्या. शरीर अणपडिलेह्युं,

हलाव्युं, हतीवेलाए सामायक नलीधुं, सामायक लेइ उघाडे मुखे बोल्या, उंघआवी, वात विकथा घरतणी चिंता कीधी, वीज दीवातणी उक्रेहिहुइ, कण, कपासीया, माटी, मीठुं, खडी, धावडि अरणे टो पाषाण प्रमुखचांप्या. पाणि, निल, फूल, सेवा ल, हरीकाय, बीयकाय इत्यादिक आनडयां, स्त्री तिर्यंचना निरंतर परस्पर संघट्टहुआ. मुहपतियो संघटी सामायक अणपुग्युंपाल्युं, पालवुं विसा र्युं, नवमे सामायक व्रतविषइउ अनेरोजे कोइ अतिचार ॥ पक्खदिवशमांहि० ॥

१० दशमेंदेसावगासिकव्रतें पांचअतिचार॥ आ णवणेपेशवणे ॥ आणवणेपउगे पेसवणेपउगे सद्दाणुवाई रुवाणुवाई बहियापुग्गलपक्खेवे नि यमितनूमिकामांहि बाहेरथीकांइअणाव्युं ॥ आप ण कन्हे थकि बाहेरकांइमोकल्युं, अथवारूपदेखा डीकांकरोनांखी सादकरी आप पणुं हतुं जणाव्युं. दशमेंदेशावगासिकव्रतविषइउ अनेरो जे कोइ अ तिचार पक्खदिवसमांहि० ॥

११ इग्यारमेंपोषधोपवासव्रतेंपांचअतिचार॥ सं थारुचारुविहि ॥ अप्पडिलेहिय डुप्पडिलेहिय सिज्जासंथारए अप्पडिलेहिय डुप्पडिलेहिय उ च्चारपासवण नूमी पोसहलिधे संथारातणी नूमी नपुंजी, बाहिरला लहुडां वडां स्थंमिलदिवसेंसो ध्यांनहीं, पडिलेहांनहीं, मातरुंअणपुंज्युंहलाव्युं, अणपुंजीनूमिकांयेपरठव्युं, परठवतां अणुजाणह जसग्गो न कह्यो, परठव्यापुठेंवारत्रणवोसिरे वो सिरेन कह्यो, पोसहसालमांहिपेसतांनिसहि निसर तां आवसहि वारत्रणनणीनहीं, पुढवी अप्प ते उ वाउ वनस्पति त्रसकायतणा संघट परिताप उपद्रव हुआ संथारापोरसीतणोविधि नणवो विसाखो, पोरसीमांहेउंघ्या, अविधे संथाखुं, पा रणादिकतणी चिंताकिधी, कालवेलाए देव न वां द्या, पडिकमणुंनकिधुं, पोसोअसुरोलीधो, सवेरो, पाल्यो पर्वतिथेंपोसहलीधोनही ॥ इग्यारमेंपोषधो पवासव्रतविषइउ अनेरो जे कोइअतिचारपक्ष०॥

१२ बारमें अतिथिसंविनाग व्रतें पांच अति

चार॥सच्चित्तेनिख्कवणे॥सचित वस्तु हेठें उपर ठतां माहात्मा माहा सतिप्रतें असुझतुं दान दीधुं देवानी बुद्धे असुझतुं फेडी सुझतुंकीधुं.देवानी बुद्धेपरायुं फेडि आपणुंकिधुं अणदेवानी बुद्धे सुझतुं फेडि असुझतुंकिधुं,अणदेवानी बुद्धे आपणुंफेडि परायुंकीधुं वोहोरवा वेला टलिरह्या, असुरेकरी माहात्मातेड्या, मत्सरधरी दानदिधुं गुणवंतआवे नक्ति नसाचवी, ठतिशक्तें स्वामीवात्सल्यनकिधो, अनेराइधर्मक्षेत्र सिदाता ठतिशक्तिए उधर्यां नहि,दीन क्षीणप्रतें अनुकंपादान नदिधुं॥ बारमें अतिथिसंविनाग व्रतविषइ उ अनेरोजेकोइ अतिचार पक्षदिवसमांहि० ॥

संलेषणातणापांचअतिचार॥इहलोएपरलोए॥ इहलोगासंसपउगे परलोगासंसपउगे जीवियासंसपउगे, मरणासंसपउगे,कामनोगासंसपउगे, इह लोके धर्मनाप्रनावलगे राजऋद्धि सुख सौनाग्य परिवारवांठ्यो, परलोके देव देवेंइ विद्याधर चक्रवर्त्तितणी पदवीवांठी,सुखआवे.जीवतव्यवांठ्युं,डुख आवे मरणवांठ्युं,कामनोगतणी वांठाकिधी ॥ सं

लेषणाव्रत विषइउ अनेरो जेकोइ अतिचार पक्ष दिवस मांहि० ॥

तपाचारना बारभेद ६बाह्य ६अभ्यंतर अणसण मूणोऽरिआ ॥ अणसणभणी उपवास विशेषपर्वे तिथें ६तिशक्ते किधोनहीं, उणोदरीव्रत कोलियापां च सात उंणारह्यानहि व्रतिसंक्षेप ते द्रव्यभणी सर्वे वस्तुनोसंक्षेप किधो नहि, रसत्याग तथा विगयत्या ग नकिधो, कायक्लेश लोचादिक कष्ट कर्यां नहीं, सं लिनता अंगोपांग संकोची राख्यां नहि, पच्चरकाण भांग्यां पाटलो ऱ्हगतो फेडयो नहि गंठसी साढपोर सी पुरिमड्ढ एकासणुं बेआसणुं नीवि आंबिल प्रमु खपच्चखाणपारवुं विसार्युं, बेसतांनोकारनभण्यो, उठतांपचखाण करवुंविसार्युं, गंठसहिउभांग्युं, नीवि आंबिलउपवासादिकतपकरी काचुंपाणीपीधुं वमनहुउ बाह्यतपविषइउ अनेरोजेकोइअतिचार०

अभ्यंतरतप पायछितंविणउ ॥ मनसुद्धेगुरुकन्हे आलोअण लीधी नहिं, गुरुदत्त प्रायश्चित्ततपलेखा शुद्धेपहुचाडयांनहिं, देवगुरु संघ साहमीप्रते विन

यसाचव्योनहिं,बालवृद्धग्लांनतपसीप्रमुखनोवेया वचनकिधो, वाचना पृछना परावर्त्तना अनुप्रेक्षा धर्मकथालक्षण पंचविधस्वाध्याय नकिधुं धर्मध्यान सुक्लध्यान नध्यायां, आर्त्तध्यान तथा रौद्रध्यान ध्यायां. कर्मक्षयनिमित्ते लोगस्स दश वीशनो का उसग्ग नकिधो ॥ अभ्यंतर तप विषइउ अनेरोजे कोइ अतिचार पक्षदिवसमांहि० ॥

विर्याचारना त्रणअतिचार ॥ अणगुहिअबल विरीउ ॥ पढवे, गुणवे, विनयवेयावच्च, देवपूजा सामायक,पोसह, दान, शील तप भावनादिक ध र्मकृतनेविषे मनवचनकायातणुं छतुं बल वीर्य गो पव्युं, रुडापंचांग खमासमणनदिधां,वांदणातणा आवर्त्तविधिसाचव्यानहिं,अणोचित्तनिरादरपणे बे गा उतावळुं देववंदन पडिकमणुंकिधुं ॥ वीर्याचार विषइउ अनेरोजेकोइअतिचार पक्ष० ॥

नाणाइअअट्ठ पइवय समसंलेहणपन्नरकम्मेसु॥ बारस तवविरिअ तिगं चउव्वीसंसयअईयारा ॥१॥ पडिसिद्धाणंकरणे,प्रतिषेध अनक्ष अनंतकाय बहु

बीजनक्षण महारंनपरिग्राहादिककीधुं, जीवाजीवादिक सुक्ष्मविचार सरदह्यानहिं, आपणीकुमति लगें उत्सूत्रप्ररुपणाकिधी तथा प्राणातिपात, मृषावाद, अदत्तादान, मैथुन, परिग्रह, क्रोध, मान, माया, लोन, राग, द्वेष, कलह, अन्याख्यान, पैशून्य रति अरति, परपरिवाद, मायामृषावाद, मिथ्यात्वसल्य एअढारपापस्थानक किधां, कराव्यां, अनुमोद्यांहोय दिनकृत प्रतिक्रमण विनयवेयावच्चनकीधो अनेरुं वीतरागनी आज्ञाविरुधकिधुं कराव्युं अनुमोद्युंहोय. एचिहुंप्रकारमांहे अनेरो जेकोइअतिचार पक्षदिवसमांहि सूक्ष्मबादर जाणतां अजाणतां हुउहोय ते सविहुं मने वचने कायायेंकरी तस्स मिच्छामि डुक्कडं ॥

एवंकारे श्रावक तणे धर्मे श्रीसमकितमूल बार व्रत एक सो चोवीश अतिचारमांहि अनेरो जेकोइअतिचार पक्षदिवसमांहि सुक्ष्मबादर जाणतां अजाणतां हुउहोय तेसविहुं मनें वचनें कायायेकरी तस्स मिच्छामिडुक्कडं ॥ ॥ इति श्रीश्रावक

पखिः चोमासी संवत्सरिअतिचार ॥ समाप्तं॥
॥ अथ सीमंधरजिननुं चैत्यवंदन लिख्यते ॥
॥ सीमंधर परमात्मा, शिव सुखना दाता ॥ पु
पुष्कल वइ विजयें जयो,सर्व जीवना ताता ॥१॥
पूर्व विदेह पुंमरी गिणी, नयरीए सोहे ॥ श्रीश्रे
आंसराजा तिहां, नविअणनां मन मोहे ॥ २ ॥
चौद सुपन निर्मललही, सतकी राणि मात ॥
कुंथुं अरजिन अंतरे, सीमंधर जिन जात ॥ ३ ॥
अनुक्रमे प्रज्जु जनमिया, वलि यौवन आवे ॥
मातपिता हरषेकरी, रुकमणी परणावे ॥४॥ नो
गवी सुख संसारनां, संयम मन लावे ॥ मुनिसु
व्रत नमि अंतरे, दीक्षा प्रजूपावे ॥ ५ ॥ घाति
कर्म नो क्षय करी, पाम्या केवल नाण ॥ रूषन
लंछनतें शोनता, सर्व नावना जाण ॥ ६॥ चौरा
शी प्रज्जु गणधरा, मुनिवर एकसोकोडि ॥ त्रण्य
नूवन में जोयतां, नहिंको एहनि जोडि ॥७॥ द
श लाख कह्या केवली, प्रज्जुजीनो परिवार ॥ ए
क समे त्रण कालना, जाणे सर्व विचार ॥८॥ उ

दय पेढाल जिनांतरेए, थाशे जिनवर सिद्ध ॥ जश विजय गुरु प्रणमतां, शुन वंछित फलसिद्ध ॥९॥

॥ अथः श्री सिद्धाचलजीनुं चैत्यवंदन लिख्यते ॥

॥ विमल केवल ज्ञान कमला, कलित त्रिनूवन हितकरं ॥ सुरराज संस्तुत चरण पंकज, नमो आदिजिनेश्वरं ॥ १ ॥ विमल गिरिवर श्रृंग मंम ण प्रवरगुणगण नूधरं ॥ सुर असुर किन्नर को डि सेवित, नमो आदि जिनेश्वरं ॥ २ ॥ करति नाटिक किन्नरी गण, गाय जिन गुण मनहरं ॥ निर्जरावलि नमे अहनिस, नमो आदि जिनेश्व रं ॥ ३ ॥ पुंमरीक गणपति सिद्धि साधि, कोडि पण मुनि मनहरं ॥ श्री विमल गिरीवर श्रृंग सिद्धा, नमोआदिजिनेश्वरं ॥ ४ ॥ निज साध्य साधन सुर मुनिवर, कोडिनंतए गिरीवरं ॥ मुक्ति रमणी वर्या रंगे, नमो आदिजिनेश्वरं ॥ ५ ॥ पाताल नर सुरलोक मांहि, विमल गिरीवर तो परं ॥ नहिं अधिक तीर्थ तिर्थपति कहे, नमो आदि जिनेश्वरं ॥ ६ ॥ एम विमल गिरीवर शिखर

मंमण, दुःख विहंमण ध्याइये ॥ निजसुद्धसत्ता सा
धनार्थ, पर्म ज्योति निपाइये ॥७॥ जितमोह को
ह विछोह निद्रा, परम पदस्थित जयकरं ॥ गिरी
राज सेवा करण तत्पर,पद्म विजय सुहितकरं ॥८

॥ अथ श्री पंचपरमेष्टि चैत्यवंदन लिख्यते ॥

॥बारगुण अरिहंतदेव, प्रणमियें नावें ॥ सिद्ध
आठगुण समरतां, दुःख दोहग जावे ॥ १ ॥
आचार्य गुण छत्रीश, पचवीश उवफाय ॥ स
त्तावीश गुण साधुना, जपतां सुखथाय ॥ अष्टो
तर सय गुण मलिए, एम समरो नवकार ॥ धिर
विमल पंमित तणो, नय प्रणमे नितसार ॥ २ ॥

॥अथ श्री वीशस्थानक नाम चैत्यवंदन लिख्यते॥

॥ पहेले पद अरिहंतनमो,बीजे सरव सिद्ध॥त्रि
जे प्रवचन मनधरो, चोथे आचार्यसिद्ध ॥ १ ॥
नमो थेराणं पांचमे, पाठक गुण छठे ॥ नमो
लोए सव्व साहूणं, जे छे गुण गरिठे ॥ २ ॥ न
मो नाणस्स आठमे, दरशन मन नावो ॥ विनय
करो गुणवंतनो, चारित्रपद ध्यावो ॥ ३ ॥ नमो

बंजवय धारिणं, तेरमे किरियाणं ॥ नमो तव स्स चौदमे, गोयमनमो जिणाणं ॥ ४ ॥ चारित्र ज्ञान सुअस्सनेंए, नमो तीबस्स जाणी ॥ जिन उत्तम पद पद्मनें, नमतां होय सुख खाणी ॥५॥

॥ वीशस्थानक तपना काउसग्गनुं चैत्यवंदन लि०॥

॥ चोवीश पन्नर पिस्तालीश, बत्रीश नो करिये;॥ दश पचवीश सत्तावीशनो, काउसग्ग मन धरिये. ॥ १ ॥ पंच सडसठि दश वली, सितेर नव पण वीश;॥ बार अडवीश लोगसतणो,काउसग्ग धरो गुणीश. ॥ २ ॥ वीश सत्तर एकावन्न, द्वादशने पंच ॥ एणि पेरे काउसग्ग जो करे, तो जाये न वसंच ॥ ३ ॥ अनुक्रमे काउसग्ग मनधरो, गुणि लेजो वीश; ॥ वीश स्थानक एम जाणिए, सद्रूपथी लेश. ॥ ४ ॥ नावधरि मनमां घणो, जो एक पद आराधे; ॥ जिन उत्तम पद पद्मनें. नमि निज कार्य साधे ॥ ५ ॥ इति श्री वीशस्थानक तपना काउसग्गनुं चैत्यवंदन संपूर्ण. ॥

॥ अथः बीजनुं चैत्य वंदन लिख्यते ॥

॥ दुविध धर्म जेणे उपदेश्यो ॥ चोथा अभि नंदन; ॥ बीजे जनम्या ते प्रभू, भवदुःख निकंद न ॥ १ ॥ दुविध ध्यान तुम्हे परिहरो, आद रो दोय ध्यान; ॥ एम परकाश्युं सुमति जिनें, ते चवीया बीजदिन्न ॥ २ ॥ दोय बंधन राग द्वेष, तेहने भवि तजीये;॥ मुजपरें शीतल जिन कहे, बीज दिन शिव भजीये. ॥ ३ ॥ जीवा जीव पदार्थनुं. करो नाणसुजाण; ॥ बीज दिनें वासुपुज्यपरें, लहो केवल नाण ॥ ४ ॥ निश्च य नय व्यवहार दोय, एकांत न ग्रहिए; ॥ अर जिन बीज दिनें चवी, एम जिन आगल कहिए ॥ ५ ॥ वर्त्तमान चोवीशीए, एम जिन कल्याण ॥ बीज दिनें केइ पामिया; प्रभु नाण निर्वाण ॥६॥ एम अनंत चोवीशीए. हुआ बहुकल्याण; ॥ जिन उत्तम पद पद्मने, नमतां होय सुख खाण ॥ ७ ॥

॥ अथः ज्ञान पंचमि चैत्य वंदन लिख्यते ॥८॥

॥ त्रिगडे बेठा वीर जिन, भाखे भविजिन आ

गे. ॥ त्रिकरणसुं त्रिहुं लोकजन, नि सुणोम
न रागे ॥ १ ॥ आराहो नलि जातसें, पांचम
अजुवाली;॥ ज्ञान आराधना कारणे. एहज तीथि
निहाली ॥ २ ॥ ज्ञानविना पशु सारिखा, जा
णो एणे संसार; ॥ ज्ञान आराधनथी लहे, शि
वपद सुख श्रीकार ॥ ३ ॥ ज्ञान रहित क्रीया
कही, कास कुसुम उपमान; ॥ लोकालोक प्र
काश कर, ज्ञान एक परधान ॥ ४ ॥ ज्ञानी श्वा
सो श्वासमां, करे कर्मनो छेह ; ॥ पुर्व कोडि व
रसां लगे, अज्ञानी करे तेह ॥ ५ ॥ देश आराध
क कहि क्रीया, सर्व आराधक ज्ञान; ज्ञान तणो
महिमा घणो, अंग पांचमे नगवान ॥ ६ ॥ पं
चमास लघू पंचमी, जावजीव उत्कष्टी;॥ पंच वर
स पंच मासनी, पंचमि करो शुन्न दृष्टी ॥ ७ ॥
एकावनही पंचनोए, काउसग लोगस केरो ॥
उजमणुं करो नावशुं, टाले नव फेरो ॥ ८ ॥ ए
णी परें पंचमि आराहिए, आणी नाव अपार;॥
वरदत्त गुण मंजरी परें, रंग विजय लहो सार॥ए॥

॥ अथ अष्टमीनुं चैत्य वंदन लिख्यते ॥

॥ माहाशुदि आठमने दिने, विजया सुत जायो ॥
तेम फागण शुदि आठमे, संभव चवी आयो ॥ १ ॥
चैत्रवदिनी आठमे, जनम्या रूषभ जिणंद ॥ दि
क्षा पण ए दिन लहि, हुआ प्रथम मुनिचंद ॥ २ ॥
माधव शुदि आठम दिने, आठ कर्म कर्यां दूर ॥
अभिनंदन चोथा प्रभू, पाम्यासुख भरपूर ॥ ३ ॥
एहिज आठम उजलि, जनम्या सुमति जिणंद ॥
आठ जाति कलशें करी, न्हवरावे सुरइंद ॥ ४ ॥
जनम्या जेठ वदि आठमे, मुनि सूव्रत स्वामि ॥
नेमि असाढ शुदि आठमे, अष्टमगति पामि ॥ ५ ॥
श्रावणवदिनी आठमे, नमि जनम्या जगभाण ॥
तेम श्रावणशुदि आठमे, पासजीनो निर्वाण ॥ ६ ॥
भाद्रवा वदि आठम दिने, चविया स्वामि सुपास
॥ जिनउत्तमपद पद्मने, सेवाथी शिववास ॥ ७ ॥

॥ अथ एकादशिनुं चैत्य वंदन लिख्यते ॥

॥ शासन नायक वीरजी, प्रभु केवल पायो;
संघचतुरविधस्थापवा, महसेनवनआयो ॥ १ ॥

माघव सीत एकादशी, सोमलछीज यङ्ग ॥ इंद्
नृति आदे मल्या, एकादश विङ्ग ॥ २ ॥ एका
दशगें चनगुणा, तेहनोपरिवार ॥ वेद अरथ अ
वलो करे, मन अनिमान अपार ॥ ३ ॥ जीवा
दिक संसे हरीए, एकादश गणधार ; ॥ वीरेस्था
प्या वंदिए, जिन सासन जयकार. ॥ ४ ॥ मल्ली
जन्म अरमलीपास, वर चरण विलाशी; ॥ रुष
न अजित सुमति नमी, मल्लि घनघाति विनाशी
॥ ५ ॥ पद्म प्रनू शिववास पास, नव नवना तो
डि; ॥ एकादशीदिन आपणी, रिद्ध सघली जोडि
॥ ६ ॥ दशक्षेत्रे त्रिहुंकालनां, त्रणशें कल्याण;॥
वरस इग्यार एकादशी, आराधो वरनाण ॥ ७ ॥
अगियार अंग लखावियें. एकादश पागां; ॥ पुंज
णिठवणि विंटणी; मसी कागल कागां ॥ ८ ॥ अ
गियार अव्रतछांमवाए. वहो पडिमा अग्यार;॥ खि
मा विजयजिन सासनें, कस्यो सफल अवतार. ए

॥ अथः तिर्थंकर राशिनुं चैत्यवंदन लिख्यते ॥

॥ शांति नमि मल्ली मेषछे, कुंथुं अजित वृष

नाति; ॥ संनव अजिनंदन मिथुन, धर्म करक सिंह सुमति ॥ १ ॥ कन्या पद्म प्रनूनेमवीर, पास सुपास तुलाए ॥ सशी वृश्चक धन रूषनदेव, सुविधि शीतल जिनराय ॥ ३ मकर सुव्रतश्रेयांसने, बारमां घट मीन लील; ॥ विमल अनंतअर नामथी, सुखिया श्रीशुनवीर ॥ ३ ॥

॥ अथ ॥ रोहणी तपनुं चैत्यवंदन लिख्यते ॥

॥ रोहणी तप आराधिये, श्री श्रीवासुपूज्य; ॥ डुःख दोहग डुरेंटले, पुज्यक होए पूज्य ॥ १ ॥ पहेला कीजें वास क्रूप, प्रहउठीनें प्रेम; ॥ मध्यान्हें करी धोतियां, मन वचकाय खेम; ॥ २ ॥ अष्ट प्रकारनी रचीए, पूजा नृत्य वाजित्र; ॥ नावें नावना नावियें, कीजें जन्म पवित्र ॥ ३ ॥ त्रीहुं कालें लेइ धूपदीप, प्रनु आगल कीजे; ॥ जिनवर केरी नक्तिसुं, अविचल सुखलीजे ॥ ४ ॥ जिनवर पूजा जिनस्तवन, जिननोकिजें जाप; ॥ जिनवर पदने ध्याइए, जेमनावे संताप ॥ ५ ॥ कोड कोड गुण फल दिये, उत्तरोत्तर नेद; ॥ मा

न कहे ए विधकरो, होय तो नवनो नेद ॥ ६ ॥

॥ अथ बीज तिथीनी स्तुती लिख्यते ॥

॥ दिन शकल मनोहर, बीज दिवश सु विशेष ॥ रायराणा प्रणमे, चंद्रतणी ज्यां रेख ॥ तिहां चंद्र विमानें, शास्वत जिनवरजेह ॥ हुंबीज तणे दिन ॥ प्रणमुं आणिनेह ॥ १ ॥ अजिनंदन चंदन, शीतल शीतल नाथ ॥ अरनाथ सुमति जिन, वासुपुज्यशिव साथ ॥ इत्यादिक जिनवर; जन्म ज्ञान निरवाण ॥ हुंबीज तणे दिन, प्रणमुं तेसुविहाण ॥ २ ॥ परकाश्यो बीजे, ड विध धर्म नगवंत ॥ जेम विमला कमला, विउल नयन विकसंत ॥ आगम अति अनोपम, जिहां निश्चे व्यवहार ॥ बीजे सवि कीजे, पातकनो परिहार ॥३॥ गज गामिनी कामिनी, कमल सु कोमल चीर ॥ चक्केशरी केशरी, सरस सुगंध्द शरीर ॥ करजोडी बीजे, हुं प्रणमु तस पाय; ॥ एम लब्धि विजय कहे, पूर मनोरथ माय ॥४ ॥

॥ अथ श्रीसंखेश्वर पार्श्वजिनो छंद लिख्यते ॥

॥ सेवो पास संखेश्वरो मन सुद्दे ॥ नमो नाथ निश्चे करि एक बुद्दे ॥ देवि देवलां अन्यने शुं नमोछो, अहो नव्य लोको नूलाकां नमोछो ॥ १ त्रिलोकना नाथने शुं तजोछो, पड्या पासमां नू तनें कां नजोछो ॥ सुर धेनु छंमि, अजा शुं अजोछो, मद्दा पंथ मूकी कुपंथे व्रजोछो ॥ २ ॥ तजे कोण चिंतामणी काच माटे, ग्रहे कोण रा सन ते हस्ति साटे ॥ शुर द्रूम उपाडि कोण आक वावे, महामुंढ ते आकुलां अंत पावे ॥ ३ ॥ किहां काकरो ने किहां मेरू श्रृंगं, किहां केसरीने किहां ते कुरंगं ॥ किहां विश्वनाथं किहां अन्य देवा, करो एक चित्ते प्रनूपास सेवा ॥ ४ ॥ पुजो देव प्रनावती प्राणनाथं, सहू जीवने जे करेछे सनाथं ॥ महा तत्व जाणी सदा जेह ध्यावे, ते नां दूख दारिद्र दूरे पलावे ॥ ५ ॥ मनूजन्म पामि वृथाकां गमोछे, कुशीलें करी देहने कां दमो छो ॥ नहिं मुक्ति वासं विनावीतरागं, नजो नगवं तं तजो दृष्टि रागं ॥ ६ ॥ उदेरत्नलाखे सदा हे

त आणी, दया नाव कीजे प्रनूदास जाणी ॥ आज माह्रे मोतिडे मेह वूठा, प्रन्नुपास संखे श्वरो आप त्रूठा ॥ ७ ॥

अथः पंचमिनीस्तुति लिरव्यते.

॥ श्रावण शुदिदिन पंचमिए, जनम्या नेम जिणंदतो ॥ श्यामवरण तन शोनतुंए, मुखसारद कोचंदतो ॥ सहस वरस प्रन्नु आयुषेए, ब्रह्मचारि नगवंततो ॥ अष्ठ करम हेले हणिए, पोहोता मुक्ति महंततो ॥ १ ॥ अष्टापद आदिजिनए, पहोता मुक्तिमोझारतो ॥ वासुपुज्य चंपापुरीए, नेम मुक्ति गिरनारतो ॥ पावा पुरी नगरीमां वलिए, श्री वीरत णुं निर्वाणतो ॥ समेत शिखर वीशसिद्ध हुआए, शिरवहुं तेहनी आणतो ॥ २ ॥ नेमनाथ ज्ञानि हुवाए, नाखे सारवचन्नतो ॥ जीवदया गुण वेल डीए, कीजे तास जतनतो ॥ मृषा नबोलो मानविए, चोरीचित्त निवारतो ॥ अनंत तिर्थंकर एम कहेए, परहरिए परनारतो ॥३॥ गोमेद नामे जक्ष नलोए, देविश्री अंबीका नामतो ॥ सासन सा

निध्य जे करेए, करे वलि धर्मनां कामतो; ॥ तप गछ नायक गुण निलोए, श्री विजयसेंन्य सूरिरा यतो ॥ रिखब दास पाय सेवतांए, सफल करो अ वतारतो ॥ ४ ॥ इति श्री पंचमिस्तुति संपूर्ण. ॥

॥ अथः अष्टमिनी स्तुति लिख्यते ॥

॥ मंगल आठ करी जश आगल, भावधरि सुर राजजी ॥ आठ जातना कलश करीने, न्हवरावे जिनराजजी ॥ वीर जिनेश्वर जन्म मोहोत्सव, क रतां शिव सुख साधेजी ॥ आठमनुं तप करतां अमघेरे, मंगल कमला वाधेजी ॥ १ ॥ अष्ट कर म वयरी गज गंजन, अष्टा पदपरे बलीयाजी ॥ आठमें आठसुरूप विचारी, मद आठे तस गली याजी ॥ अष्टमी गतिपरे पहोता जिनवर, फरस आठ नहिं अंगजी ॥ आठमनुं तप करतां अमघ र, नित्यनित्य वाधे रंगजी ॥ २ ॥ प्रातिहारज आ ठ बिराजे, समवसरण जिनराजेजी ॥ आठमें आ ठसो आगम भांखी, भवि मन संसय भांजेजी ॥ आठे जे प्रवचननी माता, पाले निरती चारोजी॥

आठमने दिन अष्ट प्रकारे, जीवदया चित्त धारो जी ॥ ३ ॥ अष्ट प्रकारे पूजा करीने, मानव न वफलजीजेजी ॥ सिद्धाइ देवी जिनवर सेवी, अष्ट महासिद्धि दीजेजी ॥ आठमनुं तप करतां लीजे, निर्मल केवल ज्ञानजी ॥ धीर विमल कवि सेवक नयकहे, तपथी कोड कल्याणजी ॥ ४ ॥ इति

अथः ॥ एकादशीनी स्तुति लिख्यते. ॥

॥ एकादशी अतिरुअडी, गोविंद पूछे नेम ॥ कोण कारण ए परवमोटुं, कहो मुजशुं तेम ॥ जिनवर कल्याणक अतिघणां, एकसोने पंचाश ॥ तेणे कारण ए परवमोटुं, करो मौन उपवास ॥ १ ॥ अगिआर श्रावकतणि प्रतीमा, कहेते जिनवर देव॥ एकादशी एम अधिकसेवो, वन गजाजिमरेव ॥ चोवीश जिनवर सयल सुखकर, जेशा सुरतरु चंग ॥ जेम गंग निर्मल नीर जेहवुं, करो जिन सुरंग ॥ २ ॥ अगीआर अंग लखाविए, अगीयार पाठां सार ॥ अगिआर कवली विंटणां, ठवणी पुंजणी सार ॥ चाबखी चंगी विविधरंगी, शास्त्र तणे अ

नुसार ॥ एकादशि एम उजवो. ज्यम पामिये न
वपार ॥ ३ ॥ वर कमल नयणी कमल वयणी,
कमल सुकोमल काय ॥ नुज दंम चंम अखंम जे
हने, समरतां सुख थाय ॥ एकादशी एम मनव
शी, गणि हर्ष पंमित शीस ॥ सासन देवी विघन
निवारो, संघ तणां निस दिश. ॥ ४ ॥ इति० ॥

॥ अथः श्री सिद्ध नगवाननुं स्तवन ॥

॥ सिद्धनी शोनारेशी कहुं, (ए आंकणी) सिद्ध
जगत शिर शोनता, रमता आतम राम ॥ लक्ष्मि
लिलानी लेहेरमां, सुखियाळे शिव गाम ॥ सिद्ध०
॥ १ ॥ माहानंद अमृत पद नमो, सिद्धि केवल्य
नाम ॥ अपुनर्नव ब्रह्म पद वली, अक्षय सुख
विश्राम ॥ सिद्ध० ॥ २ ॥ संश्रेय निश्रेय अक्षरा,
डुख समस्तनी हाण ॥ निर्वृत्ती अपवर्गता, मो
क्ष मुक्तिनिरवाण ॥ सिद्ध० ॥ ३ ॥ अचल महो
दय पद लह्युं, जोतां जगतना गठ ॥ निज निज
रूपेरे जूजूआं, वीत्यां कर्म ते आठ ॥सिद्ध०॥४॥
अगुरु लघु अवगाहना, नामे विकशे वदन्न ॥ श्री

शुजवीरने वंदतां,रहिए सुखमां मगन्न॥सि०६०॥५॥

॥ अथः बीज तिथी तपनुं स्तवन लिख्यते ॥

॥ फत मल पाणीडांने जाय ॥ ए देशी. ॥

॥प्रणमी सारद माय,शासन वीर शुंह करुंजी॥बीज तिथी गुण गेह, आदरो नवियण सुंदरुजी॥१॥ एह दिन पंच कल्याण,विवरीने कहुं ते सुणोजी॥ माहा शुदि बीजे जाण, जन्म अनिनंदन तणोजी ॥ २ ॥ श्रावण शुदिनी हो बीज, सुमतिच व्या सुरलोकथीजी ॥ तारण नवोदधि तेह, तस पद सेवे सुरथोकथीजी ॥ ३ ॥ समेत शिखर शुन ठाण, दशमा शीतल जिन गणुंजी ॥ चैत्र वदिनी हो बीज, वस्या मुक्ति तस सुख घणुंजी ॥ ४ ॥ फाल्गुन मासनी बीज, उत्तम उज्वल मासनी जी ॥ अरनाथ तस चवन, कर्म क्षये तव पासनीजी ॥ ५ उत्तम माघज मास, शुदि बीजे वासु पुज्यनोजी ॥ एहिजदिन केवल नाण, स रण करो जिन राजनोजी ॥ ६ ॥ करणी रूप करो खेत, समकित रूप रोपो तिहांजी ॥ खातर

किरिया हो जाण, खेड समता करी जिहां जी ॥ ७ ॥ उपशम तदरूपनीर, समकित छोड प्रगट होवेजी ॥ संतोष करि अहो वाड,पच्चखाण व्रत चोकि सोहेजी ॥ ८॥ नासे कर्म रिपु चोर, समकित वृक्ष फल्युं तिहांजी, ॥ मांजर अनुभव रूप, उतरे चारित्र फल जिहांजी ॥ ए ॥ शांति सुधारश वारी, पान करी सुख लिजीएंजी ॥ तंबोल सम ल्यो स्वाद, जीवने संतोष रश किजीएंजी ॥ १० ॥ बीज करो बावीशमास, उत्कृष्टी बावीश मासनीजी; ॥ चोविहार उपवास, पालिये शील वसुधासनीजी ॥ ११ ॥ आवश्यक दोयवार, पडिलेहण दोय लिजीएंजी ॥ देववंदन त्रण काल, मन वच कायाए किजीएंजी ॥ १२ ॥ उजमणु शुभचित्त, करी धरीये संयोगथीजी ॥ जिन वाणी रश एम, पिजीए श्रुत उपयोगथीजी ॥ १३ ॥ एणि विध करिये हो बीज, रागने द्वेष दुरे करीजी ॥ केवल पद लहितास,वरे मुक्ति उलट धरीजी ॥ १४ ॥ जिन पूजा गुरुभक्ति, विनय

करी सेवो सदाजी ॥ पद्म विजयनो शिष्य, नक्ति पामे सुख संपदाजी ॥ १५ ॥ इति० ॥ ॥

॥ अथ पंचमीनुं लघु स्तवन लिख्यते ॥

॥ पंचमी तप तमे करोरे प्राणी, जेम पामो निर्मल ज्ञानरे. ॥ पेहेलुं ज्ञानने पछि क्रिया, नहिं कोइ ज्ञान समानरे. पंचमी० ॥ १ ॥ नंदीसूत्रमां ज्ञान वखाण्युं, ज्ञानना पांच प्रकाररे ॥ मति श्रुत अवधि ने मन पर्यव, केवल एक उदाररे. ॥ पंचमी० ॥ २ ॥ मति अठावीश श्रुत चउदेवीश, अवधिछे असंख्य प्रकाररे ॥ दोय नेदे मन पर्यव दाख्यो, केवल एक उदाररे. ॥ पंचमी० ॥३॥ चंद्र सूर्य ग्रह नक्षत्र तारा, एकथी एक अपाररे ॥ केवल ज्ञान समुं नहिं कोइ, लोकालोक प्रकाशरे. ॥ पंचमी० ॥ ४ ॥ पारसनाथ प्रसाद करीने, म्हारी पूरो उमेदरे, ॥ समय सुंदर कहे हुं पण पामुं, ज्ञाननो पांचमो नेदरे ॥ पंचमी० ॥ ५ ॥

॥ अथ श्री अष्टमीनुं स्तवन लिख्यते. ॥

॥ हांरे मारे गाम धरमना, साडा पचवीश देश

जो ॥ दीपेरे त्यां देश मगध सहुमां सिरेरे लो. ॥
हांरे मारे नगरी तेहमां, राजग्रही सुविशेष जो ॥
राजेरे त्यां श्रेणिक, गाजे गजपरेंरे लो ॥ १ ॥
हांरे मारे गाम नगर पुर पावन करता नाथजो ;
विचरंता तिहां आवि वीर समोसर्यांरेलो० ॥
हां० ॥ चउद सहस्स मुनिवरना साथें साथजो;
सुधारे तप संयम शियले अलंकर्यांरे लो० ॥२॥
हां०॥ फुल्या रस नर फुल्या अंब कदंबजो ; जा
णुंरे गुणशिलवन हसि रोमंचीउरेलो ॥ हां०॥ वा
यावाय सुवाय तिहां अविलंब जो ॥ वासेरे प
रिमल चिहुं पासे संचिउरे लो. ॥ ३ ॥ हां० ॥
देव चतुरविध आवे, कोडा कोड जो; त्रिगडुंरे
मणि हेम रजतनुं ते रचेरेलो. ॥ हां० ॥ चोस
ठसुरपति सेवेहोडाहोडजो ॥ आगेरे रस लागे
इंद्राणि नचेरेलो ॥ ४ ॥ हां० ॥ मणिमय हेम
सिंहासन बेग आपजो; ॥ ढालेरे सुर चामर म
णि रत्ने जड्यांरेलो ॥ हां० ॥ सुणतां दुंदुभी ना
द टले सवि तापजो. ॥ वरसेरे सुर फूल सरस

जानुं अडयांरे लो. ॥ ५ ॥ हां० ॥ ताजे तेजे गा
जे घन ज्यम लूंबजो, राजेरे जिनराज समाजे
धर्मनेरे लो ॥ हां० ॥ निरखी हरखी आवे जन
मन लूंबजो ॥ पोषेरे रस नपडे घोषें नर्ममांरे
लो; ॥ ६ ॥ हां० ॥ आगम जाणि जिननो श्रे
णिक रायजो ; ॥ आव्योरे परिवर्यो हयगय रथ
पायगेरे लो. ॥ हां० ॥ दइ प्रदक्षिणा वंदिबेगो
गय जो ॥ सुणवारे जिन वाणी मोटे नायगेरे
लो. ॥७॥ हां०॥ त्रिभुवन नायक लायक तव भग
वंत जो ॥ आणीरे जिन करूणा धर्म कथा कहेरे
लो ॥ हां०॥ सहज विरोध विसारी जगना जंतजो,
सुणवारे जिनवाणी मनमां गह गहेरे लो ॥ ८ ॥
॥ढाल बीजी॥वालिम वहेलारे आवजो एदेशी॥
वीरजिनवर एम उपदेशे, सांभलो चतुर सूजाण
रे ॥ मोहनि निंदमां कां पडो, ओलखो धर्मनां
ठाणरे ॥ विरति ए सुमतिधरी आदरो ॥ १ ॥
परिहरो विषय कषायरे, बापडा पंच परमादथी;
कांपडो कुगतिमां धायरे ॥ वि० ॥ २ ॥ करी श

को धर्म करणी सदा, तो करो ए उपदेशरे ॥ स
वैकालेंकरी नविशको ॥ तोकरो पर्व सु विशेषरे
॥ वि० ॥ ३ ॥ जू जूआ पर्व षटनां कह्यां, फल
घणां आगमे जोयरे ॥ वचन अनुसारें आराध
तां, सर्वथा सिद्धी फल होयरे ॥ वि० ॥ ४ ॥
जीवने आयु परजव तणुं, तिथिदिनें बंध हो
य प्रायरे ॥ तेह जणि एहआराधतां, प्राणिउ
सदगति जायरे ॥ वि०॥५ ॥ तेहवे अष्टमि फल ति
हां, पूछे गौतम स्वामरे ॥ जविक जीव जाणवा
कारणे, कहे वीरप्रजु तामरे ॥ वि० ॥ ६ ॥ अ
ष्ट महा सिद्धि होय एहथी, संपदा आठनी वृ
द्धिरे ॥ बुद्धिना आठ गुण संपजे, एहथी आठ
गुण सिद्धिरे ॥ वि० ॥ ७ ॥ लाज होय आठ प
डिहारनो, आठ पवयण फल होयरे ॥ नास
अठ करमनो मूलथी, अष्टमिनुं फल जोयरे ॥
वि० ॥ ८ ॥ आदि जिन जन्म दिक्षा तणो, अ
जितनो जन्म कल्याणरे ॥ चवन संजव तणो
एह तिथे, अजिनंदन निर्वाणरे ॥ वि० ॥ ए ॥

सुमति सुव्रत नमि जनमीया, नेमनो मुक्ति दिन जाणरे ॥ पास जिन एह तिथे सिद्धला, सातमा जिन चवन माणरे ॥ वि० ॥ १० ॥ एह तिथि साधतो राजिउ, दंन वीरज लह्यो मुक्तिरे ॥ कर्महणवा भणि अष्टमी, कहे सूत्र निर्युक्तिरे ॥ वि० ॥ ११ ॥ अतित अनागत कालना, जिन तणां केइ कल्याणरे ॥ एह तिथे वली घणां संयमी, पामशे पद निर्वाणरे ॥ वि० ॥१२॥ धर्म वासित पशू पंखिआ, एह तिथे करे उपवासरे ॥ व्रतधारि जीव पोशोकरे, जेहने धर्म अभ्यासरे ॥ वि० ॥ १३ ॥ भाषियो वीरे आवम तणो, भविकहित एह अधिकाररे; ॥ जिन मुखे उच्चरे प्राणिया, पामशे भव तणो पाररे ॥ वि० ॥ १४ ॥ एहथी संपदा सवि लहे, टले कष्ट ना कोडरे ॥ सेवजो शिष्य बुद्ध प्रेमनो, कहे कांति करजोडरे ॥ वि० ॥ १५ ॥

॥ कलश ॥ एम त्रिजग भासण अचल सासन, वर्द्धमान जिनेश्वरू ॥ बुद्ध प्रेम गुरु सुपसा

य पामि, संथूण्यो अलवेसरू ॥ जिन गुण प्रसंगे
जणो रंगें, स्तवन ए आठम तणां ॥ जे जविक
जावे सुणे गावे, कांन्ति सुख पावे घणां ॥ १ ॥

॥ अथः एकादशीनुं स्तवन लिख्यतेः ॥

॥जगपति नायक नेमि जिणंद, द्वारिका नग
री समोसर्यां; ॥ जगपति वंदवा कृष्ण नरिंद, या
दव कोड सुं परिवर्यां ॥ १ ॥ जगपति द्विगुण
फूल अमूल, जक्ति गुणे माला रचि; ॥ जगपति
पूजी पूछे कृष्ण; ॥ क्षायिक समकित शिव रूची
॥ २ ॥ जगपति चारित्र धर्म अशक्त, रक्त आरं
ज परिग्रहे ॥ जगपति मुज आतम उद्धार ॥
कारण तुम विण कोण कहे ॥ ३ ॥ जगपति त
म सरीखो मुजनाथ, माथे गाजे गुणनिलो ॥ ज
गपति कोय उपाय बताव, जेम करुं शीव वधु
कंतलो ॥ ४ ॥ जगपति उजल मागशिर मास,
आराधो एकादशी ॥ नरपति एकसोने पंचाश,
कल्याणक तिथी उल्लशी ॥५॥ नरपति दश क्षेत्र
त्रणकाल, चोवीशी त्रीशे मली ॥ नरपति नेवुं

जिननां कल्याण, विवरि कहुं आगल वली ॥६॥ नरपति अर दिक्षा नमिनाण, मल्लि जन्म व्रत के वली ॥ नरपति वर्तमान चोवीशि, मांहे कल्याण कह्यां वली ॥ ७ ॥ नरपति मौन पणे उपवास, दोढशो जप मालागणो ॥ नरपति मन वच कायपवित्र, चरित्र सुणो सुव्रत तणो ॥ ८ ॥ नरपति दाहिण धातकीखंड, पश्चिम दिशिइक्षुकारथी ॥ नरपति विजय पाटणअभिधान, साचो नृप प्रजापालथी ॥ ए ॥ नरपति नारी चंद्रावति तास, चंद्रमुखि गजगामिनी ॥ नरपति श्रेष्ठि शुर विख्यात, शीयल सलिला कामिनी ॥ १० ॥ नरपति पुत्रादिक परिवार, सार त्रुषणचिवर धरी ॥ नरपति जाए नितु जिनगेह, नमन स्तवन पूजा करे ॥ ११ ॥ नरपति पोषे पात्र सुपात्र, सामायक पोषध वरे ॥ नरपति देव वंदन आव श्यक, काल वेलाए अनुसरे ॥ १२ ॥

॥ ढाल बीजी ॥ एकदिन प्रणमी पाय, सुव्रत साधु तणारी; ॥ विनये वीनवे शेठ, मुनिवर करो

करूणारी ॥ १ ॥ दाखो मुजदिन एक, थोडो पु
न्य कीयोरी ॥ वाधे जिम वड बीज, शुन अनुबं
धी थयोरी ॥ २ ॥ मुनि नापे महा नाग्य, पाव
न पर्व घणारी ॥ एकादशी सुविशेष, तेहमां सु
ण सुमनारी ॥ ३ ॥ सित एकादशी सेव, मास
अग्यार लगेरी; ॥ अथवा वरस इग्यार, उजवी त
पसु वगेरी ॥ ४ ॥ सांनलि सदगुरु वेण, आनं
द अति उलश्योरी, तपसेवी उजविय, आरण स्व
र्गे वश्योरी. ॥ ५ ॥ एकवीश सागर आय, पाली
पुन्य वसेरी ॥ सांनल केशवराय, आगल जेहथ
सेरी ॥ ६ ॥ सोरी पुरमां शेठ, समृद्धदत्त वडोरी ॥
प्रीति मति प्रीया तास, पुन्ये जोग जड्योरी ॥७॥
तस कुंखे अवतार, सुचित शुन स्वपनेरी ॥ जन
म्यो पुत्र पवित्र, उत्तम ग्रह सुकनेरी ॥ ८ ॥ ना
लनिखेप निधान, नुमीथि प्रगट हवोरी, ॥ गर्जदो
हद अनुनाव, सुव्रत नाम ठव्योरी ॥ ए ॥ बुद्धि
उद्यम गुरु जोग, शास्त्र अनेक नण्योरी. ॥ यौवन
वय अगीआर, रूपवती परण्योरी ॥१०॥ जिन पू

जन मुनिदान, सुव्रत पचखाण धरेरी ॥ अगीआर कंचन कोड, नायक पुन्य नरेरी ॥ ११ ॥ धर्म घोष अणगार, तिथी अधिकार कहेरी ॥ सांजलि सुव्रतशेठ, जाति स्मरण लहेरी ॥ १२ ॥ जिन प्रत्यय मुनि शाख, नक्के तप उचरेरी ॥ एका दशी दिन आठ, पोहोरो पोशो धरेरी ॥ १३ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ पत्नि संयुत्ते पोसह लीधो, सुव्रत शेठे अन्यदाजी ॥ अवसर जाणि तस्कर आव्या, घरमां धन लूटे तदाजी. ॥ १ ॥ सासन जक्के देवी शक्के, थंजाणाते बापडाजी ॥ कोलाहल सुणि कोटवाल आव्यो, नृप आगलधस्या रांकडाजी ॥ २ ॥ पोसह पारी देव जुहारी, दयावंत लेइ नेटणाजी ॥ रायने प्रणमि चोर मुकावी, शेठे कीधां पारणांजी ॥ ३ ॥ अन्य दिवश विश्वानल लागो, सोरीपुरमां आकरोजी ॥ शेठजी पोसह समरश बेठा, लोक कहे हठ कां करोजी ॥ ४ ॥ पुण्ये हाट वखारो शेठनी, नगरी सौ प्रसंसा करेजी ॥ हरखे शेठजी तप उजमणुं, प्रेमदा साथे आदरे

जी ॥ ५ ॥ पुत्रने घरनो जार जलावी, संवेगी सिर सेहरोजी ॥ चउनाणी विजय शेखर सूरी, पासे तपव्रत आदरेजी ॥ ६ ॥ एक खट मासी चार चोमासी, दोसय छठ सो अठम करेंजी ॥ बीजां तप पण बहुश्रुत सुव्रत, मौन एकादशि व्रत धरे जी ॥७॥ एक अधम सुर मिथ्या दृष्टी, देवता सुव्रत साधुनेजी ॥ पुर्वोपार्जित कर्म उदेरी, अंगे वधारे व्याधिनेजी. ॥ ८ ॥ कर्मे नडीउ पापे जडीउ, सुरकहे जाउ उषध जणीजी ॥ साधु न जाए रोस जराये, पाटु प्रहारे हण्यो मुनिजी ॥९॥ मुनि मन वचन काय त्रियोगें, ध्यान अनल दहे कर्मनेजी ॥ केवल पामी जिन पद रामि, सुव्रत नेम कहे श्यामनेजी ॥ १० ॥

॥ ढाल चोथी ॥ कान पयं पे नेमनेए, धनधन यादव वंश, जिहां प्रभु अवतस्याए ॥ मुज मनमानसहंस, जयोजिन नेमनेए ॥ १ ॥ धन शिवादेवी मायडीए, समुद्र विजय धन्यतात, सुजात जगतगुरुए, रत्न त्रइ अवदात ॥ जयो०

॥ २॥ चरण विराधी उपनोए,हुंनवमुं वासु देव ॥ तिणे मन नवि उल्लस्येए, चरण धरमनी सेव ॥ जयो० ॥ ३ ॥ हाथी जेम कादव गल्योए, जाणुं उपादेय हेय, तोपण हुं नकरी शकुंए, छुष्ट कर्मनो जेय॥जयो० ॥४॥ पण सरणो बलियातणो ए, किजे सीजेकाज, एहवां वचन ने सांजलिए ॥ बांहे ग्रह्यानी लाज ॥ जयो० ॥ ५ ॥ नेम कहे एकादशिए, समकित युत्त आराध, थइश जिनवर बारमोए, जावि चोवीशि लाध ॥ जयो० ॥६ ॥

॥कलश॥इय नेमिजिनवर नित पुरंदर,रैवताचल मंमणो॥बाण नव मुनि चंद वरसे,राज नगरे संथुण्यो ॥ संवेगरंग तरंग जल निधि,सत्य विजय गुरु अनुसरी॥कपूर विजय कविक्षिमाविजयगणि, जिनविजय जय सिरीवरी ॥ १ ॥ इतिश्री० ॥

॥ अथः श्रीवीरप्रजुनुंदीवालीनुं स्तवन लिख्यते ॥

॥ मारग देसक मोक्षनोरे, केवल ज्ञान निधान॥ जाव दया सागर प्रजुरे,परउपगारी प्रधानोरे॥ १॥ ॥ वीर प्रजु सिद्ध थया ॥ संघ सकल आधारोरे,

हवेइण नरतमां ॥ कोण करशे उपगारोरे ॥ वी
र० ॥ २ ॥ नाथ विहूणी सैण ज्युंरे, वीर विहुणारे
जीव ॥ साधे कोण आधारथीरे, परमानंद अ
नंगोरे ॥वीर० ॥ ३ ॥ मात विहूणो बाल ज्युंरे,
अरहो परहो अथडाय ॥ वीर विहूणा जीवडारे,
आकुल व्याकुल थायरे ॥ वीर० ॥ ४ ॥ संसय
छेदक वीरनोरे, विरह ते केम खमाय ॥ जे दी
ठे सुख उपजेरे, ते विण केम रहेवायोरे ॥ वी०
॥ ५ ॥ निरजामिक नव समुइनोरे, नवअडवि
सब्रवाह ॥ ते परमेश्वर विण मलेरे, केम वा
धे उब्राहोरे ॥ वीर० ॥ ६ ॥ वीर थकां प
ण श्रुत तणोरे, हतो परम आधार ॥ हवे इहां
श्रुत आधारछेरे ॥ अहो जिनमुद्रा सारोरे ॥
वीर० ॥ ७ ॥ त्रण कालें सवि जीवनेरे, आगम
थी आणंद ॥ सेवो ध्यावो नवि जनारे, जिन प
डिमा सुखकंदोरे ॥ वीर० ॥ ८ ॥ गणधर आ
चार्य मुनिरे, सहूने एणीपरे सिद्धि ॥ नव नव
आगम संगथीरे, देवचंद पद लीधरे ॥ वीर०॥९॥

॥ अथ सार बोलनी सझाय लिख्यते ॥

॥ सरसति सामिनी पयप्रणमेव, सद्गुरुनाम सदा समरेव ॥ बोलिश एणि परें आचार, जो ६ लेजो जाण विचार ॥ १ ॥ पंडित तेजे नाणें गर्व, ज्ञानी तेजे जाणे सर्व ॥ तपस्वि ते जे ना णे क्रोध, कर्म आठ जीते ते जोध ॥ २ ॥ उ त्तम तेजे बोले न्याय, धर्मि तेजे मन निरमाय ॥ ठाकुर तेजे पाले वाच, सद् गुरू तेजे नापे सा च ॥ ३ ॥गिरूउ तेजे गुण आगलो, स्त्रीपरिहार करे ते नलो ॥ मेलो तेजे निंद्या करे, पापी ते हिंसा आचरे ॥४॥ मूर्ति तेजे जिनवर तणी, कि र्ति तेजे बीजे सुणी॥ लब्धि तेगौतम गणधार, बुद्धि अधिक अनय कूमार ॥५॥ श्रावक तेजे ले नवतत्व, कायरतेजे मूके सत्व॥मंत्र खरो ते श्रीनवकार, देव खरो मुक्ति दातार ॥ ६ ॥ पदवी ते तीर्थंकर त णी, मति तेजे उपजे आपणी ॥ समकीत तेजे साचुं गमे, मिथ्या मतिते नूलो नमे ॥ ७ ॥ मो टो जे जाणे परपीड, धनवंतो जे नांगे नीड ॥

मनवश आणे ते बलवंत, आलसथी अलगो पुन्य
वंत ॥ ८ ॥ कामी नरते कहिये अंध, मोह जा
लते मोटो बंध ॥ दारीद्री जे धर्मे हीन, दुर्गति
मांहे रुले ते दीन ॥ ए ॥ आगम ते ज्यां बोली
दया, मुनिवर तेजे पाले क्रिया ॥ संतोषी ते सु
खिया थया, दुखिया तेजे लोभे ग्रह्या ॥ १० ॥
नारी तेजे होए सती, दर्शन ते उघो मुहपती ॥
राग द्वेष टाले ते यती, सुधूं जाणे ते जिनम
ती ॥ ११ ॥ काया तेजे शीलें पवित्र, मायार
हित होए तेमित्र ॥ वृद्ध पणुं पाले ते पूत्र, ध
र्म हाण पाडे ते शत्रु ॥ १२ ॥ वेरागीते विरमे
राग, तारू ते जव तरे अथाग ॥ रौरव नरक त
णो ए माग, वागहणीने मागे त्याग ॥ १३ ॥
देह माहिं ते सारी जीह, धर्म थाय ते लेखे दीह॥
रश मांही उपशम रश लीह, शुली जइ मुनिवर
मां सिंह ॥ १४ ॥ साचुं तेजे जिननुं नाम, जि
ननुं देरुं ज्यां ते गाम ॥ न्यायवंत कहिये ते राम,
योगी तेजे जीते काम ॥ १५॥ एह बोल बोल्या

मे खरा, सार नथी एथी उपरा ॥ कहेपंमित ल
छ्मी कल्लोल, धर्म रंग मन धरजो चोल ॥ १६ ॥

॥ अथ श्री मंधरजिननुं चैत्यवंदन प्रारंनः ॥

॥ वंडुं जिनवर विहरमान, श्री सीमंधर स्वामी॥
केवल कमला कांतदांत, करूणा रश धामी॥१॥
कंचन गिरीसम देहकांत, वृष लांछन पाय ॥ चौ
राशी लक्ष पूर्व आय, सेवित सुर राय ॥२॥ छठ
नत्त संजमलियोए, पुंमरिकिणी नाण ॥ प्रनु द्यो
दरशन संपदाए. कारण परम कल्याण ॥ ३ ॥

॥ अथ श्री पार्श्वनाथनुं चैत्यवंदन प्रारंनः ॥

॥पुरसादाणी पास नाह, नमीए मनरंग ॥ नी
लवरण अश्वसेननंद, निरमल निस्संग ॥ १ ॥
कामित दायक कल्पशाष, वामासुत सार ॥ श्री
गवडीपुर स्वामनाम, जपीए निरधार ॥ २ ॥ त्रि
नूवन पति त्रेवीशमोए, जेनी अखंमित आण ॥
एक मनेथी आराधतां, लहिये कोड कल्याण॥३॥

अथः॥सामायक बत्रीश दोषनी सद्याय लिख्यते.॥

॥चोपाइ ॥ सुन गुरु चरणें नामी शीश, सामा

यकना दोष बत्रीश ॥ कहिशुं त्यां मनना दश दोष, दुष्मन देखी धरतो रोश ॥ १ ॥ सामाय क अविवेके करे, अर्थ विचार न हैडे धरे ॥ मन उद्वेग ईछे यश घणो. नकरे विनय वडेरा तणो॥ ॥ २॥ नय आणे चिंते व्यापार, फल संसय नी आणो सार ॥ हवे वचनना दोष निवार, कुवचन बोल करे टुंकार ॥ ३ ॥ लइ कुंची जा घर उघा ड, मुखे लवी करतो वढवाड ॥ आवो जावो बो ले गाल, मोह करी हुलरावे बाल ॥ ४ ॥ करेवि कथाने हशे अपार, ए दश दोष वचनना वार ॥ काया केरां दूषण बार, चपलाशन जोवे दिशि चार ॥ ५ ॥ सावद्य काम करे संघाथ, आलश मोडे उंचेहाथ ॥ पगलांबे बेसे अवनीत, उठिंग णल्ये थांनो नींत ॥ ६ ॥ मेल उतारे खरज ख णाय, पगउपर चढावे पाय ॥ अति उघाडुं मेलुं अंग, ढांके तेमवली अंग उपंग ॥७॥ निंद्रा ये रस फलनवि गमे, करहा कंटक तरूएं नमे ॥ ए बत्रीशे दोष नीवार, सामायक करजो नरनार

॥ ८ ॥ समता ध्यान घटा उजली, केशरी चोर हुवो केवली ॥ श्रीमुनवीर वचन पालती, स्वर्गे गइ सुरसा रेवती ॥ ए ॥ इति सज्झाय संपूर्णः ॥
॥अथः मुहपतिनांपचाशबोलनी सज्झाय लिख्यते॥
॥ ढाल ॥ सिरि जंबूरे विनयजक्ति शिरनामिने ॥ करजोडीरे पूछे सोहमस्वामिने ॥ जगवंतारे कहो शिवकांता केममले ॥ कहे सोहमरे मिथ्या भ्रम दूरेंटले ॥ त्रुटक ॥ डुरेंटले विषगरल ईहा, उजय मार्ग अनुसरी ॥ एक ज्ञान दूजी करत क्रिया, अनेदारोपण करी ॥ ज्यम पंगु दर्शित चर्ण कर्षित, अंध बिहुं निज पुरगया ॥ त्यम सत्व सजता तत्वजजता, जविक कइ सुखिया थया ॥ १ ॥
॥ ढाल ॥ वैकलज्युंरे कष्ट ते करवुं सोहिलुं॥ पण जंबूरे जाण पणुं जगदोहिलुं ॥ तेणे जाणीरें आवश्यक किरिया करो,॥ उपगरणेरे रज हरणो मुहपतिधरो ॥ त्रूटक ॥ मुहपति स्वेतें मानोपेते, सोल निज अंगुल जरी ॥ दोयहाथ झाली दृग निहाली, इष्टि पडि लेहण करी ॥ त्यां सूत्र

अर्थ सुतत्व करीने, सद्दहुं एम नाविये ॥ नचा वज्ञा रूप तिगतिग, पखोडा पट लाविये ॥ २ ॥ ॥ ढाल ॥ समकित मोह्नीरे मीश्र मिथ्यात्वने परिहरुं, काम रागरे स्नेह दृष्टि राग संहरुं ॥ एसा तेरे बोल कह्या हवे आगलें, अंगुली वचेरे त्रण वधू टक कर तले॥त्रूटक ॥ करतले वामें अंजलीध रि, अखोडा नव कीजिए ॥ प्रमार्जन नव त्यम ज करियें, तिग तिगंतर लीजिए ॥ सु देव सु गुरु सुधर्म आदरुं, प्रति पक्षि परिहरुं ॥ वलि ज्ञान दर्शन चरण आदरुं, विराधक त्रिक अपह रुं ॥ ३ ॥ ॥ ढाल ॥ ॥ मनो गुप्तीरे वचन काय गुप्ती नजुं, मनो दंमरे वचन काय दंम त जुं ॥ पचवीशेरे बोल ए मुहपतिना लह्या, हवे अंगनारे परिहरुं एम सघला कह्या॥ ॥त्रूटक॥ कह्या वधू टक करि परस्पर, वाम हाथे त्रिक क रो, ॥ हास्य रतीने अरती ढंमी, इतर कर त्रिक अनुसरो ॥ नय शोक दुगंछा तजीने, पयाहिणो आचरो ॥ कृष्ण लेश्या नील कापोत, निलाडे

त्रिक परिहरो ॥ ४ ॥ ढाल ॥ रश गारवरे रूद्धि शाता गारवा, मुख हैडेरे त्रण त्रण एम धारवा ॥ माया सल्लरे नियाण मिथ्या टालिये, वाम खंधेरे क्रोध मान दोय गालिये ॥ त्रुटक ॥ गाली ये माया लोन दक्षण, खंध नई अधोमली ॥ त्रिक वाम पादे पुढविने अप, वली तेउनी रक्षा करी॥जमणे पगें त्रण वाउ वणसई,त्रश कायनी रक्षाकरुं॥ पंचाश बोले पडी लेहण, करत ज्ञानी नव हरू ॥ ५ ॥ ढाल ॥ ॥ एह मांहेथीरें चालीश बोलते नारीने, शिस हृदयनारें खंध बोल दशवारीने ॥ इंणविधइयुंरे पडिलेहणथी शिव लह्यो, अविधि करीरे ठकायनो विराधक कह्यो॥ त्रुटक ॥ कह्यो किंचित्त आवश्यकथी, तथा प्रवचन सारथी ॥ नावना चेतन पावना कही, गुरुवचन अनुसारथी ॥ शिव लहे जंबूरहे जो, शुन वीर विजयनी वाणिए,मन मांकडुं वनवास रमतुं, वशकरी घर आणिए॥ ६ ॥ इति सजाय संपूर्ण ॥

॥ अथः काय उपर सझाय ॥

॥ कायारे वाडी कारमी ॥ सिचंतारे सूके ॥ उं व कोड रोमावली, फल फूल न मूके ॥ का० ॥ १ ॥ ॥ काया माया कारमी, जोवंता जासे ॥ मारग लेजो मोक्षनो, जीवडो सुख पासे ॥ का० ॥ २ ॥ अरिहंत आंबो मोरीयो, सामायक थाणे ॥ मंत्र नवकार संभारजो, सम्मकित सुद्ध गाणे ॥ का० ॥ ३ ॥ वाडि करो विरतां तणी, सवि लोभ निवारो ॥ शील संयम दोनुं एकगा, भली पेरें पालो ॥ का० ॥ ४ ॥ पांच पुरुष देशावरी, बेठा एणी भाली ॥ फल चुटीने चोरीआं, नकरी रखवाली ॥ का० ॥ ५ ॥ इण वाडि एक सूवटो, सुख पिंजर बेठो ॥ बहुत जतन करी राखीउं, जातो किणही न दीठो ॥ का० ॥ ६ ॥ कांभोल पणे भव हारियो, मतमोडी संभाली ॥ रत्न चिंतामणी सारीखी, कांइ गांठां नवाली ॥ का० ॥ ॥ ७ ॥ रत्न तिलक सेवक भणे, सुणजो वनमाली, वाडभली परें पालजो. करजो ढंगवाली ॥ का० ॥ ८ ॥

॥ अथः ॥ श्री अगीआर गणधर नी सका य ॥ अजीत जिणंदसुं प्रीतडी ॥ एदेशी ॥

॥ वीरपटोधर वंदीए, गणधार हो गुरु गौतम स्वामि ॥ रिद्धि वृद्धि सुख संपदा, नवे निधी होप्रग टे जश नाम ॥ वी०॥१॥ अग्नि भूति वायु भूतिसुं, पनर सत्तहो लहे संजमभार ॥ व्यक्त सुधर्मा स हससुं, तरियाहो श्रुतदरीया संसार ॥ वी० ॥२॥ मंभीत मौरीय पुत्रजी, साडात्रण हो सत्त संय म लीध ॥ अकंपिततिसत्तसुं, अचल भ्राता हो त्रण सत्त प्रसिद्ध ॥ वी० ॥ ३ ॥ मेतारज प्रभा सना, सुद्ध साधुजी हो त्रण त्रण सत्त ॥ चउद सहस मुनि वंदिये, साहुणीहो छत्रीश सहस महं त ॥ वी०॥४॥ वीर विमल कहेविधिसुद्धशुं, विसु द्ध वंदोहो एवा अणगार ॥ तरण तारण तरी स मा, समरथ हो सासन सणगार ॥ वी० ॥ ५ ॥

॥ अथः ॥ श्री सोल सतियोनी सझाय ॥

॥ सोलसतीनां लीजे नाम, जेथी मन वंछीत शुभ काम ॥ भक्ति भाव अति आणी घणो, भावधरीने

नवियण सुणो ॥ १ ॥ ब्राह्मी चंदन बाला नाम, राजिमति द्रौपदी अभिराम ॥ कौशल्याने मृगा वती, सुलसा सिता ए महासती ॥ २ ॥ सतीसु भद्रा सोहामणी, पोल उघाडी चंपातणी ॥ शिवा नाम जपो भगवती, जगीश आपे कुंती सती॥३॥ शीलवती शीले शोभती,भजोभावे ए निर्मल मती॥ दमयंतीनें चूलासती, प्रभावतीने पद्मावती ॥४॥ सोलसतीनां नाम उदार, भणतां गणतां सिव सुखकार ॥ शाकिनी डाकिनी व्यंतर जेह, सति नामे न पराभवे तेह ॥ ५ ॥ आधि व्याधि सवि जाये रोग, मन गमता सवि पामे भोग ॥ संकट विकट जाए सवि दूर, तिमिर समूह ज्यमउगे सूर ॥ राज रिद्धि घरें होए बहु, रायराणा ते माने सहु; वाचक धर्म विजय गुरुराय, रत्न विजय भावें गुणगाय ॥ ७ ॥ इति श्री० ॥

॥ अथः श्री आत्मसीख सझाय लिख्यते ॥

॥ प्यारी ते पीउने एम प्रीछवे, पेखी नजिक प्रयाणरें॥पंथीयडा,वटाउडयारे.॥आजनो वासोरे तुंतो

इहां ॥ वस्यो. काजनां क्यां होसे मेलाणरे ॥ पंथी
यडा ॥ वटाउडारे ॥ आ० ॥ १ ॥ च्यारदिशें रे फ
रे चोरटा. ॥ जीवन सुतो जागरे, पंथीयडा ॥ चर
णे चारित्र धर्मरायने, जागिशके तो जागरे ॥ पं
थीयडा ॥ वटा० ॥ आ०॥२॥ रांघण आदे माहा
रोगजे, लागाछे ताहरी लाररे ॥ पंथीयडा ॥ ते
आवेछे तेडुं तेडां उपरे, बहुकालनुं ताहरे बाररे
॥ पंथीयडा ॥ वटा० ॥ आ० ॥ ३ ॥ परदेशी
आणां पाछां नहिंफरे, सासरवासो सझरे ॥पंथी
यडा ॥ साथचलंतो भगवंतने, भजी शकेतो भझ
रे पंथीयडा ॥ वटा० ॥ आ० ॥ ४ ॥ माथेनगारांवा
जे मरणनां, हाथते आवशे साथरे, पंथीयडा॥ खा
से कुटंब खुंखाराकरी. बाकी ते ताहरी आथरे ॥ पं
थीयडा ॥ वटा० ॥आ० ॥५॥ मदनो छक्योरे न
लहे तुं मने, झग झग दैवनी झांगरे ॥ पंथीयडा ॥
जोतुं वारेतोजाणुं खरो, खोया भवना खांगरे ॥पं
थीयडा॥ वटा०॥ आ० ॥६॥ सुखतुं माणेछे धर
णी सेजमां, धणते धुतारीछे धीठरे ॥ पंथीयडा॥

गरथ खाइने गणिकानी परें, आखरहोसे अदिठ रे ॥पंथीयडा ॥ वटा० ॥ आ० ॥ ७ ॥ ममता वाह्योरे तुं थाइशमां, तुं परसुं मांभेठे प्रीतरे ॥पंथीयडा॥आप स्वरूपनवि ओलखे,अनेकचलावे अनीत रे ॥ पंथीयडा ॥वटा०॥आ०॥८॥ जूत जूत मांहि जाशे जलो, दाट्यो रहेशे दामरे ॥ पंथीयडा ॥ बाह्य कुटंब मल्युंछे बहू, पण कोइ नआवे कामरे॥ पंथीयडा ॥ वटा० ॥ आ०॥९॥ चेतन निज पीउंने चेतना, बाला बुझवे एमरे॥ पंथीयडा॥ अचेतन साथें एहवी आशकी, कहोने कीजें केमरे ॥ पंथीयडा॥वटा०॥आ०॥१०॥ उदय वदेरे अरिहंतना, आसक होसे अतीवरे॥ पंथीयडा॥ पडसे नहीं जे मोहना पासमां, मुक्ते जाशेते जीवरे ॥ पंथीयडा ॥ वटा० ॥ आ० ॥११॥इति आत्मशीखसझाय संपूर्ण ॥

॥ अथः पोसानां चोवीश मंमल लिख्यते. ॥

" वडिनीत्य " लघुनित्यादीपरठवण, योग्य जग्या प्रतीलेषणनिमित्तेपोसहमां मंमल करवां ते कहेछे.

॥ प्रथम संथारापासेनी जग्या ए ॥

१ आघाडे आसन्ने उच्चारे पासवणे अणहियासे.
२ आघाडे आसन्ने पासवणे अणहियासे.
३ आघाडे मज्के उच्चारे पासवणे अणहियासे.
४ आघाडे मज्के पासवणे अणहियासे.
५ आघाडे दुरे उच्चारे पासवणे अणहियासे.
६ आघाडे दुरे पासवणे अणहियासे.

॥ हवे उपाश्रयना बारणांना मांहेनी तरफनां.॥

१ आघाडे आसन्ने उच्चारे पासवणे अहियासे
२ आघाडे आसन्ने पासवणे अहियासे.
३ आघाडे मज्के उच्चारे पासवणे अहियासे.
४ आघाडे मज्के पासवणे अहियासे.
५ आघाडे दुरे उच्चारे पासवणे अहियासे.
६ आघाडे दुरे पासवणे अहियासे.

॥ हवे उपाश्रयनांबारणाबाहिर नजिक रहीनेकरे॥

१ अणाघाडे आसन्ने उच्चारे पासवणे अणहियासे.
२ अणाघाडे आसन्ने पासवणे अणहियासे.
३ अणाघाडे मझ्झे उच्चारे पासवणे अणहियासे.
४ अणाघाडे मझ्झे पासवणे अणहियासे.
५ अणाघाडे दुरे उच्चारे पासवणे अणहियासे.
६ अणाघाडे दुरे पासवणे अणहियासे.

।हवे उपाश्रयथी सो हाथ आशरे दुरेरहेते करवां।

१ अणाघाडे आसन्ने उच्चारे पासवणे अहियासे.
२ अणाघाडे आसन्ने पासवणे अहियासे.
३ अणाघाडे मझ्झे उच्चारे पासवणे अहियासे.
४ अणाघाडे मझ्झे पासवणे अहियासे.
५ अणाघाडे दुरे उच्चारे पासवणे अहियासे,
६ अणाघाडे दुरे पासवणे अहियासे.

॥ इति श्री मंम्मल बोल चोवीश समाप्त.॥

॥ अथ नमुक्कार सहि आदि पच्चख्काण प्रारंभ ॥

॥अहींआं गुरुवचन पच्चख्काइ, अने कर्त्तानुं

वचन पच्चरकामि, तथागुरुवचन वोसिरे अने कर्त्ता नुं वचन वोसिरामि, जाणवुं.

॥ प्रथम नमुक्कारसहिनुं पच्चरकाण ॥

॥उग्गए सूरे नमुक्कारसहिअं पच्चरकाइ चउ विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्न ह्णा जोगेणं सहसागारेणं वोसिरे.

अर्थ—उग्गएसूरेके० सूर्यना उदयथकी मांमीने बे घडी प्रमाण एटले रात्रीजोजननो दोष निवार वाने अर्थे बे घडी पछी नमुक्कारसहिअंके० नवकार सहित एटले नवकार कहीने पारुं एवीरीते पच्च रकामिके० पच्चरकाण करुंबुं, एटले नियम लउंबुं. अहींआं नवकार कहीने पच्चरकाण पारवुंछे, मा टे नोकारसी कहीए. अहीं गुरु पच्चरकाइ कहे तेवारे शिष्य पच्चरकामिकहे एम सर्वपच्चस्काणो नेविषे जाणी लेवुं.

हवे शानुं पच्चरकाण करे ते कहेछे; चउविहं पिआहारं के० चारप्रकारनो आहार नकरवो तेनुं पच्चखाण करे तेनां नाम कहेछे, प्रथम असणं

के० शालि, जुवार, तुवर, क्षीर, मोदक, रोटली अने सूरणादिक कंद प्रमुख ए सर्वने अशन कहिए. बीजो पाणं के० चोखा, यव, काकडी प्रमुखनुं धोवण अने सर्वजातनुं जल. वली साकर वाणी, द्राक्षवाणी प्रमुख ए सर्वने पाणी कहिए, त्रीजो खाइमं के० शेकेलुं धान, गोल, पापड, खजूर, द्राक्ष, सुखडी, खारेक तथा कोपरां प्रमुखने खादिम कहिए. चोथो साइमंके० सुंठ, हरडे, पीपलीमूल, मरी, सोपारी, लविंग, एलची अने चीनीकबाब प्रमुखने स्वादिम कहिए. ए चारे प्रकारना आहारनो नियम लेवुं. हवे ए नियम भंग थवाना भयने लीधे अहींआं नोकारसीना पच्चरकाणने विषे बे आगार मोकला मूकेछे, ते कहेछे.

एक अन्नछणा भोगेणंके० अनाभोगे एटले अत्यंत विशर्जन थइ गयाथी अना उपयोगे कोइ वस्तु मुखमां प्रक्षेपवाथी पच्चरकाण भंग नथाय. पण वचमां जेवारे सांभरीआवे तेवारे तरत थुकी नाखे, एम करतां पच्चरकाण भंग नथाय.

बीजो सहसागारेणंके० गाय, नेंश प्रमुख दोहोतां तथा घृतादिक मथतां अथवा घृतादिक नुं तोल करतां, तथा मेह वृष्टिकाए छांटो उडी मुखमां पडे तो पच्चरकाण नंग नथाय. ए पच्च रकाणमां बे घडी सुधी चउविहार होए माटे बे घडी वीत्या पछी नवकार गणेतो पोहोचे, पण बे घडी वीत्यानी अगाउ नोकार गणेतो नपोहो चे. जो पेहेली बे घडीमां अने पाछली बे घडी पछी जमे तो रात्रीनोजननो दोष लागे. एरीते उ क्त बे प्रकारना आगारे करि वोसिरामिके० बे घ डी सुधी चारे आहारने वोसिरावुंछुं. एटले अपच्चा रकाणी आत्माने छांडुंछुं, अहींआं वोसिरे एगुरु नुं वचनछे, अने वोसिरामि ए शिष्यनुं वचनछे.

॥ नमुक्कारसहिअं मुठसहिनुं पच्चरकाण. ॥

॥ उग्गाएसूरे नमुक्कारसहिअं मुठसहिअं पच्च रकाइ चउविहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं सा इमं अन्नछणाभोगेणं सहस्सागारेणं महत्तरागारे णं सव्वसमाहिवत्ति आगारेणं वोसिरे.

अर्थ–एना अर्थमां मुठसहिअं के० मुठ सहित, एटले ज्यांसुधी मुठ होय त्यांलगे पच्चरकाण अने नोकारगणी मुठ मोकली मुकुं तेवारे पच्चरकाण मोकलुं थाय. बीजो अर्थ सर्व ए पच्चरकाणो मांज प्रसंगे आवशे त्यांथी जाणवो.

॥ पोरिसिं साढपोरिसिंनुं पच्चरकाण ॥

॥उग्गएसूरे नमुक्कार सहिअं पोरिसिं साढपोरिसिं मुठ सहिअं पच्चरकाइ उग्गएसूरे चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नछणाभोगेणं सहसागारेणं पछन्नकालेणं दिसामोहेणं साहुवयणेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरे. ए पच्चरकाणमां मुठसहित लीधी तेथी एक आगार वध्योछे. इति ॥

अर्थ–पोरसिं के० प्रहर दिवस सुधी अने साढपोरसिं के० दोढ प्रहरसुधी पच्चरकामि के० नियम लउंछुं. इहां पुरुष प्रमाण शरीरनी छाया ज्यां होय, पण अधिक न्यून न होय तेने पोरसी कहिए. अथवा पुरुष जमणा काने सूर्यनुं

बिंब राखीने, दक्षणायनना प्रथम दिवशे ढींचण नी छाया जे वखते बे पगलां होय, ते वखते पोरिसी थाय. जेमाटे श्री उत्तराध्ययनमां कह्युं छे के ॥ आसाढेमासे डुपाया, पोसेमासे चउपाया चित्तासोएसुमासेसु, तिपया हवइ पोरिसी ॥ १ ॥ हानी वृद्धि ते ए प्रमाणे जाणवी. अंगुल सत्तरत्ते ण, पखेणं तुडुअंगुलं, वढ्ढएहाय एवावि, मासे णचउरंगुलं ॥ २ ॥ एटले पोरिसी एक प्रहरनी थइ. अने मुठसहिअंनो अर्थ पूर्वे लख्योछे.

असणं पाणं खाइमं साइमं के० अशन, पान, खा दिम अने स्वादिमनोनियम. हवे आगार कहेछे, ए क अन्नछणाभोगेणं के० अनाभोगे अजाणते विसा रवा थकी, बीजो सहसागारेणं के० सहसात्कारे.

त्रीजो पछन्नकालेणं के० प्रछन्नकालते सूर्य वादले अथवा रज प्रमुखे करी ढंकाइ जाय तेणे करी वखतनी बराबर खबर नपडे. एवां अजाण पणांए करी अधूरी पोरिसीयें पच्चखाण पालवा मां आवे. तो तेथी भंग नहीं, अने कदापि एरीते

अधूरी पोरिसीए जमवा बेगो छतां एटलामां तावडो जोयो अने जाण्युंजे हजी सवारछे, पोरिसीनो वखत पूर्ण थयो नथी, तेवारे जे मुखमां कोलीउ होय ते राखमां परठवीने बेसी रहे, अने पोरसी पूर्ण थया पछी जमवा बेसे तो पच्चरकाण भांगे नहीं

चोथो दिसामोहेणं के० दिशिने मूढपणे एटले अजाणते पूर्वने पश्चिम करी जाणे, एम अजाणतां वेहेलुं पलायतो पच्चरकाण भंगनहीं, अने थोडुं जम्या पछी कोइना कह्याथी जाणवामां आवे तो, मुखमानो कोलीउ थुकी नाखे. एरीते दिग्मोह टल्या पछी, अर्द्ध जम्यो बेसी रहे तो भंग नहीं.

पांचमो साहु वयणेणं के० साधुना वचने पोरिसी भणी, सांभली ने पाले तो पच्चरखाण भंग नहीं, पछी ज्यारे जाणवामां आवे के साधुतो छ घडीनी पोरिसी भणेछे तेवारे तेमज बेसीरहे तो पच्चरकाण भांगे नही. ए बे आगार भ्रमतानाछे.

छठो सव्वसमाहिवत्ति आगारेणं के० सर्व प्रकारे शरीरमां असमाधि रहे. एटले पच्चरकाण कर्या

पछी, तीव्र शुलादिक रोग उपन्ये थके अथवा सर्पादिके डंस्योहोय, एम अकस्मात् मरणांत असमाधि उत्पन्न थाय, तेवारे औषधादिकने कारणे पालतां पच्चख्काण भंग नथाय. अने समाधि थया पछी तेमज पाछलो विधि करे. इहां पण गुरु कहे वोसिरे, अने शिष्य जे पच्चख्काणनो करनारते वोसिरामि कहे.

ए पच्चख्काणमां मुठसहिअं साथे लीधी. तेथी महत्तरागारेणं ए आगार वध्योछे, तेनो अर्थ आम छे के, महत्तरके म्होटे कार्ये एटले जेटलो पच्चख्काणमां निर्झरानो लाभ थायछे; ते करतां पण अत्यंत म्होटो निर्झरानो लाभ जे कार्यमां थतो होए, अर्थात् कोइ ग्लान, प्रासाद, संघ अथवा देवना वैयावच्चने, अर्थे कोइ बीजा पुरुषथी ते कार्य न थइ शकतुं होय त्यारे गुरु तथा संघना आदेशथी मुठ सहीनो वखत पूर्ण थया विना जो पालवामां आवे तो पच्चख्काण भंग नथाय. अने ते कार्य पूर्ण थया पछी पाछलोज विधि समजवो.

॥ अथ ॥ पुरिमढ अवढनुं पच्चरकाण ॥

॥ सूरेउग्गए नमुक्कारसहिअं पुरिमढं अवढं मुट्ठसहिअं पच्चरकाइ सूरेउग्गए चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नछणाभोगेणं सहसागारेणं पछन्नकालेणं दिसामोहेणं साहुवयणेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तिआगारेणं वोसिरे.

अर्थ—सूरेउग्गए के० सूर्यना उदयथी मांमीने पुरिमार्द्ध के० पहेला बे प्रहरसुधी पुरिमढ कहीए, अने जो अवढनुं पच्चरकाण लेवुं होए तो उपर सूत्रमां अवढनुं नाम कहीए. अवढ एटले त्रीजा प्रहर सुधी अशनादिक चार आहार पच्चखुं, ए ना आगारोनो अर्थ प्रथम लखाइ गयोछे.

॥ अथ ॥ विगइनिविगइनुं पच्चरकाण ॥

॥विगइउ निविगइअ पच्चरकाइ अन्नछणा भोगेणं सहसागारेणं लेवालेवेणं गिहछसंसठेणं उरिकत्त विवेगेणं पडुच्च मरिकएणं पारिठावणियागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरे.

अर्थ॥ भोजन करतां जे थकी कामादिक उन्मा

दरूप विकार थाय तेने विगइ कहीए, ते विगइ छ प्रकारनीछे. एक दुध, बीजुं दहीं, त्रीजुं घृत, चोथुं तेल, पांचमो गोल, अने छठुं पकवान ए छ प्रकारनी विगइमांथी एकपण विगइनुं जे पच्चरकाण करवुं तेने विगइउ पच्चरकाण कहिए. अने समस्त विगइनुं जे पच्चरकाण करवुं तेने निविगइअ पच्चारकामि के० नीवी पच्चरकुं एटले नीवीनुं पच्चरकाण कहीए.

श्रावकने नीवीमांहे नीवियाता लीधा कल्पे नहीं, जो लागट तप मांड्यो होए तो तेमांहे त्रण दिवस पछी नीवियाता लीधा कल्पे.

अने साधुने तो एक नीवीमांहे नीवीयाता लीधा कल्पेछे अने विगिइआता तथा निवियाता नो नियम लीए तो, तेवारे आंयंबिल पच्चरके ते थी आंयंबिल मांहे जे कल्पे ते वस्तु टालीने बीजी सर्व वस्तुनो नियम लीए. हवे पच्चरकाण भंग ना भयथी जे आगार मोकला मूकेछे ते कहेछे.

एक अन्नछणाभोगेणं अने बीजो सहसागारे णं ए बे आगारनो अर्थ प्रथम लखाइ गयोछे

त्रीजुं लेवालेवेणं के० लेपालेप ते आवीरीते के घृत प्रमुख जे विगयनो नियम साधुने होय ते वी घृतादिक विगयथी गृहस्थनो हाथ खरडेलो हो य पछी तेने लुही नाख्यो होए, तेवा हाथथी अ थवा खरडेला चाटुवाने लुहीने ते चाटुवाथी व होरावे अथवा पीरसे तो पच्चरकाणभंग न थाय.

चोथुं गिहत्थसंसठेणंके० गृहस्थनुं जे वाटकी प्र मुख भाजन ते विगय प्रमुखे खरडघुं होय तेवा भा जनथी जे गृहस्थ अन्न आपे ते अन्न विगय प्रमुखे मिष्ट होए ने ते अन्न जमे तो पच्चरकाण भांगे नहीं.

पांचमुं उख्खित्तविवेगेणंके० गाढी विगयजे गो ल पकवानादिक तेना कटका रोटली उपर नाखी करी उपाडी परहां कर्यां होए तेवी रोटली प्रमुख लेतां पच्चरकाण भंग नथाय.

छठुं पडुच्चमख्खिएणंके० रोटला प्रमुखने लगारे क सुंहाला राखवाने अर्थे मोणदीधुं होए, अथवा लगारेक हाथ चोपडी कीधी होए ते रेचवाली रोटली प्रमुख तथा पुडलादिक लेतां पच्चरकाणभंग नथाय:

सातमुं पारिठावणियागारेणं. आठमुं मह्त्तरागारेणं नवमुं सव्वसमाहिवत्ति आगारेणं ए त्रण आगारनो अर्थ बीजापच्चरकाणोमां लखायोछे.

॥अथः-बेआसणातथाएकासणानु एबे पच्चरकाण॥

॥ उग्गएसूरे नमुक्कारसहिअं पोरिसिं साढपोरिसिं पुरिमढ्ढ मुठसहिअं पच्चरकाइ उग्गएसूरे चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नछणाजोगेणं सहसागारेणं पछन्नकालेणं दिसामोहेणं साहुवयणेणं मह्त्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्ति आगारेणं बेआसणं पच्चरकाइ तिविहं पिआहारं असणं खाइमं साईमं अन्नछणाजोगेणं सहसागारेणं सागारि आगारेणं आउंटण पसारेणं गुरुअभ्नुठाणेणं पारिठावणि आगारेणं मह्त्तरागारेणं सव्वसमाहि वत्तियागारेणं पाणस्स लेवेणवा अलेवेणवा अछेणवा बहुलेणवा ससिछेणवा असिछेणवा वोसिरे इति एकासण बेयासणनुं पच्चरकाणसंपूर्ण॥

अर्थ—उग्गएसूरे इत्यादिकनो अर्थ प्रथमना पच्चरकाणोमां लखाइ गयोछे अने ज्यां एकवार अश

नके० नोजन करवुं तेने एकासणु कहिए; अथवा ज्यां एकज आशनछे ते एकाशणु केहेवायछे, अने बे वार अशन एटले नोजन करीए तेने बेयाशणु कहिए; ते पच्चरकामिके० पच्चरकुंबुं एटले नियम लेवंबुं. इहां जो डुविहंपिआहारं करेतो बे आहार ते एक अशन अने बीजो खादिम छांमे, एटले ज म्या पछी एक पाणी अने बीजुं सोपारी प्रमुख स्वा दिम वस्तु लीए, तेवारे असणं खाइमंनो पाठ कहि ए अने जो तिविहंपिआहारं करेतो त्रण आहार ते अशन, खादिम अने स्वादिम ए त्रण आहारनुं प च्चारकाणकरे पण जम्या पछी एक पाणी मोकलुं राखे तेवारे असणं खाइमं साइमंनो पाठ कहिए तथा चउविहंपि आहार करेतो जम्या पछी चारे प्र कारना आहारनो त्याग करे हवे एना आगार कहेछे.

एक अन्नछणा नोगेणं बीजो सहसागारेणं ए बे अगारना अर्थ प्रथम लखाइ गयाछे.

त्रीजो सागारि आगारेणंके० साधु जमवा बे ठा पछी त्यां सागारिकजे गृहस्थ ते जोवा आ

व्यो, ते कोइ रीते जोतो रहे नहीं, एम गृहस्थनी नजर पडे तो साधु उठीने बीजे स्थानके जइ आहार लीए. केमके, गृहस्थने देखतां जमे तो महा दोष सिद्धांतमां कह्योछे. ए साधु आश्री कह्यो, अने गृहस्थ आश्रीतो गृहस्थ एकाशणु करवा बेठा पछी जेनी दृष्टीपडतांअन्न पचे नहीं, एवा कोइ पुरुषनी दृष्टी पडे अथवा सर्प आवे, चोरआवे, बंदीवान आवी उभोरहे, अकस्मात् अग्नि लागे, घर पडवा मांडे तथा अकस्मात् पाणीनी रेल आवे थके इत्यादिक कारणे ते स्थानकथी उठीने बीजे स्थानके जइ एकासणु करता थकां पच्चरकाण भंग थाय नहीं.

चोथुं आउटण पसारेणंके० पच्चरकाणे बेठा पछी हाथ पग जंघादिक अंगोपांग पसारतां तथा संकोचतां कांइ आशन चलायमान थाय तो पच्चरकाण भंग न थाय.

पांचमुं गुरुअप्पुठाणेणंके० पच्चरकाणेजमवा बेठा छतां गुरुजे आचार्य, उपाध्याय तथा साधु आवे थके तेमनो विनय साचववाने अर्थे बे पगने

गमे राखी उठवुं पडे तो पच्चरकाण भंग न थाय.

बहुं पारिठावणि आगारेणंके० वधेलो आहा र परठववो पडे तेवारें गुरुनी आज्ञाए एकाशणा दिकथी मांमीने उपवास लगे पच्चरकाण वालो ते वधेलो आहार लीए तो पच्चरकाण भंग न थाय, माटेज पच्चरकाण निर्युक्तिमां कह्युंछे. विहिगहिश्रं निहिउत्तं उद्दरिश्रं जंनवे असणमाइश्रं गुरुणाणु न्नायंकप्पइ आंबिलाईणं ॥ १ ॥ ए आगार यति ने होय पण श्रावकने न होय तथापि आलावो त्रुटे तेमाटे पाठ कहेतां दोष नथी.

सातमु महत्तरागारेणं अने आठमु सव्वसमाहिव त्तिआगारेणं ए बे आगारना अर्थ लखाइ गयाछे.

हवे पाणस्स आगार कहीए छैए. जो तिविहा रे तथा चउविहारे करी एकासणु प्रमुख पच्च रकाण कर्युं होय तो अवश्य पाणस्सना आगार कहीए अने जो डुविहारे करी. एकाशणु प्रमु ख पच्चरकाण कर्युं होए अने तेमां अचित्त भोजी अचित्त पाणी पीवामां लीए तो पण पाणस्सना

आगार कहीए. अने डुविहार पच्चक्काणमांहे स चित्त आहार लीए तथा सचित्तपाणी पीए, तेवारें पाणस्सना आगार न कहीए. पाणस्सके० पाणी तेपाणी केहेवुं? तोके लेवेणवाके० जेणेकरी नाजना दिक खरडाए, ते उसामण गलीने पीए तो पच्च क्काण नंग न थाय. ए पाणी लेप युक्त कहीए.

बीजुं अलेवेणवाके० अलेपकृत पाणी ते कां जी प्रमुखनुं तेने गली पीए तो पच्चक्काण न नांगे.

त्रीजुं अछेणवा के० अछ निर्मल उकाल्यां पाणी प्रमुखने पीए तो पच्चक्काण नंग न थाय.

चोथुं बहुलेणवाके० बहु दोहोलुं चोखा प्रमुखनुं धोवण तेने गलीने पीए तो पच्चक्काण नांगे नहीं.

पांचमुं ससिछेणवाके० सिछसहित दाथरा प्रमुख नुं धोवण तेने गलीने पीए तो पच्चक्काण न नांगे.

छठुं असिछेणवा के० सिछरहित कणक प्रमु खे हाथ खरड्यो होए तेनुं धोवण गली पीए तो पच्चक्काण नांगेनहीं, ए छ आगार पाणीना कह्या, ते टाली बीजा पाणीने वोसिरामिके० वोसिरावुंछुं.

अथ ॥ एकलगणानुं पच्चरकाण एकासणा प्रमाणेछे पण तेमां सात आगारछे, माटे एक आउंटणपसारेणं ए आगार नकहेवो.

॥ अथ आयंबिल पच्चरकाण लिख्यते ॥

॥ उग्गएसूरे नमुक्कारसहिअं पोरसिंसाढपोरसिं मुठसहिअं पच्चरकाइ उग्गएसूरे चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नछणाभोगेणं सहसागारेणं पछन्नकालेणं दिसामोहेणं साहुवयणेणं महत्तरागारेणं सव्वसामाहिवत्तियागारेणं आयंबिलंपच्चरकाइ अन्नछणाभोगेणं सहसागारेणं लेवालेवेणं गिहछसंसठेणं उखित्तविवेगेणं पारिठावणीआ गारेणं महत्तरागारेणं सव्व समाहिवत्तियागारेणं एगासणंपच्चरकाइ तिविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अन्नछणाभोगेणं सहसागारेणं सागारिआगारेणं आउटण पसारेणं गुरुअप्नुठाणेणं पारिठावणियागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं पाणस्सलेवेणवा अलेवेणवा अछे

णवा बहुलेणवा ससिच्छेणवा असिच्छेणवा वोसि रे ॥ इतिआयंबिलं पच्चरकाण समाप्तः ॥

अर्थ ॥ आयंबिलं पच्चरकामि के० आंबिल पच्चरकुं छुं. एक अन्नछणा नोगेणं बीजुं सहसागरेणं त्रीजुं लेवालेवेणं के० तेमां जे विगय तथा शाकादिकने सस्नेहले आंगुली तथा नाजनादिक खरडयुं होय तेने लेप कहिए. अने तेनेज घणी सारीरीते लुंछी नाख्युं होय ने जेमां विगयादिकना अवयव कांइपण देखाय नहीं तेने अलेप कहिए. एवा लेप अलेप वाला नाजन होय अथवा हाथ लेपालेप वाला होए, एवा कांइ लेप अलेपवाला नाजने तथा हाथे पीरसवा थकी पच्चरकाण नंग नथाय एने लेपालेप आगार कहिए.

चोथुं गिहछ संसछेणं के० गृहस्थे पोताने अर्थें हाथ तथा चाटुआदिकने विगयेंकरी खरड्या होय, तेवा हाथे अथवा चाटुवादिके आपे ते अन्न जमतां थकां आंबिल नंग नथाय.

पांचमुं उखित्तविवेगेणं के० गाढी विगय जे

गोल पकवानादिक ते रोटली उपर मूकीने फरी परहिं करी होय ते रोटली नीवी आंबिलमां लेतां पच्चरकाण नंग नथाय.

बठुं पारिठावणि आगारेणं के० परठव तो आहारलेतां एटले कोइए अधिक वोहोरयुं हो ए अने ते तेने परठववानुं होय ते परठवतां घ णीज अजयणा लागे अने तेज विगय प्रमुखनुं पो ताने पच्चरकाण होए अथवा पोते उपवासादिक तप कर्युं होए तेम बतां पण, गुरुनी आज्ञाये तेवा आहारने लेवा थकी पच्चरकाण नंग नथाय.

सातमुं मह्त्तरागारेणं के० महोटी निर्जराने लाने पच्चरकाण नांगे नहीं. आठमुं सव्वसमाहिवत्ति आगारेणं के० सर्व प्रकारे शरीर असमाधिए पच्च रकाण नांगे नहीं; वोसरामि ए अर्थ सुलनठे.

॥ अथ ॥ चउविहार उपवासनुं पच्चरकाण ॥

॥ सूरेउग्गाए अनत्तठं पच्चरकाइ चउविहंपि आ हारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नञणानोगेणं

सहसागारेणं पारिठावणियागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरे ॥ इति ॥

अर्थ–सूर्यना उदयथी मांमीने अनत्तठंपञ्च रकामिके० अनक्तार्थनो नियम लउंछुं, चउविहंपि आहारं के० चारे आहारनो नियम लउंछुं तेनां नाम कहेछे. एक अशन, बीजो पान, त्रीजो खादिम अने चोथो स्वादिम हवे एना आगार कहेछे.

एक अन्नछणानोगेणं, बीजो सहसागारेणं, त्रीजो पारिठावणीआगारेणं, चोथो महत्तरागारेणं अने पांचमो सव्वसमाहिवत्तिआगारेणं ए बधाना अर्थ पूर्वे लखाइ गयाछे,

तथापि पारिठावणिआगारेणंनुं विशेष एटलुंज छे के, पाणी अने आहार ए बे वाना वापरवानां होए तो गुरुनी आज्ञाये आहार कीधो कल्पे पण एकलो आहारज कोइ परठवतो होय तो ते आहार कीधो कल्पे नहीं, केमके चउविहारमां पाणीनो नियमछे अने पाणीविना मुख शुद्ध न थाय माटे पाणी अने आहार ए बेवाना कोइ प

रववतो होय तो चउविहार उपवासमां लीधा कल्पे अने तिविहार उपवासमांतो पाणी मोकळुं छे, माटे एकलो आहार कोइ परववतो होय तो पण गुरुनी आज्ञाये लीधो कल्पे.

अथ ॥ तिविहार उपवासनुं पच्चरकाण ॥

॥सूरेउग्गए अभ्भत्तठं पच्चरकाइ तिविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अन्नछणाभोगेणं सहसागारेणं पारिठावणिआगारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं पाणहारपोरसिं साढपोरसिं मुठसहिअं घर सहिअं पच्चरकाइ उग्गएसुरे पुरिमढं अवढं पच्चरकाइ अन्नछणाभोगेणं सहसागारेणं पछन्नकालेणं दिसामोहेणं साहुवयणेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं पाणस्सलेवेणवा अलेवेणवा अछेणवा बहुलेवेणवा ससिछेणवा असिछेणवा वोसिरे ॥ इति

अर्थ—सूरेउग्गए के० सूर्यना उदयथी आरंभीने अभत्तठंके० अभक्तार्थ एटले उपवास प्रत्ये पच्चरकामिके० पच्चरकुंछुं, तिविहंपिआहारंके० त्रि

विहारे एटले एक पाणीनो आहार मोकलो, बा कीना असणं के० अशन अने खाइमं के० खा दिम तथा साइमं के० स्वादिम ए त्रण आहार न करवा. हवे एना आगार कहेछे.

एक अनछणाजोगेणं, बीजो सहसागारेणं, त्रीजो पारिठावणिआगारेणं, चोथो महत्तरा गारेणं, पांचमो सव्वसमाहिवत्ति आगारेणं एना अर्थ जखाणा छे.

ए पच्चरकाणमां पाणहार के० पाणीनो आ हार मोकलोछे तेनी अवधि तथा आगार कहे छे. उग्गएसूरे के० सूर्यना उदयथी प्रारंजीने पो रिसिं के० प्रहर लगें साढपोरिसिं के० दोढ प्रह र लगे मुठसहियं के० नोकार गणी मुठ मोकली मुके तेवारे पच्चरकाण मोकलुं थाय. घरसहिअं के० पोताने घेर. जई नवकार गणि पच्चखाण पारुं.

उग्गए सूरे के० सूर्योदयथी प्रारंजीने पुरिमढ्ढं के० बे प्रहर लगे अवढ्ढं के० अवढ्ढलगे पच्चरकामि के० पच्चखुंछुं. हवे पाणी न पीवाना वखत सुधीना आ

गार कहेछे.एक अन्नबणाभोगेणं,बीजो सहसागा रेणं, त्रीजो पच्छन्नकालेणं,चोथो दसामोहेणं, पांच मो साहुवयणेणं, छठो महत्तरागारेणं, सातमो सव्वसमाहिवत्ति आगारेणं. एना अर्थ लखाणाछे.

॥ हवे पाणस्स के० पाणी पीवाना छ आगार छे ते कहेछे. ॥ लेवेणवा के० लेपजलते खजुर नुं तथा आछण,बीजो अलेवेणवा के० अलेप ज ल ते उसामण,त्रीजो अछेणवा के० निर्मल उष्ण पाणी,चोथो बहुलेवेणवा के० मोहनुं एटले अन्न नुं धोअण, पांचमो ससिछेणवा के० सीथ सहित पीठानुं धोअण,छठो असिछेणवा के० सीथ रहित फासूजल एटलां टाली बाकीनां पाणीने वोसिरा मि के० वोसिरावुं छुं. ॥

॥ चउछभत्तनुं पच्चरकाण ॥

अर्थ ॥ सूरेउग्गए के० सूर्यना उदय थकी चउछ भत्तं के० चार भातनुं अभत्तठं के० अन्न कार्थ ते पच्चरकामिके० पच्चखुं,छुसूरेउग्गए छठ

भत्तंअभत्तठं पच्चरकामि सूरेउग्गए अठमभत्तं अभत्तठं पच्चरकामि; एना अर्थ सुगमछे.

अंहीं पच्चरकाणने प्रसंगे दश विगय मांहेला छ भक्ष विगयछे, ते प्रत्येकना पांच पांच निवीता करतां त्रीश निवीता थायछे ते कहेछे.

प्रथम दुध विगयना पांच निवीता कहेछे. एक कांजीमां दुध नाखीए ते दुध घणुं होय अने चोखा थोडा होय तेने पेया कहेछे, बीजो खाटी छाश सहितजे दुध, अर्थात् दुधमां खटाश नाखी पचावीए तेने दुध्धठी कहेछे. त्रीजो द्राक्षादिक नाखीने रांधेलो जे दुध तेने पयसाडी कहेछे. चोथो चोखानो थोडो लोट नाखीने रांधेलुं जे दुध तेने अवलेही कहेछे. पांचमो चोखा घणा अने दुध थोडुं, एरीते रांधेलु होय तेने खीर कहेछे.

हवे दहींना पांच निवीता कहेछे. एक दहींने घोलीने अथवा उकालीने तेमां वडां घाले तेने घोलवडां कहेछे. बीजुं दहीं घोलीने वस्त्रमांथी गाली ए तेने मथ्युं अथवा गाख्युं दहीं कहेछे. त्रीजुं दहीं

ने हाथथी मथन करी तेमां खांम अथवा शाकर नेळीए तेने शिखरणी अथवा शीखंम कहेछे. चोथुं दहीं अने रांधेला चोखा एकठाकरीए तेने करबो कहेछे, पांचमुं लुण नाखीने जे दहीं मथन करेलुं होय तेने सलवण कहेछे.

हवे घृतना पांच निवीता कहेछे. एक औषधे करी पकावेलुं घृत तेने पक्कघृत कहेछे. बीजुं घृतनी कीटी जे मल थायछे ते वघारि प्रमुख. त्रीजुं जे घृतमां कोइ औषधी पकावी होय तेना उपरनी तरीनुं घृत तेने पक्कौषधी घृत कहेछे. चोथुं पकवान तरतां बळेलुं घृत तेने निर्भंजण कहेछे, एटले त्रण घाण तल्या पछीनुं रहेलुं घृत अथवा सीरादिक उपरनुं घृत जाणवुं. पांचमुं दहींनी तरीमां घहुनो लोट नाखीने जे तावडे पकावीए तेने वीसंदण कहेछे.

हवे तेलना पांच निवीता कहेछे. एक तिलकुटी मांहे जो घोळादिक द्रव्य फाकुं होय तो. बीजी तेलनी मली. त्रीजुं लाक्षादिक द्रव्येकरी

पकावेलुं तेल. चोथुं पाकेला औषधनी तरी. पांचमुं घाण पडवाडेनुं बलेलुं तेल.

हवे गोल विगयना पांच निवीता कहेछे. एक अर्धो काढेलो सेलडीनो रस, बीजो गुलवाणुं, गोलनी राब, गोलना पाणीमां लोट नाखे ते, त्रीजो शाकरनी जात. चोथो खांडनी जात सर्व जाणवी, पांचमो गोलनी पाती.

हवे कडाविगयना पांच निवीता कहेछे. जो एक खाजां वडे कडाइ भराइ गइ होय तो तेथी बीजुं खाजुं निवीयातुं थायछे, पण तेमां मात्र बीजुं घृत नाखवुं न जोयें, तेज घृत वडे पकावीये तेने प्रथम निवीयातो कहीए. बीजुं एकनी उपर एक नाखीए एम त्रण घाण उपरांत तेज घृतमां जे बीजो पकावीए ते बीजो निवीयातो जाणवो. त्रीजो गोलधाणी प्रमुखनो निवीयातो जाणवो. चोथो पाणी गोल घृत एकठां उकाली पछी ते पाणीमां लोट नाखी रांधेली लापशीनो निवीयातो जाणवो. पांचमो निवीयाते करी चोपडी

काढाडेला तावडानी उपर पुडला प्रमुख करे ते, पांचमो निवीयातो जाणवो.

॥ अथ छठ अठमादिक तप करेने बीजा दिवशादिके पाणी वावरवुं होय त्यारे पाणहारनुं पच्चरकाण करे ते कहेछे.

॥पाणहार पोरसिं मुठसहिअं पच्चरकाइ अन्नछणा नोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तिआगारेणं पाणसलेवेणवा अलेवेणवा अछेणवा बहुलेणवा ससिछेणवा असिछेणवा वोसिरे इति

अथ ॥ गंठसहिअं आदि अभिग्रहोनुंपच्चरकाण ॥

॥गंठसहिअं वेढसिअं दिपसहिअं थिबुगहिसअं मुठसहिअं पच्चरकाइ अन्नछणा नोगेणं सहसागारेणं महत्त रागारेणं सव्वसमाहि वत्तियागारेणं वोसिरे ॥

॥अथ ॥ नियमधारनारने देसावगासिकनुं पच्चरकाण॥ देसावगासिअं उवनोगं परिनोगं पच्चरकाइ अन्नछणा नोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तिया गारेणं वोसिरे. इति ॥

अर्थ—देसावगासिअं के० दिशिना अवकाशनुं

व्रत अथवा बधा नियम आश्रीतो देस के० थो डामां अवकाश आपे ते देशावगासिक व्रत कहीए. एटले इहां एकली दिशिनुंज पच्चरकाण करे, तेवारें उवजोग परिजोगनो पाठ न कहिए तेने देसावगासिअं पच्चरकामिज कहिए. उवजोग के० एकवार जोगवीए एवा आहार तथा विलेपनादिक तेने उपजोग कहिये. अने परिजोग के० वारंवार जोगविए एवी वस्तु जे आजरण वस्त्रादिक तेनुं प्रमाण करे एटले जे चौद नियम संजारे तेने ए पाठ कहिए; एना आगारोनो अर्थ सुजनछे.

अथ ॥ चउदनियमनी गाथा कहेछे. ॥

सचित्त दव्व विगई॥वाहणह तंबोल वछ कुसुमेसु॥
वाहण सयणविलेवण बंजंदिसि न्हाणजत्तेसु॥१॥

अर्थ–पेहेलुं सचित्त के० पाणी, फल, बीज, दातण, कण प्रमुख सचित्त चीजनुं प्रमाण करे. बीजुं दव्व के० जे वस्तुनो जिन्न स्वाद ते द्रव्य कहीए, तेनुं मान करे. त्रीजुं विगइ के० घृत प्रमुख छ विगयमां जेटली खावाने मोकली राखवी

होय तेनुं मान करे, उपरांत निषेध करे. चोथो वाहणह के० उपानकते पगरखानुं मान करे. पांचमुं तंबोल के० पान सोपारी प्रमुख सर्वेने तंबोल कहीए तेनुं मान करे. छठुं वत्थ के० वस्त्र जे पोताना शरीरे वापरवानां होए तेनुं मान करे. सातमुं कुसुमेसुके० फूलनुं मान करे. आठमुं वाहण के० वाहनते अश्व, पालखी, मोली, गाडां प्रमुख जे वाहन तेनुं मान करे. नवमुं सयण के० सय्या तथा आशन प्रमुखनुं मान करे. दशमुं विलेवण के० चंदन तेल प्रमुख विलेपन करवानी वस्तुनुं मान करे. अगीआरमुं बंभ के० ब्रह्मचर्य पालवाने मैथुननी मर्यादा करे. बारमुं दिसि के० दिशिविदिशिनुं मान करे. तेरमुं न्हाण के० स्नान कंकोडी प्रमुखे नावुं तथा अंगोलीनुं मान करे. चौदमुं भत्तेसु के० भात पाणीनुं मान करे. इति चौद नियम गाथार्थ. ॥

॥अहींयां बीजा नियमछे ते प्रसंगे लखीयेछैये॥

पन्नरमुं पृथ्वीकाय आश्री माटी, मीठुं, खडी

प्रमुख पोताने निमित्ते वावरे तो तेनुं प्रमाणकरे.

सोलमुं अप्पकाय आश्री पाणी पीवामां अथवा न्हावा प्रमुखमां वापरवामां आवे तेनुं प्रमाणकरे.

सत्तरमुं तेउकाय आश्री पोताना शरीरना जोगोपजोगमां चूला,चाडी, सघडी, अंगीठी प्रमुख नुं रांध्युं, नीपज्युं,तपाव्युं,शेक्युं तेनुं प्रमाण करे.

अढारमुं वायुकाय आश्री पंखा, हिंचोला, प डदा लुगडादिकथी पवन करवानुं प्रमाण करे.

उगणीसमुं वनस्पतिकाय आश्री लीलां फल फूल, शाक,दातण प्रमुख खाधा वावरवानुं प्रमाण करे

वीशमुं त्रशकाय जे त्रास पामे एवाजीव ते कीडी, कीडा, विंछी, गाय, मच्छ, पक्षी, मनुष्य,देव नारकादिक मांहेला कोइ जीवने विना अपराधे संकल्प करी मारुं नहीं, तेनो नियम करे.

एकवीशमुं असी ते तरवार, जाला, तीर, छुरी कोश, कोदाल, पावडा, घरटी प्रमुख जीव घात क रनार वस्तुनो नियम करे.

बावीशमुं मसी ते शाइना खडीआ कलम प्रमु ख वापरवानुं प्रमाण करे.

त्रेवीशमुं कृसी ते जमीन खोदवादिक घर, हाट, क्षेत्र प्रमुख तलाव कुपादिकने खोदवा तथा तेना श स्त्रनो नियम करे ए चौदे नियमादि त्रेवीश बोलजे छे,ते जेवीरीते पोताथी पले तेवीरीते अवश्य पाले.

॥ अथ सांजना पच्चरकाण ॥

॥ बेआसण एकासण निविगइ आयंबिल उपवा स छठ अठमादि तपकरनार उभजल वावरे ते सांजेपच्चरकाण करे ते पाणहारनुं पच्चरकाणलीए.

॥ अथ पाणहार दिवसचरिमनु० ॥

॥ पाणहार दिवसचरिमं पच्चरकाइ अन्नछणा भोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहि वत्तियागारेणं वोसिरे ॥ इति ॥

॥ अथ राते चौविहार करवो तेनुं पच्चरकाण ॥

॥ दिवसचरिमं पच्चरकाइ चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नछणा भोगेणं सहसागारे णं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणंवोसिरे.

अर्थ॥दिवसचरिमं के० दिवसना छेडाथी मांमीने नवो सूर्य उगे त्यांसुधी पच्चरकामि के० पच्चरकुछुं. चउव्विहं पिआहारं के० चउविहार तेचार प्रकार ना आहारने पच्चरकुंछुं; एना बीजा अर्थ सुगमछे.

॥ अथः रात्रे तिविहार एटले एक पाणी मो कलुं राखे तेनुं पच्चरकाण ॥

॥ दिवसचरिमं पच्चरकाइ तिविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अन्नडणाभोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसामाहि वत्तिया गारेणं वोसिरे.

॥ अथ रात्रे डुविहार एटले पाणी अने स्वा दिम मोकलुं राखे तेनुं पचरवाण ॥

॥ दिवसचरिमं पच्चरकाइ डुविहं पिआहारं अस णं खाइमं अन्नडणा भोगेणं सहसागारेणं मह त्तरागारेणं सव्वसमाहि वत्तियागारेणं वोसिरे. इति॥

॥ अथः पच्चरकाणना आगारनी गाथा ॥

॥ दोचेव नमुक्कारें, आगारा छच्चेव पोरसिए उ ॥ सत्तेवइ पुरिमड्ढे, एकासणंमि अठ्ठेव ॥ १ ॥ सत्तेमगाणेसुअ, अठ्ठेवय अंबिलंमि आगारा, पंचे

वयनत्ते, बप्पाणे चरिमचत्तारि ॥ २ ॥ पंचचउ
रो अभिग्गहो, निव्वीएअठ नव आगारा, अप्पाउर
णे पंचउ ॥ हवंतिसेसेसुचत्तारि ॥ ३ ॥

हवे ब प्रकारे पच्चरकाण सुद्ध होयछे ते कहेछे.

॥फासिअं, पालिअं, सोहिअं, तीरिअं, किट्टिअं, आराहिअं, जंच नआराहिअं, तस्समिच्छामिदुक्कडं

अर्थः—पच्चरकाण विधेकर्युं उचित्त वेलायें जे प्राप्त थयुं तेने फासिअं कहिए. पच्चरकाण वारंवार उपयोग देइने संभारवुं तेने पालिअं कहिए. प्रथम गुरुने आहारपाणी देइ थाकतुं भोजन करवुं तथा अतिचार न लगाडवुं तेने सोभित कहिए. तीरिअं के० पच्चरकाण पुगा पछी पण थोडो अधिक काल थये पालवुं, निर्मल करवुं. किट्टिअं के० भोजन वेलाए अमुक माहारे पच्चरकाणछे, एम संभारवुं. आराहिअं के० पच्चरकाण जे रीते कीधुं तेरीते आराध्युं. ए ब सुधी जाणवी. जंचनाराहिअं के० जेमें पच्चरकाण न आराध्युं होए, अतिचार लगाड्या होए. तस्समिच्छामि दुक्कडं के० ते माहारुं पाप

मिथ्या थाउ. एवा पचरकाणोने विषेज विवेकी पुरुषे उद्यम करवो; केमके शुद्ध धर्मने प्रनावे जीव मोक्ष प्रमुखनां सुख पामे.

अथःसाधुजीने चौदप्रकारना दाननी निमंत्रणा करवी ते लखीए ढैए. ॥

॥ पच्चरकाण कस्था पढी बे ढींचण अने मस्तक नूमिए लगाडी, मावे हाथे मुखे मुहपति देइ जमणो हाथ गुरुने पगे लगाडी आवीरीते कहे.

॥इच्छाकारि नगवन् पसायकरी फासुअं एसणिज्जेणं असणं पाणं खाइमं साइमेणं वच्चपडिगह कंबल पायपुच्छणेणं पाडिहारिअ पीढ फलग सिद्यासंथारएणं उसह नेसज्जेणं नयवं अणुग्गहो कायव्वो.

अर्थ–इच्छाकारी नगवन्, पसाय करी प्राशुक एटले अचित्त एसणिज्जेणं के० एषणिकते सुजतो एटले जे साधुने कल्पे एवो आधाकर्मादिक दोष रहित अशन, पाणी, खाइमं के० सुखडी, साइमं के० सुंठ हलदर, प्रमुख वच्च के० वस्त्र चोलपटादिक पडिग्गह के० पढगादिक पात्रा प्रमुख, कंबल

के० कांबली, पायपुञ्छणेणं के० बेसवानुं पोंछणु, पाडिहारि के० अण वोहोरी वस्तुजे गृहस्थनाज थकां वावरीने पछी गृहस्थने पाछी अपायछे. ते वी वस्तुजे पीठ के० बाजोट, फलग के० पाटीउं, सिज्जा के० वस्ति; एटले रहेवानुं उपाश्रय संथार एणं के० पाट अथवा माल प्रमुख वली उसह के० औषध जे क्वाथ, चूर्ण, गोली प्रमुख एकज वस्तु होए ते जेसज्जेणं के० त्रिगडू, त्रिफला प्र मुख ए पूर्वोक्त वस्तुए करी जयवं के० हे जगव न् गुरुजी अणुग्गहो कायव्वो के० अनुग्रह करवो एटले जे जोइए ते वोहोरजो.

॥ अथ पच्चखाण पारवानो विधी ॥

॥ प्रथम इरियावहियाए पडिकमीयें जावत् ज गचिंतामणीनुं चैत्यवंदन जयवीयराय सुधि करवुं.

पछी मन्हजिणाणंनी सज्झायकही मुहपत्ति प डि लेहेवी. इच्छामी० इच्छाका० पच्चखाणपारुं, य थाशक्ति इच्छामी० इच्छाका० पच्चख्काण पार्युं, तह त्ति एमकही जमणो हाथ कटासणा चरवला उपर

थापी एक नवकार गणी पच्चखाण कर्युं होय ते कही पारवुं ॥ ते लखिए छेए. ॥

उग्गएसूरे नमुक्कारसहिअं पोरसिं साढपोरसिं गंठसहिअं मुठसहिअं पच्चरकाण कर्युं चौविहार आंबिलनीवि एकासणु बेआसणु कर्युं, तिविहार पच्चखाणफासिअं पालिअं सोहिअं तीरिअंकिट्टिअं आराहिअं जंचन आराहिअं तस्समिच्छामिदुक्कडं.

॥ अथ सामायकलेवानोविधी ॥

॥ प्रथम उंचें आसनें पुस्तकप्रमुख मुकीनें श्रावक श्राविका कटासणुं मुहपति चवलो लेइ, शुद्ध वस्त्र जग्या पुंजी. कटासण उपर बेसी, मुहपति माबा हाथमां मुखपासें राखी, जमणो हाथ थापनाजी सनमुख राखी एकनवकार गणि पंचिंदिअ कही, इच्छामि खमासमण देइ इरियावहिया, तस्सउत्तरी, अन्नछउस सिएणं कही, एक लोगस्सनो अथवा चार नवकारनो काउस्सग्ग करी, पारी, प्रगट लोगस्सकही, खमासमण देइ, इच्छाकारेण संदिसह भगवन्, सामायक मुहपति

पडिलेवं इछं एमकहि मुहपति अंगनी पडिलेह
णना पचाश बोलकही, मुहपति पडिलेहीएं. ख
मासमणदेइ० इछाकारेण संदिसह नगवन् सामा
यक संदिसाहुं. इछं वली खमासमणदेइ, इछा०
सामायक गउं, इछं एमकहि बे हाथ जोडी
एक नवकार गणी, इछकारी नगवन्, पसायकरी
सामायक मंमक उच्चरावोजी. वलिन करेमिनंते
कहे. पठी खमासमणदेइ इछा० बेसणे संदिसाहुं
॥ खमा० ॥ इछा० ॥ बेसणे गउं. खमा० ॥ इ
छा० ॥ सझाय संदिसाहुं ॥ खमा० ॥ इछा०॥
सझायकरुं इछं ॥ एमकहि त्रण नवकार गणवा,
पठी बेघडी सझाय धर्म ध्यान करवुं ॥ इति सा
मायक लेवानो विधिसमाप्तम्. ॥

॥ अथ सामायक पारवानो विधि ॥

॥ खमासमणदेइ इरियावहि पडिक्कमाथी
जावत् लोगस्ससुधी कही खमा० ॥ इछा० ॥
मुहपति पडिलेहुं कही, मुहपति पडिलेहि, खमा
समणदेइ, इछा० ॥ सामायक पारुं: यथासक्ति

वली खमासमणदेइ, इछा० ॥ सामायक पारुं; तहत्ती कही, पछी जमणोहाथ चवलाउपर अथ वा कटासणाउपर थापी,एक नवकार गणी सामा इय वयजुत्तो कहियें. पछी जमणो हाथथापना सन्मुख संवलो राखी ने एक नवकार गणीयें.

॥ अथ पडिलेहण करवानो विधि ॥

॥ नवकार पंचिंदिय कही इरिया वहियाए स्थापना होय तो नवकार पंचिंदिय न कहेवुं. पछी तस्सुत्तरी कही, एक लोगस्स अथवा चार नवकारनो काउस्सग्ग करी, प्रगट लोगस्स कही उन्ने पगें बेसी, मुहपति, कटासणु, चवलो, उत्त रासण, धोतीउं, कंदोरो आदे पडिलेहवां, पछी काजो काहाडी जीव कलेवर सचित आदे जोवुं. पछी काजो काहाडनार थापनाजी सन्मुख उनो रही इरियावहि पडिक्कमे, पछी काजो परठववा जग्या सोधि त्रण वार अणुजाणह जस्सग्गो कही काजो परठवे, पछी त्रण वार वोसिरे कहे.

॥ इति पडिलेहण करवानो विधि ॥

॥ अथ देव वांदवानो विधि ॥

॥ प्रथम इरियावहि पडिक्कमवाथी मांमीने जावत् लोगस्स कही, पछी उत्तरासण नांखीने चैत्य वंदन नमुत्थुणं कही, जयवीअराय आ नव मखं मासुधी अर्द्धो कहे. वली बीजुं चैत्यवंदन करी, नमुत्थुणं कही जावत् चार थोयो कहीये. वली नमुत्थुणं कही यावत् बीजी चार थोयो कहीए त्यांसुधी बधुं केहेवुं, पछी नमुत्थुणं तथा बे जावंतीकही, एटले जावंति चेइआइं तथा जावंत केविसाहु ए बे कही. उवसग्गहरं अथवा स्तवन कही, अर्द्धो जय वीअराय आनव मखंमासुधि कही, पछी चैत्यवंदन कही नमुत्थुणं कही संपूर्ण जय वीअराय केहेवा. प्रनाते देववांदवा तेहमां मन्हजिणाणंनी सफाय केहेवी, मध्यान्हे तथा सांफे देव वांदे तेहमां सफाय नकहे ॥ इति ॥

॥ अथ देवसि प्रतिक्रमण विधी प्रारंनः ॥

॥ प्रथम सामायक लिजे. पछी पाणी वापर्युं होयतो मुहपती पडिलेहेवी, अने आहार वाव

थयो होयतो वांदणां बे देवां, त्यां बीजा वांदणामां आवसीआए ए पाठ न केहेवो. यथा शक्ति पच्च स्काण करवुं. खमासमण देइऽच्छाकारेण कही, वडेरा अथवा पोते चैत्य वंदन कहिने पछी जिंकिं चि नमुत्थुणं कही, उन्ना थईने अरिहंतचेईयाणं कहिने एक नवकारनो काउस्सग्ग करी नमोऽर्हं त० कहिने प्रथम थोय केहेवी. पछी लोगस्स, सव्वलोए, अरिहंतचेईयाणं कहिने एक नवकारनो काउस्सग्ग पारीने बीजी थोय केहेवी. पछी पुस्क रवरदी कही, सुअस्स नगवउ करेमि काउसग्गं वंदण० एक नवकारनो काउसग्ग पारी त्रीजी थोय कहेवी. पछी सिद्धाणं बुद्धाणं कही वेयावच्च गराणं० करेमि काउसग्गं अनत्थ० ॥ पछी एक नवकारनो काउसग्गपारी, नमोऽर्हत० कही, चोथी थोय केहेवी. पछी बेसीने नमुत्थुणं केहेवुं. पछी चार खमासमण देवा पुर्वक नगवान, आ चार्य, उपाध्याय सर्वसाधुन्यः प्रत्यें वंदन करीयें. पछी इच्छाकारेण० ॥ देवसि प्रतिकमणे ठाउं एम

कहि, जमणोहाथ चवला कटासणाउपर थापीनें इछं सव्वसवी देवसिअ० केहेवुं. पछी उनाथइ करेमिभंते इछामि ठामि काउसग्गं जोमें देवसिउ तस्सउत्तरी० कही, पछी आठ गाथानो काउसग्ग करवो. ॥ आठ गाथा न आवडे तो आठ नवकारनो काउसग्ग करवो ते पारीने, पछी लोग्गस कहेवो. ॥ बेसीनें त्रीजा आवश्यकनी मुहपती पडिलेहीने वांदणा बे देवां. पछी उना थइने इछा का० देवसिअं आलोउं इछं आलोएमि जोमेदेवसिउ कहीने, पछी सातलाख कहेवा. पछी अढार पापस्थानक आलोइने सव्वस्सवि देवसिअं कहीने बेसवुं. बेसीने एक नवकार गणी पछी करेमिभंते ईछामि पडिक्कमिउं कहीने, वंदितु कहेवुं, पछी वांदणां बे देवां. पछी अब्भुठिउहं अभ्भिंतर देवसिअं खामीने वांदणांबे देवां. पछी उना थइ आयरीय उवझाए कहीने, करेमिभंते इछामि ठामि काउसग्गं जोमें देवसिउ० तस्सउत्तरी० कही, पछी बे लोगस्सनो अथवा आठ नवकार

नो काउसग्गपारीने पछी लोगस्स प्रगट कहेवो. प छी सव्वलोए, अरिहंतचेईयाणं, वंदणवत्तिआए कही, एकलोगस्स अथवा चार नवकारनो काउ सग्ग पारीने, पुखरवरदी० सुअस्सभगवउ० करे मि० वंदण० एक लोगस्स अथवा चार नवका रनो काउसग्ग पारीने, सिद्धाणं बुद्धाणं० कही सुअ देवयाए करेमि काउसग्गं एक नवकारनो काउसग्ग पारी नमोऽर्हत० कही, पुरुषे सुअदे वयानी पेहेली थोय कहेवी, अने स्त्रीये कमलद लनी पेहेली थोय कहेवी. पछी खेत्रदेवयाए क रेमि काउसग्गं० एक नवकारनो काउसग्ग पारी नमोर्हत० कही क्षेत्र देवयानी बीजी थोय स्त्रीये तथा पुरुषे बने ने कहेवी. पछी प्रगट एक नव कार गणी बेसीने, छग आवश्यकनी मुहपती प डिलेही, बे वांदणां आपीए. पछी सामायक चउ विसत्थो, वंदण, पडिक्कमणुं, काउसग्ग अने पच्च रकाण ए छ आवश्यक संभारवां. पछी इच्छामो अणुसट्ठिं कही, नमो खमासमणाणं कही, नमोऽ

र्हत० कहीने पुरुष नमोस्तु वर्द्धमानायकहे, अ
ने स्त्री संसार दावानी त्रण गाथा कहे. पछी
नमुत्थुणं कही स्तवन कहेवुं. पछी वरकनक कही
भगवान् आदे वांदवा. पछी जमणो हाथ उपधी
उपर थापी अड्ढाईजेसु कहेवुं. पछी देवसिअ पा
यछित्तनो काउस्सग्ग चार लोगस्सनो अथवा सो
ल नवकारनो करवो पछी ते काउसग्ग पारी, प्र
गट लोगस्स कही, बेसीने खमासमण बे देइ
सज्झायनो आदेश मागी, एक नवकार गणी स
ज्झाय कहीए, पछी एक नवकार गणीए, पछी दु
रकखउ कम्मरकखउ नो काउसग्ग चार लोगस्सनो
संपूर्ण अथवा सोल नवकारनो करवो. एक व
डेरे अथवा पोते पारीने नमोऽर्हत् कही लघुशां
ति कहेवी, पछी प्रगट लोगस्स कहेवो, पछी इ
रियावही कही तस्सउत्तरी एक लोगस्स अथवा
चार नवकारनो काउसग्ग करी प्रगट लोगस्स
केहेवो. पछी चउकसाय कही, नमुत्थुणं, जावंति
बे कही, उवसग्गहरं, जयवीयराय कही, मुह

पति पडिलेहेवी. इछामि० ॥ इछाका० ॥ सामय क पारवुं. यथाशक्ति इछामि० ॥इछाका० सामा यक पार्युं तहत्ति कही, पछी जमणोहाथ उपधी उपर थापी एक नवकारगणीने सामाइअ वय जुत्तो कहेवो. पछी थापना होयतो एक नवकार गणी उठे. ॥ इति ॥ देवसि प्रतिक्रमण विधी क ही, बाकी अंतरविधी वडेराथी समजवी.

॥ अथ राइ प्रतिक्रमण विधी ॥

॥ प्रथम पूर्वनीरीते सामायकलीजे ॥ पछी कु सुमिण डुसुमिणनो काउस्सग्ग चार लोगसनो अ थवा सोल नवकारनो करी, पारी प्रगट लोगस्स कहेवो, पछी खमासमण देइ जगचिंतामणीनुं चैत्यवंदन जयवीयराय सुधी करवुं. पछी चार खमासमण पूर्वक भगवान्, आचार्य, उपाध्याय सर्व साधु प्रत्यें वांदवा, खमासमण बे देइ, सज्झा यनो आदेश मागी एक नवकार ,गणीने भरहेसर नी सज्झाय कहीने फरी एक नवकार गणवो. पछी इछाकर सुहराइनो पाठ केहेवो, पछी इछा

का० राइ प्रतिक्रमणे ठाउं कहीने जमणो हाथ उपधी उपर स्थापीने इछंसदसवी राइय डुचिंती य० कही ॥ नमुछुणं करेमि नंते कही, इछामि ठामि काउसग्गं० तस्सउत्तरी कही एक लोगस्स अथवा चार नवकार नो काउस्सग्ग पारीने प्रगट लोगस्स कही, सवलोए० अरिहंत० कही, एक लोगस्स अथवा चार नवकार नो काउसग्ग पारी पुस्करवरदी० सुअस्स० वंदण० कही, अतिचारनी आठगाथानो अथवा आठ नवकारनो काउसग्ग पारी, सिद्धाणं बुद्धाणं कहीने, त्रीजा आवश्यकनी मुहपत्ति पडिलेही वांदणां बे देवां. त्यांथी ते अप्भुछिउ खामि वांदणां बे दीजे, त्यां सुधि देवसिनीरीते जाणवुं. पण जे ठामें देवसिअं आवेछे ते ठामे राइयं केहेवुं. पछी आयरिअ उवज्झाए० करेमिनंते इछामि ठामि काउसग्गं तस्सउत्तरी कही, तप चिंतामणि करतां न आवडेतो चार लोगस्सनो अथवा सोल नवकारनो काउसग्ग करवो. ते पारी प्रगट लोगस्स कही, प

बी बहा आवश्यकनी मुहपती पडिलेहीने वांद णां बे देवां, ते पबी तीर्थवंदन करवुं, पबी यथा शक्तियें पच्चरकाण करवुं. पबी इच्छाकारेण संदिस ह नगवन् सामायक, चउविसब्बो, वंदण, पडिक्क मणु, काउसग्ग अने पच्चरकाण ए आवश्यक सं नारवां. पच्चखाण कर्युं होयतो कर्युं बेजी कहेवुं, अने धार्युं होयतो धार्युं बेजी एम कहेवुं. पबी इच्छामोअणुसहिं नमोखमासमणाणं नमोऽर्हत्० पबी विशाल लोचन, नमुत्थुणं, अरिहंतचेईयाणं एटला कहीने एक नवकारनो काउसग्ग पारीने नमोऽर्हत्०कही कल्याणकंदनी थोय प्रथमकहे वी. लोगस्स, पुरकरवरदि, सिद्धाणंबुद्धाणं, कही अनुक्रमे चार थोयो कहीयें बेए त्यांसुधी सर्व कहेवुं. पबी नमुत्थुणं कही, नगवान् आदि चार ने चार खमासमणे वांदवां. पबी जमणोहाथ उपधी उपर थापी अड्ढाइज्जेसु कहेवुं. पबी श्री सीमंधरस्वामीनुं चैत्यवंदन, स्तवन, जय वीयरा य, काउसग्ग थोय पर्यंत करवुं. पबी खमास

मण पुर्वक श्री सिद्धाचलजीनुं चैत्यवंदन, स्तवन, जयवीयराय, काउसग्ग थोयसुधी करवुं. पछी सामायक पारवानाविधीनी रीते सामायक पारवा सुद्धी कहेवुं.॥इति राइप्रति क्रमणनो विधी समाप्त॥

॥ अथः पख्कि प्रतिक्रमणनो विधी लिख्यते ॥

॥ देवसि प्रति क्रमणमां वंदितुं कहि रह्यां त्यां सुधी कहेवुं, पण चैत्यवंदन सकलाऽर्हतनुं केहेवुं ने थोयो स्नातस्यानी कहेवी. पछी खमा समण देइने इछा कारेण संदिसह भगवन्, देवसिअ आलोइ अपडिक्कंता इछाका० पख्कि मुहपति पडिलेहुं, एम कही मुहपति पडिलेहियें. पछी वांदणां बे दीजे पछी इछा का० संबुद्धा खामणेणं अभुठिउंहं अभिंत्तर पख्किअं खामेउं इछं खामेमि पख्कियं पन्नरस दिवसाणं पन्नरसराइआणं जंकिंचि अपत्तिअं० कही इछाका० कही पख्किअं आलोएमि इछं आलोएमि जोमे पख्किउ अइ आरो कउ कही इछाका० कही पख्कि अतिचार आलोउं एम कहीने अतिचार कहिये. पछी एवंकारे श्री श्राव

क तणे धर्मे श्रीसमकित मूल बारव्रत एकसो चोवीश अतिचार मांहें जे कोइ अतिचार पक्ख दिवस मांहे सुक्ष्म बादर जाणतां अजाणतां हुउ होय, ते सविहुं मने, वचने अने कायाए करी मिच्छामिडुक्कडं. सव्वसवि, पक्खिअ, डुचिंतिअ, डुप्रासीअ, डुचिठिअ, इच्छाकारेण संदिसह जगवन्, तस्समिच्छामि डुक्कडं० इच्छाकारि जगवन्, पसाउ करी पक्खि तप प्रसाद करोजी.एम उच्चारकरीने आवी रीते कहिए. चउछेणं एक उपवास, बे आयंबिल त्रण निवि, चार एकाशणा, आठ बियासणा, बे हजार सफाय यथाशक्ति तपकरीप्रवेश कस्यो होय तो पइठी कहिए.करवो होय तो तहत्ति कहिये. ने न करवो होय तो अण बोल्या रहिये. पछी बे वांदणां दीजे; पछी इच्छाका० पत्तेय खामणेणं अप्नुठिउहं अप्निंतर पक्खिअं खामेउ इछं खामेमि पक्खिअं पन्नरस दिवसाणं पन्नरस राइआणं जंकिंचि अपत्तिअं पछी वांदणां बे दीजे, पछी देवसिअं आलोइअ पडिक्कंता इच्छाकारेण संदिसह जगवन्, पक्खिअ पडि

२८

क्कमुं समंपडिक्कमामि इछं एम कही करेमिनंते सामाइयं कही इछामि पडिक्कमिउं जोमे. पक्खिउं कह्या पछी खमासमण देइ इछाकारेण कही पक्खिसूत्र पढुं.एम कही त्रण नवकार गणीसाधु होय तोपक्खिसूत्र कहे,अने साधु न होय तो त्रण नवकार गणीने श्रावक वंदित्तु कहे,पछी सुअ देवयानी थोय केहेवी. पछी हेठा बेसी जमणो ढींचण ऊनो करवो.एक नवकार गणी करेमिनंते इछामि पडिक्कमिउं कही, वंदित्तुं केहेवुं.पछीकरेमिनंते इछामि ठामि काउसग्गं जोमें पक्खिउं, तस्सउत्तरी, अन्नब० कहीने बार लोगस्सनो काउसग्ग करवो. ते लोगस्स चंदेसु निम्मलयरा सुधी केहेवा, अथवा अडतालीश नवकारनो काउसग्ग करीने पारवो. पालीने प्रगट लोगस्स केहवो. पछीमुहपत्ति पडी लेहिने, वांदणा बे दिजे. पछी इछाका० समाप्त खामणेणं अप्पुठिउ अभिंतर पक्खिअं खामेउं इछं खामेमि पक्खिअं एक पखाणं पन्नरस दिवसाणं पन्नरस राइआणं जंकिंचि अपत्तिअं० कही पछी

खमासमण देइ ने इच्छाका० कही, पक्किखामणा खामुं एम कहीने खामणा चार खामवा. पछी देवसि प्रतिक्रमणमां वंदित्तुं कह्या पछी वांदणां बे देइने त्यांथी सामायक पारियें, त्यां सुधी देवसिनी पेठे जाणवुं; पण सुअदेवयानी थोयोने ठेकाणे ज्ञानादिकनी थोयो कहेवी, स्तवन अजितशांतिनुं कहेवुं, सज्झायने ठेकाणे उवसग्गहरं तथा संसार दावानी चार थोयो कहेवी. अने लघुशांतने ठेकाणे मोटी शांत कहेवी. ॥ इति पक्कि प्रतिक्रमणविधी संपूर्ण ॥

॥ अथः चउमासी प्रतिक्रमण विधि ॥

॥ ए उपर लखेला पक्किना विधी प्रमाणेजछे, पण एटलुं विशेष जे बार लोगस्सना काउसग्ग ने ठेकाणे वीश लोगस्सनो काउसग्ग करवो, अने पक्किना आगारने ठेकाणे चोमासीना कहेवा. तथा तपने ठेकाणे छठेणं बे उपवास, चार आंबिल, छ निवी, आठ एकासणं, सोल बिआसणं,

चार हजार सझाय एरीते कहेवुं. ॥ इति चउमासी प्रतिक्रमणविधी ॥

॥ अथः संवत्सरी प्रतिक्रमण विधी ॥

॥ए पण उपर लखेला पखिना विधी प्रमाणेछे, तथापि बार लोगस्सना काउसग्गने ठेकाणे चालीश लोगस्स अथवा एकसोने साठ नवकारनो काउसग्ग करवो, अने तपने ठेकाणे अठम भत्तं एटले त्रण उपवास, छ आंबिल, नव निवि, बार एकासणा, चोवीश बे आसणा, अने छ हजार सझाय एरीते कहेवुं. पखिना आगारने ठेकाणे संवत्सरीना आगार कहेवा. ॥इति संवत्सरी प्रतिक्रमण ॥

॥ अथः सामायकना बत्रीश दोष लिख्यते. ॥

॥ तेमा प्रथम मनना दश दोष कहेछे. १ वैरी देखी रीश करे, २ अविवेक चिंतवे, ३ अर्थ न चिंतवे, ४ मनमां उद्वेग धरे, ५ यशनी वांछा करे, ६ विनय न करे, ७ भय चिंतवे. ८ व्यापार चिंतवे, ए फलनो संदेह राखे, १० नियाणुं करे. हवे वचनना दश दोष कहेछे. १ कुवचन बोले,

२ हुकारा करे, ३ पाप आदेस दीए, ४ लवारो करे, ५ कलह करे, ६ आवो जावो कहे, ७ गाल बोले, ८ बालक रमाडे, ए विकथा करे, १० हांशी करे. हवे कायाना बार दोष कहेछे. १ आशन चपल, २ चारे दिशाए जुवे, ३ सावद्य काम करे, ४ आलश मरडे, ५ अविनयें बोले, ६ उठुंलेइ बेशे, ७ मेल उतारे, ८ खरजखणे, ए पग उपर पग चढावे, १० अंग उघाडुंमूके, ११ अंग ढांके, १२ उंघे ॥ ए सर्व मली बत्रिश दोष जे छे, ते सामायकमां अयत्नाए लागेछे ते निवारवानो खप करवो एज विनंतीछे. ॥

॥अथ मुहपतीनी पचीश तथा शरीरनी पचीश मलीने पचाश पडिलेहणा विवरीने लखिये छैये.॥

॥सुत्तछतत्तदिठी, दंसण मोहयतिगंच रागतिगं ॥
देवाई तत्ततिगं, तहय अदेवाइ तत्ततिगं ॥ १ ॥
नाणाइतिगंच तह्वि, राहणयंतिन्निगुत्ति दंमतिगं ॥
इअमुहणंतग पडिले, हणाइ कमसोविचिंतिज्जा
॥२॥ हासोरइ अरइतिगं,नय सोग डुगंछयाय वज्जि

ज्जा ॥ जुअजुअलंपेहंतो, सीसेअ पसब लेसतिगं ॥ ३ ॥ गारवतिगंचवयणे, उअरि सलतिगं कसाय चउ पिठे ॥ पयजुअल ब जीव वहं॥ तणु पेहाए विजाणविणं ॥ ४ ॥ जइविपडि लेहणाए ॥ हेउज्जिअरस्कणं जणाणाय ॥ तहवि इमंमण मक्कड निजंतणढं मुणिंबिंति ॥ ५ ॥

अर्थ–सुत्तब के० मुहपतिने पहेले पाशे सूत्र अने बीजे पाशे अर्थ तत्तके० सम्यक् प्रकारे तेनुं तत्व हृदयने विषे धरुं; ए प्रथम दिठी के० दृष्टी पडिलेहण जाणवी.

पठी त्रणवार खंखेरिए,त्यां शुं चिंतवीए ? ते कहेठे. दंसणमोहयतिगं के० सम्यक्त्व मोहनी, मिश्रमोहनी अने मिथ्यात्व मोहनी, ए त्रण मोहनी ठांकुं. रागतिगं के० काम राग, स्नेह राग अने दृष्टी राग ए त्रण राग ठांकुं. एवं सात थइ पठी मुहपतिये एक पड वालीने आंगुलनी वच्चे मुहपति जरावीने हाथ उपर पखोडा अखोडा करें, त्यां जे चिंतवे तें कहेठे. देवाईतत्ततिगं के० देवादि

क तत्व त्रण एटले देवतत्व, गुरुतत्व ने धर्मत
त्व. ए त्रणने आदरुं, ए त्रण अखोडा हाथ उ
पर त्रण वार खंखेरीए एवं दश थइ. तह्य के०
तेमज वली अदेवाइतत्ततिगं के० अदेवादिक त
त्व त्रण एटले कुदेव, कुगुरु ने कुधर्म ए त्रण त
त्व ठांफुं, ए त्रण पखोडा हाथ उपर पुंजीयें एवं
तेर थइ. नाणाइतिगं के० ज्ञान, दर्शन ने चारि
त्र ए त्रणने आदरुं, ए त्रण अखोडा हाथ उप
र त्रणवार खंखेरीए. चके० वली तव्विराहणयं
के० तेनीज विराधना एटले ज्ञान विराधना, द
र्शन विराधना अने चारित्र विराधमा ए त्रण
विराधना ठांफुं. ए त्रण पखोडा हाथ उपर मुह
पतिये करी त्रण वार पुंजीए; एवं उगणीश थइ.
तिन्निगुत्ति के० मनगुप्ति, वचनगुप्ति अने कायगु
प्ति आदरुं ए त्रण अखोडा हाथ उपर त्रणवार
खंखेरीए. दंमतिगं के० मनदंम, वचनदंम ने का
यदंम ए त्रण दंम ठांफुं. ए त्रण पखोडा हाथ उप
र त्रण वार मुहपतिए पुंजीये इअमुहणंतगपडि

लेहणाइ के० ए मुरकानंतक एटले मुहपति तेनी पचीश पडिलेहणा कही ते कमसोविचिंतिज्जाके० पूर्वोक्त अनुक्रमे करी मनमां चिंतववी.

हवे शरीरनी पचीश पडिलेहणा कहेछे. तेमां प्रथम बे भुजानी पडिलेहणा कहेछे; हासोरइ अर इतिगं के० हास्य, रति अने अरति ए त्रण परि हरुं. अहीं मावा हाथनी भुजा त्रणवार पुंजीएं अने भय सोग डुगंछ यायवज्जिजा के० भय, शोक ने डुगंछा ए त्रण वर्जुं. अहीं जमणा हाथनी भु जा त्रणवार पुंजीये. ए भुअजुअलं के० भुजा जु गलने पेहंतो के० पडिलेहतो थको ए छ बोल क ह्या ते चिंतवे. हवे सिसे के० मस्तकनी त्रण पडि लेहणा करतो थको अपसछलेसतिगं के० अप्र शस्त जे त्रण लेश्या एटले कृष्ण, नील ने कापोत ए त्रण माठी लेश्याने छांमुं; एवं नव थइ. हवे वयणे के० वदन जे मुख तेनी पडिलेहण कर तो थको गारवतिगं के० ऋद्धि गारव, रस गारव अने साता गारव ए त्रण गारवने छांमुं.

अने उअरि के० हृदयनी पडिलेहणा करतो थ को हृदय थकी सलतिगं के० माया शल्य, नि याणा शल्य अने मिथ्यात्व शल्य ए त्रण शल्य का ढुं; एवं पंदर थइ. तथा कसाय चउ के० क्रोध, मा न, माया अने लोभ ए चार कषाय ते पिठे के० पुठे बे पाशानी पडिलेहणा करतो ढांकुं. अने पय जुअल के० बे पगने पडिलेहतो थको ठ जीववहं के० पृथ्विकायादिक जीवोनी जे ठ निकायठे, तेनी जयणा करुं; एवं पचीश. ते तणु के० शरीरनी पेहाए के० पडिलेहणा करतो थको विजाणवि णं के० मन ठामे राखवाने एवीरीते मनमां चिंत वे. जइविपडिलेहणाए के० जोपण ए पडिलेहणा जे ठे ते जिअररकणंके० जीव रक्षानो हेतुके० का रण नव्य जीवनेठे. एम जिणाणाय के० तीर्थंक रनी आज्ञाठे, तहवि के० तोपण ए ध्यानते म णमक्कड के० मनरूप मांकडाने निज्जंतणंठं के० वश राखवाने अर्थेठे, इमं के० एरीते मुणिविंति के० पूर्वाचार्य कहेठे.

ए शरीरनी जे पचीश पडिलेहणा कही तेमां थी स्त्रीनुं मस्तक ढाक्युं होय माटे मस्तकनी त्र ण तथा हृदय ढाक्युं होय माटे हृदयनी त्रण त था बे पाशां ढाक्यां होय माटे बे पाशांनी चार, एरीते दश पडिलेहणा शरीरनी उछी थायछे.

अने साध्वीनुं तो मस्तक उघाडुं होय माटे म स्तकनी त्रण पडिलेहणा करे, तेवारे साध्वीना श रीरनी अढार पडिलेहणा थइ शकेछे.॥ इति मुह पति पडिलेहण विचार समाप्तः ॥

॥ हवे छ आवश्यकनां नाम कहेछे. ॥

॥एक करेमिभंते ए सामायक नामा पहेलोआ वश्यक, बीजो चोवीसत्थो नामा आवश्यक, त्री जो मुहपति पडिलेही ने वांदणां बेदेवां ते वंदनाव श्यक, चोथो देवसीयं आलोइ ए सूत्रकही याव त् अप्भुठिउखामी ते पडिकमणा आवश्यक, पांचमो. बे वांदणां देइने आयरिय उवझायना त्र एय काउसग्ग कीधे काउसग्ग नामे आवश्यक था

य. छठो पच्चरकाणनुं संनारवुं. ते पच्चरकाण नामा आवश्यक, ए छ आवश्यकना नाम कह्या. अहीं पांरवी चोमासी अने सवंत्सरी ए पडिकमणा नामे चोथा आवश्यक मांहे अंतरजूत थायछे.

॥ हवे ए छ आवश्यकना संक्षेपे अर्थ कहेछे ॥

॥ जे अवश्य करवुं तेहने आवश्यक कहीयें, अने सर्वजीवो साथे जे समता नाव तथा सर्व सावद्य व्यापारथी विरमवुं ते सामायक कहीयें, "सम आयाति सामायक" इतिवचनात्. चोवीश जिनना स्तवनथी दर्शन मोहनीय कर्मनो क्षयोपशम थइने समकेत सुद्धथाय. ते चोवीस छो. तथा गुरुवंदनथी ज्ञानदर्शन निर्मल थाय. ते वंदनावश्यक. अने परिकमणाथी श्रावकना एकसोने चोवीश अतिचारनी आलोवणा थाय. काउसग्गथी सबल कषायनुं जीतवुं थाय, अने ज्ञान दर्शन चारित्रादिकनी सुद्धीथाय. पच्चरकाण आवश्यकथी तप पच्चरकाणनुं संनारवुं, तथा पच्चरकाणानुं लेवुं

थाय. एरीते ७ आवश्यकना संक्षेपे अर्थकह्या, विस्तारे ग्रंथांतरथी जाणवा.

॥ हवे पडिकमणाना बार अधिकार कहेछे. ॥

१ नमुत्थुणं मांहे समोसरणने विषे बिराजमान तीर्थंकर जे भावजिन तेने वांदे.

२ जे अइआसिद्धा ए गाथाए अतित अनागत ना द्रव्यजिन ने वांदे.

३ अरिहंतचेइआणं ए गाथाए इगचेइयठवण जिणे इति वचनात् इहां थापना जिनने वांदे.

४ लोगस्स मांहे नाम जिनने वांदे.

५ सव्वलोए अरिहंत चेइआणं मांहे त्रणलोकनी सास्वति असास्वति जिन प्रतिमाने वांदे.

६ पुरकरवरदि मांहे वीश वहेरमान जिननेवांदे.

७ तमतिमिर मांहे सिद्धांतने वांदे.

८ सिद्धाणं बुद्धाणं मांहे सर्वे सिद्धने वांदे.

९ जो देवाणंविदेवो ए गाथायें करी, श्रीवीरप्रभु जे वर्त्तमान शासनना नायकछे तेमने वांदे.

१० उज्जयंत सेलसिहरे एगाथाए श्रीनेमिश्वर

नगवानना कल्याणकनुं स्थानक जे श्रीगिरनार तीर्थछे तेहनी स्तुति करे.

११ चत्तारिअठ दस ए गाथाए अष्टापद उपरें नरत महाराजे करावेला प्रासादनी स्तुति करे.

१२ वेआवच्चगराणं मांहे मुनि संघ तथा चैत्योना वैआवच्च करनार सम्यक्दृष्टी देवोने संनारे.

॥ हवे छ आवश्यके सात नय फलावीयेंछैयें ॥

॥ प्रथम सामायक आवश्यके सात नय.॥

१ नैगमनये एक जीव अथवा घणा जीव तेने सामायक कहीए. अने मोक्षना कारणछे तेथी मोक्ष पण कहीयें; केमके कारणे कार्योपचार छे माटे.

२ संग्रहनयें जीवनो गुण तेज सामायक, तद्नेद आत्मा ए आश्री जे आत्मातेज सामायक.

३ व्यवहारनय समता अने यत्नायें प्रवर्त्ते ते वारे सामायक वंत आत्मा जाणवो.

४ उपयोग रहीत बाह्य यत्नाहोय. ते समयनो जे सामायकवंत आत्मा ते स्थूल ऋजुसूत्रनो मतछे; अने उपयोगयुक्त बाह्य यत्नावंतने ते समय जे सा

मायक कहेवुं ते सूक्ष्म रुजु सूत्रनो मत जाणवो.

५ शब्दनयें पांच समिति तथा त्रण गुप्ति पाळे अने सावद्यथी निवर्त्ते, क्रोधादिकनो त्याग करे. तेवारे ते आत्माने सामायक मानेछे.

६ संमभिरूढ नय अप्रमादि थका जे जे गुण उत्पन्न थायछे ते ते गुणने वाक्यभेदे करी भिन्न भिन्न सामायक माने छे.

७ एवंभूतनय मते त्रिविध त्रिविधे मन, वचन कायाना अशुद्ध भाव जे सावद्ययोग तेने निषेधी ने जे निश्चल शुद्धस्वभाव ते सामायकजाणवुं.

॥ चोवीस छा उपर सात नय फळावेछे.

१ नैगमनये अनुपयोगी सर्व द्रव्यात्मानी स्तुति कीधे मोक्ष होय ते सामान्य नैगमनो मतछे अने अरिहंतना चार निक्षेपाने स्तवने मोक्ष मानवुं अथवा चोवीश छो मानवुं ते विशेष नैगमनो मतछे.

२ संग्रहनय आत्मानुं स्तवन कीधे मोक्षप्राप्तिछे.

३ व्यवहारनय भूतभावि जे चोवीश जिनमां हे व्यक्त गुणछे माटे तेहनी स्तवनायें मोक्ष होय.

४ रुजुसूत्रमते वर्त्तमानकाले चोवीश जिन नां किर्त्तन, वंदन, पूजन जे समय करवां ते समय मोक्षना कारणछे, ए स्थूल रुजुसूत्रनो मत, तथा चोवीश जिन जे समय मोक्षे गया ते समय नुं जे काल द्रव्य ते सूक्ष्म रुजुसूत्रनो मतछे.

५ शब्दनय मते समोसरणे बिराजमान अरिहंतने अथवा सिद्ध अवस्था पाम्या तेहने पण नाविजिन कहिए. माटे तेनी स्तवनाए चोवीसत्थो.

६ समभिरूढ नयमते जे जीव मोक्षना पर्याय अनुभवे तेहनी स्तवना करवे चोवीस त्थो.

७ एवंभूतनये अरिहंतपणो तीर्थंकरनी रुद्धि भोगवी, संसारथी नीकली, अघाति चार कर्मक्षय करी सिद्धसिलाउपर रह्या तेमनी स्तुतियेमोक्ष.

॥ वंदनावश्यक उपर सातनय. ॥

१ नैगम अने संग्रह ए बे नयने मते सर्वजीव मांहे ज्ञान, दर्शन अने चारित्रादिनी सत्ताछे माटे जीवने वांदवाथीजमोक्ष होय, ए विनयवादीमतछे.

३ व्यवहार नय मते जेह्मां साधुनी आचरणा देखीए तेह्ने वांदवुं ते वंदनछे.

४ ऋजुसूत्र आश्री जे कायाये करी चारित्र पाले ते वांदवा योग्य ए स्थूल ऋजुसूत्रनो मतछे अने जे समय श्रुत ज्ञान सहित क्रियापाले ते समय वांदवाथी मोक्ष प्राप्ति. ए सूक्ष्म ऋजुसूत्रनोमत.

५ शब्दादि त्रण नय आश्री शुद्ध ज्ञान, दर्शन नो अनुजव करनारने वांदवाथी मोक्षप्राप्ति छे.

॥ प्रतिक्रमणावश्यक उपर सात नय. ॥

१ नैगम तथा संग्रहने मते जे जीव ते पडिकमणु.

३ व्यवहारनय आश्री पडिकमणानी क्रिया करतो होय ते जीवने पडिकमणो कहीए.

४ उपयोगविना जे समय द्रव्य पडिकमणु करे ते स्थूल ऋजुसूत्र मते पडिक्कमणुछे अने उपयोग सहीत जे समये पडिकमणानी क्रिया करवी ते सूक्ष्म ऋजु सूत्रमते पडिक्कमणु जाणवुं.

५ शब्दादि त्रणे नयें जे सुद्ध ज्ञान दर्शन तेज पडिक्कमणुं जाणवुं.

॥ काउस्सगनामा आवश्यक उपरनय. ॥

१ नैगम तथा संग्रह नयें जीव ते काउसग्ग.

२ व्यवहारनयें सुद्ध किरिया ए, काया स्थिर मुद्रायें राखवी तेने काउसग्ग कहेछे.

४ जे समये उपयोग विना काउसग्गते स्थूल ऋजुसुत्रनो मत, अने जे समय उपयोग सहीत काउसग्ग ते सूक्ष्म ऋजुसुत्रनो मतछे.

५ शब्दादि त्रणनये जे ज्ञान तेहिज काउसग्ग.

॥ हवे पच्चरकाण आवश्यक उपर नय. ॥

१ नैयगम तथा संग्रह नये जे आत्मातेजपच्चरकाण.

२ व्यवहारनयमते अशनादि चारनुं लोक लाजे जे पच्चरकाण करवुं तेने पच्चरकाण कहेवुं.

४ जे उपयोगविना पच्चरकाण लेवुं ते स्थूल ऋजुसूत्रनामते पच्चरकाणछे, तथा उपयोग सहीत शुद्ध पच्चरकाणते सूक्ष्म ऋजुसूत्रनामते पच्चरकाणछे.

५ शब्दादि त्रणनय आश्रीतो ज्ञान दर्शन रूप परिणाम तेने पच्चरकाण कहिए.

॥ हवे ए षडावश्यके कालादि पांच कारण उतारेछे.

१ जे कालें छ आवश्यकनी क्रिया करवाथी छ आवश्यक नीपजे, ते काल कारण.

२ जीवने पडिकमणुं करवानो स्वभावछे, माटेज पडिकमणुं करेछे. ते बीजो स्वभाव कारण.

३ जेथकी अवश्यकार्य थाय ते त्रीजो निश्चय कारण, छ आवश्यक निश्चेथवाना होयतो थाय.

४ पुण्यपापादिक ते कर्म कहेवायछे, ते अहीं मोहादिक कर्मनो क्षयोपशम होय तो छ आवश्य कनो उदय आवे; ते चोथुं कर्मनामा कारण.

५ तेबधां कारण मले पण ए छ आवश्यकमांहे जे उद्यम फोरववो ते उद्यमनामा पांचमुं कारणछे.

॥हवेछआवश्यके उत्पादव्ययध्रौवनुं द्वार देखाडेछे॥

१ सामायककरवाथी सावद्ययोगथी विरमवा पणानो गुण उपजे, चौवीसत्थाथी सम्यक् गुण उप जे, वंदनाथी विनयगुण उपजे, पडिकमणाथी पा पथी उपरागोथवारूप गुण उपजे, काउसग्गथी ज्ञान दर्शन रूप शुद्धगुण उपजे, पच्चख्खाणथी आ

श्रव निरोधगुण उपजे, ए व्यवहारनये करी गुण नुं उत्पादक पणुं देखाड्युं.

२ ए छ ए आवश्यकथी अशुनकर्मनो नाश थायछे, ते माटे अहीं अशुनकर्मनो व्यय जाणवो.

३ अने ए छए आवश्यकथी जीव निर्मल स्वनाव मांहे ध्रौवपणे रहेछे, तेअहीं ध्रौवपणुं जाणवुं.

॥हवे षडावश्यके हेय,ज्ञेय ने उपादेय देखाडेछे॥

१ छआवश्यकनेविषे जे नय निक्षेपानुं ज्ञान ते ज्ञेयछे, एटले जाणवा योग्यछे. केमके क्षपक श्रेणी चढवाने अनुपयोगीछे काम नावे माटे.

२ नाम, स्थापना अने द्रव्य ए त्रण निक्षेपा मोक्षार्थे हेयछे एटले छांमवा योग्यछे.

३ चोथो नाव निक्षेपो ते मोक्षार्थे उपादेयछे माटे ते आदरवा योग्य छे.

॥ हवे छ आवश्यकें षडद्रव्यनो व्यवहार आत्मा साथे अशुद्ध निश्चय नयमते युक्तिदेखाडेछे ॥

जे वेलायें जीव चाले तेवारे धर्मास्तिकाय पोतानी साथे बांध्यो, आयत कीधो पण बीजा द्रव्य

बुटाछे. एम अधर्मास्तिकाय, आकाश तथा काल अने पुज्जल जाणवा. पण शुद्ध निश्चयनय मतेतो आत्मा बंधाय छोडायनहीं, पुज्जलबंधाय छोडायछे.

॥ हवे ए छ आवश्यक मांहे कयो कयो आवश्यक कया कया तत्वमां छे, ते देखाडवानुं द्वार.॥

सामायकमांहे जे शुजाश्रव थाय तेहनो संवर तत्वमांहे अंतरजाव थायछे, माटे सामायक संवर तत्व छे. चोवीसछोते मोक्षतत्वमां अंतरजूतछे अने वंदना, पडिकमणुं, काउसग्ग अने पच्चरकाण ए चार आवश्यक शुजाश्रवमध्येछे;तथापि विशेषे आत्मानी परणतिए षडावश्यक साचवतो निर्जरा तत्वमांहे अंतर जूत थायछे.

॥ हवे ए छ आवश्यकें सप्तजंगी कहेछे. ॥

१ सामायक संवररूपे अस्तिछे, चोवीसछो किर्त्तनरूपे अस्तिछे, वांदणा गुणवत् प्रतिपत्तिरूपे अस्तिछे, पडिकमणुं आलोयणारूपे अस्तिछे, काउसग्ग, ज्ञान,दर्शन अने चारित्र,आराधनरूपे स्यात् अस्तिछे,अने पच्चरकाण ते व्रत धारणारूपे अस्तिछे ए पू

र्वोक्त गुणरूप षडावश्यक स्यात् अस्तिरूपेछे.

२ ए षडावश्यक अशुभ बंधपणे नथी, माटे एमां अशुभ बंधीनी नास्तिछे तेथी स्यात् नास्तिपणुंछे.

३ ए षडावश्यक स्वकीय एटले पोताने द्रव्य, क्षेत्र, काल भावें अस्तिरूपेछे तेअस्तिभांगोछे, अने एहिज द्रव्य ते परद्रव्यना द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव पणे नथी ते नास्ति नामा भांगो छे, माटे जे समय अस्तिछे ते समयेज नास्ति भंग पणछे; ए स्यात् अस्तिनास्ति नामे त्रीजोभंग थयो.

४ ए पूर्वोक्त त्रिभंगीए करी छ आवश्यकनुं स्वरूप जाणीयें पण ए समग्र समकाले कहेवाय नहीं, केमके वचननुं क्रमे प्रवृत्तनछे माटे ए अवक्तव्य नामा चोथो भंग जाणवो.

५ ए षडावश्यक मांहे एक समयने विषे अस्तिपणाना अनंता धर्म छे, ते जाणे खरो पण एक समये कहेवाय नहीं केमके एक अक्षर उच्चारतां असंख्याता समय लागे छे; माटे स्यात् अस्ति अवक्तव्यं एवेनामे पांचमो भंग जाणवो.

६ ए षडावश्यक मांहे एक समयने विषे ना स्तिपणाना अनंताधर्म रह्याछे, ते जाणे खरो पण एक समय मांहे वचने करीकह्या जाय नहीं माटे स्यात् नास्ति अवक्तव्यं नामा छगो भंग जाणवो.

७ ए षडावश्यकना पोताना रूपे अस्तिपणे एक समयने विपे अनंता धर्मछे, अने पररूपे ना स्तिपणे पण अनंताधर्म एक समयने विपे छे, प ण ते एकसमये वचने करी कह्या जाय नहीं; माटे ए स्यात्अस्ति, स्यात्नास्ति युगपत् अवक्त व्यं नामा सातमो भंग जाणवो.

हवे ए प्रत्येक आवश्यके चार निक्षेपा तथा खेत्र अने काल ए छ वाना जुदां जुदां विवरीने कहेछे.

॥ त्यां प्रथम सामायकावश्यके छ वाना कहेछे ॥

१ सामायक एहवुं नाम ते नाम सामायक.

२ सामायकनी क्रिया, रचना, विशेष सूत्रनी स्थापना ते स्थापना सामायक ते बे भेदे छे.

३ सूत्रना सुद्ध अक्षरनो उच्चार ते द्रव्यसामायक.

४ संकल्प विकल्प रहित शुभ भावना जे आ त्मना अध्यवसाय तेहने भावसामायक कहीये.

५ जे खेत्रे सामायक करिये ते खेत्र सामायक.

६ अंतर मूहुर्त्त प्रमाण ते काल सामायक.

॥ हवे चोवीसत्थानामा बीजा आवश्यक उपर. ॥

१ रुषभादि चोवीश जिनना नाम ते नाम चोवीसत्थो कहीए.

२ जिननी काष्टमय चित्रित पुतली तथा पित्तलादिकनी मूर्त्ति ते स्थापनाना बे भेदछे. एक जे स्थापनानां अंगोपांग तादृश्य देखाय ते सद्भाव स्थापना, अने संख प्रमुखे जे गुरुनी स्थापना करीये ते असद्भाव स्थापना. ए स्थापना चोवीसत्थो.

३ जीवजिन ते द्रव्य चोवीसत्थो कहीए.

४ समवसरणस्थ जिनतेभाव चोवीसत्थो.

५ जे खेत्रे ते खेत्र चोवीसत्थो.

६ जेकाले तेकाल चोवीसत्थो.

॥ वंदनावश्यक उपर ६ वाना. ॥

१ वांदणा एहवुं नाम ते नाम वांदणुं.

२ कोइक वांदणाने काष्ट चित्रादिकनेविषे स्था पे जे आ में वांदणुं स्थाप्युंछे, ते स्थापना वांदणुं.

३ आव्रत बार तथा पचीश आवश्यकादिक शुद्ध उपयोग विना करवां ते द्रव्य वंदन कहियें.

४ जावपूर्वक उपयोग सहितवांदवुं ते जाव वंदन.

५ जे क्षेत्रे वांदवुं ते क्षेत्र वंदन.

६ जे काले वांदवुं ते काल वंदन.

॥ पडिकमणाआवश्यक उपर छवाना ॥

१ पडिकमण एवुं नाम ते नामपडिकमणुं.

२ जीवाजीवनी छायें काष्टादिक स्थापीये ते स्थापना पडिकमणुं.

३ जे उपयोगविना करवुं ते द्रव्य आलोयणा.

४ जावथी उपयोग सहीत ते जाव आलोयणा.

५ जे खेत्रे करवुं ते खेत्र पडिकमणुं.

६ जे कालें करवुं ते काल पडिकमणुं.

पडिकमणानीपरे काउसग्ग तथा पच्चरकाण ए बंने आवश्यकना नामादिक छ बोल जाणी लेवा.